॥ श्रीमदर्हम् ॥

अमृत रस संग्रह.

सामायिक तथा प्रतिक्रमण सूत्र सहित

श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री पूज्यजी श्रीश्री जयमलजी महाराज के सम्प्रदाय के प्रवर पण्डित न्यायाम्भोनिधि स्याद्वादप्रदर्शक जैनाचार्य श्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्री

रामचन्द्रजी महाराज कृत.

जिसका

ग्रंथकर्ताकेशिष्यस्वामीजीश्रीश्रीश्री१०५श्रीश्री

प्रसन्नचन्द्रजी महामुनि

तथा

दाधीच आसोपा पण्डित बलदेवात्मज

पण्डित रामकर्णने

संशोधन किया.

मुंबई गुजराती "प्रिंटिंग" यन्त्रालय में छपा

सं १९५३ ई० १८९६

प्रथम बार प्रति १०००

कि० रु० ३

निवेदन.

सर्व साधर्मी भाइयों से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को उघाड़ मुंह तथा दीपक के प्रकाश में तथा अविनय आशातना से नहीं पढें कारण वे कर्म बंध के हेतु हो जाते हैं; इसलिये लिखना है कि सुख जतना करके इस को पढ़े पढ़ावें ॥

यह पुस्तक जोधपुरवासी सिंघ सुलतानमल के नामसे रजिस्टर किया है

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

पण्डित रामकर्ण. मोतीचोक

जोधपुर–मारवाड़.

हंसराज किसनलाल.

चंपागली—मुंबई.

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना ।

आहारनिद्राभयमैथुनानि
तुल्यानि सार्धं पशुभिर्नराणाम् ।
ज्ञानं विशेषः खलु मानुषाणां
ज्ञानेन हीनाः पशवो मनुष्याः ॥ १ ॥

इस अपार संसार समुद्रमें जैन धर्मकी प्राप्ति बड़ी दुर्लभ है; कारण प्रथम तौ निमित्त उपादानका मिलना १ आर्य क्षेत्र २ उत्तम कुल ३ शरीर नीरोग ४ सत्सगति ५ शुद्धाचारी, शुद्ध तत्व प्ररूपक, शुद्ध परंपराके ज्ञाता गुरुका संयोग ६ ऐसी सामग्रीका संयोग मिलना परम दुर्लभ है। और ऐसी सामग्री पानेपरभी जो देव गुरु धर्मका निर्णय नही करते, और सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र को पहिचाननेके लिये यत्न नहीं करते उनका जन्म पशुवत् निरर्थक जाता है ॥ आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये तौ मनुष्योंमे और पशुओंमें समान ही है । मनुष्यमें और पशुमें विशेष केवल ज्ञान का ही है। मनुष्य ज्ञानके बलसे धर्मको समझकर धर्मके मार्ग में प्रवृत्त हो सकता है, पशु उस मार्ग चल नही सकता; सो यदि मनुष्य जन्म पाकर धर्माचरण न करै तौ वह विना सींग पूछका पशु ही है॥धर्म वह है कि जिससे मुक्तिकी प्राप्ति होवे,और आवागमन मिट जावे। वह धर्म दो प्रकारका है। श्रुतधर्म और चारित्र धर्म॥श्रुतधर्मसे ही चारित्र धर्म होता है। श्रुत धर्मके विना चारित्र धर्म नही होता। श्रुतधर्म वह है कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी, अनंत-

ज्ञानी, वीतराग केवली प्रणीत है। क्योंकि उसके श्रवण से श्रुत ज्ञानकी प्राप्ति होती है। अन्यसे नही इस कथनका प्रयोजन यह है कि बुद्धिमानोंको उस ज्ञानकी प्राप्तिके लिये यत्न करना चाहिये। श्रुत ज्ञानका मुख्य साधन पुस्तक और गुरूपदेश है। परंतु आजके दिन जैनी लोगोंमें पठन पाठनका प्रचार बहुत कम हो गया है और ज्ञानके निमित्त द्रव्यका व्ययभी बहुत कम करते हैं, यहांतक है कि व्याह शादी आदि में तो चाहे लक्खों रुपये उड़ा दें और मकानात बनाने आदि कुकर्मोंमें हजारों रुपये बरबाद कर दें कि जिससे परलोक सुधरना तो दूर रहा, वरन परलोक बिगड़नेके सिवाय इह लोकमें कई प्रकारके कष्ट उठाने पड़ते हैं। और जिन मकानोंकी सात पीढ़ीके वास्ते नीव देते है वह सात पीढ़ी तो दूर किनार रही, बाजे खुदभी भोग नही सकते; ऐसे व्यर्थ कामोंमें धनका उड़ा देना बुद्धिमानोंका काम नही है। बुद्धिमानोंको चाहिये कि उस धनको ऐसे कामोंमें लगावे कि जिससे ज्ञानकी वृद्धि और धर्मकी उन्नति होवे। जिससे इह लोकमें प्रशंसा और परलोकमें सुखकी प्राप्ति हो। ज्ञान और धर्मकी प्राप्ति श्रुत ज्ञानसे है। और श्रुतज्ञानका मुख्य साधन पुस्तकें है। उन पुस्तकोंका मिलना पहिले तौ अत्यंत ही कठिन था; परंतु इस समयमें छापा हो जानेसे इतना सुबीता हो गया है कि जो पुस्तक पन्द्रह रुपयों में नहीं मिल सकताथा वह अब एक रुपये में सुगमतासे मील सकता है। और तिस परभी खूबी यह है कि जो पुस्तक एकाध ठिकाने मुश्किलसे मिल सकता था वह अब घर घरमें मिल सकता है। सो जैनी भाइयोंसे यही कहना है कि निष्फल कार्यों में धनका व्यय नहीं करें। ज्ञान के वास्ते द्रव्य का व्यय अवश्य ही करें; क्योंकि यही सर्वोत्कृष्ट है॥

श्रुत धर्मका मुख्य साधन पुस्तक है। पहिले सूत्र, टीका ग्रंथ और प्रकरण आदि बहुतसे विद्यमान है; परंतु वे अति गहन होनेसे अल्पबुद्धि मनुष्योंके समझमें नहीं आ सकते और साधारण भाषा रोचक नहीं होती राग रागनी में हरेक मनुष्यकी प्रवृत्ति और प्रीति स्वभावसे होती है और मन भी उसमें शीघ्र लग जाता है, इससे सर्व साधारणकी रुचिके लिये सुगमता से जैन तत्वका बोध करानेके निमित्त लोक भाषामें " अमृत रस संग्रह " नामक पुस्तक कि जिसमें मारवाड़ आदि देशोंके समय समय के राग रागनियों के समयोपयोगी अत्यंत चमत्कृत विचित्र प्रकारके स्तवन, स्वाध्याय, लावनी, ढाळ आदिका संग्रह बारह १२ प्रकरण में किया गया है वह पूज्यजी श्री श्री श्री १००८ श्रीश्री "जयमछजी" महाराज के संप्रदायानुयायि पाटानुपाट प्रवर पण्डित अनेक गुणालंकृत साधुवर्ग शिरोमणि चारित्र चूडामणि व्याकरण काव्य कोष छंद न्यायांभोनिधि सूत्र सिद्धांत पारगामि शुद्धोपदेशक वृत्तिवाचक शुद्ध श्रद्धा प्ररूपक मिथ्यात्व खंडन दया धर्म खंडन श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री "रामचन्द्रजी" महामुनि कि जिनकी जन्मभूमि मारवाड़में बीकानेर राज्यांतर्गत "जसरासर" ग्राम है। जन्म सरावगी कुलीय सुखरामजी वाकलीवाल के घरमें संवत् १८८३ का है। और दीक्षा संवत् १९००के वैशाख शुदी दशमीके दिन पूज्यजी श्री सबलदासजी महाराजके समीप हुई है, उन्होंने लोकोपकारार्थ श्रीप्रसन्नचंद्रजी कि जिनकी जन्मभूमि जसरासर ग्राम से ६ कोस और नागोरसे उत्तर दिशामें १३ कोस "मैनसर" ग्राम, सरावगी

जाति, गंगवाल रामसुखजी गृहे केसर बाई कुक्षौ जन्म, महाराज साहिब के मासियाई भाई, जन्म संवत् १९२० में, दीक्षा संवत् १९३१ ज्येष्ट शुदी द्वितीयाको नागोर में, उन की प्रार्थना से बनाया है; क्योंकि वे महाराज साहिब के मुख्य शिष्य और अच्छे विद्वान् हैं।

इस "अमृत रस संग्रह" के आदि में सामायिक और प्रतिक्रमण (६ आवश्यक) दश पच्चक्खाण पर्यंत छपवाये गये है। जिन में पठन पाठनकी शैलीके अनुसार १२ व्रत अतिचार, पंच पदों की वंदना और भी उपयुक्त पाटी प्रथम पाटी थी जैसी ही रक्खी है; कारण पढ़नेका प्रचार वैसा ही है। परंतु सामायिक की पाटियां तथा इच्छामि खमासमणो इत्यादि जो सूत्रपाठ है वह पद, संपदा, गुरु, लघु, सर्व अक्षर पृथक् पृथक् गिनकर परम शुद्ध किया गया है। सूत्रपाठ की शुद्धि आवश्यक वृत्ति, भाष्य और पूर्वाचार्यों की टीकामें देख कर की गई है॥

महाराज की जोड़की रचना अत्यत चमत्कृत है, इसलिये सब साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मिलने की बड़ी उत्कंठा रखेते हैं, तोभी समग्र जोड़ कब मिल सकती है; जिससे श्री संघके आग्रह से उस उत्कंठाको पूर्ण करनेके लिये तथा ज्ञान वृद्धिके वास्ते हमने महाराज से बहुत विनय पूर्वक प्रार्थना करके मुश्किलसे इस ग्रंथ को प्राप्त किया है। इस ग्रंथको जो एकवार देख लें वा सुन लें तौ मैं जानता हूं कि फिर वह मंगाये विना कभी नहीं रहेगा; क्योंकि इस में ऐसा अद्भुत रस भराहुआ है कि एक वेर चखने से फिर छूटनहीं सकता। मैं इस ग्रंथकी बडाई नहीं करता वास्तवमें यह ऐसा ही

है, सो देखनेसे स्वयं विदित हो जायगा। इन ग्रंथकर्त्ता महाराजकी केवल इतनी ही कविता नहीं है, और भी यशोधर धर्मदत्त हरिबल–नर्वदा–गजसिंह–रत्नदत्त आदिके रास अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ चौपाई है ॥ और इससे अतिरिक्त चौढालिया, पद्ढालिया,अठ नव ढालिया आदि व्याख्यान संबंधी है। जिसकी रचना अत्यंतही मनोहर अद्भुत रसभरी अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ होगा। उसको छपानेकाभी हमारा इरादा है,सो फिर देखा जायगा.

जिनको यह पुस्तक लेनेकी इच्छा हो वे मेरे समीपसे नीचे लिखे पतेसे मंगा लें॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

पण्डित रामकर्ण

मोतीचौक जोधपुर मारवाड़

॥ श्रीः ॥

ग्रंथकर्ता का गुणवर्णन ॥

लावणी ॥

श्रीराम मुनीका पाय वंदो नर नारी ॥ वं० ॥ गुण रतनांरी खान बडे उपगारी; सब शास्त्रनके जान पाखंड जावे हारी ॥ पा० ॥ ब्रह्मचारी मिष्ट वाक्य सुरत है प्यारी, सब संतनके वीच मुद्रा सुखकारी ॥ मु० श्री॥१॥ जिन शासनके थंभ दंभ नहि इनके ॥ दं० ॥ कम स्वाली महाराज क्रोध नही जिनके; आतम तत्व पाय कषाय मीटाई ॥ क० ॥ सबसें मैत्रीभाव नहीं कपटाई; हितका बोले बोल सदा हितकारी ॥ स०श्री० ॥ २ ॥ अब सुनिये महाराज अरज एक मोरी॥अ०॥ सदा रखो चरनके पास कहूं कर जोरी; प्रसनचंद ए अरज जोरि कर गाता॥जो०॥ मोय करो विद्यामें पूर सुनो गुरु दाता; कदे भूलचूक महाराज माफ करो सारी ॥ मा० श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

२ लावणी ॥

वृद्धिचंद स्वामीके चेला, रामचंद शिव अधिकारी; किरपा कीजे दर्शन दीजे, तुम दर्शनकी बलिहारी ॥ वृ० ॥ १ ॥ पूज्य सबलेशना पोता चेला, धन्य धन्य हो मुनि बुध धारी; शास्त्रांमांहे छो तुम ज्ञाता, सरस्वती कंठां धारी ॥ वृ० ॥ २ ॥ न्याय शास्त्र और व्याकरण

पढि या, तुमसा विरला अणगारी; टीकावाचक तुर्तज- थावी, पाखंड मत जावे हारी ॥ वृ० ॥ ३ ॥ पंच महा- व्रत दुःकर पाळो, प्रभुनी शिर आज्ञाधारी; मुरधर देशे विचरो मुनिवर, वखांणतणी छिब है भारी ॥ वृ० ॥४॥ मोहनी मूरत सोहनी सूरत, देखतही लागे प्यारी; जब देखां जब पुस्तक हाथे, ज्ञानतणो उद्यम भारी ॥ वृ० ॥ ५ ॥ एकवेर तुम दर्शन कीना, फेर न भूले नर नारी; कुमति नर कोई अवगुण बोले, जिणकी मत जांणो कारी ॥ वृ० ॥ ६ ॥ जिण वस्तीमे आप पधारो, सो वस्ती है धन्यकारी; म्हारे शैरमें क्यूं नहीं आवो, छो निरलोभी उपगारी ॥ वृ० ॥ ७ ॥ समत उगणीसे तेरे वरसे सैर सोभत है सुखकारी; मुनालाल ब्राह्मण तुम वंदे, दो दर्शन अल्पाहारी ॥ वृ० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ लावणी ॥

राम ऋषि उत्तम आचारी रे, राम ऋषि उत्तम आचा- री, जंगम कल्पवृक्ष इण जगमें, सदगति दातारी ॥ टेर ॥ अष्टादश पापनके त्यागी, जती धर्मधारी, कामिनि और कनक नहीं वंछे, बाल ब्रम्हचारी ॥ रा० ॥ १ ॥ दूषण टाळे संजम पाळे, सतरे परकारी; करै तपस्या द्वादश- भेदे, मुनि महाव्रतधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जल भरिये दरि- याव जिसा मुनि, लैहर छयी भारी; नय परिमाण न्याय करि शोभते,ज्ञान रूप धारी ॥ रा०॥३॥ पुनमादिक परि- वार मनोहर, प्रसनचंद लारी; वाणी अमृत धारावरसो, प्रभु छो उपगारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ मलयाचंदन घसतां सो- रम, देवे अनपारी; म्हारी करणी मूल म पेखो,आप दया

धारी ॥ रा० ॥ ५ ॥ योद्ध पुरके श्राद्ध सकलकी, अरजी अवधारी; कृपा करके गुरुजी पधारो, देखूं दीदारी ॥रा० ॥ ६ ॥ अमर धाम देखणको कामी, आसा मन धारी; सविता ज्ञान उदय कर घटमें मिथ्या तम टारी ॥ रा० ॥ ७ ॥ इति ॥

३ असी रुपया लो कलदार ॥

रांम मुनीसें लागो प्यार, दर्शन दीजो वारंवार; बालपणामें संजम आदर्यो, दोष बयालीस टालणहार ॥रा० ॥ १ ॥ कोटे नगरी आप विराजो, शिष्यप्रसन्नचंद थांरी लार ॥ रा० ॥ २ ॥ छ कायारा पीहर तुम छो, थे तपसी मोटा अणगार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पंडित ज्ञानी परम सुजांनी, घणा सूत्रका जांणणहार ॥ रा० ॥ ४ ॥ कुमतिकूं तजकै सुमतिकूं भजकै, तीन गुपतकूं हियडे धार ॥ रा० ॥ ५ ॥ मुरधर देशमें किरपा कीजै, वाट जोवे थांरी नर अरु नार ॥ रा० ॥ ६ ॥ तुम दर्शनकी वडी चायना, दर्शन द्योनी वेग पधार ॥ रा० ॥ ७ ॥ सादूलदासरी एही अरज छै, वेग पधारो म्हांरा सैर मंझार ॥ रा० ॥ ८ ॥ समत उगणीसे वरस अड़तीसे, आषाढ मासरी सातम सार ॥ रा० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ सूचीपत्रम्.

विषय पृष्ठांक

दशपच्चक्खाण.

ढाळ ५ —

लावणी ६

वारामास्यो ४

१२ व्याख्यान ३८

१ विजयाकुमारनो चौढालियो ५

इति

श्रीः॥

अथ नमस्कार ॥

णमो अरिहंताणं (१) णमो सिद्धाणं (२) णमो ायरियाँण (३) णमो उवज्झायाँण (४) णमो लोये व्वसाहूण (५) एसो पंच णमुक्कारो (६) सव्वपावप्प ाँसणो (७)मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मगंलं(८)॥

इति नमस्कार समाप्त ॥

(पद ९ सपदा ८ गुरु अक्षर ७ लघु अक्षर ६१ सर्व ग्रक्षर ६८)

अथ तिक्खुत्तोकी पाटी ॥

तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण, वदामि, णमसामि, कारेमि, समाणेमि, कल्लाण मगलं देवय चेइय पज्जु- ासामि मत्थएण वंदामि ॥

इति तिक्खुत्तोकी पाटी समाप्त ॥

अथ इरियावहियाएकी पाटी ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहिय पडिक्क- मामि इच्छ

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए(१) गमणागमणे (२) पाणक्कमणे (३) बीयक्कमणे, हरिय- कमणे (३) ओसाउत्तिगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणास कमणे (४) जे मे जीवा विराहिया (५) एगिंदियाँ, बेइंदियाँ, ते इंदियाँ, चउरिंदियाँ, पंचिंदियाँ (६) अभि-

इर्यां, वत्तियां, लेसियां, संघाइयां, संघट्टियां, परिया-
वियां, किलामियां, उद्दवियां, ठाणाउ ठाणं संकामियां,
जीवियाउ ववरोवियां, तस्स मिच्छामि दुकड़ं (७) ॥

इति इरियावहियाएकीपाटी समाप्ता ॥

अथ तस्स उत्तरीकी पाटी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-
णेणं, विसल्लीकरणेण, पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए,
ठामि काउस्सग्गं (८)

(दोनों सूत्रों के-पद ३२ संपदा ८ गुरु अक्षर २४
लघु अक्षर १७५ सर्व अक्षर १९९)

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भंमलिए, पित्तमु-
च्छाए (१) सुहुमेहि अगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचा
लेहिं, सुहुमेहि दि ट्ठिसंचालेहि(२) एवमाइएहि आगा
रेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सगो (३)
जाव, अरिहंताण भगवंताणं, णमुक्कारेणं, न पारेमि
(४) ताव, कायं, ठाणेणं, मोणे णं, झाणेणं, अप्पाणं,
वोसिरामि ॥ ५ ॥

इति तस्स उत्तरीकी पाटी समाप्ता ॥

(पद २८ संपदा ५ गुरु १३ लघु १२७ सर्व अक्षर १४०)

३ अथ लोगस्सकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे,धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कि-
त्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥[आर्यावृत्त उसभ१
मजियं २ च वंदे, सभव ३ मभिणं ४ च सुमइ ५ च ।
पउमप्पहं ६ सुपास ७, जिणं च चंदप्पहं ८ वदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुप्फदंतं ९, सीअल १० सिज्जंस ११ वासु पुज्जं१२ च। विमल १३मंणत१४ च जिण, धम्मं१५सं तिं १६ च वदामि ॥ ३ ॥ कुंथु १७ अरं १८ च मल्लिं १९, वंदे मुंणिसुव्वयं२० नमिजिणं २१ च। वंदामि रिट्ठनेमिं २२,पासं २३ तह वद्धमाणं २४ च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणंवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहि-लाभं, समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहिय पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामक लोगस्सकी पाटी समाप्ता ॥
(पद २८ संपदा२८गुरु २७ लघु २२९सर्व अक्षर२५६)

४ अथ सामायिक लेनेकी पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि,जाव नियम पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेण, न करेमि, नकार-वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाण वोसिरामि ॥

इति सामायिक लेनेकी पाटी समाप्ता ॥

५ अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुणंकी पाटी ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं (१) आइगराणं, तित्थयराणं, सय संबुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाणं, पुरिसं-सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं (३) लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं,लोगहियाणं,लोगपईवाणं, लो-गपज्जोयगराणं, (४) अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-

दयाणं, सरणदयाणं, (जीवदयाणं) बोहिदयाणं (५) धम्मदयाण, धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं (६) (दीवोताणं सरणगइपइट्ठा)॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं (७) जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं (८) सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणराविति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं (९) ॥

इति शक्रस्तवनी पाटी समाप्ता ॥

(पद ३३ संपत् ९ गुरु २९ लघु २३३ सर्व अक्षर २६२॥) "जीवदयाणं, दीवोताणं सरणगइपइट्ठा" इसको शामिल ले तो गुरु ३० लघु २४९ सर्व अक्षर २७९ होते हैं॥

५ अथ सामायिक पारनेकी पाटी ॥

नवमो सामायिक व्रतरे विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ ॥ मन, वचन, कायारा जो पाडुवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मनरा, दस वचनरा, बारे कायारा, बत्तीसं दोषांमायलो कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सामायिकमें स्त्री कथा, भक्त कथा, देशकथा, राजकथा, ए चार कथा मांयली कोई विकथा कीधी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

इति सामायिक पाड़ने की पाटी समाप्ता ॥

सामायिक पाड़्या पछे एवुं पाठ कहवुं—

सामायिक समकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं,

तीरियं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाटियां समाप्त ॥

अथ सामायिक लेने की विधि ॥

असणोट छोट, दो हात जोड, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, "इरियावही" की पाटी "जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत भणवी ॥ पछे "तस्सुत्तरी" की पाटी भणने काउस्सग्ग करवो काउस्सग्गमे "इरियावही" की पाटी "जीविया ओ ववरोविया" पर्यंत मनमेंही गुणणी "नमो अरिहंताण" मनमें कहीनें काउस्सग्ग पाडवो पछे "लोगस्स" की पाटी कहवी ॥ पछे "करेमि भंते" की पाटी "जाव नियम" सुधी कहीने आगल मुहूर्त्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे "पज्जुवासामि" थी ले "अप्पाण वोसिरामि" सुधी पाठ कहवुं ॥ पछे डावो गोडो ऊभो राखी दोनुं हाथ जोडी "नमुत्थुण" नी पाटी दोय बार कहवी ॥ दूजा नमुत्थुणं रे अंते "ठाणं संपाविउं कामस्स णं णमो जिणाणं जिअभयाणं" एम कहवु ॥ पछे आसण माथे वेसीनें, सामायिक कालमें "नमोकार, तथा वोलचाल" गुणणा, पढणा ॥

इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्त ॥

अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाड़ती वगत "इरियावही" की पाटी और "तस्स उत्तरी" की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमे "लोगस्स" की पाटी मनमें कहवी "नमो अरि-

हंताणं" कही काउस्सग्ग पारवो ॥ फेर "लोगस्स" प्रगट कहणो ॥ दोय नमुत्थुणं पूर्ववत् कहणा ॥ पछे नवमो सामायिक पारवाकी पाटी "न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही ऊठवुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्त ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

अथ इच्छामिणं भंतेकी पाटी ॥

इच्छामिणं भंते तुब्भेहि अभणुंणायसमाणे देवसियं पड़िक्कमणं ठाएमि, देवसियं णाण दंसण चरित्ताचरित्त तप अतिचार चिंतवणात्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

इति इच्छामिणं भंतेकी पाटी समाप्त ॥

अथ इच्छामि ठामिकी पाठी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसियो अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुण सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाण पंचन्हमणु व्वयाण तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिय जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्त ॥

अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, त जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे; एहवा श्रीज्ञानके विषे जे कोई अतिचार

लागो होय ते आलोउ; जं वाइद्ध १ वचामेलियं २ हीण क्खरं ३ अच्चक्खर ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठुपडिच्छियं१०अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ १२ असज्झाए सज्झाइयं १३ सज्झाये न सज्झायं १४ भणतां गुणतां चितवतां ने विचारतां ज्ञान अने ज्ञानवतकी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति आगमे तिविहे की पाटी समाप्त

अथ दंसण श्रीसमकित की पाटी ॥

आर्यावृत्तम् ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्तं तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥ एवा श्री समकितके विषे जे कोई अतिच्यार लागो हुवे तो आलोउं । जिन वचनमे शंका आणी होय १ परदर्शनरी वांछा कीधी होय २ फल प्रति संदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी प्रशंसा कीधी होय ४ पर पाखंडीरो सस्तव परिचय कीधो होय ५ तो म्हारा समकित रूप रत्नरे विषे मिथ्यात्व रूप रज,मेल,खेह लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति दंसण श्रीसमकितकी पाटी समाप्त ॥

अथ वारे व्रत और उनके अतिचार॥

१ पहिलो अणुव्रत– थूलाओ पाणाइवायाओ, विरमणं, त्रस जीव, बेइंदिय, ते इंदिय, चउरिंदिय, पचेंदिय,

विन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी संकल्पी हणवारी बुद्धि करीनें हण हणावणका पचक्खाण जायज्जीवाण दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा॥ [एवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउं। रीस वशे गाढा बंधण बांध्या होय. गाढा भाव घाल्या होय, चामना छेद कीधा होय, अति भार घाल्या होय, भात पांणीना विच्छेद कीधा होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रत–थूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं, गोवालियं, भोमालियं, थापणमोसो, सूंक ले कूड़ी साख, इत्यादिक मोटका झूठ बोलणका पचक्खाण। जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा॥[एवा दूजा थूल मृषावाद विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं। सहसात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय १ रह छांनी वात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृषा उपदेश दीधा होय ४ कूड़ा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ २ ॥

३ तीजो अणुव्रत–थूलाओ अदिन्नादाणाओ विरमणं, खातर खिणी, गांठ छोडी, ताळो पर कूंची, वाट पाडी, पड़ी वस्त मोटकी धणियां सेती जांणीने लेवणका पचक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमण। व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। चोराई वस्तु लीधी होय १ चोरनें साझ दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३

कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तमे भेल समेल सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ ३ ॥

४ चोथो अणुव्रत–थूलाओ मेहुणाओ विरमणं, पोतारी स्त्री उपरांत मैथुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए देवता संबंधी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, मिनख तिर्जंच संबंधी इकविहं इकविहेणं न करेमि कायसा ॥ [एवा चौथा थूल स्वदारा संतोष विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। इत्तर थोडा काल राखीसूं गमन कीधा होय १ अपगृहीसूं गमन कीधा होय २ अनंग क्रीडा कीधी होय ३ पराया व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सेविया होय ५ तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ ४ ॥

५ पांचवो अणुव्रत–थूलाओ परिग्गहाओ विरमणं, खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपदको, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा पांचवां थूल परिग्रह विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। खेत घरको १ रूपा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर विखराको ५ यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ ५ ॥

६ छट्ठो दिशिविरमण व्रत– ऊंची नीची तिरछी दिशाको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत स्वइच्छाये जाई-

ने पांच आश्रव द्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा छट्ठा दिशिविरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ ॥ ऊंची नीची तिरछी दिशको यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिश घटाई होय एक दिश वधाई होय ४ संदेह पड़ियां पंथ आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत–उल्लणियाविहं १ दतणविहं २ फलविहं ३ अब्भंगणविहं ४ उवट्टणविहं ५ मज्जणविहं ६ वत्थविहं ७ विलेवणविहं ८ पुप्फविहं ९ आभरणविहं १० धूपविहं ११ पेजविहं १२ भक्खणविहं १३ ओदनविहं १४ सूपविहं १५ विगयविहं १६ सागविहं १७ माहुरविहं १८ जीमणविहं १९ पाणीविहं २० मुखवासविहं २१ वाहनविहं २२ सयणविहं २३ पन्निविहं २४ सचित्तविहं २५ द्रव्यविहं २६ इत्यादिक छाईस बोलांकी मरजाद कीधी छै ते उपरांत उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण जावज्जीवाए एगविह तिविहेण न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। पचक्खाण उपरांत सचित्तको आहार कीधो होय १ सचित्त प्रतिबद्धको आहार कीधो होय २ अपक्कको आहार कीधो होय ३ दुपक्कको आहार कीधो होय ४ तुच्छ ओषधि भक्खण कीधा होय; थोडो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए भोजनथकी कह्या हिवे कर्म थकी पनरे कर्मादान श्रावकने जांणवा

जोग छै पिण आदरवा जोग नथी तं जहा, ते कहै छै. इगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणिज्जे ७ रसवाणिज्जे ८ केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११ निल्लंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३ सर दह तलाय परिसोसणया १४ असईजणपोस णया १५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दंड विरमण व्रत–चउव्विहे पणत्ते तं जहा, अवज्झाणाचरियं पमायाचरियं, हिंसपयाणं, पावकम्मोवएसं, एवा अनर्थ दड सेवणरा पचक्खाण, जावज्जीवाए दुविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा आठवां अनर्थदंड विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउ। कदर्पकी कथा कीधी होय १ भंड कुचेष्टा कीधी होय २ मुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उपभोग परिभोग अधिका वधारया होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रत–सावज्जं जोग पचक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविह तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा नवमा सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ। मन वचन कायरा जोग पाडचे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रत–दिन प्रति प्रभात थकी

प्रारंभीनैं पूर्वादिक छः दिशकी जेटली भूमिका मोकली राखी छै ते उपरांत स्वइच्छायें कायायें जईनै पांच आश्रवद्वार सेवणका पचक्खाण । जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ते मांहि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीधी छै ते उपरांत भोगणरा पचक्खाण । जाव दिवसं पज्जुवासामि, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तौ छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा दसमा देसावगासि व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । नेमी भूमिकाथी वस्तु बारथी अणाई होय १ मोकलाई होय २ शब्द करी रूप करी, पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रत—असणं पाणं खाइमं साइमंका पचक्खाण, अबंभ सेवणका पचक्खाण, अमुक मणि सोवनका पचक्खाण, माला वग विले पणका पचक्खाण, सत्थ मुसलादिक सावज्ज जोगका पचक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, पोसामे सज्जा संथारो न जोयो होय, माठी तरे जोयो होय १ न पूंज्यो होय, माठीतरे पूज्यो होय २ उचार, पासवण, भूमिका न जोई होय, माठीतरे जोई होय ३ न पूंजी होय माठीतरे पूंजी होय ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधो होय ५ तस्स

मिच्छामि दुक्कडं ॥ जावतां अवसही आवसही नहीं कीधुं होय, आवतां निसिही निसिही नहीं कीधुं होय, इन्द्र महाराजरी आज्ञा नहीं लीधी होय, थोडी दूर पूंज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन वार वोसरे वोसरे नहीं कीधुं होय, आयनें चोईस थव नहीं कीधु होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमो अतिथि संविभाग व्रत–साधु निग्रंथनें पासु एषणीक शुद्ध, असण १ पाण २ खाइमं ३ साइमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कंवल ७ पायपुच्छणेण ८ (पाडिहारिय) पीढ ९ फलग १० सिज्जा ११ संथारो १२ ओषध १३ भेषज १४ प्रतिलाभतो थको विचरूं एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा बारमा अतिथि सविभाग व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, सूजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय२पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अहंकारभावे दान दीधुं होय, थोडो दे घणो पोमायो होय४ भोजन वेला टाळीनें निमंत्रणा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ १२ ॥

इति वारे व्रत तथा उनके अतिचार समाप्त ॥

अथ संलेखणाकी पाटी ॥

अहभंते अपच्छिम मरणांतिय सलेहणा झूसणा आराहणा पोषध साला पूजीनें,उचार पासवण भूमिका पडिलेहीनें, गमणागमणे पडिक्कमीने,दर्भादिक सथारो संथारीने, दर्भादिक संथारे दुरुहीने, पूर्व तथा उत्तर दिशि पर्यंकादिक आसणें वैसीने, करयलसपरिग्गहिय सिर

सावत्तं मत्थए अंजली त्ति कट्टु, एवं वयासी, नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं, एम अनंता सिद्धजीनें वंदना नमस्कार करीनें नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव ठाणं संपविउं कामे, इम दूजो नमोत्थुणं शुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थंकर महाराजनें वंदना नमस्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें, साधु प्रमुखचारे तीर्थ खमावीने, सर्वजीव राशि खमावीने, पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे, तेना जे अतिचार दोष लागा छे, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमी, निंदी, निःशल्य थई, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि। सव्वं मोसावायं पच्चक्खामि। सव्व अदिन्नादानं पच्चक्खामि।सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि। सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि। सव्वं कोहं माणं जावमिच्छा दंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं पच्चक्खामि। जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, करंतं पि नाणुजाणामि, मणसा वयसा कायसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चखीनें, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए। एम चारे आहार पच्चक्खीने, जं पीयं, इमं सरीरं इट्ठं कंतं, पियं मणुन्नं मणामं धिज्ज विसासियं समयं अणुमयं बहुमयं भंडकरंडगसमाणं रयण करंडगभूयं माणसियं माणं उन्हं, माणं खूहा,माणं पीवासा,माण वाला, माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फियं, संभीमं सन्निवाइयं, विविहा रोगायंका, परिसहोवसग्ग, फासा फुसंति, एवं पियणं, चरमेहिं उस्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि त्ति कट्टु। एम शरीर वोसिरावीनें, काळ

अणवकंखमाणे विहरामि। एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, इहलोगासंसप्पउ गे१ परलोगासंसप्पउगे२ जीविया संसप्पओगे ३ मरणाससप्पओगे ४ कामभोगाससप्पओगे ५ मा मज्झ हुज्ज मरणं ते। श्रद्धा प्ररूपणामें फरक आयो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सलेखणासातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्स की पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउ मि आराहणाए, विरउ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कं तो वंदामि जिणे चउव्वीस ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी ॥

तस्स सव्वस्स देवासियस्स अइयारस्स दुब्भासियं दुचिंतियं आलोयते पड़िक्कमामि ॥

इति तस्स सव्वस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ चत्तारि मंगलं की पाटी ॥

चत्तारि मंगल, अरिहंता मगल, सिद्धा मंगल, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगल; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरण पवज्जामि, अरिहं ते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि साहु सरण पवज्जामि, केवलिपण्णत्त धम्म सरणं पवज्जामि॥

अरिहंतांरो सरणो, सिद्धांरो सरणो, साधांरो सरणो, केवलि प्ररूपित दया धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्गति हरणा, और सरणो नही कोय; जे भव्य प्राणी आ दरै तो अक्षय अमर पद होय ॥

इति चत्तारि मगलं की पाटी समाप्त ॥

अथ अठारे पाप स्थानककी पाटी ॥

अठारे पाप स्थानक आलोउं। पैलो प्राणातिपात १ दूजो मृषावाद २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैथुन ४ पांचमो परिग्रह ५ छठ्ठो क्रोध ६ सातमो मान ७ आठमो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो द्वेष ११ बारमो कलह १२ तेरमो अभ्याख्यान १३ चवदमो पैशुन्य १४ पनरमो पर परिवाद १५ सोळमो अरति रति १६ सतरमो माया मोसो १७ अठारमो मिथ्या दर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय सेवाया होय, सेवता प्रति भलो जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाटी समाप्त ॥

अथ खमासणाकी पाटी ॥

इच्छामि, खमा समणो, वंदिउं जावणिज्जाए, णिसीहिआए (प्रथम स्थान) अणुजाणह, मे, मिउग्गह (द्वितीय स्थान) णिसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो, भे, किलामो अप्प किलताणं, बहुसुभेण भे, दिवसो, वइक्कतो (स्थान) जत्ता, भे (चतुर्थ स्थान) जवणि [illegible]) खा मि, खमा [illegible]) आव

ाए, पड़िक्कमामि[30], खमासमणाणं[31], देवसियाए[32] आसा[33]-
ाए, ते[34]त्तीसंणयराए, [35]जंकिचि, मिच्छाए[36], मणदुक्क[37]-
, वयदुक्कड़ाए[38], कायदुक्कड़ाए[39], कोहाए[40], माणाए[41], मा-
, लोहाए[43], सव्वकालियाए[44], सव्वमिच्छोवयाराए[45],
वधम्माइक्कमणाए[46]; आसायणाए[47] [48]जो, मे,[49] अइयारो[50],
ो, तस्स[52], खमासमणो[53], पडिक्कमामि[54], निंदामि[55], गरि[56]-
मि, अप्पाण[57], वोसिरामि[58], (सप्तम स्थान)

थान ७ पद ५८ गुरु २५ लघु २०१ सर्व अक्षर २२६॥)

इति खमासमणाकी पाटी समाप्त ॥

अथ पंच पदांकी वंदना ॥

नमो अरिहंताण, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाण,
नो उवज्झायाण, नमो लोए सव्व साहूण, अर्हत्सिद्धा-
ार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः। पहिले पद णमो अरिहंताण
हतां सर्वश्री अरिहंत भगवंतजी महाराज भणी
हारो वनणा नमस्कार हुई जो। अरिहंतजी महाराज
वा छै। उप्पन्न नाण दंसणधरा अरहा जिन केवली,
घन्य वीस तीर्थंकर, उत्कृष्टा एक सौ सित्तर देवाधि-
व ते मांहे वर्तमान काले वीस विहरमाण श्रीसीमंधर
स्वामी १ युगमंधर स्वामी २ बाहु स्वामी ३ सुबाहु
स्वामी ४ सुजात स्वामी ५ स्वयंप्रभ स्वामी ६ ऋषभा-
नन स्वामी ७ अनंतवीर्य स्वामी ८ सूरप्रभ स्वामी ९
विशाल स्वामी १० वज्रधर स्वामी ११ चन्द्रानन स्वामी
१२ चन्द्रबाहु स्वामी १३ भुजंग स्वामी १४ ईश्वर स्वामी
१५ नेमिप्रभ स्वामी १६ वीरसेन स्वामी १७ महाभद्र
स्वामी १८ देवजस स्वामी १९ अजितवीर्य स्वामी २०।

चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी करी विराजमान, १००८ लक्षणका धरणहार, त्रिलोक महिया, त्रिलोक वंदनीक, चौसठ इंद्रांरा पूजनीक, अठारे दोषां रहित, द्वादश गुणां करके विराजमान अनंतो ज्ञान १ अनंतो दरसण २, अनंतो चारित्र ३ अनंतो वीर्य ४ अशोक वृक्ष ५ सुर पुष्प वृष्टि ६ दिव्य ध्वनि ७ चामर ८ सिंहासन ९ भामंडल १० देव दुंदुभि ११ छत्रधारे १२। जघन्य दोय कोड केवली, उत्कृष्टा नवकोड़ केवली, वैरे, विचरै, जां महापुरुषांने म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमाड़ छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि संमाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि॥ ऐसे तिक्खुत्ताको पाठ तीन वार कहिये॥ १॥

२ दूजे पद नमो सिद्धाण कहतां सर्व सिद्धजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो। सिध्दजी महाराज कैवा छै सकल, कार्य सिद्ध करीने आठ कर्म खपाय, पनरे भेदे सिद्ध सिद्धा॥ तीर्थसिद्धा १ अतीर्थसिद्धा २ तीर्थंकरसिद्धा ३ अतीर्थंकरसिद्धा ४ स्वयं बुद्ध सिद्धा ५ प्रत्येक बुद्धसिद्धा ६ बुद्ध बोहिय सिद्धा ७ इत्थी लिंग सिद्धा ८ पुरुष लिंग सिद्धा ९ नपुंसक लिंग सिद्धा १० स्वलिंगी सिध्दा ११ अन्य लिंगी सिद्धा १२ गृहस्थ लिंग सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेक सिद्धा १५॥ आठ गुणां करीने विराजमान–

अनंतो ज्ञान १ अनंतो दर्शन २ अनंतो सुख ३ क्षायिक समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरु-लघु७अनंत अकरण वीर्य ॥ ८ ॥

अडिल्ल छंद ॥

अविनाशी अविकार परम रसधाम है, समाधान सरवंग सहज अभिराम है। शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है, जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ १ ॥ जठै जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, सोग नहीं, भूख, नहीं, तृषा नहीं, चाकर नहीं, ठाकर नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, दुःख नहीं, दारिद्रय नहीं, एकमे अनेक, जोतमे जोत विराजमान, एवा अनंता सिद्ध भगवंत छे, जाने म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड़ मान मोड खमाऊ छु, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिक्खुत्ताका पाठ ३ कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पद नमो आयरियाण कहतां सर्व आचारजजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ आचारजजी महाराज कैवा छै ॥ ज्ञानाचार १ दसणाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप आचर ५ ए पांच आचार पाळे; पांच महाव्रत पाळे ५ पांच इन्द्रिय वश करे ५ चार कषाय टाळे ४ नव वाड सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे ९ पच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध आराधे ॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महा-

राज अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जां महापुरुषां नें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारवार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊ छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन काया ए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ तिक्खुतो तीन वार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवज्झायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्यायजी महाराज कैवा छै। उपाध्यायजी, गणधरजी, स्थविरजी वहुश्रुतजी, इग्यारे अग—आचारांग १ सुयगडांग २ ठाणांग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासकदसा ७ अंतगड़दसा ८ अनुत्तरोववाईदसा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक ११ ॥ वारे उपांग—उव्ववाई १ रायप्पसेणी २ जीवाभिगम ३ पन्नवणा ४ जंवूद्वीपपण्णत्ती ५ चंदपण्णत्ती ६ सूरपण्णत्ती ७ निरयावलिया ८ कप्पविडंसिया ९ पुप्फिया १० पुप्फचूलिया ११ वन्हिदिसा १२॥ मूल सूत्र चार—उत्तराध्ययन १ दसवैकालिक २ नंदी सूत्र ३ अनुयोगद्वार ४ छेद च्यार—दशा श्रुतस्कंध १ वृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ ॥ वत्तीसमो आवश्यक ॥ आदि देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अंग वारे उपांग चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पच्चीस गुणे करी विराजमान, तथा चउदे पूर्व इग्यारे अंग भणे भणावे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय प्रमाणके जांणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोईपण जेने विवादमें छलवाने समर्थ नहीं, सूत्र पाठका दातार उपाध्यायजी महाराज, जांने म्हारो वनणा नमस्कार हुई

जो । कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारवार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ पछै तिक्खुत्तोरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सव्वसाहूण कहतां लोकरे विषै सर्व साधुजी महाराजभणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ साधुजी महाराज कैवा छै । स्व पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री१००८ श्री श्री स्वामीजी श्रीरामचद्रजी श्रीप्रसन्नचंद्रजी महाराज (तथा इण ठिकांणे आपजी आपके गुरुका नाम कैणा ॥) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी,पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, वयांळीस दोप टाळीने आहार पांणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, वावीस परिसहांरा जीतणहार, वावन अनाचारके टालनहार, तेड्या जाय नहीं, नूत्या जीमे नहीं, निर्लोभी, निर्लालची, सूरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग साधे, भगवान्‌की आज्ञामें विहरै विचरै, शुद्ध सयम पाळे, सत्ताईस गुणां करी विराजमान पंच महाव्रत पाळै ५ पांच इंद्रिय वश करै १० च्यार कषाय टाळै १४ भाव सच्चे १५ करण सच्चे १६ जोग सच्चे १७ क्षमावत १८ वैराग्यवंत १९ मन समाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ कायसमाधारणीया २२ नाण संपन्ने २३ दसण सपन्ने २४ चारित्त संपन्ने २५ वेदनी समा अहियासणिया २६ मरणांतिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजने म्हारो वनणा नम-

स्कार हुईजो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाऊ छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन काया‌ए करी मुजो मुजो वनणा नमस्कार हुईजो। पछै तिक्खुत्तारो पाठ तीन वार कहणो ॥ ५ ॥

ए पंच पद लोकमे महा मंगालिक छै, महा उत्तम छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भव भवमें म्हनें सरणो हुईजो।

इति पंच पदांकी वंदना समाप्ता ॥

अथ आयरिय उवज्झाए की पाटी ॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलि करिय सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

पद १२ गुरु १९ लघु ९१ सर्व अक्षर ११० ॥

इति आयरिय उवज्झाएकी पाटी समाप्ता ॥

अथ खमत खामणा ॥

अढाई द्वीप, पनरे खेत्र मांहे तथा वारे श्रावक श्राविका दान देवे, शील पाळे तपस्या करै; भावना भावै, संवर करै, सामायिक करै, पोसह करै, पड़िक्कमणा करै, तीन मनोरथ चउदे नियम चिंतवे, एक व्रत धारी, तथा बारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते मांहे

मोटांनें हात जोड मान मोड पगे लागी खमाऊं छूं, छोटांनें समुच्चय खमाऊ छूं ॥

इति खमत खामणा समाप्ता ॥

अन चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउदे लाख साधारणवनस्पति काय, दोय लाख वे इंद्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यारलाख देवता, च्यार लाख नारकी च्यार लाख तिर्जच पंचेंद्री, चउदेलाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवाजूण सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोईस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ खामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मेत्ती मे सव्वभूएसु, वेर मज्झ ण केणइ॥१॥[आर्या वृत्तम् । [एव मह आलोइय, णिंदिय गरहिय दुगछियं सम्मं । तिविहेण पडिकंतो, वदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामे मि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवसिक प्रायश्चित्तविशोधनार्थ करेमि काउस्सग्ग ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गठि सहियं मुट्ठिसहियं नवकारसी पोरसी सादा पो-

रसी आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि चऊविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेण वोसिरे ॥

इति समुच्चय पचक्खाण समाप्त ॥

अथ पड़िक्कमणाकी विधि ॥

पैली "चौईस स्तव" कीजै। पछै ऊभो होय आसण छोड "तिक्खुत्तो" कहीजे। पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई, वडा साधर्मी भाइयांकी आज्ञा मांगी "देवसिक पडिकमणा करण की आज्ञा है" इसो कही "इच्छामि णं भंते" की पाटी कहणी। पछै "नवकार" कहणो। फेर "तिक्खुत्ता" को पाठ कही, पैला आवश्यककी आज्ञा मांगी "करेमि भंते" की पाटी कहणी। पछे "इच्छामि ठामि काउस्सग्ग" की पाटी कहणी। पछै "तस्स उत्तरी" की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो। शक्ति नहीं होय तो बैठ सिध्दासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो। काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार "ज वाइध्दं" आदि अर्थरूप चितवणा। पछै समकितका ५ अतिचार "जिन वचनमे शका आंणी होय" इत्यादि चितवणा। पछे वारे व्रतांरां दूजा भागरा एवासूं लगाय एक एक व्रतरा पांच पांच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ संलेहणारा ५ एवं ९९ अतिचार। १८ पापस्थानक तथा "इच्छामि ठामि" की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमे "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" कठेई नहीं कहणो ॥ ने "इच्छामि ठामि" की पाटीमें "ठामि काउस्सग्ग" की जगह "इच्छामि पडिकामिउं" कहणो॥

पछे नवकार मनमें गुणीनें "नमो अरिहंताणं" काउस्सग्ग पाड़ती वगत प्रकट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक सपूर्ण ॥ १ ॥

पछे "तिक्खुत्ताको पाठ कही दूजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही प्रकट "लोगस्स" की पाटी पढणी ॥

इति दूजो चउविसत्थो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

"तिक्खुत्तो" कही तीजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही दोय वार "इच्छामि खमासमणा" की पाटी कहणी। साधु श्रावक दोनु कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ऐ तीन सिवाय कांई नहीं राखै ॥ पाटीमें प्रथम "निसीही" शब्द आवे जद मितावग्रहमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कने बैठणो। पछे गुरुका चरणांके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा ने छ आवर्तकरणा "अहोकायकाय" इण अक्षरांसूं तीन आवर्त्त हुवे है। यथा–दोनु हात लवा कर हातरी दसू आगलियां जमी माथे धर मुखसूं "अ" अक्षर नीचा स्वरसू कहणो। पछे यूही दसं आंगलियां आंखियां ऊपर धरतां "हो" अक्षर ऊंचा स्वरसू कहणो। ओ पैलो आवर्त्त हुवो। यूंहीज "का" ने "य" उचारतां दूजो आवर्त्त हुवे। तथा "का" ने "य" उचारतां तीनो आवर्त्त हुवे ॥ पछै "जत्ता भे जवणिज्जं च भे" इणां अक्षरांसू तीन आवर्त्त हुवे ॥ यथा–प्रथम "ज" मंद स्वरसूं, "त्ता" मध्यम स्वरसू "भे" ऊचा स्वरसू, ऊपरली रीते दोनु हाथ जमी माथे, विचमे (आरती रूप) ने आंख्यां माथे, एक एक अक्षर क्रमसू बोलता लगावणा ॥ ओ पैलो आवर्त हुवो। "ज. व. णि" ऐ तीन अक्षर त्रिविध स्वरसू

ऊपर मुजब उचारतां दूजो आवर्त हुवे। "जं च भे" ऐ तीन अक्षरांसूं पूर्वोक्त रीतिसूं तीजो आवर्त हुवे। ऐसे६आवर्त एकवार गुणतां हुवे। दोय वार पाटी गुणतां बारे आवर्त हुवे। पेले खमासमणामें "वइक्कमं" तांई कहीने "आवसियाए" इण पद ऊपर ऊभो हुवणो, और गुरु चरणांसूं पाछले पगां सरकणो, मितावग्रह बारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो रही शेष पाठ पढणो। दूजा खमासमणामें पूर्वरीते थोड़ो शरीर नमावी "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए णिसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीही "ए पाठ कही गुरुके समीप जाय बैसीने पूर्वोक्त रीतिसू छ आवर्त देणा सारो पाठ बैठो २ पढणो, गुरुके सामे दृष्टि राखणी दूजा खमासमणामें आवसियाए पडिक्कमामि" ए दस अक्षर नहीं कहणा॥

इति तीजो वंदनावश्यक संपूर्ण॥

"तिक्खुत्तो" को पाठ कही चौथा आवश्यककी आज्ञा है ऐसे कही ऊभो होय "आगमे तिविहे" की पाटी सूं लेयने "इच्छामि ठामि" की पाटी पर्यंत ९९ अतिचार काउस्सग्गमें कह्या सो प्रगटपणे कहणां "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" देणो॥ पछे "तस्स सव्वस्स" की पाटी कहणी॥ पछे नीचो बैठ जीवणो गोडो ऊभो राख "नवकार"कहणो। पछे"करेमि भंते"की पाटी कहणी। पछे "चत्तारि मंगलं" की पाटी कहणी॥ पछे "इच्छामि ठामि" की पाटी, पछे "इरिया वहियाए" की पाटी कहणी पछे "तिक्खुतो" गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार भेला कवणकी आज्ञा लेणी। पछे "आगमे तिविहे" की पाटी क-

हणी। पछैं "दंसण श्रीसमकित" की पाटी कहणी ॥ पछे वारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे संलेखणाको पाठ अतिचारां समेत कहणो॥पछे अठारे पाप स्थानककी पाटी कहणी ॥ पछै "इच्छामि ठामि" की पाटी कहणी ॥ अठा तांई जीवणो गोडो ऊचो राखियां बैठो रैणो। पछै ऊ- भो होय हात जोड़ "तस्स धम्मस्स" की पाटी कहणी ॥ पछै "इच्छामि खमासमणा" की पाटी पूर्वोक्तरीतिसूं दोय वार कहणी ॥ पछै आज्ञा लेई, ऊंदा गोडां वैसी, दोनु हाथ जोड़ी, मस्तक जमीके लगावी, पांच पदांकी वंदना करणी ॥ पछे ऊभो होय "आयरिय उवज्झाए" की पाटी कहणी ॥ पछे "अढाई द्वीप" को पाठ कहणो॥ पछै "चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वीकाय" इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछै "खामेमि सव्वजीवा"को पाठ कहणो ॥ पछै अठारे पापस्थानक कहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥

"तिक्खुत्तो" को पाठ पढी, पांचवां आवश्यककी आज्ञा है ऐसे कही, "दैवसिकप्रायश्चित्तविशोधनार्थं करेमि काउस्सग्ग" ॥ ओ पाठ कहणो ॥ पछै "नककार" कहणो। पछै "करेमि भते" की पाटी कहणी। पछै "इच्छामि ठामि काउस्सग्ग" की पाटी कहणी ॥ पछै "तस्स उत्तरी" की पाटी कहणी ॥ पछै काउस्स करणो। काउस्सग्गमें "देवसि, राइ" पडिक्कमणामे लोगस्स ४ कहणा। पक्खी पाडिक्कमणामे लोगस्स ८ कहणा। चौमासीपडिक्कमणामे लोगस्स १२ कहणा ॥ सवत्सरी पडिक्कमणामे लोगस्स १६ कहणा ॥ यातो पूज्य जयमल्लजी रुघनाथजी की संप्रदायकी परंपरा है। सूत्रमे ।

१२, चौमासीका २०, संवत्सरी का ४० लोग्गस्स कह्याहै। जयमल्लजी महाराजके संप्रदायकी साध्वी इसी प्रमाणे करै है ॥ किताक आप आपकी आम्नाय प्रमाणे कमती जादा करै है। मनमें "नवकार" गुणी, काउस्सग्ग पाडणो पछे नमो अरिहंताणं" इसो प्रकट कहणो। पछे "लोगस्स" प्रकट कहणो ॥ पांच पदां की वंदनो पछै सारी किया ऊभो २ करणी ॥ शक्ति नहीं हुवे तौ बैठो २ करणी ॥ पछै पूर्वकी परे " इच्छामि खमासमणा " की पाटी दोय वार कहणी ॥

इति पांचमो काउस्सग आवश्यक संपूर्ण ॥

हवे छठा आवश्यकका कामी धन्य है श्रीवर्धमान स्वामी इसो कही, गुरु मुनिराज पासे तथा वडेरा पासे पचक्खाण करै। इणांरो योग नही होय तौ आज्ञा लेयने "गंठिसहियं मुट्ठिसहियं" इत्यादि पाठ पढी धारणा प्रमाणे पचक्खाण आपरे मत्ते करे ॥

इति छट्ठो पचक्खाण आवश्यक संपूर्ण ॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग और पचक्खाण ए ६ आवश्यक मांहे जांणतां अजांणतां जे कांई अतिचार दोष लागो होय तथा पाठ उच्चारतां काना मात अनुस्वार पद अक्षर अधिको ओछो आगो पाछो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अव्रतनो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो, कषायनो पडिक्कमणो, अशुभ जोगनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा मोहेलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ गया कालको पडिक्कमणो, वर्तमान कालको संवर तथा सामायिक, आवता

कालका पच्चक्खाण, तेमां जे दोष लागो होय, अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ थव थुइ मंगलं ॥

इति क्षमापन संपूर्ण ॥

पछे नीचो बैठ, डावो गोडो ऊंचो राख, दोय "नमोत्थुणं पूर्ववत् पढणा ॥ पछे ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रते पंचांग नमाय, "तिक्खुत्तो" का पाठसूं १००८ वार वंदना करूं छूं इम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वंदना करवी । पछे उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणांने वंदना करीने अपराध खमावणो । पछे तपस्वी साधर्मी भाइयांसूं खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछे सारा साधर्मी भाइयां सू खमत खामणा करणा अने सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामे "मिच्छामि दुक्कड" आवे तठै दिवस संबधी मिच्छामि दुक्कडं देणो॥ राइ पडिक्कमणामे रात्रि संबंधी कहणो । पक्खी पडिक्कमणामें देवसि पक्खी सबधि कहणो । चौमासीमें देवसि चौमासी संबधी कहणो । संवच्छरी पडिक्कमणा में देवसि संवत्सरी सबंधी मिच्छामि दुक्कडं कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्त ॥

॥ अथ दश पच्चक्खाण ॥

गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए । सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्सउ, अट्ठेव य अंबिलंमि आगारा । पंचेव य भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउदो अभिग्गहे,

निव्वीए अट्ठ नव य आगारा । अप्पाउरणे पंचउ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि । चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसि पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साड्ढपोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति॥३॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढ पच्चक्खामि चउव्विहं पिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं१सहसागारेणं २पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं५महत्तरागारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं७ वोसिरे ॥इति॥४॥

५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइम अनत्थणाभोगेणं१सहासागा-

रेणं २ सागारिआगारेणं ३ आउंटण पसारेणं ४ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाण को पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाण पच्चक्खामि दुविहं तिविहं चउव्विह पि आहारं असणं पाण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारियागारेण ३ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ४ पारिट्ठावणियागारेण ५ महत्तरागारेण ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ७ वोसिरे ॥ इति ॥

७ अथ आयंबिलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सुरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थससट्ठेण ४ उक्खित्तविवेगेण ५ पारिट्ठावणियागारेण ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेण ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठ पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेण २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ वोसिरे ॥ इति ॥ ८ ॥

९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविह पि आहारं असण खाइम साइम अन्नत्थणाभोगेण १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिव-

श्रीजिनराज महाराज चौवीसां जिनवरजी, तुम रखो हमारी लाज सुनो गणधरजी॥टेर॥श्रीऋषभ अजित संभव अभिनंदन स्वामी, सुमति पद्म सुपार्श्व नमो शिर नामी। श्रीचंद्रप्रभ सुविधिनाथ शीतल गुण गाऊं,श्रीश्रेयांस वासुपूज्य महाराजकूं सीस नमाऊं ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्रीविमल अनंत धर्मनाथ शांति जिनदेवा, श्रीकुंथुनाथ अरनाथकी करतहूं सेवा। श्रीमाल्लिनाथ मुनि सुव्रत व्रत मोय दीजो, नमिनाथ नेम महाराज पार मोय कीजो ॥ श्री० ॥ २ ॥ श्रीपार्श्वनाथ महावीर शरन रहूं तेरी, मैं छूं चरनको दास अरज सुनो मेरी। तुम चरनकी शरन विन काल अनंत गमाये, अब जन्म भये मुज सफल चरन तुम पाये ॥ श्री० ॥ ३ ॥ हुवो चउवीसो महाराजको शरनो हमारे, तुम विन नाथ अनाथ कहो कुन तारे। प्रभु दीन दयाल कृपाल सुनों तन मनकी, तुम खैंचो हमारी डोर सुरत दर्शनकी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तुम दर्शन विन महाराज काज मुज विघर्‍यो, तुम दर्शन विन महाराज काल बहु भटक्यो । मुनि राम कहे महाराज पूरन करो आशा, मुज रखो चरनके पास न करियो निराशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति

३ गोरल ईसरजी कवे तो हँसकर बोलना हे ॥ एदेशी ॥

म्हे तो चौवीसे जिनवर वांदसांजी, जिन साथे प्रीति सॉधसांजी ॥ टेर ॥ पेला ऋषभ अजित तीजा संभवाजी, चौथा अभिनदन सुखकारी, पंचम सुमति सदा हितकारी, छठा पद्मप्रभ वलिहारी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ सप्तम सुपास चंद्रप्रभ आठमाजी, नोमां सुविधि

विधिके दाता, दशमा शीतल तपत मिटाता, ग्यारमा श्रेयांसे शिव दिखलाता ॥ म्हे० ॥ २ ॥ बारमां वासुपूज्य भावे पूजियेजी, तेरमा विमलै विमल करनारा, करे अनंत अंत करमांरा, पनरमा धर्म धर्म दातारा ॥म्हे० ॥३॥ नमो शांति करन जग सोलमांजी, सतरमां कुंथुं नमूं शिर नामी, ठारमा अर नमूं शिवगामी, वदूं मल्लिनाथ गुण धांमी ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ वीसमा मुनि सुव्रत व्रत देत है जी, इकीसमा नमीनाथ हित करना, वदूं नेमनाथके चरना, वंदूं पार्श्वनाथ दुखहरना, चौवीसमा वीरं प्रभु सिमरना, आये राम तिहारे सरना ॥ म्हे ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी ने वदसांजी, वदूं वर्तमान जिनवीसो, वंदूं गणधर सकल जगीसो, नाऊ अर्हत् साधने सीसो ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अतमृरससंग्रहे
चौवीसी नामक प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

वाणी ॥

१ लाज मेरी रख ले भवॉनी ॥ ए देशी ॥

चतुर नर सुनिये जिन वानी, सदा महा सुकृतकी खांनी। सुणे सब इंद्र इंद्राणी, सु नकरै सफली जिंदगानी ॥ च० ॥ आंकड़ी ॥ प्रभुजी परगट फुरमावे, सुरनर सुणवेक् आवे, सुणतां संशय मिट जावे, तुरत ही अमरा पद पावे। अमरा पदकूं पावही, सुन जिनवरना वैण, दैण मिटे भव तापनी, खुलेज अतर नैण। उसीकूं कहिये निर्वानी ॥ च० ॥१॥ वाणी मुक्तीकी दाता, करे सब आनद सुख

साता, चिंता सब मेटत है मनकी, पीड़ा सब टारत है तनकी । पीड़ा टले शरीरकी, वरते मंगलाचार, वाणीके परभावसूं, हुवेज खेवो पार, उसीकूं कहिये छे ज्ञानी ॥ च० ॥ २ ॥ महिमा वाणीकी भारी, सुणे छे पुन्यवंत नरनारी, हुवा सब शिव पद अधिकारी, अथवा सुरवर अवतारी । पावे सुर अवतारकूं, जिसका दिल हे साफ, जम जिसीको कहा करे, दुर्गति हुय गई माफ, दुष्टके मन ही नहीं मानी ॥ च० ॥ ३ ॥ केशव चर्क्री जिनराया, जे कोई अविचल पद पाया, राम सब हूवा छे इनसें, नमो नमो करिये छे जिनसें । नमो नमो श्रुतदेवकूं,सुधरे दोनु लोक, इह लोके सुख संपदा, परभव पामे मोख, करे भव थिति ही की हांनी ॥ च० ॥४॥ है सब वाणीकी माया, इसीका गणधर गुण गाया, किसीने पार नहीं पाया, राम मुनि सरणे ही आया । श्रद्धे वचन जिनराजके, जिसके सुधरे काज, भव भवमें जिन वचनको, शरण हुवो महाराज, मुक्तिकी ऐही ऐनांणी ॥ च० ॥५॥ इति ॥

२ रमो रमो ए चेलकियाँ फूंदाली ड़ोरी ॥ ए देशी ॥

संशय छेदन तारनी भगवतकी वानी, जुड़े न जगमें जोड़ ॥ वारी हे भगवतकी वानी ॥ सरध्यां पार उतारनी ॥ भ० ॥ सुणजो थे मन धर कोड ॥ वा० भ० ॥ १ ॥ सुण सुणने म्हे श्रद्धस्यां ॥ भ० ॥ म्हे जोसां हो भर भर नैंण ॥ वा० ॥ पाखंड मत म्हे छोड़स्यां ॥ भ० ॥ सुणसां म्हे सतगुर वैंण ॥ वा० भ० ॥ २ ॥ जीव अजीव म्हे ओलख्या ॥ भ० ॥ जाण्या म्हे पुन्य ने पाप ॥ वा० ॥ आश्रव संवर जाणीया ॥ भ० ॥ निर्जरा बंध मोख स्याफ ॥ वा०

भ० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मत वीरनो ॥ भ० ॥ नय निक्षेप प्रमांण ॥ वा० ॥ सुण्यां विना किम जांणीये ॥ भ० ॥ करे मूढ खैंचातांण ॥ वा० भ० ॥४॥ परदेशी संयति पापीया ॥ भ० ॥ छिनमें हो उतरया पार ॥ वा० ॥ रामचंद्र सूत्र तारसी ॥भ०॥ दूजो नहीं तारणहार ॥ वा० भ० ॥५॥ इति

३ राग पेमासरी ॥

सूत्र हृदय धरो, गुरु मुखसेती निरनय करो ॥ सू० ॥ भव सागरथी वेग तरो ॥ टेर॥ सूत्र गणधर देवकह्यो, अरिहंत देवसूं अर्थ लह्यो, शुद्ध उचरो ॥ गु० सू० भ० ॥१॥ सूत्र धर्म खरो, इन बिन कबि तुम नांहीं तरो, इन बिन कबि तुम नांही तरो, इनके जोरसूं खूब अरो, मती डरो ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु चरन ग्रहो, स्याद्वादको भेद लहो, स्याद्वादको भेद लखो, इन बिन नाहक कांई बको, मिथ्यात हरो ॥ गु० ॥ ३ ॥ द्वे प्रमान करी, सप्त नयसूं ठीक परी, सप्त नयसूं ठीक परी, मुनि रामचंद्र तो इम उचरी, गुरु पद पकरो ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

४ गाढा मारू वसोनी आजकी रैंनमें ॥ ए देशी ॥

सूत्र सुणोनी नित भावसूरे, जीवा सूत्रकी मोटी छै वात, म्हारा ज्ञानी जिवडा, सूत्र सुणोनी नित भावसूं, सुणू सुणूं तू स्यूं करे रे, जीवा सुणोनी दिवसने रात ॥ म्हारा० सू० ॥ १ ॥ सूत्र सो धर्म न दूसरोरे, जीवा सूत्रने वाचे शुध साध ॥ म्हारा० ॥ सूत्र तो गणधर गूंथियारे, जीवा सूत्रको ज्ञान अगाध ॥ म्हारा० सू० ॥ २ ॥ सूत्र लुपक केई जागियारे, जीवा उत्सूत्र प्ररूपे मूढ ॥ म्हारा० ॥ मनसू कल्पना केलवे रे, जीवा तांणे आपणी

रूढ ॥ म्हा० सू० ॥ ३ ॥ सूत्र अरथ नहीं ओळखे रे, जीवा ज्ञानकी करे छे उत्थाप ॥ म्हा० ॥ ते डूबे डबोवे ओरने रे, जीवा करे क्रियाकी थाप ॥ म्हा० सू० ॥४॥ सूत्र वचन सिर पर धरो रे, जीवा मेटो मिथ्यात घोर ॥ म्हा०॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो रे, जीवा सूत्र समो नहीं और ॥ म्हा०सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ कोटारे तूं वडो अमीर, जाय वस्यो चामलकी तीर ॥ ॥ ए देशी गजल ॥

अरिहंत वाणी वडी पुनीत, जिणमांहे तौ आछी रीत, भांत भांतका जिणमे भाव, सुरनर सुणवा रक्खे चाव ॥ वावा वाणी वावाजी, भगवतकी वाणी वावाजी ॥ १ ॥ आप आपनी भाखा सारे, समझे नर सुर पशू विचारे, संशय जावे उपजे हर्ष, सुणतां टारे तिर्यच नर्क ॥वा०॥२॥ प्रथमानुयोग धुर साक्षात, पुरुषोत्तमकी जिणमे वात, पद्मपुराण रु आदिपुराण, ज्ञाता सूतर भगवतवान ॥ वा० ॥ ३ ॥ द्वितीयो छै चरणानुयोग, पदारथ नवको जहां उद्योत, पन्नवणा भगवत्यादि जांन, गोमट्टसारादि तंत्र प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ करणानुयोग तृतीयो होय, साध श्रावककी करणी जोय, आचरांगे मुनि आचार, उपासकाये श्राद्ध विचार, मुन्याचार अरु श्रावकाचार, भिन्न भिन्न जिनमे विस्तार ॥ वा० ॥ ५ ॥ द्रव्यानुयोग चौथा देख, अध्यातमको रूप विशेख, ध्यानारूढतणो मंडान- जिनसे उपजै केवल ज्ञान, जोग शास्त्र नाटक समय- सार, इन शास्त्रांकूं दृढ उरधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ उलू न सूझे सूर्य प्रकाश, मखीन सूंघे शुद्ध सुवास, जिनवानी सुनि

धरे मन रोष, कहोनि कहिये किसका दोष ॥ वा० ॥ ७ ॥ समझें न इसमें पूरे ढोर, अथवा उसके कर्म कठोर, मुनि राम कहे सुनिये पख छोर, मूरखसें नहिं करिये झोर ॥ वा० ॥ ८ ॥ इति ॥

६ सूयर सूतोरे चंपलारा बागमें रे ॥ ए देशी ॥

गौतम गणधर कीयो चांनणो रे,राज कांई ज्ञान दिवाकर होई रे, भवि जन रूपी कमल विकसिया रे,राज कांई दीयो मिथ्या तम धोई रे ॥गो०॥१॥ ज्ञान तो च्यार चवदे पूरवी रे, राजकांई पूछ्या है जांण अजांण रे, वीर जिनेश्वर सह्रू फुरमाविया रे, राज कांई सुणतांई परम कल्याण रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पचम अंग उमंगे पूछिया रे, राज कांई परसन छतीस हजार रे, ओरही अंग उपांगे मूल छेदमें रे, राज कांई प्रश्नतणो नही पार रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ प्रश्नकारक गौतम सारीखा रे, राज कांई उत्तर दायक जिनराय रे, टीकाकार निर्वाह कीयो भलो रे, राज कांई उत्तम वांचे मुनिराय रे ॥ गो०॥४॥ पुन्यवंत वांचे पुन्यवत सांभळे रे, राज कांई सरधे सोई पुन्यवंत रे, आज आधार छै श्रीजिन वचनको रे, राजकांई प्रत्यक्ष ऐही भगवंत रे ॥ गो० ॥ ॥ ५ ॥ सूत्र सरीखो जग धर्म छै नही रे, उत्सूत्र सरीखो नही दोप रे, मुनिराम कहे छै सगळा सरध जो रे, राज कांई सूत्र थकी होय मोख रे ॥ गोतम गणधर कीयो जग चांनणो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससग्रहे वाणीनामकं द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

तत्वविचार-गीत ॥

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भोजायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मेल्यो जल जमुनाकी तीर रे, कोई आपजरे, पधाऱ्या चंपा वागमें ॥ ए देशी॥

षट् † द्रव्ये पुद्गल १ जीव २ प्रणामी दोय रे, कोई च्यार ज रे, अप्रणामी शेप जानिये; षट् २ द्रव्यमें जीव १ एकही होय रे, कोई पांचजरे अजीव निश्चय मांनिये ॥१॥ पंच अमूर्ति पुद्गल मूर्तिक देख रे, कोई काल ज रे अप्रदेशी, ‡ सप्रदेशी पांच छै, धर्माधर्म आकाश तीनूं एक रे, कोई बाकी रे अनेक कहियो सांच छै ॥ २ ॥ एक क्षेत्राऽऽकाश § क्षेत्री पंचही जांण रे, कोई ¶ साक्रिय रे पुग्गल जीव पिछांनिये; च्यार ‖ अक्रिय भगवत वचन प्रमांण रे, × नित्य च्यार ज रे अनित्य पुग्गल जंतु जांनिये ॥ ३ ॥ षट् द्रव्य-

---

दुण्णिये १ एग २ एग ३, पच ४ तिये ५ एग ६ दुण्णि ७ चउरोय ८ पचय ९ एग १० एग ११ एगदस १२ एय उत्तर णेय ॥ १ ॥

† षट् द्रव्य निश्चय नय परिणामी छै व्यवहार नये जीव १ पुद्गल २ परिणामी छै धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ एच्यार अपरिणामी छै

‡ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ असख्यातप्रदेशी छै आकाश अनत प्रदेशी छै जीव असख्यातप्रदेशी छै पुद्गल अनतप्रदेशी छै

§ क्षेत्रमस्यास्तीति क्षेत्री क्षेत्री पाँच छै यथा—धर्मास्तिकाय १ अधर्मस्तिकाय २ जीव ३ पुद्गल ४ काल ॥ ५ ॥

¶ निश्चय नय करी छ द्रव्य साक्रिय छै व्यवहार नय करी जीव १ पुद्गल २ ऐ दोय सक्रिय छै

‖ अक्रिय यथा—धर्मास्तिकाय १ अधमास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ॥४॥

× निश्चय नये षट् द्रव्य नित्य छै व्यवहार नये च्यार नित्य छै यथा धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ॥ ४ ॥

नें कारण जीव एक रे, कोई पांचज रे अकारणमांहे लेखि- ये;*कर्ता एक छे जीव द्रव्य विशेप रे,कोई पांचजरे अक- र्तामांहे पेखिये ॥ ४ ॥ द्रव्य पद्मे सर्व गत आकाश रे. कोई पांच जरे लोक प्रमांणे छे सही; मुनि राम कहे छे करिये शुद्ध अभ्यास रे, कोई द्रव्य ज रे कोईमे कोई मिलतृ नहीं ॥ ५ ॥ इति ॥

गाहा ॥

परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एक ५ खित्त ६ किरियाय ७ णिचं ८ कारण ९ कत्ता १० सव्वगई ११ इयर १२ अपवेसा ॥ १ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ रास ॥

धर्मास्तिकाये च्यार †गुण छे नित्यरे, कोई अरूपी रे १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय छे ४; पर्याय च्यार खंध पिण छे नित्यरे, कोई देश प्रदेश ज रे अगुरु लघु अनित्य कहाय छे॥१॥एव ‡अधर्मा§काश ¶नित्यानित्य जोय रे, कोई ||काल ज रे तेहना भेद कहतह्न; गुण ४ प-

* निश्चय नये पट् द्रव्य कर्ता छे व्यवहार नये एक जीव ही कर्ता छे

† धर्म द्रव्यना गुण च्यार छे यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गतिसहाय ४ पर्याय पण ४ छे यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

‡ अधर्मास्तिकायना गुण ४ छे यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ थिति सहाय ४ ॥ पर्याय पण ४ छे यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरु लघु ४ ॥

§ आकाशास्तिकायना गुण ४ छे यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अवगाहदान गुण ४ ॥ पर्याय पण ४ छे यथा खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

¶ गुण च्यार ने खंध ए पांच नित्य ॥ देश १ प्रदेश २ अगुरुलघु ३ ए तीन अनित्य॥

|| काल द्रव्यना गुण ४ छे यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ वर्तमान ४ ॥ पर्याय पण ४ छे यथा— अतीत काल१ अनागत काल२ वर्तमान काल३ अगुरु लघु४॥ नित्यगुण ४ अनित्य पर्याय ४ ॥

र्याय ४ नित्या ४ नित्य ४ होय रे, कोई त्रय* काल जो अगुरु लघु च्यारे गहलहूं ॥ २ ॥ †पुद्गल द्रव्यना गुण नित्य कहिये च्यार रे, कोई रूपी रे १ अचेतन २ सक्रिय गलमिल ४ देख हो; पर्याय च्यारे अनित्य विचार रे कोई वर्ण ज रे गंध फर्श अगुरु लघु पेख हो ॥ ३ ॥ जीव द्रव्यना गुंण पर्याय सात रे, कोई नित्य ज रे एक अनित्य बोल हो; अनंत ‡चतुष्टय च्यार गुण साक्षात रे कोई तीन ज रे पर्याय एहमे खोल हो ॥ ४ ॥ अव्याबाध १ अवगाहन २ अमूर्ति ३ ए तीन रे,कोई सात ज रे नित्य एहनें जांण हो; कहो कहो अगुरु लघु अनित्य पर्यायीनरे, मुनि राम जरे कहे गुरु मुख बोल पिछांण हो॥५इति

तुरेकी देशी ॥ कोटे पाटणमें प्रसिद्ध छे ॥

ज्ञान तो वायो ना ऊगे रे,ज्ञानी तुररो रे; कोई ज्ञान लागे डार,वैरागी तुररो रे, ज्ञान उधारो नां मळे ॥ ज्ञा० कांई भटकत फरेरे गॅवार ॥ वै० ॥ १ ॥ दाम दीयांसुं न मळे रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दिशावर दूर ॥ वै० ॥ ग्रंथ जोयो न मळे ॥ ज्ञान० ॥ कोई मेनत करोरे भरपूर ॥ वै० ॥ २ ॥ भेप अनेक कवि चातुरी रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न कीये शिर फोड़ ॥ वै० ॥ ज्ञान हीयामें ऊपजे

---

* अतीत १ अनागत २ वर्तमान ३ ॥

† पुद्गल द्रव्यना गुण च्यार छे यथा रूपी १ अचेतन २ सक्रिय ३ पूर्ण गलन गुण पर्याय पण ४ छे वर्ण १ गंध २ रस ३ फरस ४ अगुरु लघु सहित

‡ जीव द्रव्यना गुण ४ छे यथा—अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत चारित्र अनंत वीर्य ४ ॥ पर्याय पण ४ छे यथा अव्याबाध १ अवगाह २ अमूर्तिक ३ अगुरु लघु ४ ॥ जीव द्रव्यना नित्य पदार्थ सात छे यथा गुण ४ ने पर्याय ३ तेमने ५ अनित्य एक छे अगुरु लघु ॥

॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दूजी ठोर ॥ वै० ॥ ३ ॥ ज्ञान अभ्यास तो कीजिये रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई ज्ञान समो नहीं कोयरे ॥ वै० ॥ मुनि राम कहे सहु सांभळो रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई ज्ञान विना पशु होय ॥ वै० ॥ ४ ॥ इति ॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

सत गुरु मुझने तारिये, गुरु ज्ञानीजी, मोनें करिये भवोदधि पार, सत गुरु ज्ञानीजी; जीवाजीव वताविये ॥ गु० ॥ मोने देवोनी ज्ञान विचार ॥ स०॥ १ ॥ जैन धर्म पायो दोहिलो ॥ गु० ॥ मुझ देवोनी भेद वताय ॥ स० ॥ देव कौनसा धारिये ॥ गु० ॥ गुरु करिये किसा मुनिराय ॥ स० ॥ २ ॥ धर्म धर्म सबको कहे ॥ गु०॥ पिण सत्य धर्म छै कौन ॥ स० ॥ कौन ठिकांने बोलिये ॥ गु० ॥ रखी कहो कहां मौन ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान सेती भवोदधि तरो ॥ ॥ गु० ॥ चेतन लक्षण जीव ॥ स० ॥ जैन धर्म जग दोहिलो ॥ गु०॥ जिणसूं लगे मुगतकी नींव ॥स०॥४॥ देवाधिदेव अरिहंत छै ॥ गु० ॥ गुरु छै शुद्ध निग्रथ ॥स०॥ जिन आज्ञा धर्म मानिये ॥ गु० ॥ ओही मुक्तको पंथ ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ मौन रखो तुमे पापमे ॥ गु० ॥ धर्मम रहोनी वाचाल ॥ स० ॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो ॥ गु० ॥ सत गुरु चरणांने झाल ॥ स० ॥ ६ ॥ इति

५ खेलण दो गिणगोर पन्नामारू ॥ खे० ॥ ए देशी ॥

समय सार सिद्धांत बखांने, जीव छै पंच प्रकार, जीवाजी ॥ जी० ॥ समय० ॥ जिनको ऐ अधिकार ॥ जि०स०जि० ॥ टेर ॥ डूघा १ चूंघा २ सुघा ३ ऊंघा ४ धुघा ५ पंचम धार, न्यारा न्यारा भेद बताऊं, सुनजो

हीये विचार २ ॥ स० १ ॥ डूंघा कर्म कलंक विना प्रभु, वचन अगोचरकार; सिद्ध पदकूं तो सेवे सदाई, सो वंदूं वारंवार २ ॥ स० २ ॥ चूंघा चतुर शिव अधिकारी, व्यसनादिक परिहार; गुरुके वचन प्रेम धरीनें, चूंघे जैसे वार २ ॥ स० ३ ॥ हीये दुष्टता रक्खे नांही, सुनवासेती प्यार; परमारथ कछु समझे नांही, सो सूंघा मूढ गिवार २ ॥ स० ४ ॥ विकथा जिसको प्यारी लागे, आगम ऊपर खार; विषयी पापी दुष्ट हीयेमें, सो ऊंघा कोप अपार २ ॥स०॥५॥ मन वचन नहीं श्रवण जिसीके, जड़वत सूरत हार; एकेंद्री हुय जगमें डोले, सो घूंघा घोर संसार ॥ २॥ स० ६ ॥ डूंघा केवली सूघां ऊघां, दोनूं मूढ उचार; मुनि राम कहे चूंघा छै उत्तम, शिवपुर साधनहार २, चेतनजी ॥ शि०स० ॥ ७ ॥ इति ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

अपना रूपमें रमन करो थे, पुद्गल मोह निवार, चेतनजी ॥ पु० ॥ अपना रूपमे रमन करो थे, ज्ञान पायाको सार २ ॥ अ० ॥ १ ॥ तूं छै चेतन एछै अचेतन, ज्ञायक तूं संसार; अज्ञायक ऐ नित्यको जड़ छै, देखो ज्ञान विचार; २ ॥अ०॥२॥ तूं अमूर्तिक मूर्तिक ऐ तो, दीसे नानाकार, तूं अविनाशीक नाशक ऐ छै, तू तेरो आपो संभार २ ॥ अ० ॥ ३ ॥ ज्यू कलधौत सोनारकी संगत, भूखन नाम अपार; कंचनता किह भांत न जावे, जो करिये लाख प्रकार२॥अ०॥४॥ज्यूं नट एक धरै बहु वेष,देखे लोक तिवार; नट तो अपनो रूप पिछांनें, ज्यूं चेतन गुन धार २ ॥ अ० ॥ ५ ॥ निज स्वभावको भूले नांहीं,पर स्वभाव विसार; मुनि राम कहै ऐ भाव रहे तो, जद लेखे जमवार ॥ २ ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ लावणी ॥

१ वर जोरी नहीं मिली सखीरी मैं जवान बालम छोटा ॥ ए देशी ॥

चवदे गुण श्रोताका कहिया, सुनके सब हिरदे धारो, इण भवमांहे सोभा पावो, पर भव तो सुधरे न्यारो ॥ टेर ॥ भक्ति वंत ऐ गुण छै पेलो, मीठा बोलो है बीजै; तीजे गर्व विन रुचि है चौथे, पचम एकाग्र चित्त लीजै ॥ च० ॥ १ ॥ छठे सुणे सो परगट बोले, सातमे प्रश्नजांण खरो; आठमे बहु शास्त्रको सुणियो, नवमे आलस दूर करो ॥ च०॥२॥ दशमो गुण निद्रा नहीं लेवे, ग्यारमे बुधवंत छै भारी; बारमो गुण दातारपणेको, तेरमे गुरु गुण विस्तारी ॥ च०॥३ ॥ चवदमो गुण तो मोटो सबसे, निंदा बिलकुल नही जेहने; वाद विवाद करै नहीं बोले, मुनिराम कहै धन्य छै तेहनें ॥ च०॥ ४ ॥ इति श्रोता गुण १४ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ वक्ता गुण ॥ १४ ॥

वक्ताके गुण चवदे कहिये, पुनांसे वक्ता पद पावे; धर्म दृढावे शोभा पावे, सद्गतिमें पिण वो जावे ॥ टेर ॥ प्रथम षोडश बोलको ज्ञाता, शास्त्रारथ बीजे ठांणे; तीजे गुण तो मीठी वाणी, चौथे अवसरकूं जांणे ॥ च०॥ पचम सत्य वदे गुण छट्ठो, संशय छेदन करै परनो; सातमे गीतारथ उपयोगी, अष्टम सकोच विस्तरनो ॥ च० ॥२॥ कठिण अपशब्द विन नवमो, दशमो सभा रंजन करही; ग्यारमो प्रश्न अर्थको ग्राहक, बारमो गुण मद परहरही ॥ च० ॥ ३ ॥ धर्मा गुण तो तेरमे निरमल, चौदमे लोभ

जरा नांही; मुनि राम कहे छे गुण ऐ चवदे, है विरला वक्ता मांही ॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥ चवदे विद्या नाम ॥

चवदे विद्याके नाम सुनो तुम, शास्त्रमें ऐसें खुलही; अंत विद्या तौ परमोत्तम है, बाकी सब पुन्यसें मिलही ॥ टेर ॥ गगन गामनी पहली विद्या, बीजी पर तनमें पैसें; रूप परावर्त तीजी बोली, चौथी स्तंभनी है ऐसें ॥ ॥ च० ॥ १ ॥ पंचमी मोहनी स्वर्ण सिद्धि पद, रजत सिद्धि सतमी कहिये; रस सिद्धी तौ अष्टमी गाई, थोभनी बंध नौमी लहिये ॥ च० ॥ २ ॥ अरि परायनी दसमी जांनो, ग्यारमी वश्यकरनी वरनी; भूतादि दमनी बारमी बोली, तेरमी सब संपत करनी ॥ च० ॥ ३ ॥ ऐ त्रयोदश विद्या मिले भागसें, शिवपद प्रापनी है छेली; मुनि राम कहे छे साधक एहनो, तेहनो भगवत छे बेली ॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

तुम चलो सखी कुछ जेजन करिये ॥ ए देशी ॥

पंच प्रकार मिथ्यात तजो तुम, अभिग्रहीत सुनियो लोगं; अनभिग्रहीत आभिनिवेशिक, संशयिक और अनाभोगं ॥ पं० ॥ टेर ॥ गुन अवगुन तो नांहीं विचारे, मत ग्रह्युं ते जांने खरा; अभिग्रहीत तो पेला मिथ्यात, बीजा मत सब मांने बुरा ॥ प० ॥ १ ॥ अनभिग्रहीतके सब मत अच्छा, विशेषपणुं तौ नवि जांने; धोळो धोळो सब दूध पिछांनें, सब देवा सब गुरु माने ॥ पं ॥ २ आभिनिवेशिक तीजा मिथ्यात, अपना बोलकी थाप करै; हठग्राही वो सूत्र उत्थापे, पर भवसेती नाही डरे ॥ पं०

॥३॥ जिनोक्त पदार्थ संशय रक्खे, पूछे नही लज्जा करके; संशय मिथ्या नाम हे चौथा, ओवी रुळे चहुं गति मरके ॥ पं०॥४॥ अनाभोग मिथ्यात पंचमा, अज्ञात पणे सबकूं लागे; एकेंद्रियमांहे होवे विशेष, मतवाला जिम नहीं जागे ॥पं०॥५॥ पच मिथ्यातकों छोडो प्यारे, जिनसें तुम जलदी तरसो; मुनि राम कहे जे शुद्ध उपदेशी, शुद्ध आचारी गुरु करशो ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

गाळ

१ देशी पंखेरी ॥

कहो गुरू जीव अजीव दोय राशी रे, करूं सद्गुरु सेवारे; सुंणो शिष्य प्रथम तोय यह भासी रे, जाणे अरिहंत देवारे ॥ १ ॥ कहो गुरू जीवके भेद विचारा रे ॥ क० सु० ॥ सिद्धने और संसारा रे ॥क०॥जां०॥२॥क०॥ कर्म संसार भटकावे रे ॥क० सु०॥ भव्याभव्य दोय स्वभावेरे ॥जां० ॥३॥ क० ॥ भव्य तो मुक्ति सिधासी रे ॥ क० सु० ॥भव्यको छेडो नहीं आसीरे ॥ जां० ॥ ४ ॥ क० ॥ काल समयसे जीव छे कितना रे ॥ क०सु० अनंता नंत कहू जितनारे ॥ जा० ॥ ५ ॥ क० ॥ कुण कुंण घरमें वसाया रे ॥ क० ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासी उपजाया रे ॥ ॥ जां ॥ ६ ॥ क० ॥ अव्वल घर कुंण मेरा रे ॥ क० सु० ॥ वणसइ घर धुर तेरा रे ॥ जां० ॥ ७॥ क० ॥ एक घरमे जीव ते वसीया रे ॥ क० ॥सु०॥ अनत जीव तिहां घसीया रे ॥ जां० ॥ ८ ॥ क० ॥ काल कितनो तिहां रमियो रे ॥ क० ॥ सु० ॥ काल अनत तिहां भमियो रे ॥ जां०॥९॥ ॥ क० ॥ जन्म मरण आहारने सासा रे ॥ क० ॥ सु० ॥

सबके एक समै प्रकाशारे ॥ जां० ॥ १० ॥ क० ॥ एक शरीरे जीव केता रे ॥ क० सु० ॥ नहीं मुक्तिमें जावे कभी जेता रे ॥ जां०॥११॥क० ॥ मानव भव किम पायो रे॥ ॥ क० सु० ॥ नव स्थल लंघीनें आयो रे ॥ जां० ॥ १२ ॥ ॥ क० ॥ अलपसें अल्प भव कहेना रे ॥ क० सु० ॥ स्तोक तो नर भव देहना रे ॥ जां० ॥ १३ ॥ क० ॥ जीव कर्म किम करिया रे ॥ क० सु० ॥ दोनूं अनादी उच्चरिया रे ॥ जां० ॥ १४ ॥ क० ॥ युक्तिसू कर्म खपावे रे ॥ क० सु०॥ जबही मुक्ति हो जावे रे ॥ जां० ॥ १५ ॥ क० ॥ सकल सामग्री भव्य कोई पावे रे ॥ क० सु० ॥ मुनि राम सदा एही चावे रे ॥ जां० ॥ १६ ॥ इति

२ देशी पेमासरी ॥

सुपरीक्षा करी, जीव द्रव्यकी खबर परी, जीव द्रव्य नहीं नाश ज है, तीन कालमें नित्य रहै; जावे कबून फिरी, जीव द्रव्यकी खबर परी; सुपरीक्षा करी, जिनागमकी नहीं बराबरी ॥ १ ॥ सु० ॥ जीव गुणकी खबर परी, गुण तो द्रव्यके लार रह्यौ, अनत चतुष्टय संग वह्यौ; पर्याय टरी ॥ जि० सु० ॥ जीव गुणकी खबर परी ॥२॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी, अजीव द्रव्यको निर्णय करो, गुरु मुखसेती हिरदे धरो; गुरु पाय परी ॥ जि० ॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी ॥ ३ ॥ सु०॥ द्रव्य गुण पर्यव तीन खरी ॥ सु० ॥ अजीव तीनकी खबर परी; अजीवतणा दोय भेद भया, रूपी अरूपी होय रह्या; हिरदे धरी ॥ जि० सु०॥ द्रव्य ॥४॥ च्यार न दीसे रूप करी ॥ सु० ॥ पुद्गल दीसे रूप भरी, पुद्गलको सब जग व्यवहार, दीसे जगमें नानाकार; नही एक सरी ॥

जि० सु० च्या० ॥५॥सु०॥ जीव अजीवकी खबर परी; जीव अजीव दोय पुंज खरा, मुनि राम कहै फेर नही तिसरा; स्याद्वाद करी ॥ जि०सु०॥ जीव अजीव०॥६॥इति॥

३ ख्याली आयो रे मुलतांनसें ॥ ए देशी ॥

अंगीकरो रे स्याद्वादकूं, तुम छोडोनी वाद विवादको अं० ॥ १ ॥ स्यात् शब्द अंकित सब ठौरे, ए छै रे मत अनादको॥अं० ॥२॥ अर्हत् दर्शन स्याद्वाद ग्रंथ, सीखोनी जीतो परवादको ॥ अं० ॥ ३ ॥ जल कचा अग्नी पक दूजो, तीजो कुशील कुवादको ॥ अं० ॥ ४ ॥ ऐ त्रय वर्जित स्याद्वाद सब, समजोनी शास्त्र अगाधको ॥ अं० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै स्याद्वादकूं ग्रहिये, करिये रे दूर परमादको ॥ अं० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ नाथूरामजीवाळी यार कीयो परदेशी छेलो रे, दान जोवनको लेलो, आयो यार उत्तर नहीं देलो ॥ ॥ ए देशी ॥

गुणठांणे धुरसें चाल लीयो चौथानो गेलो रे,जीव यो शिव पद ले लो; छूट गयो गुणठांणो पेलो ॥ टेर ॥ चौथा सेती पचम जावे, अथवा सत्तम छठ्ठे आवे; ठैर सके तो ठैरे यांही, हे सत्तम पिण भेळो रे ॥ जी० छू० ॥ १ ॥ सत्तमसेती अठ्ठम आवे, उपशम क्षपक श्रेणि रचावे; क्षपक जाय तो केवल होवे, उपशम फेर पड़ेलो रे ॥ जी० छू० ॥ २ ॥ धुर गुणठांणे चउ गति जावे, दूजे सूं नहीं नरक सिधावे; तीनू गतिनो आयू घन्ने, नहीं तीजे बंध करेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ३ ॥ चौथे सुरनर आयु सांधे, सुरमें एक विमाणिक बाधे; पचम श्रावक करनी सेती, ऊर्ध

चढेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ४ ॥ छट्ठम सत्तम मुनिसर कहिये, आगे आयू बंध नहीं है; सर्वार्थ सिद्ध लों ऊंचो जावे, अथवा मुक्तिको गैलो रे ॥जी० छू० ॥५॥ आदि गुणठांणा तीनूं बोलो, पंचम ग्यारम न्यारा खोलो; तीर्थंकर नहीं फरशे पांचूं, अन्य जीव फरशेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ६ ॥ तीजो कहिये अमर गुण ठांणो, बारमो तेरमो पिण इम जांणो; मरण करे तो शेष इग्यारे, राम इम शास्त्र भणेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ७ ॥ इति गुणठांणा विधि ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

गुणठांणो धुर सादि अनादि, भेद दोय कहे सत्यवादी; ग्रंथि भेद फिर मिथ्या सादि, अध पुग्गल मुक्त लहेलो रे; सेवट वो शिव पद लेलो, छूट गयो गुणठांणो पेलो ॥ टेर ॥ १ ॥ जिण जीव ग्रंथि भेदी नहीं क्यांरे, अंत अनंत दो भेद है ज्यांरे; आदि अंत नही ते अभव्य, कबू नहीं मुक्ति रळेलो रे ॥ से० छू० ॥ २ ॥ चौथे पंचम छट्ठेसूं पाती, सस्वाद न व्है समकितघाती; एक समै षट् आवलि विचमें, फेर मिथ्यात गहेलो रे ॥ से० छू० ॥ ॥ ३ ॥ अनंतानुबंधि उदयथी न्यारा, सत्यासत्य सम मिश्र धारा; अंतर्मुहूर्त समै एक ठैरी, दोयसे एक भिळेलो रे ॥ से० छू० ॥ ४ ॥ छासट सागरलो रहे जाझेरो, अंतरमुहूर्त जघन्य विचारो; तेतीस सागर भव एक गणिये, चौथे एम सुणेलो रे ॥ से० छू० ॥ ५ ॥ कोटि पूरब देश ऊंणो जाणो, अंतर्मुहूर्त जघन्य पिछांणो; देश वृत्तिकी थिति ए बोली, सुगुरु मुखसे झेलो रे ॥ से० छू० ६ ॥ छट्ठा सेती बारमे जावो, पृथक अंतर मुहूर्त गावो; एक समैकी जघ-

भ्य बतावो, फेर केवल वास वसेलो रे ॥ से० छू० ॥ ७ ॥ जघन्य तेरमे मुहूर्त अंतर, कोड पूर्व अठ वर्षकेभ्यंतर; होय अयोगी मुक्ति पधारे, पंच अक्षर लघुरे छेलो रे ॥ से० छू० ॥ ८ ॥ दान शील तप भाव आराधो, पडिया मुनि की सेवा साधो; मुनि राम कहै ये जन्म सुधारो, सुन सद्गुरुनो हेलो रे ॥ से० छू० ॥ ९ ॥ इति ॥ चतुर्दश गुण स्थान स्थिति विवरण ॥

६ ख्याली आयेरे मुलतानसें ॥ ए देशी ॥

तुम जाप जपोरे नमोकारको, सहू पाप धुपेरे जमवार-को ॥ तु० ॥टेर ॥ श्रीमती लही फूलकी माला, कुष्ट गयो रे श्रीपारको ॥ तु०॥ १ ॥ भील भीलनी नृप पद लहियो पोरसो शिवही कुमारको ॥ तु० ॥२ ॥ जिनदास सेठ वि जोरो लायो, बलिवर्द सुर अवतारको ॥ तु० ॥ ३ ॥ चो-र छींके चढ गगनमे उडियो, लह्यो सूली चढ्यो भव पा-रको ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांडव त्रिया द्रौपदी केरो, चित्र टाळि-यो भुजगम न्हारको ॥ तु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे छै भव-भव एहनो, शरण चाहुंरे सुखकारको ॥ तु०॥ ६ ॥ इति ॥

७ सखी सुन वात सयांनी ॥ ए देशी ॥

ध्यान लगासां मन ठैरासां, नासा निजर जमासां रेक; मत्रको न्यास घुमासां,हांक जिनवरना गुण गासां, जिन गुण गासां वांछित पासां, पासा शिव पुर वासारेक ॥ जि० ॥हांक जि० ॥ १ ॥ ध्याता ध्यान ध्येय पद तीनें, निज गुण मांह रमासां रेक; छोडां सव आसा पासा ॥ हां० ॥ २ ॥ और ध्यानको छोडो प्यारे, देखो फेर तमासा रेक; होवे तेरे मांहि प्रकाशा ॥ हां० ॥ ३ ॥ अर्ह पदका ध्यान

चढासां, दशमें द्वारे जासांरेक; झूठ नही जिणमे मासा॥ हां० ॥ ४ ॥ मुनि रामचंद्र तो और न चाहे, रखो चरनके पासारेक; मेटो प्रभु गर्भावासा ॥ हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ सासू सेज बिछाई किसा घरमें ॥ ए देशी ॥

जीवा अवल वस्यौ तूं किसा घरमें, सखि धुर घर मेरो निगोद दरमें, के हांक समकितल्यो, मानव भवमें, उत्तम कुलमें, जन्म सुधारो, छोडो संको,परखी ल्यो जी समकित ल्यो ॥ १ ॥ जीवा अव्यवहार राशि वनस्पतिमें, सखि व्यवहार राशि चतुः गतिमें ॥ के हांक स० ॥ २ ॥ जीवा ग्रंथि भेदक शिव वरिये, सखि और सकल चौ गति फिरिये॥के हांक स०॥३॥ जीवा सूत्र प्रतीत हिये धरिये,सखि संका कंखा तौ नवि करिये॥के हांक स० ॥४॥ जीवा स्थाणु कीटिका चढ़ी ढरिये, सखि कीटि पखाळी जायै परिये ॥ के हांक स० ॥ ५ ॥ जीवा जीव अजीवसें जग भरियो ॥ सखि श्रद्धा विना नां को तरियो ॥ के हांक ॥ स० ॥ ६ ॥ जीवा सूत्र प्रमाण श्रद्धा चहता, सखि राम मुनि तौ इम कहता ॥ के हांकस० ७ ॥ इति॥

दोहा ॥

प्रभु नामे सुख संपजे, आपद जावे दूर। अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, कर्म हुवे चकचूर ॥ १ ॥ अणिमा १ धुर महिमा द्वितीय २, लघिमा ३ गरिमा ४ होय। प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशीत्वं ८ वसुमी जोय ॥ २ ॥ गज १ सिह २ दावानल ३ अहि ४, रिन ५ समुद्र ६ गुरु ७ वध ८। प्रभु नामे वसु भय टळे, मिटे जमारा फद॥ ३॥

ढाळ॥

१ देशी चौंपईनी ॥

प्रथमा ऋद्धी अणिमानाम, नांन्हो रूप करे सुख काम; कमल नालमें पैसी जाय, चक्री केरो सुख भुगताय॥१॥ दूजी महिमा ऋद्धि अभिराम, मेरुथकी मोटो तनु ताम; विष्णुकुमारतणी पर होय,सुरनर देख डरे सहु कोय॥२॥ लघिमा वायूपरे तनु थाय, गरिमा वज्रसो शरीर बनाय; ईंद्रादिक नहीं सके उठाय,चौथी गरिमा नाम कहाय॥३॥ प्राप्ति पंचमी ऋद्धिकी बात, फेरे भूं बैठा मेरुपर हात; प्राकाम्य छट्टी ऋद्धि गुण एह, जलपर भूं पर ज्यूं फिर जेह ॥ ४ ॥ ईशित्व सप्तमी ऋद्धिका नाम, तीर्थंकर ऋद्धि करे सुख धाम । अष्टमी वशित्व जग वश थाय, सुरनर पूजे तेहना पाय ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि प्रभु नामे मळे, प्रभु नामे लक्ष्मी अविचले। प्रभु नामे हुवे मगल माल, मुनि राम कहै सब टळे जंजाल ॥ ६ ॥ इति ॥

२ चाल जोगी रासानी ॥

भगवत भाखे जगसिंधू जल छे१,जन्म जरा मरन पानी, कर्दम स्थाने काम भोग कादो २,अहंकार फेन तूं जानी३; च्यार कलसा ज्यूं गत कही च्यारे ४, तृष्णा वेल वखांनी ५; कच्छप मच्छ ज्यू कुटुंब कबीलो ६, मगर ज्यूं गलागल तांनी ७; समुद्रमें डूंगर कर्मने जांणो ८, संघोख्या कर्म कुगुरु पिछांनी ९; रत्नाकर ज्यूं श्रीसंग कहिये १०, कांठे ज्यू मोक कहानी ११; वड़वानल सिंधू क्रोधने समझो १२, कपट तो भमर स्थांनी १३; समुद्रमें कळण

ज्यूं मोहकी कळण, जिणमें कळया सह्रु प्रांणी १४; मुनि राम कहै संसार सिधुनें, तखा भगवत वाणी ॥१॥इति॥

३ श्रीगुरु चरणां रे नमिये ॥ ए देशी ॥

श्री जिन वचनां रे रमिये, भव भवना दुख गमिये ॥ श्री० ॥ श्री जिन वाणी रे परखो, तुमे पद् दर्शनकूं निरखो; आप्तवाक्य निबंधन मर्थ ज रे ज्ञानं, सो आगम अर्थ प्रमानं ॥ श्री० ॥ १ ॥ आगम पद लक्ष ज रे जांनो, अवशिष्ट लक्षण भेद पिछांनो ॥ श्री० ॥ जो अर्थ ज्ञान ज रे कहिये, तो प्रत्यक्षे अतिव्याप्ति लहिये ॥ श्री० ॥ २॥ वाक्य निबंधनमर्थ ज्ञानं रे बोलै, विरोधी उक्ति न्है जिण तोलै ॥ श्री० ॥ जठै आप्त वाक्य निबंधन ज्ञान ज रे कोगे, तौ आप्त वाक्य कर्म पिण होगे ॥ श्री० ॥३॥ तातें अर्थ पदका रे कैणा, तात्पर्य अर्थ समझी लेणां ॥ श्री० ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्र रे तीने, मोक्ष मार्ग कहै बुद्ध अहीने ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सम्यक् शब्दे तीनूं रे लेना, विपरीत संशय अनध्यवसाय तज देना ॥ श्री० ॥ एक दोयसैं मुक्ति रे नहीं छै, आगम राम प्रमान एही छै ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे तत्वविचारनामकं तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

---

४ स्तवन—गीत ॥

१ जात्रीडा यात्रा निनांणूं करिये रे ॥ ए देशी ॥

अमे जिन चरणां चित्त धसां रे, अमे पाप पुराकृत हरसां रे; अमे पाखंड मत परहरसां, प्रभुजीरी नौकरी

अमे करसां रे, भलां करसां ने भव तरसां ॥ प्र० ॥ १ ॥ अमे धींग धणी शिर धरसां रे, अमे पाखंडसूं नहीं डरसां ; अमे शिव सनमुख पग भरसां ॥ प्र० ॥ २ ॥ तूं साहिब छे मेरो रे, हूं सेवक छू तेरो रे; मोनें दीजो मुक्तिमें डेरो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ जो नहीं प्रभु मुझ तारो रे, तो अमने कौन आधारो रे; हूं तो भव भव दास तुमारो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ मतो रत्न चितामणि लाधूं रे, अमचोमनडूं बाधूं रे; हूं तो भव भव तुमनुं अराधू ॥ प्र० ॥ ५ ॥ जो होवे निज दासा रे, मालक पूरे आशा रे; जो होवे दास निराशा रे, तौ करसी लोक तमाशा ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तूं छै अंतरजामी रे, प्रभु तू छै त्रिभुवन स्वामी रे; रामचन्द्र कहे शिरनामी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ उगणीसे अष्टादश वरसे रे, तिंवरी मांहे भाव सरसे रे; सहू सेवा करणनें तरसे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

२ देशी नींबूड़ानी ॥

हो सुखकारी हो जिनजी, भव भव दीजो चरणांरी मुझने चाकरी हो राज; हूं वलिहारी हो जिनजी, हूं तो चाहू कृपा निश दिन आपरी हो राज ॥ १ ॥ काशीदेश वणारसी मांय हो ॥ सु० ॥ जन्म लीधो कीधो जुगमें चांनणो हो राज; नाग नागणी तूं मंत्र सुणाय हो, सुर पद दीधो कमठनो मांन भांनणो हो राज ॥ २ ॥ स्यू कहूं बहुली बात हो, जनम मरणना दुख चिहुं गतमें मैं सह्या हो राज; धन्य धन्य पार्श्वनाथ हो, सेवकने तो दीजो शिव पुर कर मया हो राज ॥ ३ ॥ अधम उधारण तोय हो, सुणनें आयो तुमायो चरणे राजनें हो राज; अब राखो शरणे मोय हो राज, जिम तिम करने राखो, अमची लाजने हो राज ॥ ४ ॥ कुणसके दुश्मण भाळ हो, धींग धणीरी

लागी जिण शिर छाप हे हो राज; थे प्रभु दीन दया
हो, रामचंदनें राखो शरणे आपरे हो राज ॥५॥ इति

३ देशी हींडाकी ॥

प्यारी लागे जी जिनकी सेवा, पार उतारे राज प्यारी लागे जी ॥ टेर ॥ पिरथी अप तेऊने वायू, जां दर्श नही पायो रे; वनस्पतीमें काल अनंतो, यूंही गमायो ॥ प्या० ॥ १ ॥ वी ती चउरेंद्री मां हे, पंचेंद्री जब हूवो रे असंज्ञी तिरजंच मनुज, हुयनें मूंवोरे ॥ प्या० ॥ २ ॥ नरकमांहे दुख है भारी, सुर सुखमें चित दीनो रे; मनुज अनारज मांहे, हूवो पाप मलीनो रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ काल अनादी भटकत भटकत, श्रावकनो भव पायो रे; भल हुवो श्रीगुरु देवको, सागे धर्म बतायो रे ॥ प्या० ॥ ४ ॥ हरि हर ब्रह्मा देव बतावे, राग द्वेषसें कलिया रे; वीतराग जे तारक साचा, ते नहीं मिलियारे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ शस्त्र धारे नारी राखे, फिर फिर ले अवतारे रे; व्यभिचारी बहु कामी दंभी, ते किम तारे रे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ नाभिराय मरुदेवी नंदन, प्रथम तीर्थंकर देवा रे; रामचंद कहे साहिब दीजो, भव भव मांगं सेवा रे ॥प्या०॥७॥ इति

४ देशी दरजियांकी ॥

महाविदेहमे तू वसे, हरे हांरे तूं वसे, जिनेश्वर, हूं तो रे वसूं भरत मझार, सीमंधरजीसूं मन लागो; पांख नही आवी मिलू, हरे हांरे आवी मिलूं, जिनेश्वर, पूरे नहीं चरण विहार ॥ पू० ॥ सीमंधरजीसूं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, बावा हूं छू तेरो दास, जिन चरणां म्हारो चित लागो ॥ १ ॥ अर्जी

लिखनें भेजवू, हरे हांरे हांरे भेजवूं, जिनेश्वर, सांशु रे नहीं आवणहार ॥ सी० ॥ आवत जावत जो हुवे, हरे हांरे जो हुवे, जिनेश्वर, लावे रे कोई सुख समाचार ॥ सी० म० ॥ २ ॥ गगन गती चिद्या ना रही, अरे हांरे हांरे नां रही, जिनेश्वर, सुरवर रे नही मोरे सहाय ॥ सी० ॥ दर्शनरी मनमें रहे, अरे हांरे मनमें रहे, जिनेश्वर, इण भवरे हूं नहीं सकूं आय ॥ सी० म० ॥ ३ ॥ एक पुन्याई माहरी, अरे हांरे हांरे माहरी, जिनेश्वर, जाण्या रे मैं श्रीजिनराय ॥ सी० ॥ रामचंदनी वीनती, अरे हांरे वीनती, जिनेश्वर, दीजो रे मुझ पार लंघाय ॥ सी० म० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

स्फटिक सिंघासन ऊपरे, बैसीनें ध्वन उचरे, जिनेश्वर, सुनवारे आवे चौसठ इंद, सेवे रे थांने सुर नर वृंद, सीमंधरजीसुं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, बाबा हूं तो तेरो दास, प्रभु चरणां म्हारो चित लागो ॥१॥ सर्व संशय छेदनी, मोह कर्मने भेदनी, जिनेश्वर वरसेरे जिम अमृत वैण, निरखे रे थांने भर भर नैण ॥सी०॥२॥ अनत रूप रळियामणो, विस्मयनो उपजावणो ॥ जि० ॥ सोभे रे जिम पुनमचद, दीठां रे हुवे परमानंद ॥ सी० ॥ ॥३॥ दर्शन करे छे आपनो, नाश करे छे पापनो ॥जि० ॥ मोटा रे छै जिणरा भाग, राखे रे जे थांसूं राग ॥ सी०॥ ॥ ४ ॥ रामचद अरजीभणी, थे छो मुज शिरना धणी ॥ जि० ॥ कीजो रे मुज भवोदधि पार, लीजो रे मुज पार उतार; दीजो रे मुज अविचल ठाम, हूं छू रे तुज दास गुलाम ॥ सी० ॥ ५ ॥ इति ॥

६ देशी कलाळीकी ॥

महाविदेह अति सुखकार हो, प्रभुजी; कांई जिहां तो विराजै श्रीजगनायकू हो, राज; त्रिभुवन स्वामि ॥ जि० ॥ धन्य थानें देखे नर नार हो ॥ प्र० ॥ वाणि सुहांणी सुणे सुखदायकू हो, राज ॥ त्रि० वा० ॥ १ अशोक वृच्छ स्वच्छ आनंद हो ॥ प्र० ॥ कांई स्फटि सिंहासन आसन शोभता हो राज ॥ त्रि० ॥ सेवे थांने चौसठ इंद हो ॥ प्र० ॥ कांई हाजर तो ऊभा सनमुख जोवता हो राज ॥ त्रि० हा० ॥ २ ॥ हूं तो वसूं भरत मझार हो ॥ प्र० ॥ कांई दुखमी तो आरो हलाहल आ जनो हो राज ॥ त्रि० दु० ॥ पायो मैं तो जिन धर्म सार हो ॥ प्र० ॥ कांई भलो तो होईजो गुरु महाराजनो हो राज ॥ त्रि० भ० ॥ ३ ॥ सीमंधर प्रभुनें निरखण लाग हो ॥ प्र० ॥ कांई निरखूं सो विरियां लेखे लागसी हो राज ॥ त्रि० नि० ॥ मुनि राम कहे छै धन्य म्हारा भाग हो ॥ प्र० ॥ कांई दर्शन करनेसें अमना भागसी हो राज ॥ त्रि० द० ॥ ४ ॥ इति ॥

७ देशी रंभा वायलीकी ॥

प्रभुजी थांरी हो नामतणी बलिहार, सुपनामें दीठी हो सूरत आपरी; प्रभुजी पायो हो आनंद अपार, निश दिन रटसूं हो माला जापरी ॥ १ ॥ प्रभुजी जाण्या हो पुन्य प्रमांण,भव भव चाऊ हो सेवा देवरी;सतगुरु दीवी हो मोनेजी पिछांण, उत्कठा लगी हो सदा थारे सेवरी ॥ २ ॥ प्रभुजी थांरा हो गुणजी अनंत, इन्द्रादिक गाये हो पार न पावीयो; प्रभुजी थांने निरखे हो जिके पुन्य-

। १२ ॥ रामचंद करै वीनती ॥ जि० ॥ मुज जन्म मरण मेट जाय ॥ जि० ॥ उगणीसे नवे विसलपुरे ॥ जि० ॥ स्वामी वृद्धिचंदजी पसाय ॥ जि० ॥ १३ ॥ इति ॥

१० देशी नींबूड़ानी ॥

तूं प्रभु त्रिभुवन नायको, तू छै हो प्रभु देवाधिदेव; मोय पतित प्रभु तारिये, करिये हो भवोदधि पार ॥मो०॥ तूं ईश्वर परमेश्वरू, सुर नर हो सारे प्रभुजीकी सेव ॥ मो० ॥ १ ॥ अधम उधारण तूं प्रभु, समर्थ हो प्रभू गरीबनिवाज ॥ मो० ॥ काज सुधारो कृपा करी, सुणिजेहो प्रभू गरीब अवाज ॥ मो० ॥२॥ केई तान्या केई तास्यो, स्यूं फूलूं हो प्रभू पर रिध देख ॥ मो० ॥ जिण दिन प्रभु मुज तारसो, हूसी हो प्रभू हर्ष विशेख ॥मो०॥ ३ ॥ शुधो सजम नां पळै, समकित हो पिण नहीं निरधार ॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु आसरो, करिये हो प्रभू बेडो पार ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

११ देशी मिजनूंकी ॥

थे छो त्रिभुवन नाथ, थारे सरीखा जुगमें नां जुडे रे लो; थां पर वारी म्हांरा जिनजी, महर करीने दर्शन दीजिये रे लो; प्रभूजी पारस लागो हाथ,लोह न रवै जो अडे रे लो ॥१॥तूं छै देवाधिदेव,हूं तो,अनाथ शरणै थाहरे रे लो; चाहूं थारे चरणारी सेव, रात दिवस हूंस माहरे रे लो ॥ २ ॥ कृपानिधी तुमचे जी पास, हूं तो नाच्यो विविध सागसू रे लो; जो रीझ्या तो करू अरदास, यगमो जो वस्तु एक मांगसू रे लो ॥ ३ ॥ जो नहीं रीझ्या दयाल, जब तो नाकारो करो नहीं नाचसू रे लो; रामचंदकी अरज कृपाल, हा ना फुरमावो निज वाचसू रे लो ॥ ४ ॥ इति ॥

तार ॥ जि० ॥ रुखमणी नामे भारज्या ॥ जि० ॥ रुपे रति अनुहार ॥ जि० ॥ २ ॥ संसारना सुख भोगवी ॥ ॥ जि० ॥ रह्या तयांसी लाख पूर्व गेह ॥ जि० ॥ पछे संयम आदर्‍यो ॥ जि० ॥ सुर नर पाय प्रणमेह ॥ जि० ॥ ३ ॥ चौतीस अतिशय शोभता ॥ जि० ॥ रही पैंतीस वाणी विराज ॥ जि० ॥ काया धनुष धारी पांचसे ॥ ॥ जि० ॥ जयवंता विचरे आज ॥ जि० ॥४॥ अनत रूप सोवन तनू ॥ जि० ॥ लंछन वृषभनो जांण ॥ जि० ॥ द्वादश परिषदा आगले ॥ जि० ॥ वाणी योजन प्रमाण ॥ जि० ॥ ५ ॥ द्वादश गुण करि शोभता ॥ जि० ॥ पर उपगारी जिनंद ॥ जि० ॥ सिध च्यारू सेवा सांचवे ॥ ॥ जि० ॥ सेवे थांनें सुर नर वृंद ॥ जि० ॥ ६ ॥ दक्षिण भरते हूं वसुं ॥ जि० ॥ दुखमी पंचमे काल ॥ जि० ॥ पुन्य संजोगे पांमियो ॥ जि० ॥ श्रीजिन धर्म रसाल ॥ जि० ॥ ७ ॥ तुम दरसनरी चायना ॥ जि० ॥ लग रही मनरे मांय ॥ जि० ॥ लब्धि नहीं सुर वश नहीं ॥ जि० ॥ इण भव नहीं सकूं आय ॥ जि० ॥ ८ ॥ पाखड धर्म फैल्यो घणो ॥ जि० ॥ नही जांणे धर्मनो मर्म ॥ जि० ॥ नहीं जाणे जीव छकायना ॥ जि० ॥ हिंसामें बोले धर्म ॥ जि० ॥ ९ ॥ ते मन वच काय चांहूं नहीं ॥ जि० ॥ तू छै गरीबनिवाज ॥ जि० ॥ तुम चरणां विच आवियो ॥ जि० ॥ अब राखो हमारी लाज ॥ जि० ॥ ॥ १० ॥ शुद्ध संजम तो ना पळे ॥ जि० ॥ पिण तुमचो विरद सभार ॥ जि० ॥ अब आघो मति काढजे ॥जि०॥ भव-सागर पार उतार ॥ जि० ॥ ११ ॥ हाथ जोड़ अरजी करूं ॥ जि० ॥ सो वाते एक वात ॥ जि० ॥ भव सागरथी तारजो ॥ जि० ॥ तुहीज माथे नाथ ॥ जि० ॥

मेटणहार, प्रभुजी वनणा लीजो हो ॥२॥ दरसण दीजो हो, होजी म्हांरा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, दरसण दीजो हो, पारही कीजो हो, होजी म्हांरा मुगतीना दातार, प्रभुजी, पारही कीजो हो ॥ ३ ॥ मुजने तारो हो, होजी म्हांरा करम मुकावणहार, प्रभुजी, मुजने तारो हो; विरद विचारो हो, होजी म्हांरा सुखना देवणहार, प्रभुजी, विरद विचारो हो ॥ ४ ॥ पारस पायो हो, होजी म्हे तो रमता बालक खेल; प्रभुजी, पारस पायो हो, चरणे आयो हो, होजी थांने राम वदे कर जोड, प्रभुजी, चरणे आयो हो ॥ ५ ॥ इति ॥

१४ देशी पूर्ववत् ॥

दर्शन पायो हो म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभूजी शरणे आयो हो, म्हे तो शीश नमायो हो, म्हारां सीमधरजी महाराज, प्रभुजी गुण मुख गायो हो ॥ १ ॥ श्रद्धा दृढ धरसा हो, म्हारा सीमधरजी महाराज, प्रभूजी मुनि सग करसां हो, सुपात्र दान देसा हो, म्हांरा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभूजी शुद्ध शील पाळेसा हो ॥ २॥ तपसूं तन गाळेसा हो, म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभूजी भावना भावेसा हो, कुगुरुने नही नमसां हो म्हारा सीमधर जिनराज, प्रभूजी सुगुरु सगे रमसा हो॥ ३॥ म्हे तो पाखडसू नहीं डरसां हो, म्हारा सीमधर जिनराज, प्रभूजी न्यायसू झगडसांहो, म्हेतो सूत्रभण सांहो, म्हारा सीमधर महाराज प्रभूजी पाप शास्त्र न सुणसा हो ॥४॥ मुनि रामचद गावे हो, म्हारा सीमधरजी महाराज, प्रभूजी थाने शीश नमावे हो ॥ ५ ॥ इति ॥

१२ बाई ए चौटा मांहिली देवळी, कोई न चाढ़े धूप ॥ ए देशी ॥

प्रभूजी चौरासीमें हूं भम्यो, कदेयन दीठा आप ॥ प्र० ॥ काल अनादी निगम्यो, कीधा बहु विधपाप ॥१॥ प्रभूजी पुन्यसूं नर भव मै लह्यौ, दुर्लभ जिन धर्म लाध ॥ प्र० ॥ समकित सन्मुख हुई रह्यौ, वाळि आछा लागे साध ॥२॥ प्रभूजी पापी सगत मत हुवो, हुवो साधुको संग, पापी संग होतां थकां, पड़े भजनमें भग ॥ ३ ॥ प्र० ॥ क्रोध मान माया तजूं, लोभ पापको मूल ॥ प्र० ॥ रात दिवस तुमकूं भजूं, करूं राग द्वेष निर्मूल ॥ ४ ॥ प्र० ॥ मात पिताने त्यागसूं, त्यागू घर परिवार ॥ प्र० ॥ करूं क्रिया धर्म रागसूं, धरूं सतगुरुसूं प्यार ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जे लारे लागा सही, ते सहु पार लंघाय ॥ प्र० ॥ धन दौलत मांगूं नही, म्हारा जनम मरण मिट जाय ॥ ६ ॥ प्र० ॥ हूं छूं सेवक आपरो, आप हमारा नाथ ॥प्र०॥ मोने आधार छै आपरो, पकडो म्हारो हाथ ॥ ७ ॥ प्र० ॥ आप हमांनें तारसो, दूजो न तारनहार ॥ प्र० ॥ थेई पार उतारसो, मुनि राम न छोडे लार ॥ ८ ॥ इति ॥

१३ सांवण आयो हो म्हारा सोझतिया सिरदार भॅवरजी सांवण आयो हो ॥ ए देशी ॥

सरणे आयो हो जी म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, सरणे आयो हो; कुगुरुभरमायो हो, हो जी म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, कुगुरु भरमायो हो ॥ १ ॥ सुमती दीजो हो, होजी म्हारा सूमतीका दातार, प्रभुजी, सुमती दीजो हो, वनणा लीजो हो, होजी म्हारा कुमती

ढोलो तो म्हारो इतनोसो, वारु म्हारा राजान, खेलों म्हारा राजन इतनोसो ॥ ए देशी ॥

प्रभू तो म्हांरो सर्वज्ञ छै, संशय सारे भाजन, प्रभू म्हांरो तारन, कुमति विदारन, सुमतीको कारन, प्रभू म्हांरो सर्वज्ञ छै ॥ टेर ॥ हूं तो सेवक आपको रे २, आप गरीबनिवाज ॥ प्र० ॥ शरणे आयो आपके रे २, रखिये म्हांरी लाज ॥ प्र०॥ १ ॥ चिंता न चूरे चिंतामणी रे २, सुरतरु पूरे न आस ॥ प्र० ॥ जो पारसे सोवन ना करेरे २, तो लोक करेगा हास ॥ प्र० ॥ २ ॥ जो तिरतानें तार सोरे २, सी अधिकाई थाय ॥ प्र० ॥ जो डूबतनें तारही रे २, ते महिमा जगमांय ॥ प्र० ॥३ ॥ जो मुज प्रभु नहीं तारसो रे २, तो कुण तारसी और ॥प्र०॥ निश्चै नाभेय जिन तारसी रे २, राम वदे कर जोर ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

१८ म्हे लांरे नीचे किणीरे कॅवरांरा घोड़ा हींसिया ॥ ए देशी ॥

म्हारो सीमंधर जिनराजसे दिलडो लागि यो; हूं तो वसू भरतके मांय, छूं आपको रागियो; मैं तो कुगुरु कुदेवको नवो वदवो त्यागियो ॥ टेर ॥ विदेह क्षेत्र सुहामणो सरे, आरो पलटे नाह; सदा जिन चक्री केवली सरे, जा खुल्यो सदा शिव राह ॥ म्हा० ॥ १ ॥ पांचसे धनु काया जिहां सरे, आयू पूरव कोड, राज न्यायी वरपा घणी स रे, रहे पुत्र वहू सदा कर जोड़ ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रीकुंथु वारे जिन जनमिया स रे, दीक्षा वीसमे होय; भावी चौवीसी जिन सातमे स रे, शिव जासी कर्म खोय ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ गुण चितारू आपका स

१५ अनोखा भमरजी हो ॥ ए देशी ॥

महाविदेहमें विराजिया हो, प्रभूजी, सीमधर जिन राज; सर्वज्ञ शिव पद दीये हो ॥ प्र० ॥ भवोदधि तारण जाज; सुणिये वीनती हो, प्रभूजी, दीनानाथ दयाल ॥ ॥ १ ॥ सुरनर इंद्र आयने हो, प्रभूजी, वंदे बे कर जोड़; रात दिवस हाजर रहै हो ॥ प्र० ॥ मुज मन देखण कोड़ ॥ सु० ॥ २ ॥ अवर देव वांछुं नहीं हो ॥ प्र० ॥ मन वचने महाराज; करुणा सागर सांभळो हो ॥ प्र० ॥ सारो आतम काज ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन चिंतामणि छोडनें हो ॥ प्र० ॥ काच खंड कुण लेह; समरथ प्रभूसू तोडनें हो ॥ प्र० ॥ पाखंड चित कुण देह ॥ सु० ॥ ४ ॥ तू साहिब तूं शिर धणी हो ॥ प्र० ॥ तुहींज मुज आधार; रामचंदनी वीनती हो० ॥ प्र० ॥ दीजो पार उतार ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ देशी विलालेकी ॥

प्रभुजीरो कांईयन मांगांराज ॥ प्र० ॥ म्हांरी राखीजो प्रभु लाज ॥ प्र० ॥ टेर ॥ हाथी घोडा तो मूळ न मांगां, नहीं मांगां कछु राज; पुत्र कलत्र धन दौलत न मांगां, एक मांगां धर्मकी जाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ यथाख्यात तो चारित्र मांगां, ध्यानमे शुकल ध्यान; समकित मांहे तो क्षायिक मांगां, ज्ञानमे केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥२॥ जिनवर गणधरको पद मांगां, मांगां सुखाकी रास; मुनि राम कहै अक्षय पद मागां, मुगत पुरीको वास ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ मारग मारग हूं चली रे, ऊजड़ पड़ गयो पांव;

हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ हरि हे इंद्र गये तम थये सती कंपित भई, आई गुरणीरे पास हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे सूता तो गुरणी इणपर बोलिया,तोनें घणा हे शाबास हो ॥ त्रि० ॥३॥ हरि हे केवल उपज्यो क्षमा करतां थकां, गुरणीजी सुणी हो बात हो ॥त्रि०॥ हरि हे नाग काळो जैर भरयो आयो पाट ऊपरे,ऊचो तो राखिये हो हाथ हो॥त्रि०॥४॥ हरि हे गुरणीजी कहे किम तुम नाग देखीयो, देखूं ज्ञानरे जोर हो ॥त्रि०॥ हरि हे राम मुनि कहै सुण क्षमा सब कीजियो, तो पासो उत्तम ठोर हो ॥त्रि०॥५॥इति॥

२४ देशी कुंजेकी ॥

श्रीनाभेय जगनाथरे, हो मरु देव्या नंदा ॥ श्री० ॥ दर्शन चाहूं नित्यता हरो रे, मुज दीजो ॥ मु० ॥ दरसण धर दया ॥ मु० ॥ हू प्रभु गरीब अनाथ रे हो ॥ म० ॥ करो निस्तारो हिवे मांहरो रे, मांन लीजो ॥ मां० ॥वंदना धर दया रे ॥ मां० ॥ १ ॥ पतित उधारन हार रे हो ॥ ॥ म०प०॥ सुणने चरणे आवियो रे, काढो मती ॥का०॥ आघो मुझभणी रे ॥ का० ॥ दूजो नही ससार हो ॥म० दू० ॥ कुगुरु मुज भरमावियो रे, दुख पायो अति॥ दु०॥ तुम विन शिर धणी रे ॥ दु० ॥ २ ॥ जपूं तुमारो जाप रे हो ॥ म० ॥ लपट रहूं चरणार मे रे, दिल ऐसी ॥ दि० ॥ आवे न छोडूं अध घरी रे ॥ दि० ॥ मुनि राम शिर तुम छाप रे हो ॥ म० ॥ रूलूं नहीं संसारमें रे, कहूं कैसी ॥ क० ॥ छाप न धारू दूसरी रे ॥ क० ॥ ३ ॥ इति ॥

२५ मिणयारडो हे ॥ एदेशी ॥

जग तारणो रे, पार उतारणो रे, पारस प्रभुजी

तारो साहिबा, प्रभु अवधारो अरदाश हो राज; मुनि रामचंद इम वीनवे प्रभु राखो मुज चरणां पास हो राय ॥ जी० ॥ ४ ॥ इति ॥

२२ मोय झिलतीरो नींबूड़ो ॥ ए देशी ॥

हांरे प्रभू कैसे तिराऊं म्हारो जीवड़लो, कैसे पाऊं हो मुगतका सुख, मो मन लागो प्रभु चरणांसूं, लागो लागो हो मन दीन दयाल, हांरे जीवा धर्मसेती रे थांरो जीवड़लो, करणी सेती हो टरे सब दुःख ॥ मो० ॥ १ ॥ हांरे प्रभू शुद्ध संजम तो नां पळे, कैसे पाळूं हो कठिन आचार; हांरे जीवा मन दृढ संजम पाल लै, सुरा चाले हो खांडेकी धार ॥ मो० ॥ २ ॥ हांरे प्रभू कठिन काल छै आजनो, नहीं सकूं हो मनकूं थंभाय ॥ मो० ॥ हांरे जीवा जद तद मनकूं रोकते, ज्ञान डोरी हो शुद्ध ध्यान लगाय ॥ मो० ॥ ३ ॥ सीमंधर जिन साहिबो, मन वसियो हो दिवसनें रात ॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु तारिहे, तुम सुनिये हो जग त्रय नाथ ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

२३ हरिहे ऊंचा नीचा परवत अंबाजीरो वैसणो ॥ ए देशी ॥

हरि हे कौशांबी तो नगरी सोहे जगदी पती, वीरजी रह्याहे विराज हो त्रिलोकीनाथ, विराज हो प्रभुजी राज म्हांरो मन लागो हो प्रभूजीरा नामसूं, पलक न वीसरूं रे, वावा पलक न वीसरूं रे ओ ध्यान हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे चंद्र रवि आये मूल विमानसूं, वाजा तो रहिया हे वाज हो ॥ त्रि० ॥१॥ हरि हे मृगावती आई चंदनवालाजी संगे, प्रभुजीने रही हे निहार हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे गुरणी तो गई सांझ विचारने, मृगावती रही हो लार

२७ नव घाटीनें उलंघने आयो ॥ ए देशी ॥

दीजे पार उतार प्रभूजी, दीजे पार उतार; हूं अपावन पतित अधम छू, तू छै दीन दयाल ॥ तूं० ॥ कृपानिधि तू छै दीन दयाल, मो अधमकूं पार उतारो, तू छै परम कृपाल ॥ टेर ॥ तू ईश्वर परमेश्वर तूं छै, तूंही शकर मुरार; ब्रह्मा विष्णू हिरण्यगर्भ तूं, महादेव किरतार॥प्र० ॥ १ ॥ स्वयभू अर्हत गणेश, वीतराग तीर्थंकार; कर्ता विश्वंभर जगके भर्ता, तूं हरि श्याम उदार ॥ २ ॥ प्र० ॥ २ ॥ तू निरमोही निकर्मी निसंगी, नीरागी निराकार; पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही छै, राम रहीम निर्धार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तूं प्रभु तारक कर्म विदारक, वारक तूं ससार; सुखके कर्ता हर्ता दुखके, भर्ता त्रिलोकी सार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भगवंत सर्वज्ञ शिरोमनि, गुनको पारंपार; मुनि राम कहे जिण पारस भेट्यो, किम रहै लोह विकार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ अव मोय तारो श्रीनाथजी ॥ ए देशी ॥

च्यार गत भमियो घणो, दीठा दुःख अपार; पार न पायो जी पाछ लो, नही कीनी अमर्चा जी मार; नही मिल्या तारनहार, ताते रुळियो संसार, अब तो पार उतार; अब मोय तारो श्रीमहावीरजी; अब मोय तारो श्रीदयालजी ॥ १ ॥ टेर ॥ पुन्य जोगे नर भव लह्यो, पांम्यो आरज देश; उत्तम कुलमें जी ऊपनो, लागो गुरु-

जग तारणो ॥ टेर ॥ एक दिन तापस आवियो हे, अमा खलक मुलक लागे पाय हे, देखां पाखंड एहनो हे, अमा चालोनी नीहालो एहनें जाय ॥ ज० ॥१॥ आयनें उतरयो गंगा ऊपरे हे. अमा देखवा आया जिनरायो, अवधि ज्ञाने जिन देखियो हे, अमा नाग नागणी काष्ठ मांयो ॥ ज० ॥ २ ॥ रे रे पाखंडी स्यूं तप करे रे, जोगी जीवांने क्यूं होमे अग्नि मांयो; जीव हिंसा किणनें तारियो रे, जोगी कुंण गयो सिद्ध गति मांयो ॥ ज० ॥ ३ ॥ नाग तिहां सुर पद लह्यौ रे, अमा परमेष्ठी दीयो सुणायो; रामचंद कहे एहनो हे, अमा जनम मरण मिट जायो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

२६ दानजी दानजी करती रे, हूंयो वागां मांयला फूलड़ा वीणती रे, ॥ हूंतो० ॥ ए देशी ॥

वीर प्रभू वीर प्रभू ध्यावसां रे, म्हे तो त्रिभुवन नायक गावसां रे ॥ म्हे० ॥ म्हांरो मुक्त पुरीरो साहिब वीरजी रे, म्हांरो केवल ज्ञानवालो वीरजी रे ॥ टेर ॥ ध्यान ध्यावो तो भल ध्यावजो रे, सैंणां गावो तो वीर प्रभू गावजो रे २॥ वीर प्रभु वी०॥१॥ दान देवो तो भल देवजो रे, सैंणां वचन कैवो सच कैवजो रे २॥ वीर० ॥२॥ जे टाळो चोरी टाळजो रे, सैणां पाळो तो शीलव्रत पाळजो रे २॥वी० ॥३॥ जो त्यागो तो परिग्रह त्यागजो रे, सैणां भागो तो शिव सांमां भागजो रे ॥२॥ वी०॥४॥ जो चाखो तो समता चाखजो रे, सैणां नांखो तो ममता नांखजो रे २॥वी० ॥५॥ मुनि राम कहै सीख धारजो रे सैणां नर भव अफल म हारजो रे २ ॥ वी० ॥६॥ इति ॥

२७ नव घाटीनें उलंघने आयो ॥ ए देशी ॥

दीजे पार उतार प्रभूजी, दीजे पार उतार; हूं अपावन पतित अधम छू, तूं छै दीन दयाल ॥ तूं० ॥ कृपानिधि तूं छै दीन दयाल, मो अधमकूं पार उतारो, तुं छै परम कृपाल ॥ टेर ॥ तू ईश्वर परमेश्वर तूं छै, तूंही शकर मुरार; ब्रह्मा विष्णू हिरण्यगर्भ तूं, महादेव किरतार॥प्र० ॥ १ ॥ स्वयभू अर्हत गणेश, वीतराग तीर्थंकार; कर्त्ता विश्वभर जगके भर्ता, तूं हरि श्याम उदार ॥ २ ॥ प्र० ॥ २ ॥ तूं निरमोही निकर्मी निसंगी, नीरागी निराकार; पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही छै, राम रहीम निर्धार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तू प्रभु तारक कर्म विदारक, वारक तूं संसार; सुखके कर्ता हर्ता दुखके, भर्ता त्रिलोकी सार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भगवंत सर्वज्ञ शिरोमनि, गुनको पारंपार; मुनि राम कहै जिण पारस भेट्यो, किम रहै लोह विकार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ अब मोय तारो श्रीनाथजी ॥ ए देशी ॥

च्यार गत भमियो घणो, दीठा दुःख अपार, पार न पायो जी पाछ लो, नहीं कीनी अमची जी मार; नहीं मिल्या तारनहार, तातें रुलियो संसार, अब तौ पार उतार; अब मोय तारो श्रीमहावीरजी; अब मोय तारो श्रीदयालजी ॥ १ ॥ टेर ॥ पुन्य जोगे नर भव लह्यौ, पांम्यो आरज देश; उत्तम कुलमे जी ऊपनो, लागो गुरु-

नो उपदेश, भागो मिथ्यात रेस, छूटो सकल कलेश, लाधो साधूनो वेस ॥ अव मो० ॥ २ ॥ काम मोहनें लालसा, छूटे नही हे दयाल; गुण नहीं औगुण पुंज हूं, नहीं सकूं सुरत सभाळ, पडियो मोहनी जाळ, तूं ही बारे निकाळ, तू छे दीन दयाल, तूं तो परम कृपाल॥अव०॥३॥ तू ईश्वर परमेश्वरू, तूं छे आतमराम; तूं दाता धाता खरो, शंकर धारो छे नाम, तूं छे त्रिभुवन स्वाम, तूं छे भूलां विश्राम; हूं छूं दास गुलाम, दीजो अविचल ठाम॥अव०॥ ॥४॥जैन धर्म जाणूं खरो, पाखंड जांणूंजी और; वीतराग धर्म तारसी, राम वंदे कर जोर, अमची इतनी जी दोर, नही छै अगोजी ठोर, काटो कर्म कठोर ॥अ०॥५॥ इति॥

२ देशी चौकनी ॥

सीमंधरजी क्या जांणूं मुज कर्म कटक दल केवा, अहो जिनवरजी मेटो संकट पाया धणी तुम जेवा ॥ टेर ॥ कर्म धकावे मुज भारी, कहता नही आवें पारी; हूं तो भटक्यौ गत आगत च्यारी ॥ सी० ॥ १ ॥ तुमसें लागी मुज तारी, कही हकीकत मै सारी; हूं अनाथ निरधारी ॥ सी० ॥ २ ॥ तुमसो नाथ नहीं करियो, तद लाख चौरासीमें फिरियो; अव नाथ तुमने उर धरियो ॥सी०॥३॥ जो नहीं काटो मुज पासी, तो तुम शरणे कूंण आसी; घर हांण दूजी लोकां हासी ॥सी० ॥४॥ इम जांणी मुज तारोनी, भवोदधि पार उतारोनी; ए वीनतडी अवधारोनी ॥ सी० ॥ ५ ॥ दूर देशावर अति आगो, विकट धरा आडं तही सागो; तुम चाकरीमें अत्र लागो, ॥सी० ॥ ६ ॥ तू स्वामी अंतरजामी, नीठसे समकित मै पांमी; रामचंद कहै निज शिर नामी ॥ सी० ॥ ७ ॥ साते चौ-

मासो कीयो तिवरी, सेवा करँ सहु हर्ष धरी; सावन वदमांहे तवन करी ॥ सी० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ कावलनो पांणी लागणो, कावल मत जावो॥ए देशी॥

थाल सनेही तूं प्रभू, रह्या एक ठिकाणे; मै न लखी तुम कथनसूं, हूं पिण थयोसु जाणे ॥ १ ॥ सीमंधर जिन साहिबा, हू छूं दास तिहारो; आश निराश न कीजिये, तुमचो विरद निहारो ॥ सी० ॥ २ ॥ ते जीत्या ते मो. जीत है, अब सो करिये स्वामी; शिरनांमी तुमनें कहू, तूं छे अंतरजामी ॥ सी० ॥ ३ ॥ काम मोहने लालसा, मुजनें एह धकावै; सुख भर नींद न लेण दे, निश दिन आय सतावै ॥ सी० ॥ ४ ॥ निरावरण तू थयो, मुझ रह्यो कर्म दोलो; तूं अकर्म सकर्म हूं, तुज मुज अंतर बोलो ॥ सी० ॥ ५ ॥ जो पद पांम्यो तूं प्रभू, सो पद हूं पिण चाऊं; दीजै परम कृपा करी, स्यों घणो कही सुणाऊं ॥ सी० ॥ ६ ॥ तरण तारण तूं प्रभू, हू धर आयो आशा; रामचंदकी वीनती, नहीं करिये निराशा ॥ ॥ सी० ॥ ७ ॥ इति ॥

४ म्हारे तो हाथमें नोकरवाळी ॥ ए देशी ॥

म्हारे तो समरण नौपदजीरो, म्हारे नवपदजीरो आधार जी ॥ म्हा० ॥ टेर ॥ णमो अरिहंताणं पहिले पदमे, ज्यांरा गुण छै बार जी; अष्ट गुण तो द्रव्य कहावे, भाव गुण छै च्यार जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ णमो सिद्धाण दूजा पदमे, अष्ट गुण श्रीकारजी; अनत पचमे सिद्ध कहावे, भग तो दोय प्रकारजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ णमो आयरियाण पद छै तीजो, गणिजी अर्थ दातारजी; गुण

छत्तीस करीनें शोभै, नमो नमो नमोकारजी ॥ म्हा० ॥ ॥ ३ ॥ णमो नुवज्झायाणं पद छै चौथो, ए सूत्रतणा दातार जी; गुण पचवीस करीनें शोभै, ज्यांसूं रखिये प्यारजी ॥ म्हा०॥४॥णमो लोए सव्वसाहूणं पद छै पंचम, ते कहिये अणगारजी; गुण सत्तावीस करनें युक्ता, वंदू वारंवार जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ णमो दंसणस्स पद छै छट्ठो, दंसण विण सब छारजी; ते कारणथी तेहनें नमीये, जिम हुवे खेवो पार जी ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ णमो णाणस्स पद छै सत्तम, ए सहूनो शिरदार जी; एही छै मुक्तीनो मारग, इण विन घोर अंधारजी ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ णमो चरित्तस्स पद छै अष्टम, इणसूं होय सुधारजी; इणसूं कर्म रुके अरु क्षपही, मुक्ति लेजावणहार जी ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ णमो तवस्स पद छै नवमो, तप छै दोय प्रकारजी; पूर्व कर्मने जालणहारो, नमिये वारंवार जी॥ म्हा० ॥ ९ ॥ पद दोय धुरे देव विराजै, त्रयमे गुरु विचारजी; च्यार पदमें धर्म विराजै, मुनि राम वंदे बहुवारजी ॥ म्हा० ॥ १० ॥ इति ॥

५ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ॥ ए देशी ॥

नाथ कैसे कर्मको फंद छुडायो, ओ अचरज मोकूं आयो ॥ ना० ॥ टेर ॥ चंडकौशिक फणिधर तुम डसिया, दृष्टी विष कहायो; जिणकूं सुधार दीयो संथारो, आठमे स्वर्ग पौंचायो ॥ ना० ॥१॥ईंद्रभूति तुम विभूति निरखी, अवगुण वाद बोलायो; त्रिपदी मत्रे गणभृत थप्यौ, श्रीसंघ मुख्य वणायो ॥ ना० ॥ २ ॥ जमाली नामे नन्नव तोरो, तुम वच दोष लगायो; चतुर्दश भव कर शिव पद

मेलो, श्रीभगवती अंगमें गायो ॥ ना० ॥ ३ ॥ गोसालक तुम युग मुनि बाल्या, ऊंधो पंथ चलायो; अच्युत स्वर्ग समप्यों जिणनें, आखर मुक्ति बतायो ॥ ना० ॥ ४ ॥ सोमिल ब्राह्मण करी तुम चर्चा, दुधारा प्रश्न करायो; जिणनें मुक्ति इण भव दीधी, श्रीपंचम अंग दिखायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन माली खटमसातांई, सात मिनख नित घायो; जिणने मुक्ति दीवी छिन भरमें, सकलही पाप गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्रीवीरप्रभूसे अरज करत हूं, मुजने किम विसरायो; नही अधिकाई काष्ठ जल तारै, अधिकाई पाहण तरायो ॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार कीया बहुतेरा, सहुना काज सरायो; मुनि राम कहै मुज तारन विरियां, किम आलस दरसायो ॥ ना० ॥ ८ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ खबर नहीं है जुगमें पलकी ॥ ए देशी ॥

चंदा तूं जइये जिन चरणां रे, चदा तूं जइये जिन चरणां, हाथ जोडने करै वीनती, कहीजै मुज वनणां ॥ चं० ॥ १ ॥ टेर ॥ पूर्व विदेह पुंडरीकणीमें, सीमंधर स्वामी; मुज अरजी मालम श्रीजीन आगे, कहीजे शिर नांमी ॥ चं० ॥ २ ॥ चउतीस अतिशय पैंतीस वाणी, शोभै जिनराया; वृषभ लछन सोवन वरन, पंचसे धनुष काया ॥ च० ॥ ३ ॥ द्वादश गुण करि शोभै जिनवर, मुख पूनम चदा; पद पंकज चरचित इंद्रादिक, सेवे सुर नर वृंदा ॥ च० ॥ ४ ॥ दक्षिण भरत जंबूद्वीपे, में लीयो अवतारो; दुखमी आरे पचम काले, नहीं आवण

सारो ॥ चं० ॥ ५ ॥ पिण गुरु प्रसादे पुन्य संजोगे, शु
समकित पांमी; दर्शन प्यासी सदा उदासी, दर्शन वि
स्वांमी ॥ चं० ॥ ६ ॥ पाखंड धर्म भर्म सब छोडी, शरण
ग्रह्यौ थारो; भवोदधि तारो पार उतारो, वनणा अव
धारो ॥ चं० ॥ ७ ॥ तूंहीज स्वामी अंतरजामी, पुन्य जो
गे पायो; जन्म जरा मरणेसुं डर कर, तुम चरणे आयं
॥ चं० ॥ ८ ॥ मुज अरजी कर जोड़ी सगळी, कहीरे
जिन आगै; सेवग तौ विललाट करत हैं, अविचल प
मांगै ॥ चं० ॥ ९ ॥ रामचंद ए अरजी भेजी, वनणा
अवधारो; भव सागरथी तार प्रभूजी, चाकर चरणांरो
॥ च० ॥ १० ॥ संवत उगणीसे नोके वरसे, सोझत चउ
मासे; धुर भाद्रव सुद पंचम गुरु वारे, स्वामी वृद्धिच
दजी पासे ॥ चं० ॥ ११ ॥ इति ॥

२मैं सुणी कंतकी वात, नार एक घाली घरमांई जी, धण छोड चल्यो परदेश पियो जा वस्यौ मंमाईजी ॥ए देशी॥

मैने तज दीये घरवार, सुनो मेरे अंतरजामी जी; प्रभु
दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वामी जी ॥ टेर ॥ मैं तड़
फत हूं दिन रैन, मोयकूं कर्म संतावेजी; मै देऊं दिल्लकूं
ज्ञान, जयी समता घर आवेजी; मेरे प्रभू वसे परदेश,
सदा जां केवल पावेजी; प्रभु वसे समुद्रां पार, मिलन
कैसे वन जावे जी; मेरे बीचमे पड़ रहे ऱ्हाड, मोय कुन
पार लंघावेजी; नही दीवी विधाता पंख, देवत पिण नां-
हीं पुगावेजी; मेरे लग रही दिलके माय, दर्श कहो कौन
करावे जी; मेरा प्रान वसे प्रभु पास, रात नहीं निद्रा
आवेजी; मे सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये

नांमी जी; प्रभु दूर वसै परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमी जी ॥१॥मेरे ऐसे आवे दिल मांय, अबी श्वासा चढवाऊंजी; मै करूं अजप्पा जाप, नासा पर दृष्टि जमाऊंजी; मै ढूंढूं प्रभूका देश, जैसे मैं प्रभुकूं पाऊ जी; मैं धरूं अरिहंतका ध्यान, ध्यानसे ज्ञान जगाऊंजी; मै कोई युक्तिके साथ, आपनो स्वरूप ध्याऊंजी; मैं देखूं निज दीदार, औरका ध्यान मिटाऊंजी; मै मिनखा देहकूं पाय, कबी नही अफल गमाऊजी; मैंने कहे गुरू महाराज, सोहंका ध्यान लगाऊजी; मैं सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये नांमीजी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमधर स्वांमी जी ॥ २ ॥ नही गुरूका दोष, दीया मुज उत्तम ज्ञानेजी; मन दाबियां होगा ध्यान, सबी ऐ शास्त्र बखानेजी; मै मन घोरेकू पकर, लात द्यू अबी ठिकांनें जी; मेरे चढी ज्ञानकी छाक, हिताहित खूब पिछाने जी; मुज कौन सके भरमाय, कौन मेरे पाखंड मांनेजी; मेरे वरस्या अमृत मेह, ताल भरगये सिरांनें जी;मै सूतो सुमता सेज, कुमत नहीं सके जगाने जी; मेरे भये आनंद भरपूर, दूर सब गये अज्ञाने जी; मै सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये नांमी जी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमधर स्वांमीजी ॥ ३ ॥ मै कीया अगाऊ पाप, ऊपज्यो भरतके मांई जी; पुन संचिया नही पूर, रह्यौ नहीं देव सहाईजी; प्रभुको दूर भयो रहवास, हूं पिण सकू न आईजी;करू पट्मासीका काल, सासा शुद्ध ध्यान लगाई जी; मेरे नही धोखाकी वात, नाथ तो दे दिखलाई जी, इन विध प्रभुका खोज, मिलेगा मुजके तांई जी; ध्यान विना नहीं ज्ञान, ज्ञान विन मुक्त न थाई जी;

मुनि रामचंद्रकी जोड़, कला सब के मन भाई जी
मैं सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये नांमीजी;
प्रभु दूर वसै परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमीजी ॥ ४ ॥इति॥

३ सदाशिव पारवती प्यारा, जटाविच वहत गंग धारा ॥ ए देशी ॥

सदा तुन जैन धर्म पाळो, हिंसाके पंथ मती चालो॥ ॥ टेर ॥ अजी काशी देश सुहांमणो स कांई, वनारसी सुखकार; अजी वामा रांणी जनमिया स कांई, पार्श्व नाम कुमार; एक दिन गगा ऊपर आये, माताजी के लार; कमठकी देखी माया, तपै वो धूंणी लगायां, अंगका काहि ये मांनी, दीखे तूं खरा अज्ञानी, लकड़में जले छे प्रानी वे ॥ सदा० ॥ १ ॥ अजी कुनसा नाग जलै लक्कड़में, हमकों आंखों दिखाय; अजी प्रभुजी लक्कड फाड़ दिखाये, देखे दुनियां आय; रे हत्यारा नाग जलाया, प्रभु दीये मन्त्र सुनवाय, नागकूं सुर पद दीधा, तापस तो रस्ता लीधा, वहोतसा मनमें जळिया, मुल्कसे भाग निकळिया, प्रभूसें पाखंड गळिया वे॥स०॥२॥ अजी मरके कमठ हुवे मेघमाली, प्रभु भये अनगार; अजी मेह वरसाया प्रभू न चळिया, रचिया फुणही हजार; धरणेंद्र पद्मावती आये, सुण्यो जहां णमुक्कार; आयके शीश नमाये, प्रभूकू अधर उठाये; कहां वो दुष्टही देवा, पावेगा कीधा जेवा; प्रभूकी करे छे सेवा वे ॥ स० ॥ ३॥ अजी पार्श्व केवल पामिया स कांई, तीर्थ थाप्या च्यार; अजी पार्श्व प्रभू चावा घणा स कांई, जांणे सहू संसार; मुनि रामचंद्रकी एही अर्जी, करियो भवोदधि पार;

और नही वांछा मेरे, सरन हू आयो तेरे; जाझका काग तुमारा, जानकी मांगू धारा; ग्रह्या मैं चरनही थारा वे ॥ सदा ० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ राग सोरठ ॥

प्रभु म्हारे रहीजो जी हि वड़ारे मांय ॥ प्र० ॥ टेर ॥ मात तात त्रिया सुत सारे २, म्हारे नही रती एक चाय ॥प्र०॥१॥ पाखंड धर्म मिथ्यामति शास्त्र २, तिष्टो मत मन वच काय ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन सज्जन और पदारथ २, एक न आवे म्हारी दाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभूजीको ध्यान चितामनि सरी ग्वो २, जो खो सब देवे टळाय ॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रभु पद पकज मुज मन भमरो २, अंत समै रहो लपटाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रामचद तुझ कदमको चाकर २, दीजो प्रभु पार लंघाय ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ राग प्रभाती ॥

ज्यूं गावे ज्यू चोखा प्रभु गुन, ज्यूं गावे ज्यू चोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ प्रभु गुन गावै सो मुख शिरोमन, नहीतर जांनू वोखा छै; प्रभु आगै जोडे कर शिरोमन; नही तो मानूं टोका छै ॥ ज्यूं० ॥ १ ॥ प्रभु मुख जावे सोचरन शिरोमन, नहीतर थंभ सरोखा छै; जीभ शिरोमन प्रभु गुन गावे, प्रभु वच सुणे श्रवन अनोखा छै॥ज्यू० ॥ २ ॥ आंख शिरोमन प्रभु रूप निहारे, टारे भव भव जोखा छै; मुनि राम कहे वो धनवत साचो, जिण सुपातर पोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

३ राग भैरूं ॥

मै दर्शन नही पायो जिनेश्वर ॥ मै० ॥ टेर ॥ एकेंद्रीमें

काल अनादी, जनम मरन करवायो; विकलेंद्री तिर्यंच पंचेंद्री, ज्ञान विना दरसायो ॥ मैं० ॥ १ ॥ नर सुर नरक वस्यौ विन ज्ञाने, यूंही जनम गमायो; पायो नर भव सतुगुरु अबके, जिनवर धर्म सुणांयो ॥ मैं० ॥ २ ॥ धर्म अधर्म आज्ञा अनाज्ञा, तत्व धर्म दिखायो; सम्यक्‌ दर्शन देव हमारे, सम्यक्‌ ज्ञान गुरुरायो; मैं दर्शन अब पायो जिनेश्वर ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सम्यक्‌ चारित्र धर्म धार्‍यूं, श्री गुरुदेव दरसायो; रामचंद्र कहै प्रभु निज घटमें, नहीं कउ दूर बतायो ॥ मैं० ॥ ४ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ लागे लठ लागे लठ लागे लठरे ॥ ए देशी ॥

लागी धुन, लागी धुन, लागी धुन रे; प्रभुजीके नाम की तो लागी धुन रे; प्रभुजीके चरना लागो मन रे। ॥ टेर ॥ तिसेकूं पांनी, गूंगेकूं वांनी, भुखेकूं प्यारो जैसे अनरे ॥ ला० ॥ १ ॥ कामीकूं नारी नें नारीकूं भरता चातक चाहे जैसे घन रे ॥ ला० ॥ २ ॥ राजाकूं राज स तीकूं लाज, गाज प्यारो जैसे मोरन रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ व्याय गाय जाय वनमें चरत है, सूरत वसै ऐसे बछरन रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ नटी नचे वरत पर नानां, विक्षेप करै नहीं तिल तन रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै प्रभु चरनामें लागो, जांको मन सो धन धन रे ॥ ला० ॥ ६ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ हां ए सखी तूं आजा रेजा लाल पिलंग लचका करै॥

॥ ए देशी ॥

श्रीशांतिप्रभुजी, संत वरते जी थांरे नांवसूं॥श्री०॥टेर॥ उदर आये जब मरी मिटाई, वरतायो सुख सारे; संकट भंजन विरद तुमारो, शास्त्र मुनींद्र पुकारे; सुख संपतकू आपे प्रभुजी, आपद सहू निवारे जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ताव तप तौ कदेन आवे, सीयो दाउ नही ठैरे; शिर वेदन तौ उभी न रेवे, दुश्मन छोडे वैरे; भूत प्रेत तौ अलगही नासे, अमृत होवे जैर जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष परचो थांरो प्रभुजी, वैड़ी जावे भाज; शुद्ध मनसेती सिमरै तोनें, सुधरे सगळा काज; अष्ट महाभय दूर पलावे, आदर देवे राजजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ शांति कर तो विरद तुमारो, सबही रोग मिटावो; ग्राम गयोड़ो कुशलै आवै, होवे हर्ष वधावो; दिन दिन लक्ष्मी वधे चौगणी, पावे राज पसावो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वांझ कामणी पूत लडावे, निर्धनिया धन पावे; अंधा वहिरा होवे ज अच्छा, पापी पाप गमावे; रामचंद्र कहे नित्य सुख वरतै, सत प्रभूनें ध्यावे जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

पायो शरन तिहारो रे, धन भाग हमारो ॥ पा० ॥

॥टेर॥ तूं जिनराज काजको कारक, तारक त्रिभुवन ध्रु रो रे; टारक कुमतारो॥पा० ॥१॥ पातित [illegible] ॥२ सारन पर कज वारोरे; टारन जन मांरो ॥ पा० ॥ २ ॥ तूं पूजनीक सकल इंद्रांको, शरनको राखन हारो रे; [illegible] विरद विचारो ॥ पा० ॥ ३ ॥ तुम विन कुंण तारक है बीजो, दीजो पार उतारो रे; कीजो बेग उवारो॥पा०॥४॥ रामचंद आनंद धर गावे, जिनंद प्रानसें प्यारो रे; मुज जन्म सुधारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

१ आरती ॥

जय जय ॐकारा, नमो जिन ॐकारा; नाहे पद न्यारा योगीश्वर प्यारा, अनाद्यनतरूपाय, पंचाक्षर धारा, भज भज भज जिन देव ॥ टेर ॥ काशी देश बनारसी, नगरी अति राजे; प्रभु नगरी अति राजे, अश्वसेन वामा नंदन २, फणी लांछन छाजे ॥ भ० ॥ १ ॥ एकानन चतुरानन समोसरण गाजे ॥ प्रभु स० ॥ धर्म चक्र गगने गत २ पाखंड सब भाजे ॥ भ० ॥ २ ॥ अशोक वृच्छ शिर पर, छत्र चमर सोहे ॥ प्रभुछ० ॥ प्रभुजीनो रूप निरखतां, जिनजीनो रूप निरखतां, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भ० ॥३॥ हस्तायुध वाहन विन, अंबर नहीं अंगे, प्रभु वसन नहीं अंगे; केवल धारी संशयटारी २, नारी नहीं संगे, माया नहीं संगे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर, तूं शंकर धाता ॥ प्रभु तूं० ॥ शुद्ध प्रकाशा आशा रहिता २, तुं नहीं पितु माता ॥ भ० ॥ ५ ॥ तो महिमा कुंन गाने स- मरथ, तूं देवन देवा, ॥ पार्श्व तूं दे० ॥ जिण जिण रूप देखूं तिण रूपे, प्रभुजीनो रूप देखूं तिण रूपे, सारे - तुम

वेवा ॥ भ० ॥ ६ ॥ पार्श्व प्रभूकी आरति, जे शुद्ध मन पावे; निर्मल चित्त गावे; भनत मुनि रामेंदु, वांछित फल पावे, सद्गतिमें जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे स्तवननामक चतुर्थ प्रकरणम् ॥ ४ ॥

५ स्वाध्याय—गीत ॥

१ देशी गजरेकी ॥

गावो गावोरी पूज्य जयमल्लजी गुण गावो, सुख पावोरी घर बैठां होय वधावो ॥ गा० ॥ १ ॥ श्रीसंघनो काज करावो, और भक्तकी भीड मिटावो ॥ गा० ॥ २ ॥ दुश्मन अलग भगावो, वळी आदर देवे नर रावो ॥ गा० ॥ ३ ॥ झगडे जीत रखावो, कोइयन करे जग दावो ॥ गा० ॥ ४ ॥ पुत्र कलत्र मित्र मिलावो, भूत प्रेतने दूर नसावो ॥ गा० ॥ ५ ॥ अड्यो काम न रक्खावो, वळी विगड्यो काम बणावो ॥ गा० ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष परचो दिखावो, वळी भूलो राह वतावो ॥गा०॥ ७ ॥ मुनि राम करे छे जतावो, म्हे तो देख्यो प्रगट प्रभावो ॥ गा० ॥ ८ ॥ इति ॥

२ रंगरेज रंगीला कांचूं रंग दे रे म्हांने केसऱ्या॥ए देशी॥

अरिहंत देवने ओळख्या स रे, हुवो परम कल्यांन; द्वादश गुण कर शोभता स रे, ते अरिहत जांन रे ॥ गुरु ज्ञान नगीना, भलो रे वतायो मारग मोखनो ॥ टेर ॥ १ ॥

निरलोभी निरलालची स रे, ते गुरुलीधा धार; आप तिरे पर तारता स रे, ते साचा अणगार ॥ गु० ॥ २ ॥ भेषधारी छारी दिया स रे, देखी अंदर ज्ञान; भेख देख भूलो मती स रे, लीजो हीये पिछांण रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ वीतरागरा वचनमें स रे, हिंसा न करणी मूल; हिंसा मांहे धर्म परूपे है जांके मुख धूळ रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धम कारणें स रे, हिंसा करसी कोय; ते रुळसी च्यारूं गते स रे, लीजो सूतर जोय रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ दया दान उथापक बोले, वीर गया छै चूक; ते मर दुर्गति जावसी स रे, करसी कूकाकूक रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ समकित दीधी मुझ गुरु स रे, जीव अजीव ओळखाय; तस थावर जाण्यां विना स रे, कहो समकित किम आय रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सबही कहै स रे, नही जांणे छः काय; तो धर्म हुवे किण रीतरूं स रे, जोवो आगम मांय रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कषाय परगत ओळखी स रे, लीजो समकित सार; राम कहे पांम्यो नहीं स रे, विन समकित कोई पार रे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु प्रसाद समकित लही स रे, गुरु सम अवर न कोय; गुरुसूं बेमुख जे हुवे स रे, तेहनी गत किम होय रे ॥ गु० ॥ ॥ १० ॥ उगणीसेरा आठमें स रे, नागौर शहर चौमास; कातिक वद पांचम किवी स रे, स्वांमी वृद्धिचदजी पास रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

२ कांटो साले रे ॥ ए देशी ॥

मास खमणरे पारणे, मुनि आया बांमण गेह; तपसी मोटा रे, मोटा मोटा रे छ कायारा पीर, तपसी मोटा रे ॥ ॥ १ ॥ देखाव्यो सत गुरु भणी, गुरु बोल्या तिणवार ॥ ॥ त० ॥ कुंण धांने आहार वेरावियो, कुंण मिलियो

दातार ॥ त० ॥ २ ॥ जैर हलाहल छे बुरो, ओतो नांखे ला आंतरा तोर ॥ त० ॥ लिणकारण नहीं खावसो, ओतो परठो निरवद्य ठोड़ ॥ त० ॥ ३ ॥ एक विंदु परठियो, दीठो अनरथकेर ॥ त० ॥ नाके सळ नहीं घालियो, पी गया हलाहल जैर ॥ त० ॥ ४ ॥ अनशन करि सुरवर थया, सर्वार्थ सिद्ध विचाल ॥त०॥ गुरु कहे निज शिष्य तेड़नें, तुमे करो मुनिकी संभाल ॥ त० ॥ ५ ॥ कलेवर देखि मुनि आविया, थया गुरु अधिक उदास ॥ त० ॥ शिष्य गमन गुरु देखियो, पांमी सुखनी रास ॥ त० ॥ ६ ॥ गुणवंतना गुण गावतां, तूटे कर्मांकी कोड़ ॥ त०॥ धर्मरुची मुगते गया, मुनि राम वंदे कर जोड ॥ त०॥ ७ ॥ इति ॥

४ देशी घूमरनी ॥

मोने सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासा; म्हे तो मन वंछित सुख पासां हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां ॥ टेर ॥ आज शहरमे सत गुरुजी आया, ए तो पंडित पुरुष सवाया हे माय; पाखंड मतनें हराय नसाया, आं तो छोड्या क्रोध मान माया हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मन मान्या पासा मुझ ढळिया, आज मन वांछित मुझ फळिया हे माय; राज पायो जिम हुई रंग रळियां, वाट जोतां सत गुरु मिलिया हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ बाल ब्रह्मचारी न परची नारी, ऐंरी कैणी रैणी एकतारी हे माय; आतम निंदा परनिंदा निवारी, आंरी सूरत मोहणगारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ सत गुरु जीवाजीव बताया, पुन्य ने पाप दिखाया हे माय; नव तत्त्व सत गुरु उरमे धराया, म्हांने षद्द्रव्य

प्रकट सुणाया हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ \\ ध्यान मीठो जिम अमृत धारा, सदा पुंडरीक कमलथी न्यारा हे माय; अल्पाहारा रस जीत्या जिभ्यारा, मोनें लागे प्राणसुं प्यारा हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ जिम जिम कल्पका दिन नैड़ा आवे, मोनें खाणो पीणो नहीं भावे हे माय; काम काज तो नांहि सुहावे, वळी नैंणां नींद नहीं आवे हे माय॥स०॥६॥ पेटी बांधनें विहार करियो, मो मन सत गुरु हरियो हे माय; म्हारो हिवड़ो जावे भरियो, मांतुं उलटे जोरादर दरियो हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ धन्य जिके नर नित्य सुणे वखांण, धन्य गुरु मुख करे पचक्खाण हे माय; धन्य चले गुरु वचन प्रमाण, धन्य सेवा करे चतुर सुजांण हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ गुरु विन ज्ञान न गुरु विन ध्यान, म्हांनें गुरु विन नही मिले मान हे माय; सत गुरु नो विनो करे गुणवान, तिके पांमे अमर विमान हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ समत उगणीसे सातै कही गाई, म्हांने पाली पीठ सुहाई हे माय; रामचंद्र गुरु महिमा सुनाई, आ तो मास फागुण वदमांही हे माय ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

मोनें सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, मोनें सत गुरु चाल सुहावे हे माय; सत गुरु वदन म्हे जासां म्हे तो जासां ने शीश नमासां हे माय, म्हे तो मन वांछित सुख पासां हे माय ॥ स० ॥ टेर ॥ जीव दया वीस विश्वा पाळे, ऐ तो निरवद्य वदे मुख भापा हे माय ॥ स० ॥ विना दीये तृणमात्र न लेवे, जांरे घटमे प्रकट उजासा हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ शीलव्रत पाळे चित्त चोखे, ऐ तो

भूल न करे मुख हासा हे माय ॥ स० ॥ आज्ञा प्रमाणे उपग्रहन रक्खे, जांरे नहीं ममत एक मासा हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत निर्मल पाळे, आं तो छोडी जगतकी आशा हे माय ॥ स० ॥ इस भवमे तो महिमा फैली, परभव मुक्तिमें वासा हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ वार वार म्हांरे नगर पधारो, ओ तो होसी धर्म प्रकाशा हे माय ॥ स० ॥ राम मुनी कहे सत गुरु महिमा, म्हे तो ऊगे दिन नित्य गासां हे माय ॥ स० ॥ ४॥ इति ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

गणधर ग्यारे नित नित नमसां, म्हे तो करसा सत गुरु सेवा हे माय; शीश नमास्यां पाये पडस्यां, म्हे तो गुण मुख गास्यां नितमेवा हे माय ॥ ग० ॥ टेर ॥ श्रीतीर्थंकर गणधर पद मोटे, म्हांने लागे जीवसे प्यारा हे माय; प्रथम संघयन संस्थान प्रथम छै, ए तो अद्भुत रूप उदारा हे माय ॥ ग० ॥ १ ॥ पूर्व चतुर्दश धारक सारे, दृष्टिवादके स्वामी हे माय; सदेह टारक ज्ञान च्यार धारक, गणधर सब शिवगामी हे माय ॥ ग० ॥ २ ॥ केवल विन ज्ञान मुहूर्तमांहे, आवे गणधर लब्धिथी सारां हे माय; गणधर पूछे श्रीअरिहंत भाखे, ज्यांरो उपदेश लागे अति प्यारो हे माय ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेसठ श्लाघा पुरुष प्रधान, जांकी कथा गणधर भाखे हे माय; मनका सदेह तो गणधर टारे, करे गणधर जगत प्रकासे हे माय ॥ ग० ॥ ४ ॥ लब्धिपात्र और निर्मल गात्र, ज्यांका गुणकीयां बुद्धि वाधे हे माय; घर बैठांही पौरस सोवन, वळी अन्न धन लछमी लाधे हे माय ॥ग०॥५॥ तद्भव शिवगामी अरिहत गणधर,

पुन्य स्कंध उत्कृष्ट हे माय; मुनि राम कहे कष्ट मोचक तुम हो, ज्ञानावरणादि टारो कर्म अष्ट हे माय॥ग०॥६॥इति॥

७ नटवा कर जोगिको वेस आगरे चल रे ॥ ए देशी॥

चेतन धर मुनिवरका वेस, मुगतनें चाल रे; हां रे मुग तनें चाल रे,हां रे मुगतनें चाल, चेतन दे सत गुरु उपदेश, मुगतनें चाल रे ॥ टेर ॥ पंच महाव्रत धारके स रे, समति गुपति प्रतिपाल, मानों साची कूं, त्रयोदश चारित शुद्ध मने स रे, करत पतनकूं गाल ॥ चे० ॥ १ ॥ सात वीस गुण मूल है सरे, उत्तर गुण दश होय; मांनो साचीकूं शुद्ध मन सेती पाळजो स रे, राग द्वेष दोय खोय॥चे०॥२॥ गीदड़पणो तूं छोड दे स रे, सिंघपणें शुद्ध चाल, मांनो साचीकूं, गीदड़पणे तूं चालसी स तो, खोटा होवे हवाल ॥ चे० ॥ ३ ॥ गर्दभ खेत खाविया स रे, ओढ सिंघकी खाल, मानो साचीकूं, खबर पड़ी जब लोकने स रे, मा ज्यौ वुरे हवाल ॥चे०॥४॥ सिंघपणे जो पाळसी स रे, तो लोक करे गुण ग्राम, मांनो साचीकूं, मुक्त हुवे जग जस रहे स रे, इम बोले मुनि राम ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ थारे तो कारण बूंदी गयो थो, बूंदीसें फूंदी लायो नांदांनड़ी रंग लागो; केसरको पट लागो नांदांनड़ी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

मुक्तिके कारन सयम लीयो छे, संसारने त्याग दीयो धर्मको रंग लागो, समकितको पट लागो, धर्मको रंग ला गो ॥ टेर ॥ १ ॥ मुक्तिके कारन चारित्र पाळूं छूं, दो तो सगळा टाळूं ॥ ध० ॥ २ ॥ मुक्तिके कारण तप करू छूं

कर्मसूं खूब लरूं छूं ॥ ध० ॥ ३ ॥ मुक्तिके कारण ज्ञान पढूं छूं, पाखंडसूं जाय लडूं ॥ ध० ॥ ४ ॥ मुक्तिके कारण इंद्रिय दमूं छू, क्रोधादिकनें उपशमू ॥ ध० ॥ ५ ॥ मुक्तिके कारण कर्म हटाऊं, मुनि राम कहे प्रभु गुण गाऊ ॥ध०॥६॥इति॥

९ देशी जलेकी ॥ जलो म्हारी जोड रो उदिया पुर माले रे ॥

श्रेणिक रेवाडी चल्यौ रे, दीठो मुनि वर एक; मुनि मन गावतो, मुझ मनडो मोह्यौ रे, शिव अब गावतो; अविचल ्य रह्यौ रे ॥ टेर ॥ राजा मन अचरज हुवो रे२, मोह्यौ रूपनें ेख ॥ मु० ॥ १ ॥ क्यूथे संजम आदर्यौ रे २, मुनि कहे हूं छू अनाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवरभणी रे२, हूं हूस थांरो नाथ ॥ मु० ॥ २ ॥ तू पोते अनाथ छै रे २, होसी किणरो नाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवर भणी रे२, सुण राजा मोरी बात ॥ मु० ॥ ३ ॥ कौशांबीनो वासियो रे २, मुज घर धन अण पार ॥मु० ॥ आंखतणी वेदन हुई रे२, आडो न आयो परिवार॥मु०॥४॥राजा सुणने समजियो रे २, हुवो समकित धार ॥ मु० ॥ राम कहे मुनिवर भणी रे २, वदू वारं वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१० आज शहरमें हो हंजा मारूं सी पड़े ॥ ए देशी ॥

स्वामी सुधर्मा हो वीरजीना पाटवी ॥ टेर ॥ सुधर्म स्वामी हो गणधर पांचमो, गुरु भेट्या वर्धमान दयाल, परम उदारी करूपे सुंदरू, अनुत्तर सुर किण ज्ञान ॥ द० स्वा० ॥ १ ॥ कोलास ग्रामे हो धमिल, तुम पिता भदिला तुमची मात॥द०॥वरस पचासे हो घरमें तुम रह्या, भेट्या पछे जगनाथ ॥ द० स्वा ॥ २ ॥ सो वरसांनो हो

काय॥गु०॥२॥खरची देवे गांठकी रे,मुनि देवे मुक्ति पोंचाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ निरलोभी निरलालची रे, मुनि वहे जिन आज्ञा मांय ॥ गु० ॥ ४ ॥ मुनि अनाथी भेटनें रे, कांई समज्यो श्रेणिक राय ॥ गु० ॥ ५ ॥ राय प्रदेशी पापियो रे, तार्‍यो केसी महाराय ॥गु०॥६॥ अरजुन माली शिव गयो रे, मुनि राम कहे चित लाय ॥ गु० ॥ ७ ॥ चौमासो साल चौवीसमें रे, तिवरी सदा सुख दाय॥गु०॥८॥इति॥

१४मारूजीनें राखो समझाय दासी मोरा मा०॥ए देशी॥

गुरुजीनें राखो समझाय सखी मोरा ॥ गु० ॥ भर्म गया सत गुरु मिल्या जी, और गमाया पाप; साच झूठनें ओळख्याजी, भव भव मेट्या संताप ॥ स० ॥ १ ॥ सत संगत बहुली करी जी, रहे करणरो चाव; पिण अबके गुरु सागे मिल्या जी, मिलिया पुन्य प्रभाव ॥ स० ॥ २ ॥ निरलोभी निरलालची जी, किम राखूं विलमाय; हाथ जोड़ अरजी करूं जी, छळ लुळ लागूं पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ निंदा नहीं कोई धर्मनी जी, विधीसूं करे उपदेश; रेस खुलासे सघी कहे जी, रीस नहीं लव लेश ॥ स० ॥ ४ ॥ काम क्रोध अज्ञानसूं जी, दूर रहे नित्यमेव; निज स्वरूपने ओळखे जी, ते मोरे गुरु देव ॥ स० ॥ ५ ॥ अबके विछड्या गुरु देव जी हे, कब फेर मिलसी आय; मुनि राम कहे जसरासर मध्ये, घणो साधूनो चाय ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

१५ मारग मारग हूं चली, कांई ऊजड़ रेक पड गयो पांव, करवो रे गुड़वेलीरो,करवो राज चंबेली रो॥ए देशी॥

धर्म अधर्म न ओळख्यो, नहीं मारगरे कुमारग लाधरे,

कुगुरु रे वह कावियो,सुगुरु संग न पावियो, जीव अजीव न जाणिया, नहीं जाण्यां रे मैं साधं असाध २ ॥कु०॥१॥ मोक्ष अमोक्ष न जांणिया, कांई पड़ियो रे हूं मिथ्या मांय२ ॥ कु० ॥ जिनवर वचन न सरधिया, कांई उलटी रे निंद कराय२ ॥ कु० ॥ २ ॥ कुगुरु कुशास्त्र धारिया, नहीं गिणियो रे मैं न्याय अन्याय २ ॥ कु० ॥ हठग्राही कुमती थयो, शुद्ध धर्म रे नहीं आयो दाय २॥ कु०॥३॥इम काल अनादि भटकतां, अब पायो रे मैं सत गुरु संग २॥सुगुरुरो संग लागियो, कुगुरुनो संग त्यागियो ॥टेर॥ भलो हुवो गुरु देवको, अब लागो रे मुझ जिन मत रंग २ ॥सु०॥ ४ ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञान ही, चारित्र रे वळे लीजो जांण२ ॥सु०॥मोक्ष मारग जिन भाखियो, जिन वचन रे सद्द करूं प्रमाण २ ॥ सु० ॥ ५ ॥ निःसंकिय निःकंखिय, विचिकित्सा रे निर्मल दृष्ट २ ॥ सु० ॥ उववूह थिरि करणे, वच्छल रे प्रभावना अष्ट २ ॥ सु० ॥६॥ देश थकी और सर्वथी, निसकित रे निकांक्षित होय २ ॥ सु० ॥ स्यादवाद मत मूल छै, जिन शासन रे थे लीजो जोय २ ॥ सु० ॥ ७ ॥ भव भव सरणो मुझ होजो, जिन वाणी रे छै तारणहार २ ॥ सु० ॥ मुनि राम कहे जिन धर्मको, कांई मर्म रे गुरु मुखसू धार २ ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

१६ ऊंची नीची हो भैरूं सरवरियारी पाळ, सायधण हो झलती पणिहार; हार दे म्हारा लाड़ला हो भैरूं ॥ ए देशी ॥

म्हे तो करसां हो प्रभू गणधर सेवा; सेवा करसां, पाये पड़सां, हे देवनके देवा; गणधरजी कर जोडी हो वंदू;

वंदवाको कारन म्हारे सारो दुःख निकंदूं ॥ म्हे० ॥ टेर ॥ जो तनें रे जीवा तरवाको कोड, तो गणधरजीके पाय वंदो कर जोड ॥ म्हे० ॥ १ ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वायूभूति नाम, गौतम गोत्री तीनें भाई राख्यो जुगमें नाम ॥म्हे० ॥ २ ॥ व्यक्त स्वामी हो सुधर्मा शिर नाऊं, मंडित पुत्र हो मौर्य पुत्र गुण गाऊं ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ अचल भ्राता हो मैतार्य प्रभास, पृथक् कुला आठूंकेरा वंदूं हुलास ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ एकादश हो गणधरजी विख्यात, वीरप्रभूजीका चेला जांकी ब्राह्मण उत्तम जात ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ प्रभूजीके हो पेली नव गण धार, मुक्ति पधारे गणधर दोइ रहे प्रभूके लार ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ सारेही तो शिव गये राजगृहके मांही, सुधर्मा स्वामीकी रही वाचना रही दूजाकी नाहि ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ किंकरकी तो अरजी प्रभूजी लीजो अवधार, मुनि रामचंद तो वंदे थांने आपतणो आधार ॥ म्हे० ॥ ८ ॥ इति ॥

१७ राधा प्यारी हे ॥ ए देशी ॥

गणधरजीनें म्हे तो वंदसां, ऐ तो राजे प्रभूजीं पाद; प्रभू म्हारा हो; सूरि दाता छे अर्थका, उपाध्या दे सूत्रपाठ ॥ प्र० गण० ॥ १ ॥ तीरे इन कर कैसो ती छे, तीर्थंकर तीर्थ करणार ॥ प्र० ॥ प्रथम तो गणध थप्पियें, पछे तीर्थ थपे छे च्यार ॥ प्र० ग० ॥ २ ॥ अर्थ अत्तागम अरिहंत, गणधर अनंतरागम ॥ प्र० ॥ परंपर गम शिष्य तेहना, छे तीन प्रकारे आगम ॥ प्र० ग ॥ ३ ॥ सूत्रसे अत्तागम गणधरु, अनंतरागम जंबू स्वा ॥ प्र० ॥ परंपरागम छे आजलो, करूं सूत्रमणी प्रणा

॥ प्र० ग० ॥ ४ ॥ अर्थ भासक अरिहंतजी, सूत्र गूंथे गणधार ॥ प्र० ॥ प्रश्न कारक प्राये गणधरू, श्रीअरिहत उत्तरकार ॥ प्र० ग० ॥ ५ ॥ अरिहंत गणधर दो पद, अविनाभावी छे दोय ॥ प्र० ॥ अरिहत गणधर विन नही, गणधर अरिहंते होय ॥ प्र० ग० ॥ ६ ॥ जिन शासन नित्य वंद हु, आगम नमुं तज भर्म ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मुज तारसी, श्रीदेव गुरु शुद्ध धर्म ॥ प्र० ग० ॥ ७ ॥ इति ॥

१८ मेड़ी ऊपर माळियो हे मिसरी, जिण चढ़ नाखूं राख, राख राख तो उड गई हे मिसरी, नीपजे दाड़म दाख; ॥ ए देशी ॥

हाथ जोड़ अरजी करूं हे सजनी, लुळ लुळ लागू पाय; सत गुरु आवे सैरमे हे सजनी, दीजे मोय बताय ॥ १ ॥ देसूं वधाई तोयने हे सजनी, मत जांणीजे हास; नही विसरूं गुण ताहरा हे ॥ स० ॥ और देस्यू स्याबास ॥ २ ॥ सत गुरु आया बागमे हे सजनी, तूं केती सो आज; मूंडे विराजे मुंहपती हे सजनी, ओघो जतना काज ॥ ३ ॥ हाथमे झोळी जेहने हे ॥ स० ॥ पोथी जांरे पूठ; चेला जांरे दीपता हे सजनी, चावा च्यारूं खूंट ॥ ४ ॥ सुरत प्यारी जेहनी हे ॥ स० ॥ नीची राखे दिष्ट; मैला कपडा पहरचा हे सजनी, वाणी अमृत मिष्ट॥ ५ ॥ लोक करे था वातडी हे ॥ स० ॥ आये उत्तम निग्रथ; पंच महाव्रत पाळता हे सजनी, साधे मुगतनो पथ ॥६॥ दीधी वधाई जेहने हे ॥ स०॥ पैरी नाकमे नाथ; ओढी दिखणी चूनड़ी हे सजनी, चाली सखियां साथ ॥ ७ ॥ आई मुनिवर वांदवा हे ॥ स० ॥ हीये हर्ष अपार; मुनि राम कहे

पाखंड देख नवि झूलूं ॥ हुं० ॥ २ ॥ मोनें सत गुरुजी सूत्र सुणाया, म्हारा मनमें वहोत सुहाया; ज्ञानी गुरुजीनी अमृत वाणी, म्हांने लागे अमिय समाणी ॥ हूं० ॥ ३ ॥ म्हेतो वीर प्रभूजी मत पायो, म्हांने ज्ञानी गुरुजी वतायो; म्हे तो लीयो जगत सब जोई, पिण गुरुजी रे तुले नही कोई ॥ हूं० ॥ ४ ॥ हूंतो सत गुरुजी निजरां निरखूं, हूं तो रोम रोम करि हरखूं; दीठां दिल हुवे राजी, म्हांरा गया भर्म सब भाजी ॥ हूं० ॥ ५ ॥ सत गुरुजी ज्ञानका दाता, गुरु दीठां दिल पावे साता; म्हारो गुरु चरणां चित लागो म्हारो संसारसुं दिल भागो ॥ हूं० ६ ॥ मोने नैणें नींद न आवे, म्हांने खाणो पीणो नही भावे; मोसूं भक्ति वण नही आवे, सो अफल जमारो जावे ॥ हूं० ॥ ७ ॥ चित्त चोखे करो गुरु सेवा, कुमति काढे गुरांमे कैवा; गुरु मोटा छै उपगारी, ज्यांने वंदीजे वार हजारी ॥ हूं० ॥ ८ ॥ गुरु अज्ञान मिटायो, मोने सम्यक्त्व रत्न वतायो; शुद्ध उपदेश गुरु भाख्यो, नरक पडतां झेली राख्यो ॥ हू० ॥ ९ ॥ काच खंड कुंण लेवे, चिंतामणि नाख कुंण देवे; लाख वात जो कैवे, कल्प छोडी खेजड कुंण सेवे ॥ हूं० ॥१०॥ सतगुरुजी वाल ब्रह्मचारी, ज्यांरी सूरत मोहणगारी; ज्यांरी मुद्रा प्यारी लागे, ज्यांरे वैठ रहीजे मुख आगे ॥ हूं० ॥ ११ ॥ मोनें सतगुरुजी भवोदधि तारे, म्हांने सतगुरुजी पार उतारे; म्हांरी अरज ऊपर छै अरजी, दर्शन देणेकी राखजो मरजी ॥ हूं० ॥ १२ ॥ वनणा वार वार लीजो, म्हांनें वेगो दर्शन दीजो; कल्पता चौमासे पधारो, वारे महीनांमे क्षेत्र संभारो ॥ हूं० ॥ १३ ॥ सत

गुरुजीनें सगळा पूजे, पाखंडी ऊभा सह्व धूजे; सतगुरुजी तन मन भाया, इम राम मुनी गुण गाया॥हुं०॥१४॥इति॥

ढाळ. ॥

१ नाम जपो श्रीना कोड़ो ॥ ए देशी ॥

पूज्य जयमल्लजी हुवा अवतारी, ज्यांरे नामतणी महिमा भारी; कष्ट टळे मिटे ताप तपो, पूज्य जयमल्लजीरो जाप जपो ॥ १ ॥ पूज्य नामे सब कष्ट टळे, वळी भूत प्रेत पिण नांही छळै; मिले न चौर है गप्पचपो ॥ पू० ॥ २ ॥ लक्ष्मी दिन दिन वध जावे, वळी दुःख नैडो तो नही आवे; व्यौपारमें होवे बहुत नफो ॥ पू० ॥ ३ ॥ अड़्यो काम तो हुय जावे, वळे विगड्यो काम तो वण जावे; भूल चूक नहीं खाय डफो ॥ पू० ॥ ४ ॥ राज काजमें तेज रहे, वळी खमा खमा सहु लोक कहे; आछी जायगां जाय रुपो ॥ पू० ॥ ५ ॥ पूज्य तणो जां लीयो ओठो, जांरे कदे नही आवे तोटो; घर घर बारणे कांई तपो ॥ पू० ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, किण वाततणो नहीं होय धको; खाली विमांण और टळेजी सप्पो ॥ पू० ॥ ७ ॥ स्वगच्छतणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा तुम ध्यान धरे; कोई प्रत्यक्ष वात मती उथपो, पूज्य जयमल्लजीरो जाप जपो ॥ ८ ॥ इति ॥

दोहा ॥

कृष्णरायनो नद है, नेमप्रभूनो शिष्य ।
अन्राय कर्म उदय भयो, बोलेइणविध ऋष्य ॥ १॥

मन लागे, वेश्याको सकुन मांनीजे ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुकृत केरी वात न भावे, दुःकृत चाय करीजे ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञानको कथन करे नहीं धेटो, उलटे पंथ चलीजे ॥ गु० ॥ ५ ॥ लाख प्रमोद देवे गुरु सचो, पिण नहीं एक पतीजे ॥ गु० ॥ ६ ॥ कौन प्रकारसुं मन रहे निश्चल, सो गुरु शैली मुझ दीजे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ध्यान विना मन कवूवन थंभे, गुरु कहे शिष्य सुणीजे ॥ गु० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे मनकों वश करवा, गुरु मुख सैली लीजे ॥ गु० ॥ ९ ॥ इति ॥

७ बड़े घर ताळी लागीरे, जीवड़लारी जोत जागी रे ए देशी ॥

गुरुजीरी सेव करसां रे, सदा शिर पग विच धरसां रे ॥ टेर ॥ गुरु दीवो गुरु ज्ञानके दाता, साताके देवनहार; सतगुरु विन जग घोर अंधारो, कुंण नरकसें राखनहार ॥ गु० ॥ १ ॥ पाखंड मत म्हांरी दाय न आवे, कुगुरु संग मत होय; पापी तो म्हांनें मिलजो हजारां, कुगुरु मिलो मत कोय ॥ गु० ॥२॥ कुगुरु धनकूं खांचे विध विध, डारे दुर्गति मांय; सतगुरु तारे खरची बंधावे, दीधा नेत्र खुलाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ तीन भवनमें चीज न ऐसी, जो सतगुरु जोड़े लागे, रामचंद कहे करो गुरु सेवा, ज्यूं सुख पावोला आगे ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

चाल सखी तूं मुझ संगे तोय केती थी, वे आया सतगुरु आज. सखी तोय केती थी; सतगुरुकी सगत छोड

मती, पंच महाव्रत पाळता॥तो०पं०॥ऐ तारण तरण जहाज, सखी तोय केतीथी, सतगुरुकी सगत छोड मती, मिथ्यात्व हरो सतसंग करो, मुनि संगसूं उतरो पार॥ सखी० स० मि० स० मु० स० सत० ॥ १ ॥ नमे नहीं ऐ केहनो तो ॥ तो० ॥ ऐ खमे बोल कुबोल ॥ स० ॥ रमे सदा निज रूपमें ॥ तो० ॥ ऐ वमे कर्म कल्लोल ॥ स० स० मि० स० मु० स०स० ॥२॥ कालिस नही किण वातसूं ॥ तो०॥ लालच नही है लिगार ॥ स० ॥ वाचक ऐसा छे नहीं ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ३॥ब्रह्मवेत्ता करता नहीं ॥ तो० ॥ भूल चूक परपंच ॥ स० ॥ आतमराम रमावही ॥ तो० ॥ लोभ न ज्यारे रंच ॥ स०स० मि० स० मु० स० स० ॥ ४ ॥ पांव पसारे नहीं हाथकूं ॥ तो० ॥ वंदगी फिर मत आव ॥ स० ॥ याद रखो प्रभु भूल हां ॥ तो० ॥ फक्कर एह स्वभाव ॥ स० स० मि०स०मु० स०स॥ ॥ ५ ॥ तारे सतगुरु एहवा ॥ तो० ॥ जे मनकूं बैठा मार ॥ स० ॥ मुनि रामचंद मन चायना॥ तो० ॥ गुरु जीवो वरस हजार ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ ख्याली आयो मुलतांनसें ॥ ए देशी ॥

पार न पायो गुरु ज्ञानको, भलो बतायो मार्ग जैनको ॥ ॥ पा० ॥ टेर ॥ दान सुपातर मुनिकूं दीजो, पायो शालिभद्र फल दानको ॥ पा० ॥ १ ॥ शील रतन जतन करि रक्खो, ज्यूं सुघरे थांरों मांनखो ॥ पा० ॥ २ ॥ तप विना नहीं मोक्ष मिलत है, नष्ट करे कर्म वितानको ॥ पा० ॥ पा० ॥ ३ ॥ देखो भाव शिरोमण शुद्ध परणांमे, मरु देव्या भरत राजानको ॥ पा० ॥ ४ ॥ जीव अजीव

पुन्य पाप बतायो, कीयो आश्रव संवर पिछानको ॥ पा० ॥ ५ ॥ निर्जरा बंध क्रिय मोख दिखायो, शासन बतायो वर्धमानको ॥ पा० ॥ ६ ॥ रामचंद्र कहे सतगुरु सच्चा, नाश कर्यो रे अज्ञानको ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

मुनि तिष्ठे अपने ख्यालमें, रहे मस्त सदा निज न्हालमें ॥ मु० ॥ टेर ॥ कौन जाने कौन बिगरे सुधरे, नहीं फसे रे जगके जालमें ॥ मु० ॥ १ ॥ निंदो वंदो भावे कउ देवो गाळी, कबू चूके न अपनी चालमें ॥ मु० ॥ २ ॥ ध्यानानंदी अरु दृढ ब्रह्मचारी, जांके दमके जी हीरो भालमें ॥ मु० ॥ ३ ॥ पत्थर कंचन सम कर जांने, फर्क न रंक भूपालमें ॥ मु० ॥ ४ ॥ जगसें तर्क फर्क मन रक्खे, भला करे एक स्वालमें ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे ऐसे धन्य जग जोगिया, मिलजो जी म्हानें कोई कालमें ॥ मु० ॥ ॥ ६ ॥ इति ॥

४ हां सखी सुन वात सयानी ॥ ए देशी ॥

पंच महाव्रत पाळे मुनिवर, ठाळे दुःखण सारा रे क; करते ज्ञान विचारा, हां गुरुदेव हमारा, गुरुदेव हमारा, तारनहारा, जिन शासनवारा रे क ॥ गु० ॥ १ ॥ जिन मतके मंडन कुमतके खंडन, करते ज्ञान पसारा रे क, शुद्ध उपदेश दातारा ॥ हां गु० ॥ २ ॥ निसप्रेही रहते परिषह सहते, वहते खड्गकी धारा रे क, करते उग्र विहारा ॥ हां गु० ॥ ३ ॥ राग द्वेष दो मल्लकूं मारे, तारे भविक अपारा रे क; भेटे जो चरनही जांरा ॥हां गु०॥४॥ रामचंद कहे ऐसे मुनिवर, करते भवोदधि पारा रे क; नमोनी सो सो वारा ॥ हां गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ नखरो जोर वण्योरे चंदगारीरो ॥ ए देशी ॥

सखरो धर्म पायोरे जिनराजरो; अजरो जीग वण्योरे गुरु महाराजरो ॥ टेर ॥ सतगुरु पासे जासां म्हेतो, सीस नमासां गुण मुख गासां; डर नही लासां कुल लाजरो ॥ स० ॥ १ ॥ भवसिधूही तरसां म्हे तो, भव उलंघसां पार उतरसां; शरणो लेसां रे धर्म जाजरो ॥ स० ॥ २ ॥ नव तत्वही सीखां म्हे तो, नयकू धरसां चरचा करसां; ज्ञान अभ्यासां दिन सांजरो ॥ स० ॥ ३ ॥ निज रूप ओळखसां, करसां निरणो, तिरणो इनसे; मुनि राम भणे रे धन दिन आजरो ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

६ असी रुपय्या ले कलदार ॥ ए देशी ॥

प्रणमूं श्री गुरु ज्ञान दातार, भव जल सिधू तारनहार ॥ टेर ॥ श्रीगुरुदेव करू तुम सेव, तजूं अहमेव भजूं चरणार ॥ प्र० ॥ १ ॥ तुम गुरु राज सुधारो काज, रखो मेरी लाज महाराज कृपाल ॥ प्र० ॥ २ ॥ अधम उधारन भव जल तारन, सारन वारन करन सुधार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ मैं गुरु चेरो ग्रह्यो पद तेरो, दै मुझ गैरो ज्ञान विचार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ गुरु पद पूजो नहीं जग दूजो, तूं जो चाहे तऱ्यो ससार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कहे मुनि राम करो गुन ग्राम, निश्चल ठाम लहो सुखकार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ आनंदी ले घोटो, घूंघटमें दोय नैन रह्या, जैसे शूरवीरका वान वह्या, थारे घायलरो नहीं तोटो रे, आनंदी आनंदी लै घोटो ॥ ए देशी ॥

सुगुरुजी सुगुरुजी मो तारो ॥ वावा सु० ॥ टेर ॥ गुरु चरनां चिचमें आय रह्यो, मेरे मनको मनोरथ

होय गयो; गुरु गुनको अंत न पायोरे, सुगुरुजी सुगुरुजी मो तारो ॥ १ ॥ मेरा मोटा भाग्य गुरु पद भेट्या, तुम भव भवना दुख सब मेट्या; मेरो सफल भयो अवतारो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ मात तात भ्रात नही तार सके, नरक पड़तां कोइयन राख सके; एक रक्खे गुरु चरनांरो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मेरा गुरु चरना चित जाय लगा, मेरा मोह अज्ञान तो दूर भगा; कर लगा चिंतामणि सारो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फेर कुगुरु काला नाग जिसा, नही जगमें दुश्मन और इसा; दै कुगुरु छांनी मारो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ थारे मुक्त जावन दिलमांहे वसी, तो तुम सेवो शुद्ध ऋसी; कर राग द्वेषको टारो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ दिल राख सफा तेरे होय नफा, तूं रीस करी मत होय कफा; तेरी अप्पा इणविध तारो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ गुरु गुण शारदा नित्य गावे, फेर इंद्रादि पार नहीं पावे; गुरु किधुं मोटो उपगारो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ मुनि रामचंद गुरु वंदत है, दुष्ट गुरुभणी कोई निंदत है; जिणरो होसी मुकड़ो कारो रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ देशी धूंसेरी ॥

एक कर लो रे सेव गुरु देवनकी ॥ ए० ॥ टेर ॥ गुरु देवन ईश्वर परमेश्वर २, क्या महिमा करूं गुरु भगवनकी ॥ ए० ॥ १ ॥ शुद्ध उपदेशी कैसी गुरु जेहवा २, शेली दिवी शिव स्थाननकी ॥ ए० ॥२॥ भव भव काज सुधारे गुरु ज्ञानी २, क्या ओपमा लगे चिंतामनकी ॥ ए०॥ ३ ॥

पशुता टाली कीयो मुज मानव २, फेरी ज्ञान शलाका अंजनकी ॥ ए० ॥ ४ ॥ एकलव्य गुरु भावकू रख तो २, शिष्यो कला देखो धाननकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ गुरु कृपासे काज सब सुधरे २, गरज सरे सब तन मनकी ॥ए०॥६॥ मुनि राम कहे शिष्य केवलधारी २, तनु सेव करे गुरु चरननकी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

२ देशी ख्यालनी ॥

सतगुरुजी म्हारां दर्शन तो दीजे मोने कर मया ॥ सतगुरुजी०॥टेर ॥ सतगुरुजी तो काठिण दाखसे, है अमृतसें खारा; सतगुरुजी तो करता वरते, रविथकी अंधियारा जी ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी तो ऐसा मैला, मोती अथवा चंद; सतगुरुजी तो घणाज ओछा, जैसे महासमंद जी ॥ स० ॥ २ ॥ छोटा पिण वे मेरू जैसा, खोटा चिंतामणि रतन; थिरवासी तो कहिये ऐसा, मन अथवा पवन जी ॥ स० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी तो नितही मोनें, ज्ञान करी भरमावे; रामचंद कहे सतगुरु हट कर, मुक्ति महल लेजावे जी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी फागनी ॥

गुरु बेमुख मोख नही पावे॥गु०॥अज्ञानीको गुरु ज्ञानी करियो, जीव अजीवकू ओळखावे ॥ गु० ॥ १ ॥ दुर्गति सद्गति राह दिखायो, वळे मुक्तिपथको दिखलावे ॥ गु०॥ ॥२॥पच आचारीने गुरु उपगारी,गुरु गुणको पार नहीं आवे गु०॥ ३ ॥ ऐसा गुरुकू फेरे अज्ञानी, वहोल ससार दुर्गति जावे ॥गु०॥४॥ अपछंदो ने आपमती हुय, गुरु दयालकू छिटकावे ॥गु०॥५॥ दशवे कालिक उत्तराध्ययने, अवनी-

तकूं इम दरसावे ॥ गु० ॥ ६ ॥ गलिहार गधोने कुत्ती कुत्ती, जठे जावे जठे दुखी थावे ॥ गु० ॥ ७ ॥ विनय रहित तप धर्म करीयो, ज्ञानी तो लेखे नहीं लावे ॥गु० ॥ ८ ॥ रत्न छोडनें काच ग्रहे छै,अमृत छोड अखज खावे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु निंदा सम पातक मोटो, दीसे नहीं प्रभु फुरमावे ॥ गु० ॥ १० ॥ इम जांणी गुरु सनमुख रहिये, रामचंद इम दरसावे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

४ देशी ख्यालनी ॥

गुरु देव हमारा, थांका दर्शनकी रे म्हारे भावना; सुणो सखी सहेल्यो, तन धन तो वारूं रे, करसूं वधावणा ॥ टेर ॥ तीन लोकको द्रव्यही सारो, करूं भेट तो थोड़ा दर्शन करनें करूं वीनती, क्यू दीये दर्शन मोड़ा ॥ गु० ॥ १ ॥ मात पिता सुत मित्र रु स्वामी, खड़े खड़े सा झांखे; समरथ नही को नरक टारवा, वांह पकड़ गुरु राखे जी ॥ गु० ॥ २ ॥ अंधत्व टारी नेत्र दिये वर, अपूज्य के पूज्य वनाये; पशुता टारी जन्म सुधारी, नर पंक्तिं लाये जी ॥ गु० ॥ ३ ॥ भव भवमें मुझ सद्गुरु सेवा, दीजो वर प्रभु मांगूं; मुनि राम कहे गुरु दर्शन दीजो, लुळ लुळ चरणे लागूं जी ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ सुण सब जारे तुम जलदी जावो ॥ ए देशी ॥

सुण चेतन रे तुम गुणवंत मुनीको सेवो, एक भजो निरंजन गुणवंतना गुण लेवो ॥ टेर ॥ एक संजती राजा मृग मारण नीसरियो एक मुनिवर देखि मनमें अधिको डरियो; जिह

सुण उपदेशो उत्तम कारज करियो, मुनि केवल पांमी भव सागरथी तरियो ॥ सु० ॥ १ ॥ एक राय प्रदेशी नही थी उसके करुणा, एक कैसी मुनिना पकड़्या उसने शरणा; जिन अल्पकालमें कीना पडित मरणा, मर हुवो सुरीयाभे निऋस्या उसका निरणा ॥ सु० ॥ २ ॥ एक अर्जुन माली थो राजग्रही वारे, षट् मासातांई सात मनुष्य नित मारे; एक सेठ सुदर्शन कर लीयो अपणी लारे, श्रीभगवंत भेटी कर दीयो खेवा पारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुनि वेले वेले जावजीव तप ठावे, नर नारी मिलके मुनिकूं बहोत सतावे; मुनि क्षम्मा करके कर्म पुंज उड़ावे, मुनि केवल पांमी शिवरमणीकूं जावे ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक मुनिवर भेटी अनंत जीव उद्धरिया, जिन शास्त्रमां हे भगवत निरणा करिया; शुद्ध करणी करनें भव सागरथी तरिया, मुनि राम कहे ते जन्म मरणसूं डरिया ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ घ्राणेंद्रीके वश नही परिये ॥ ए देशी ॥

मुनिवरकी संगत करिये, सदा गुरुवाक्य उर धरिये ॥ मु० ॥ टेर ॥ कोड़ अपराध मिटे एक छिनमे, कुमति लता उद्धरिये; भरिये शिव सनमुख पग जिनके, नरक कपाटही जरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता भ्राता सुत नारी, स्वामीसें नरक न टरिये; सद्गुरु विन नही नरकको टारक, तारक चरन पकरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ २ ॥ सत सगत सम नहीं जग दूजो, शास्त्रके वाक्य समरि-

ये; मुनि रायप्रदेशी अर्जुन मालीसें, गुरु विन कैसे तरि
ये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ३ ॥ शशिसें ताप गंगासें पाप, दारिद्र
कल्पसें हरिये; ताप पाप संताप तीनूंही, सद्य दर्शनसें
गरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ४ ॥ रोहीण्ये तस्कर भूल संगत कर
ना अभय कुमरसें छरिये; मुनि राम कहे सत संग नित
करिये, भवभव जनम सुधरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे
स्वाध्याय नामकं पंचम प्रकरणम् ॥ ५ ॥

---

६ हितोपदेश—गीत ॥

१ दिल्ली शहरका पासा मंगाय, आवोजी कम
धजिया चोपड़ खेलसां हे लो; चोपड़ खेले राज
दिवांण, चोपड़ खेले मोटा घरां हे लो॥ए देशी॥

चेतो चेतो चतुर सुजांन, मनुष्य जनम पावणो दोहि
लो हे लो; आर्य देश उत्तम अवतार, लांबो रे आऊखो
नहीं सोहिलो हे लो ॥ १ ॥ इंद्रयां पांचे शरीर निरोग्य,
कठिन मुनिनी संग पावणी हे लो; पाई संगत सुनवो
सिद्धांत, श्रद्धा रे प्रतीत दुर्लभ आंवणी हे लो ॥ २ ॥पाई
सरधा पुन्य प्रमांण, तो नहीं रे पराक्रम चेतन ते कीया
हे लो; रुळियो रुळियो काल अनाद, जनम मरण दुख
पाविया हे लो ॥ ३ ॥ पायो पायो जिन धर्म सार, वळे
रे अवसांण नहीं पावसी रे लो; नहीं बांधे तूं खरची
लार, जासी रे परभवमें कांई खावसी रे लो ॥४॥ धारो
धारो अरिहंत देव, धारोनी निर्ग्रंथ गुरु पिछांणिये रे लो;

ज्ञारो सारो नित नित सेव, दया रे धर्म निश्चै जांणिये रे लो ॥ ५ ॥ धन धन जेह नर नार, मनुप जनम सफलो करे रे लो; रामचंद जेहनी वलिहार, पाप रे करमसू जे नर डरे रे लो ॥६॥ रुद्र निधि इंद्र १९११ वर्ष मांय, ग्राम रे नींवाज पोस मासमें रे लो; आठम बुध सेवा मन लाय, करे रे सगलाई मन हुलासमे रे लो ॥७॥इति॥

२ मेरो जी फूल गुलाबरो ॥ ए देशी ॥

तेरो जी कूण ससारमे, ओ तो तेरो मेरो एक न कोय ज्ञानी जियडा, तृ पिण नहीं छै केहनों, तू तो अदर ज्ञानसुं जोय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥ टेर ॥ धन कमायो अकृत करी, ओ तो खायो खरच्यो नाय ॥ ज्ञा० ॥ पुन्य संचीया पूरा हुवे जद संचीयो केम रहाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र धन दावीयो, ओ तो निकमो डोसो खाय ॥ ज्ञा० ॥ कूण करे थारी चाकरी, थारो डेरो पोळरे मांय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥ २ ॥ मांगे खावा रवी खीचडी, वळे ताजी जलेबी सेव ॥ ज्ञा० ॥ लपटो पूरो नवि घालही, वळे पूरी न घाले पळेव ॥ ज्ञा० ते० ॥ ३ ॥ टिण टिण करो विन कामरा, थे तो मरो खावण रे काज ॥ ज्ञा० ॥ क्यूं कांन पचावो खावो देखने, थांरी सुध बुध गई सब लाज ॥ज्ञा० ते० ॥ ४ ॥ वहू बेटा कह्यो ना करे, जरे डोसो झुरे मनमांय ॥ ज्ञा० ॥ मुनि राम कहे धर्म जो कीयो, तो क्यू दुख देखे भव पाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ हांरे वावा नेह लग्यो दिल मांणले ॥ ए देशी ॥

हां रे जीवा कमला नीची संचरे, हां रे जैसे नदीनो ढार रे; यो लच्छी स्वभाव विचार रे, इम वदे प्रगट गण-

धार रे ॥ यों० ॥ हांरेजीवा ज्ञान गमावे वेगसुं, हांरे ज्यूं
निद्रा चैतन्य अपहार रे ॥ यो० ॥ १ ॥ हांरेजीवा कमला
मद प्रगट करै, हांरे ज्यू उन्मत्त करै मद धार रे ॥ यों० ॥
हांरेजीवा कमला अंधपणो दहै, हांरे जैसे धूम विकार रे
॥ यो० ॥ २ ॥ हां रे जीवा लक्ष्मी चापल्यता भजे, हां रे
जैसे विज्जु झत्कार रे ॥ यों० ॥ हांरे जीवा लक्ष्मी लोभ
वधावही, हांरे ज्यूं दव ज्वाल अपार रे ॥ यों० ॥ ३ ॥
हांरे जीवा कमला स्वेच्छाये रमै, हांरे जैसे कुलटा नार
रे ॥ यों० ॥ हांरे जीवा मुनि राम कहै किम आपरी, हां रे
देखोनी कृष्ण मुरार रे ॥ यों ॥ इति लक्ष्मी स्वभाव ॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

हांरे जीवा धिक् धन बहू आधीन रे, हांरे इम जानां
लोक प्रवीन रे ॥ धि० ॥ टेर ॥ हांरे जीवा गोत्री कहै धन
मांहेरो, हांरे तस्कर लेवे छीन रे ॥ धि० ॥ हां रे जीवा भूपत
छल कर खोंचही, हांरे तै तो गुन्हो राजको कीन रे
॥ धि० ॥ १ ॥ हांरे जीवा भस्म करै वन्हि वेगसुं, हांरे
जबी होवे पुन्याई हीन रे ॥ धि० ॥ हांरे जीवा अबु
बहावे गाळवे, हांरे जबी होवे तेरे तीन रे ॥ धि० ॥ २ ॥
हांरे जीवा धन भूमीमें गाडीयो, हां रे कोई अपहरे देव
बलीन रे ॥ धि० ॥ हां रे जीवा कुपुत्र गमावे धन संचि-
यो, हां रे पछे होवे अधिको दीन रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ हां
रे जीवा सप्त सीर एहमें कह्या, हां रे तुमे देखोनी बुद्ध
अहीन रे ॥ धि० ॥ हां रे जीवा मुनि राम कहै धन खर-
चिये, हां रे सद्क्षेत्रे हुय कर लीन रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ गोरल ईसरजी कवै तो हंस कर बोलणा हे ॥ ए देशी॥

म्हे तो निरलोभी नहिं देखिया जी, म्हे तो देखिया सो सगळा लोभिया जी ॥ टेर ॥ केई गृहस्थ ब्रह्मव्रत पालवे जी २; केई सदा करे चउ विहार, केई हरीतणो परिहार, पिण छे धनसूं अधिको प्यार ॥ म्हे० ॥ १ ॥ केई घर त्यागी योगी भया जी २; केई धनके होगये त्यागी, जांके मठकी ममता लागी, जांकूं किम कहिये वैरागी ॥म्हे०॥२॥ केई वस्त्र वस्त्र करते फिरे जी २; जांकूं लोभी किम नहीं कैवां, अथवा पुस्तक लेवां लेवां, जांनें निरलोभी किम कैवां ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ केई ममत्व करै चेलातणी जी २; ए तो अपणा नाम वधावे, वाजे अपणा माल गमावे, ए तो उलटा धर्म लजावे, जांनें निरलोभी कुण गावे ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ केई तन ऊपर ममता धरे जी २; ए तो खाय खाय माँस वधावे, जांने तपस्या दाय न आवे, आखर लोभी गणिया जावे ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ केई कथन करावे केई ढगसू जी २; है कोई राजाजीकूं लावे, है कोई दिवानकू बुलवावे, धनवंत देख देख बतलावे ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ केई महिमा वांछे आपणी जी २; निज महिमासूं फूल जावे, जांरे तत्त्व हाथ नहीं आवे, मुनि रामचंद्र दरसावे ॥म्हे०॥७॥इति लोभ गर्भित हितोपदेश॥

६ म्हांरा गाढा मारू वसोनी आजकी रैनमें ॥ ए देशी॥

म्हारा भोळा जिवडा लेवोनी खरची जोयने, जीवा मारग विषम अपार, म्हांरा भोळा जिवड़ा, लेवोनी खरची विचारने; ॥ टेर ॥ म्हां० ॥ लेउ लेउ तू स्यू करे,

जिवड़ा दीसे तू मूढ गिवांर ॥ म्हां० ले० ॥ १ ॥ म्हां० ॥ तन धन दौलत कामनी, जिवड़ा, रैसी यांहकी यांह ॥ म्हां० ॥ एक न साथे चालसी, जिवड़ा दरिये खाली मत जाह ॥ म्हां० ले० ॥ २ ॥ म्हां० ॥ दान सुपात्र दीजिये, जिवड़ा जीवांनों करोनी बंचाव ॥ म्हां० ॥ जप तप शुद्ध क्रिया करो, जिवड़ा राखोनी निरमल भाव ॥ म्हां० ले० ॥ ३ ॥ म्हां० ॥ सत गुरुनी संग कीजिये, जिवड़ा बंधसी खरचीरी गांठ ॥ म्हां० ॥ मुनि राम कहे मत भूलजो, जिवड़ा आगे विषमी वाट ॥ म्हां० ले० ॥ ४ ॥ इति ॥

७ कांई रे जवाब करूं रसियो ॥ ए देशी ॥

कांईरे गुमांन करे अपणो, मान करेगो गुमांन करेगो, तो नीची गतमें जाय पड़ेगो ॥ कां० ॥ टेर ॥ जोबन वय मे तु आंधो चाले, तो दोय दोय छोगा ऊपर राळै ॥ कां० ॥ १ ॥ जोबन देखीने जोम करे छै, तो रूप देखीने गर्व धरे छै ॥ कां० ॥ २ ॥ धन देखीने मनमें फूले छै, तो मो नदीरे मांहे झूले छै ॥ कां० ॥ ३ ॥ इंद्र नरेंद्र चक्रवरती ते पिण छोड चल्या सहू धरती ॥ कां० ॥ ४ ॥ छपन को ड़को नाथ कहातो, ते पिण मूवो कौशांबी जात ॥ कां० ॥ ५ ॥ नही मिल्यो पांणी पावणवाळो, तो तुं गर्व धरी किम चालो ॥ कां० ॥ ६ ॥ चौथो चक्री सन त्कुमारो, जिण कीयो रूपतणो अहंकारो ॥ कां० ॥ ७ सोले रोग थया ततकालो, तो देख शरीर चिंते भूपाल ॥ कां ॥ ८ ॥ काची काया ने काची माया, तो काच री सहू ठठ बनाया ॥ कां० ॥ ९ ॥ कुंण जांणे मोत कि

त विध आसी, ओ घर छोड किसे घर जासी ॥ कां० ॥ ॥ १० ॥ रामचंद्र कहै गर्व न कीजे तो पर भव सेती डरता रहीजे ॥ कां० ॥ ११ ॥ इति ॥

८ इण सरवरियारी पाळ ऊभा दोय राजवी, मोरा लाल, ऊभा दोय राजवी ॥ ए देशी ॥

भाखे श्रीजिनराज, काज सुधारजो; मोरा लाल, काज सुधारजो; देव गुरु सुधधर्म, हीयामे धारजो, मोरा लाल, हीयामे धारजो ॥ १ ॥ नर भव रतन अमोल, आळे मत हारजो ॥ मो० ॥ आ० ॥ विषय विकार प्रमाद, दूर सहू टारजो ॥ मो० दू० ॥ २ ॥ तन धन सहू परिवार, लार नही आवसी ॥ मो० ला० ॥ सुख दुख संच्या जीवके, पर भव पावसी ॥ मो०प० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत नार, परिवार स्वारथी ॥ मो० प० ॥ विरचे इण ससार, नही परमारथी ॥ मो० न० ॥ ४ ॥ सुरनर थिर नही कोय, जोय विचारने ॥ मो०जो० ॥ रुळियो जीव अनाद, प्रमाद धारनें ॥ मो० प्र० ॥ ५ ॥ तो कीयां सत गुरु संग, श्रवण फल जानता ॥ मो० श्र० ॥ ज्ञान थकी विज्ञान, पछै पचखांनता ॥ मो० प० ॥ ६ ॥ त्यागथी सयम होय, पछै आश्रवो रुकै ॥ मो०प० ॥ तपथी तूटै कर्म, अक्रिय फल मोक्ष है ॥ मो० अ० ॥ ७ ॥ ऐ दस फल भगवइ अग, सुणी राखो आसता ॥ मो० सु० ॥ तो कीजे सतगुरु संग, जो सुख चावो शाश्वता ॥मो०जो०॥ ८ ॥ दान शील तप भाव, सुग आराध जो ॥ मो० सु०॥ सजम तप करी दोय, आतम साधजो ॥ मो० आ० ॥ ९ ॥ चेतो सहु नर नार,

त्यार हुवो मोखने ॥ मो० त्या० ॥ स्यूं हूवे कहियां राम प्यारो पाप लोकनें ॥ मो० प्या० ॥ १० ॥ इति ॥

९ जलहो म्हांरी जोड़रो उदियापुर माले रे ॥ ए देशी ॥

दश दृष्टांते दोहिलो रे, पाम्यो नर अवतार; जिण वंछे देवता रे, ते किम जावो हार; चतुर नर चेतजो, ! निराज सुणावे रे; पर उपगारी साधुजी, इम सत्य द सावे रे ॥ च० ॥ १ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, भृष्ठ भाखसी मांय; नीचे माथे ऊंचे पगे रे, ते दुख जांणे जिनराय ॥ च० ॥ २ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, बिसरी पूरव वात; बालपणो खोयो ख्यालमें रे, जोबन तिरिया साथ ॥ च० ॥ ३ ॥ परण्यो प्यारी प्रेमसूं रे, रहे आधे आखर त्यार; पलमांहे पर भव गयो रे, कठै प्रीतम कठै नार ॥ च० ॥ ४ ॥ मात पिता सुत भामिनी रे, एक न चाले लार; जासी जीव एकलो रे, इणमें फेर न सार ॥ च० ॥ ५ ॥ पर नारी प्यारी लगे रे, जोवे आंख्यां फाड; काती कुत्तारी ओपमा रे, देवे सहू नर नार॥च०६ नांन्ही मोटी नार विष लता रे, जोवो हीये विचार; कन्या राशी रवी आवही, जदि शीतल हुवे दिनकार ॥ च० ॥ ७ ॥ ज्ञान सहित शील पाळजो रे, जोबन वयरे मांय; विजय कुमर विजया परे रे, शुद्ध पाळो मन वच काय ॥ च० ॥ ८ ॥ पुद्गल त्याग किया थकां रे, चेतन निर्मल थाय; जो सुख चावो शाश्वता रे, ओही करोनी उपाय ॥ च० ॥ ९ ॥ सुख दुख भुगत्या जीवड़े रे, केई अनंती वार; भटक्यो च्यारूं गतमें रे, कर्मतणे अनुसार ॥ च० ॥ १० ॥ कीया कर्म सहू भोगवे रे, इम कहै श्री जिनराज; बांधो मती कर्म जीवड़ा रे, जो राखी चावो लाज ॥ च० ॥ ११ ॥

करो दान शील तप भावना रे, पतळी चौकडी पाड़; संजम तप दूणो करो रे, कीजे कर्मासूं राड़ ॥ च० ॥१२॥ सार धर्म जिनराजनो रे, बीजू सह्व असार; रामचंद कहे सांभळो रे, अवसर नही वारंवार ॥ च० ॥ १३ ॥ संवत उगणीसे दश समै रे, नागौर नगर मझार; ज्येष्ट मास शुद्ध त्रयोदशी रे, प्रथम जाम रविवार ॥ च० ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥

१० नंणदल बाळो ए जोवन झिल रह्यौ ॥ ए देशी ॥

भविजण बांधो मति कर्म चीकणा,ऐ तो भुगते आपो आप ॥ भवि० बां० ॥ टेर ॥ एक तौ जोबन थिर नहीं, ओ तो दूजो अथिर परिवार ॥भ०॥ तीजो धन नही शाश्वतो, ओ तौ चौथो तन नही लार ॥ भ० बां० ॥ १ ॥ एक तो अटवी उजाडमें, ए तो दूजी विषमी ठौड़॥भ०॥ मुनिवर जातां मारगे, विचमें मिलियो चौर ॥भ०बां० २॥ तन वस्त्र लेतां तिहा ऋषिजी कीधो ध्यांन ॥ भ० ॥ चौर कहै कारण किसो, मुनि कहै सुण धर कांन॥भ० बां०॥३॥ तूं बांधे कर्मज एकलो, खावे सगलो साथ ॥ भ० ॥ पांतीवार कुंण ग्रहमें, तू तो पूछेनी घरमे वात ॥ भ० बां० ॥ ४ ॥ चौर पूछे घर आयने, हूं तो बांधू पापना पूर॥भ०॥ कुंण कुण सांमल एहमे, थे साच कहो नहीं कूड़ ॥ भ० बा० ॥ ५ ॥ खावणरा सीरी सह्व, म्हे तो पापना सीरी नहीं कोय ॥ भ० ॥ जो करसी सो पावसी, चौरनें सूली देवे पोय ॥ भ० बां० ॥ ६ ॥ चौर आयो मुनिवर कने, तुमे भलो दियो मोनें ज्ञान ॥ भ० ॥ मुनि राम कहै सहु सांभलो, थे समझो इन आख्यान ॥ भ० बा० ॥७॥ इति॥

११ झमाकड़ो ॥

जीवा मोरा मानव भव लाधो भलो रे, पाम्यो आरज देश ॥ जी० ॥ उत्तम कुलमें ऊपनो रे, आयू दीरघ विसेस; जीवा मोरा चेत सके तो चेत जो रे, ए सतगुरु उपदेस॥ टेर॥जीवा मोरा पंच इंद्री दौरी मिली रे, वळी शरीर निरोग॥जी०॥सत गुरुसंगत छै किहां रे, ते पिण मिलियो जोग ॥ जी० चे० ॥ १ ॥ जीवा मोरा गुरु विन ज्ञान मिले नही रे, गुरु विन घोर अंधार ॥ जी० ॥ गुरु परमेश्वर सारिसा रे, देवै पार उतार ॥ जी० चे० ॥ २ ॥ जीवा मोरा सुणवो शास्त्रज दो हिलो रे, धेठ हुई रह्यौ जीव ॥ जी०॥विन श्रद्धा तिरणो नही रे, ए जिन वचन संदीव ॥ जी० चे० ॥ ३ ॥ जीवा मोरा ज्ञान सहित करणी करो रे, ज्यूं हुवे खेवो पार ॥ जी० ॥ दान शील तप भावना रे, क्षमा दया गुण धार ॥ जी० चे० ॥ ४ ॥ जीवा मोरा उगणीसेरा पचवीसमें रे, नागौर शहर चौमास ॥ जी०॥ राम कहै सहू सांभलो रे, कीजो ज्ञान अभ्यास ॥ जी० चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

१२ भांगडली पीवो तो ढोला म्हांरे महलां आईजो, अमलियो अरोगो सोकड़ जाज्यो राज, भांगडली ॥ ॥ ए देशी ॥

दान तो दीजै प्राणी शील पालीजै, तप खजानो संग लीजै रे, राज, सुण सीखड़ली ॥ अजी कांई निर्मल भाव राखीजै रे, राज, सुण सीखडली ॥ टेर ॥ सीखडली सुणीजे प्राणी चित्तमें धरीजै, साधु संगत नित कीजै रे ॥

रा० ॥ अजी कांई किणरी निंदा मत कीजै रे ॥ रा०॥१॥ दया तो पालीजै प्राणी झूट टालीजै, पर चीज उठाई मत लीजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई मोटकी चौरी मत कीजै रे ॥रा०॥२॥ पर त्रियानें प्राणी बैन जांणीजै, बुरी निजर मत जोईजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई अळयो वचन मत कइजै रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ दांम परायो प्राणी हराम थे जांणो, सतोष दिलमांहे आंणो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई संतोष करि सुख मांणो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोभ तजी जो, राग द्वेष मत कीजो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई समता भाव राखीजो रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ वचन की राड़ प्राणी आलको देवो, जिसो देवो तिसो लेवो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई तेरमो पाप मति सेवो रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ चुगली तो खासो प्राणी पर निंदा करसो, तो हरगज भव नहीं तिरसो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई नीची गतमांहे पडसो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ क्रत अन्रत माया मृषा म भाखो, मिथ्या शल्य मति राखो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई मुगत म्हैल सांमो ताको रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नैण, वैंण, कर, कांनको साचो, लंगोटे साचे साचो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई जबाने काचे काचो रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ सवत उगणीसे प्राणी तीसको साल, नागोर शेषे काल रे ॥ रा० ॥ अजी कांई नजीक आयो वरसाल रे ॥ रा० ॥ १० ॥ इति अष्टादश पाप स्थान ॥

१३ गैरो जी फूल गुलावरो ॥ ए देशी ॥

त्रस थावरमें भटकता, वळे अटकतां घाटी नव नर सैणां, दश दृष्टांते दोहीलो; ओ तो पाम्यो मानव भव नर सैंणा, चेतो जी नर भव पायनें; ये तो चेतो चेतो

चतुर सुजांण ॥ न० चे० ॥ १ ॥ टेर ॥ गर्भावासमें अवतर्यौ, ओ तो वास दुर्गंधिमांय ॥ न० ॥ मास सवा नव गर्भमें, दुख जांणे जिनराय ॥ न० चे० ॥ २ ॥ गर्भावाससूं नीसर्यो, वळे विसर्यो पूरव वात ॥ न० ॥ रात दिवस वस्यौ मोहमे, वळे सेवे विसन सात ॥ न० चे० ॥ ३ ॥ पर नारी प्यारी लगै, वळे जारी कीयां सिर धूड़ ॥ न० ॥ सारी ऋध खोवे हाथसूं, थारी वात मांने सहू कूड़ ॥ न० चे० ॥ ४ ॥ सत गुरु भाखे देशना, ओ तौ नर भव रतन अमोल ॥ न० ॥ वार अनंती हारियो, पिण अबके तौ सूरति खोल ॥ न० चे० ॥५॥ अरिहंतदेवने धारजो, वळे करजो सत गुरु सेव ॥ न० ॥ धरजोजी धर्म दया मयी, वळे डरजो पाखंड कुदेव ॥ न० चे० ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया लोभनें, थे तो छोडो च्यार कषाय ॥न०॥ जो सुख चावो जीवनें, ऐ तो इम भाखे जिनराय ॥ न० चे० ॥७॥ मात पिता सुत भामिनी,वळे तन धन सहु परिवार॥न०॥ एक न आवे परभवे, तूं तो अंतर ज्ञान विचार ॥न०चे०८ देखोनी ऋद्धि जादवतणी, आ तो क्षणमें गई विलाय॥न० सुरवर नरवर थिर नहीं,जिम बादरनी छांय॥न०चे०॥९॥ कीधा कर्म ज भोगवे, ऐ तो भोगव्यां छूटक होय ॥न०॥ कर्म वीज जिनवर कहै, ऐ तौ राग द्वेष छै दोय ॥ न० चे० ॥ १० ॥ इम जांणी कर्म मति बांधो, वळी साधो शिव पुर माग ॥ न० ॥ तप सयम दोय मूल है, इम कहै श्रीवीतराग ॥ न० चे० ॥ ११ ॥ दान शील तप भावना, ऐ तो शिव पुर मारग च्यार ॥ न० ॥ जो सुख चाहो शाश्वता, तो उणसे राखो प्यार ॥ न०चे०॥१२॥ उगणीसे निधि मधु मासमे, ओ तो वास जालोर सुख दाय ॥

॥ न० ॥ स्वामी वृद्धिचंदजी प्रसादसूं, ऋषि राम कहै चित लाय ॥ न० चे० ॥ १३ ॥ इति ॥

× १४ न्याल देकी देशी ॥

छपर पुरांणा पड़ गया जी, कांई तूटण लागा बंध; सध सध खुलण लगी जी, कांई तऊ न दीसे मति मंद; अब घर छूटा चेतन समझिये जी ॥ १ ॥ झरोखे जाली लगी जी, कांई धारी आडी भीत; मूल नींव डिगमिग करे जी, कांई भई पुरांणी रीत ॥अ०॥२॥लछन सुभट नासी गया जी, कांई स्याईनो लोक गयो दूर; सिक्खर थरहर धूजही जी, कांई आई नंदी पूर॥अ०॥३॥ थेगली पिण ठहरे नही जी, कांई नही कोई रिछपाल; क्यूं सूतो तू नींदमें जी, कांई अब तो सुरत संभाल ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ अब करणा है सो कीजिये जी, कांई देणा है सो देह; लेणा है सो लीजिये जी, कांई कैणा है सो कैह ॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगी चहुं फेरसूं जी, कांई मिल रही झाळो झाळ; मुनि राम कहै सहु काढजो जी, कांई इण घरमें बहुमाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

×. १५ न्यालदेनी देशी ॥

दश पचखांणे जीवड़ो जी, कांई पांमे सुख अनपार; करतां एक नवकारसी जी २; सौ वरस नरक निवार, तप समो नही जगतमें जी, सुखतणो दातार ॥ त०॥१॥ बीजू पोरसी वर्ष सहसनो जी, कांई साढ पोरसी दश हजार; पुरिमढ लक्ष एक वर्षनो जी, एकासणे दश लक्ष धार ॥ त० ॥ २ ॥ नीवी तोडे कोड वरसने जी, कांई दश कोड एकल ठांण; सौ कोड एकल दत्त दहेजी, आं-

विल सहस कोड जांण ॥ ३ ॥ सहस दश कोड उपवा समें जी, कांई छठलणो तप धार; लख कोटी वर्ष खपा वही जी, अट्ठम कोटि दश लख टार ॥४॥ कोटाकोटी व पैनो जी, कांई दशम भस्म करै कर्म; मुनि राम कहै तप कीजियो जी, पामे स्यौ शिव शर्म ॥ त० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ वेगा आईजो हो वाईसारा वीर, थां विना गड़िये न आसॅगे ॥ ए देशी ॥

धड धड धूज्यो हे माय मोरी जीव अपार, दुलभ नर भव पावियो; रुळियो रुळियो माय मोरी वारंवार, तेहनो लेखो नही आवियो ॥ १ ॥ करियो करियो हे माय मोरी कुगुरुको संग, धरम हिसामें मानियो; भमियो भमियो हे करी धरमको भंग, सुध धरम नही जांणियो ॥ २ ॥ अब लेसूं हे माय मोरी संजम भार, वीर प्रभु गुरु धारसूं; गोतम स्वामी हे मिलिया तारनहार, नर भव वेग सुधारसूं ॥ ३ ॥ माता हसती हे बोले इण पर वात, तूं नांनडियो डावडो; खट बरसनो रे जाया तूं छै साक्षात, किम सैसी सी ने तावडो ॥ ४ ॥ कोमल केसां रे पुत्र करणो रे लोच, दुर्धर महाव्रत पालणा; मुनिपथ करडो रे नही पाछलो सोच, छोटा मोटा दोष टालणा ॥ ५ ॥ कुमर ऐमंतो रे बोले इण पर वात, माताजी अनुमत दीजिये; ढील न कीजे हे माय मोरी खिण एक मात, मुनि राम कहै मुनी गुण कीजिये ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ कर रायजादा सुगटणो ॥ ए देशी ॥

ऐ तो मारगमें लूटे पांच जणा, ऐ तो नही गिणे नि-

सबल सबल भणी; इनसें भाग छूटा ज्यांके खूब वणी, थांरे सांमा हुवा ज्यांमे हुई घणी; मारगमें लूंटे पांच जणी ॥ टेर ॥ पेहली कुरंग भुजंगनें मार लिया, जो सन्मुख हुवा सो हार गया; भाग गया सो छूट गया, ज्यांने मिल गये धींग धणी ॥ मा० ॥ १ ॥ दूजी शलभादिकनें भस्म कीया, वळी मुक्ति जातांने रोक दीया; कामी पुरुषांने नरकमें पटक लीया, ज्यांने मारदेवे यमराज धणी ॥ मा० ॥ २ ॥ भमरादिक तीजी नाश करै, चोथी मत्स्यादिकना प्राण हरे; मुनि शूर वीर देखो इनसें लरे, इनके नहीं कोई एक धणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ गज महिष पचमी दाह दीया, एक एक इंद्रिय जो वो जुलम कीया; साधू पचांने जीत शिव राह लीया, मुनि राम कहै ज्यांरे खूब वणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥

१८ चांदा थारी चांदनीसी रात रे, कोई नणदल रे भोजायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मे ल्यो जल जमुनारी तीर रे, कोई आपज रे पधारचा चंपा बाग में ॥ ए देशी ॥

जिन मारग छे सब मारगमे सार रे, कोई और ज रे नहीं लागे जोडे एहने; रतननें निंदे मूरख गिवॉर रे, कोई परखे रे जॅवरी जलदी जेहनें ॥ १ ॥ शुद्ध मारगके जोडे न लागे कोय रे, कोई ज्ञान ज रे दृष्टी करनें देखिये; कंचन पीतल अतर कितनो होय रे, कोई रात ज रे दिन के अतर पेखिये ॥ २ ॥ कुण कुण तरिया जिन मारगके जोर रे, कोई भरत ज रे आदि घहुला तर गया; इण धर्मसे पाये शिव रमणीकी ठौर रे, कोई जनम ज रे मरण

तणा दुख टर गया ॥ ३ ॥ देखो भाईजी धर्मको रे, कोई बीजो रे प्रताप न जगमें एहवो; जावे संचिया इणसूं पाप रे, कोई तरियो रे राजा परदेशी जे हवो ॥ ४ ॥ कुंण करे जगमें जिन मारगकी होडजी, कोई परखे रे बुध जन ज्ञान विचारसूं; मुनि राम कहे छे सुणियो मत पख छोड जी, कोई ओड़ज रे मत करजो मह गिवॉरसूं ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ मालण मालण कांई करो म्हांने, ल्होड़ी लाडी कै वतळाव हो मारूजी ॥ ए देशी ॥

एकेंद्रीमांथी नीकल्यो, अबे इंद्रिय पाई पंच हो, चेतनजी ॥ संज्ञी मनुज आयू दीर्घ छे, वळे उत्तम कुल पुन्य संच हो ॥ चे० ॥ १ ॥ तूं भमियो पुद्गल संगसूं, वळी गमियो काल अनत हो ॥ चे० ॥ जिन धर्म दुर्लभ पामियो, वळे मिल गये उत्तम संत हो ॥ चे० ॥ २ ॥ झूठे मात पिता भ्राता, सब झूठे पुत्र कलत्र हो ॥ चे० ॥ झूठे कुटुंब धन परिग्रहो, सब झूठे शत्रु अर मित्र हो ॥ चे० ॥ ३ ॥ तेरे कुण तूं देखतो, तू पिण किणरो पेख हो ॥ चे० ॥ राग द्वेष अंदर भर्‍यौ, तो स्यूं हुवो लीधां वेष हो ॥ चे० ॥ ४ ॥ लोक रंजन क्रिया करी, पढ कर लोक रिझाय हो ॥ चे० ॥ आशा तृष्णा अंदर जगी, ते स्यूं कीयो माथो मुडाय हो ॥ चे० ॥ ५ ॥ कथनी जैसी रेणी नहीं, तो स्यूं हुवे कथनी कोड़ हो ॥ चे० ॥ शुद्ध करणी विन जीवड़ा, सब निकमी छे माथा फोड़ हो ॥ चे० ॥ ६ ॥ ऐ बात पाई सद्गुरु कने, सब सरधी साची वात हो ॥ चे० ॥ मुनि राम कहे शुद्ध संजम चढ्ढ; रहो सतपुरुषांरो साथ हो ॥ चे० ॥ ७ ॥ इति

२० पनजी मूंडे बोल ॥ ए देशी ॥

उत्तम कुल मानव भव पायो, वळी निरोगी काया रे; लंबो आयू इंद्रिय निर्मल, आचारी गुरु पाया रे, चेतन अबके चेत, दुःखमिये आरेमें जनम लीधो रे ॥ चे० ॥१॥ पंचम आरे दुःख घणेरा, कहतां न पारही आवे रे; काया निरोगी तो धन नांही, धन तो पुत्र ही चावे रे ॥चे०॥२॥ पुत्र हुवो तो हुवो दुखकारी, अथवा पढियो नांही रे; जो पढियो संगत भूंडी, वह न मिली मन चायी रे ॥चे० ॥ ३ ॥ वहू गमती तो पोतो नांही, पोती वह दुख भारी रे; पुत्री वर तो नहीं मन गमतो, आ पिण चिंता न्यारी रे ॥चे०॥४॥ नारी सुपातर मरगई पैली, दूजी आई दुखदाई रे; और सुख तो मिलगये सारे, दुखदाई हुवो भाई रे॥ चे० ॥५॥पाडोसी दुखदाई मिलियो, निलको जग मचावे रे; जो पाडोसी आछो मिलियो, तो तोटो व्यापारमें जावे रे ॥चे०॥६॥ लेणायत तो आय संतावे, देणायत नहीं देवे रे; और छांनी मार लगी बहुतेरी, सो किण आगे कैवे रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ धर्म करे जो दुखमी आरे, जेहनी अधिक वडाई रे; मुनि राम कहे छे धर्म करोनी, वखत पांवणी आई रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

मनवा रस्ते चाल, थारे ने कारणिये दुखडा निपजे रे; वैरी रस्ते चाल ॥ थारे०॥ दुसमण रस्ते चाल॥ टेर ॥ रस्ते चाल्या नहीं दो चक्री, नर्क सातमी पोंता रे; कोडरीक मुनिवर रस्तो भूलो, खावे नरकमे गोता रे ॥ म० ॥ १ ॥ नधूक राजा तो हिंसाये डूबो, वसु नृप झूठ उचरने रे;

सत्यघोष तो चोरी करनें,रावण परत्रिय हरनें रे॥म०॥ धनतृष्णाये आठमो चक्री, चाल्यो भर दरियाव रे; दे सहू तो हुय गया दूरा, डूब गई जय नाव रे ॥ म०॥३॥ तंदुल मच्छ तो गयो सातमी, रे मन तुज परताप रे; भरत महाराजा केवल पायो, छूट गया सब पाप रे ॥ म० ॥४॥ मनसूं बंधन मनसू मोक्ष,जिणमे फेरनसार रे; मन जीता तो जीता सब ही, मन हारे सब हार रे ॥म० ॥ ५ ॥ ज्ञान थकी तौ ध्यान नीपजे, ध्यान थकी मन रो को रे; मन रुक्यां सूं राम कहे छै, दूर नहीं छै मोखो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ कुंजेरी देशी ॥

सुण भाई प्यारे, भम्यो गत च्यारूं मांय रे; कीडी मकोड़ी आदि तूं हुवो रे; तिर्यंच में; तिरजंचमें काल अनंत वस्यो रे तिर्यंचमें ॥ १ ॥ सु० ॥ कदि गयो नरकां मांय रे, छेदन भेदन दुख सह्या रे; कहणी नावै ॥ क० दुःख एक सासरो रे, कहणी नावै ॥ २ ॥ सु० ॥ कदि हु वो रांक कंगाल रे, विध विधना दुःख भोगव्या रे; सुख नायो ॥ सु० ॥ सुपने पापसूं रे, सुख नायो ॥ ३ ॥ सु० लाधो लाधो मानव देह रे, उत्तम कुल श्रावक थयो रे चेतोनी ॥ चे० ॥ अवसर दोहिलो रे, चेतोनी ॥४॥ सु० धन्य धन्य नरकना जीव रे, जे निर्मल समकित धारई रे; जिण कारण ॥ जि० ॥ धन्य धन्य जेहने रे, जिण कारण ॥ ५ ॥ सु० ॥ धिक् धिक् सुर अवतार रे, जे मिथ्या मतमें राचही रे; तिण कारण ॥ ति० ॥ धिक् धिक् तेह रे, तिण कारण ॥ ६ ॥ सु० ॥ राम कहै बोल सात

ंधे नहीं समकित मध्ये रे; दृढ राखो ॥ द० ॥ समकित
मूल छै रे ॥ द० ॥ ७ ॥ इति ॥

२३ रूड़ो बथवोरे ॥ ए देशी ॥

नहीं हसवो रे, प्यारे ॥ नही० ॥ रहो ज्ञानमें मगन,
नहीं० ॥ टेर ॥ हॅसियां सेती हलको होवे, दुश्मण होवे
तारा; पांडव कौरव जुद्धमच्यो थो, कटी क्षोहिणी ठारा
॥ नहीं० ॥ १ ॥ धणी धणियांणी दोनूं हॅसिया, पुत्र वधू
हॅसिाई; कला भेद वतावो मोने, नहीतर जीमू नांई॥नही०
॥ २ ॥ हट कर पुत्र पूछै पिलाने, क्यू तुम हॉसो आयो;
एक दिन तोरी जननी मोने, कूवामे डवकायो ॥
नहीं० ॥ ३ ॥ आज जीमतां तडको टाल्यो, कर कर
लंबो हात; सिमरण होते दोनूं हॅसिया, दूजी नही कोई
वात ॥ नहीं० ॥ ४ ॥ पायो भेद कंतके पासे, एक दिन
मोसो दीधो; अमरस आयो सासू झटके, गलमे पासो
लीधो ॥ नहीं० ॥ ५ ॥ सेठ मरियो पुत्रही मरियो, बहू गल
पासो धरियो; मुनि राम कहे छै विन प्रस्तावे, भूल न
हासो करियो ॥ नहीं० ॥ ६ ॥ इति हास्य निषेधिका ॥

२४ काजलियो काढीनें दरजण आरसीमें जोयो रे, आंखरे टमोरे तैं तो छेलो मोयो हे दरजण वारे आव;

॥ ए देशी ॥

मनुष्य जनम पायो, उत्तम कुलमे आयो रे, चिंतामणि
रयण तै तो हाथे खोयो रे, सज्जन हारे मत, हारे सज्जन
हारे मत, मनुष्य जनम हीरो हाथ आयो रे ॥स०॥ १ ॥
॥ टेर ॥ घर मध्ये धन्न देखी, मन्न मांहे फूल्यो रे, रूपवती

नारी पेखी ज्ञान भूल्यो रे ॥ स० ॥ २ ॥ पुत्रनें परणाय, तो तौ मनड़ामें मोयो रे, पूंजी संभाली लारे गाढो रोयो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लेणायत घेर्‍यो, तोनें राजमें रुकायो रे, इण रीते कर्म भोगे, राम गायो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

२५ देशी नवीन सूरजमलरी ॥

सटक सटक थारी ऊमर जावे, बूढापो नैड़ो, आवे रे चेतन भोळा, धर्म तूं कर ले रे, ओछी ऊमरका, आदमी रे तूं तो, खरची तो ले ले रे ॥ टेर ॥१॥ सटक सटक थारी सासा रे जावे, जांणे अंजन उडियो, आवे रे ॥ चे० ॥ कवी तार ज्यूं लूटे रे ॥ ओछी० ॥ २ ॥ आयू पत्थर तेरा, कोयला होय, अंजन रात दिन, दोय रे ॥चे०॥ गुरु सीटी पुकारे रे ॥ ओछी० ॥ ३॥ पंचदश पनरा वीस पचीसां, तीस चालीस पचासा रे ॥ चे० ॥ इस्टेसण जांणो रे ॥ ओछी०॥४॥ टिकट उत्तम ग्रामका लेना, हुस्यारी पूरीसें, रैना रे ॥ चे० ॥ नही न्हादे पर रहना रे ॥ ओ०॥५॥ घड़ी घड़ी जावे सो पाछी रे नावे, वृथा क्यूं खोय गमावे रे ॥ चे०वृ०॥ हीरो हाथ तो आयो रे ॥ ओ० ॥६॥ तन धन यौवन छिनमें रे छीजे, झूठो गुमांन न, कीजे रे॥चे०झू०॥ ऐ जुग सुपनो रे ॥ ओछी०॥७॥ भटक भटक तूं तो, धन कूं रे भटके, ज्ञानसूं मन नही, हटके रे ।चे०॥ मुनि राम दरसावे रे ॥ ओछी० ॥ ८ ॥ इति ॥

२६ सखि पनियां भरन कैसे जाना ॥ ए देशी ॥

तूं चलता छै विनजारा, जिया मत कर बहोत पसारा २; तू० ॥टेर॥ कहांसें पोठ लदवाया, तू क्या क्या माल

, दाता देवे दानो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन
रुपिये, दे ते व्योपारी; वर्षे वर्षा नदियां
पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रका-
, मेटे अधारी; महाव्रत शुद्ध पाले सत जुगसा,
भारी ॥ ह०॥ ७ ॥ करै न हिंसा वदे न मृषा,
री; अकिंचन रच नहीं है ममता, समता
री ॥ ह० ॥ ८ ॥ सत पुरुषांरे नितही सत जुग,
युग कांई; मुनि राम कहे आ वखत भली है,
भाई ॥ ह०॥९॥ इति ॥ सत्ययुगनी लावणी॥

रुजी चेला तेरा; पड़ी जाज दरियाव वीचमें,
या वेड़ा मेरा ॥ ए देशी ॥

चलो तौ करोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती
॥ एक रैन अंधेरी विजुरी चमके जी, कैदी
ये, सफीलगिरी पोरायत सूते, बंदीवांन
सबही निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर
अच्छा पिण जरा लेटके, है इरादा
ते घरकू पोचे, सूता ते जंजीर ज-
कब वे निकसे, इन रीते जगवासी
है रत-
॥१॥

॥ ह० ॥ ३ ॥ झगडे बेटो मात तातसें, नहीं बंधव मुख बोले; साला सेती गूंज घणेरी, गुप्त बात खोले ॥ह०॥४॥ नारी कारण न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी निज पतिने छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ ह० ५ ॥ बूढेनें बेटी परणावे, लोभ दृष्टि जोवे; अल्प दिनांमे हुवे ज दुखणी, निज पतिनें रोवे ॥ ह० ॥ ६ ॥ मुखमें न धोला सिर पर धोला, परणीजण चावे; कुलवंती कोई रहे कार में, और विगड जावे ॥ ह० ॥ ७ ॥ भला आदमी बहु सिधावे, पापीनो पोरो; दुखिया रानी ऊमर मोटी, सुखी जिवे थोड़ो ॥ ह० ॥ ८ ॥ दादो बैठा पोतो चल जावे, नहीं सर्व सुखी पावे; निर्धनके बहु बेटा बेटी, धनवंत तरसावे ॥ ह० ॥ ९ ॥ मूरख धन जोबनसूं गर्व, छिन छिन आउ छीजै; रामचंद्र कहे हलाहल कलुमें, चर्म ध्यान कीजै॥ ह० ॥ १० ॥ इति ॥ कलियुगनी लावणी ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

हलाहल कलि युग मत जांणो रे ॥ ह० ॥ बडे बडे मुनिराज इसीमें, तपसी गुण खांनो ॥ टेर ॥ मारग चलता भूंडो न दीसे, ए खरुं उन्मांनो; अमृत पीते मूवो न सुणियो, ज्हेर न रखे प्रांनो ॥ ह० ॥ १ ॥ एक अधिकाई हदसे जादा, विना धणी झूझे; लाखां द्रव्य छोडी मुनि होवे, सिंघ परे गूंजे ॥ ह० ॥ २ ॥ दुजी अधिकाई सल युगसेती, दुहिता दी जावे; नाके मल घाले नहीं तिल भर, नही औगुन गावे ॥ ह० ॥ ३ ॥ लूलो पगु अंग हीणो अंधो, रोगी कुष्टी बूढो; कुरूप बधिरादि पिता परणावे, धी न फेरे मूंढो ॥ ह० ॥ ४ ॥ अग्नि तेज सूरज प्रकाश, धरा निपजे धांनो; खांड गळे पाले

सुत माता, दाता देवे दांनो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन प्रमांणे लाखां रूपिये, दे ते व्यौपारी; वर्षे वर्षा नदियां चलती, पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रकाश जगतमें, मेटे अंधारी; महाव्रत शुद्ध पाले सत जुगसा, करे तपस्या भारी ॥ ह० ॥ ७ ॥ करे न हिंसा वदे न मृषा, दत्त ले ब्रह्मचारी; अकिंचन रंच नहीं है ममता, समता दिल धारी ॥ ह० ॥ ८ ॥ सत पुरुषांने नितही सत जुग, करे कलि युग कांईं; मुनि राम कहै आ वखत भली है, भजन करो भाई ॥ ह० ॥ ९ ॥ इति ॥ सत्ययुगनी लावणी ॥

३ मैं गुरुजी चेला तेरा; पड़ी जाज दरियाव वीचमें, पार लंघा वेड़ा मेरा ॥ ए देशी ॥

तुम भाग चलो तौ कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥ टेर ॥ एक रैन अंधेरी विजुरी चमके जी, कैदी कैदमें रहते थे, सफीलगिरी पोरायत सूते, वंदीवांन एक कहते थे, सवही निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर नहीं आनेका, वहोत अच्छा पिण जरा लेटके, है इरादा जानेका, जे निकस्या ते घरकूं पोंचें, सूता ते जंजीर जडा, कव हुवे मारग कव वे निकसें, इन रीते जगवासी पडा, मत जांनो जग साचा, हे काचेसे काचा, वीरतणी है वाचा, आते नहीं अवसर फेरी ॥ *तुम भा० ॥ १ ॥

---

* सवैयो-यथी ज्यूं संसारि नर कैदी खानो जानो घर, मोहसो कपाट दृढ वेडी नारी लागे है। चौकीदार परिवार जावा नांहि देवे पार, मिथ्या रूप अंधकार निद्रालस लागे है ॥ गच्छो गच्छो कहै ज्ञानी झत्तकार रूप वानी, मोहरी दिवारगिरी मोक्षपुरी भागे है। कहै मुनि रामचंद सुन हो भविक वृंद, मानुष्य जनम जैसी सेरी नहीं आगे है ॥ १ ॥

जगजाल जगत का है अति फंदाजी, मोह मायामें नर नारी; मात पिता अरु बैन भार्या,अंत समय नहीं है थारी; रूप गर्व अरु धन गर्वता, ऐ दोनूं है दुखकारी; तड़फ तड़ फनें माया जोडी, जीवधकी लागे प्यारी; या माया तेरी संग न चल्ले, तातें सुकृत करलेनी; जे कोई लेग्या इसकूं लारे, उसका नाम कह देनी; देते सतगुरु हेला, तू मांन मांन रे गैला; दिलसें विचारे पैला, अरे बिगड गई क्या मत तेरी ॥ भा० ॥ २ ॥ रूपवंत पर त्रीया देखी जी, बुरी निजर क्यूं जोता है; सिर वदनामी दोजग होगी, क्यूं सुकृतकूं खोता है; हीरकनीसा नरभव पाया, इससें नहीं कोई और बडा; नाहक इसकूं क्यूं तूं हारे, मैं कैताहूं खड़ा खड़ा; मुनिराम कहै दिल पाक रखोनी, अच्छा अवसर आय अडा; करणा है सो करलो प्यारे, ऐ घोड़ा मैदांन पड़ा; सुणते हो तुम वंदा, क्यूं होते हो अंधा,पड़ा रहेगा धंधा, तेरे पूठ पीछे लागा वैरी, तुम भाग चलो तौ कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥ ३ ॥ इति॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

मैं अच्छा चाहता तेरा, पाखंड धर्म भरमकों छोड़ो, आतम धर्म रखो नैड़ा ॥ ज्ञान प्रकाशक आगसो आतम जी, ज्ञायक सब वस्तुकेरो; पाचक पावक आतम कहिये, दर्शन पाचक है गैरो; सर्व पदारथ दर्शन करनें, पचते हैं सूधी सरधो; विन श्रद्धा कुछ पचते नांही, तातें श्रद्धा दृढ कर दो; दाहक आतम छै अग्नीसो, चारित रूप आतम बोले; विन चारित कछु कर्म न जल्ता, शास्त्र बीच सारा खोले; सुधी सुणीये सारा, देख स्वरूप तुमारा, रहो पुद्गलसे न्यारा, ज्यूं पार लंघे तेरा बेड़ा, पाखंड ध

रम भरमकूं छोड़ो, आतम धरम रक्खो नैड़ा ॥ १ ॥ इन आतमके दोय छै नारी जी, एक सुमति कुमती बीजी; कुमतिको भरमायो आतम, नाच रच्यो करतो जी जी; सुमती जाया पुत्र च्यार वर, प्रबोध १ विवेक २ शील ३ संतोसं ४; कुमती जाया पच कहाया, मोह १, काम २, तीजो रोसं ३; मान ४, लोभ ५ है पुत्राभास हि, आतमनें घाले फोड़ा; मोह भणी निज राज सूंपियो, कामतणा दौड़े घोड़ा; आतम दुख अति पायो, सुमति पास सिधायो; प्रबोध नृप ठहरायो, टले राम विवेकसूं बिखेडा; पाखंड धरम भरमको छोडो, आतम धरम रक्खो नैड़ा ॥ २ ॥ इति ॥

दोहा ॥

चेतनजी अब चेतिये, वैत वण्यो भल आय ।
पुद्गल क्षेत न रक्खिये, निज घर चाल सभाय ॥ १ ॥

५ लाज मोरी रखले भवानी ॥ ए देशी ॥

वैरी वीच वास भया तेरा, लग्या फिर कर्मनका घेरा; देखो तुम स्वरूप निज घरका, गिणो मत खळ गुळ सब सरखा; दुग्ध दुग्ध सब सारिसा, मुग्ध जनोंकी वात, खोजी पावे धर्मने, अण खोजी खोटा खात; धर्मकी खोजना करना; २ ॥ भूल पग पाछा नहीं धरना; २ ॥ मुक्ति गढ कायमही करना २ ॥ मु० भू० ॥ १ ॥ ज्ञानकूं आगू संग रक्खो, भला बुरा रस्तेकू परखो; रतन औ ककरकूं ओळखो, ढोर ! जहर अमृतकू चक्खो; चाखो समता सूंखड़ी, नांखो ममता मार; राखो निर्मल भावना, भाखो वचन विचार; मुक्तिके सांमा पग भरना २ ॥ मु०

भू० ॥ २ ॥ कठिन अति मारग मुनिवरका, दूजा नहीं जगमें इन सरखा; आठ मास वारे, घड़ी वरसा, करे छिन जल थल नदी खड़का, मौती सम व्रत साधुका, करजो कोड़ जतन; फटे तूटे नहीं अरथके, इम भाखे भगवन; नहीं मुनि मारग विन तरणा २ ॥ मु० भू० ॥ ३ ॥ मुनीका महाव्रत शुद्ध पाळो, दोप सब दूरे ही टाळो; मुक्तके सांमो नित भाळो, प्रभूकी आज्ञाये चालो; चालो प्रभूकी कारमें, टाळो विषय विकार; मालो शिवपुर मागमें, झालो गुरु चरणार; लेवो गुरु देवनका सरना२ ॥मु० भू०॥४॥ क्षमाकी बांधो समशेरा, संयमकी सेना लो लेरा; खजाना ज्ञानका गहरा, लूंटलो दुश्मनका डेरा; तेरा सघाती साथ लो, दुश्मन करो निरोध; ऊखारो जड़ मूलसूं, राग द्वेष दोय योध; क्रोधके ताला ही जडणा २॥ मु० भू० ॥ ५ ॥ जिनागम जय कुंजर सझ लो, सातसे नय घोड़े चढ लो; शीलके रथ शस्त्रे भर लो, संवेगकी पलटण संग धर लो; कर केसरिया ऊर दो, कर्म कटकके मांय; चढ्यां घोड़ां लो शिवपुरी, साचका तीर चलाय; करो गज सुख माल जिसी जरणा २ ॥मु०भू०॥६॥ तपकी तोपांकूं भर दो, ध्यांनकी बत्ती सिर धर दो; हिमतका हल्लाही कर दो, कर्मकी सेनाकूं मरदो; मारो मोह महिरानकों, जारो राग रु रीस, मुनि राम उजारो आतमा, तूं ईश्वर जगदीस, नहीं ज्यां जन्म जरा मरना २ ॥ मु० भू० ॥ ७ ॥ इति ॥

दोहा ॥

प्रथम न वैसे पंचमे, धसे तौ कर दे छांन ।
पिण कलियुगनी पचायती, है अनरथकी खांन॥१॥

साच बराबर तप नही, साच धर्मको बीज।
रीझे सुरनर साचसूं, साच जगतमें चीज ॥ २ ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

साचसें सेव करे देवा, साचसें जीते नित्य मेवा; साचसे धीज उत्तर जेवा, साचसें पारही उतरेवा; पार उतारे साचही, साच वडो ससार; कार हुवे सव साचसूं, साच भोळाऊ लार; साचसू ग्वड़ा खडा ऊंजो २, साचका पगल्या नित पूजो; साचसो धरम नहीं दूजो ॥ सा० ॥ १ ॥ साचसूं पैठ जमे भारी, साचसू धीजे नर नारी; साचकी बात लगे प्यारी, साचसूं रींजे व्यौपारी; सपत पावे साचसूं, जावे आपदा दूर; जिण नर साच न राक्खियो, तिण कीयो जमारो धूर; झूठसो दुश्मन नहीं दूजो२ ॥सा०॥२॥ महीपति साचकू परखे, तिहां सब दैवज्ञकूं करखे; कहो मुझ मुष्टिमें हरखे, जोतसी बोलो बेधरके; दैवज्ञ शास्त्र हेरनें, कहे श्वेत गौ-लमटोर; कहो शकुनी तुम शकुनसू, मै पूछू इन ठौर; शकुनी शकुनांकू बूजो २ ॥ सा० ॥३॥ शकुनि जोवे छै जेहवे, कन्या कच नीचोवे तेहवे; मौती अणवीध मुष्टीमें, पंच तव आये दृष्टीमें; पच विचारे आपसूं, करणो किसो उपाय; विना इलमको बोलवो, विन बोल्यां हुरमत जाय; आवे अब उर आडो डूजो२॥ सा० ॥४॥ पंच कहे करणो अब कांई, बोल्यां विन सरसे कब ताई; पचायति झूठी नहीं भाखी,आपां नही रखारुखी राखी;परमेश्वर साखी करी, डर पर भवको राख; खोटी न करी पचायती,झूठ न कह्यो हकनाक;आपां अब बोलत क्यू धूजो२॥सा०५॥

पंचांमें परमेश्वर कैवे, पंचांको ओठो सब लेवे; पंचांकों करकाटी देवे, पंचांके भरोसे रेवे; पंच परमेश्वर सारीसा, प्रगट कहे संसार; लाल कहो सब मिल करी, भली करे करतार; आपां पख परमेश्वर हूजो २॥सा०॥६॥पच कहे लालही खोलो, नृप कहे आलोची बोलो; पंच कहे सु णिये महाराजा, साचसें सुधरे सब काजा; काज सुधारे साजही, लाज रखे जिनराज; मोती फिट हुई लालही, देखे दुनियां राज; साच है मिश्रीको कुजो॥ ॥ २ ॥ सा० ॥ ७ ॥ भूपति साचकूं परख्यौ, पंचां पर तन मन कर हरख्यौ; पंचांको वचन नहीं सरक्यो, कह्यां सुं लालही निरख्यौ; निरखो साच प्रभावकों, देवो झूठकों त्याग; मुनि राम कहे धन साच है, साच बोले वड भाग; झूठ तज तिन्यौ चाह तू जो २ ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

७ मत करना परतीत रांडकी मारा सेर देगई टारा॥ ॥ ए देशी ॥

चले न किसका जोर मिजाजी, होनहार होवे, मिजा जी, होनहार होवे; जोसी सिद्ध मीये अर अवधू, खड़ा खड़ा जोवे ॥टेर॥ जो जोसी जोतसकूं वरते, वात सबि दीसे उनकूं ॥ भला वा० ॥ राजा प्रजा पाये लग्गे, ईश्व रही जांने जिनकूं; तेजी मंदी होवेरे मालम, क्यूं जावे औरनकूं; ॥ भला क्यूं० ॥ अंक फर्क जोसीकूं दीसे, छिनमें मार लेवे धनकूं; सव कोई जोसी फेल करत है, होतबनें को कुन धोवे ॥ भला हो० ॥ च० ॥१॥ राख लगाये जटा धधाये, क्या सिधि पाते है यात्रू; ॥ भला क्या० ॥ गंगा पर हरद्वार ठिकांना, हींगलाज रहै आत्र; जड़ी बुंटीका

रक्खे कुतका, तडाका मारे, मीजाजी ॥ त० ॥ भोळेकों भरमावे विरथा, सवही धूतारे,साच किसीके पास नहीं है, जन्म वृथा खोवे ॥ भला ज०॥च०॥२॥ मुसलमीन परबीन हीं देखा, जादूगर रमली; ॥ भला जा० ॥ डोरे गंडे झाडे फूंके, वात मिलाते हैं अगली; देख देखने सवही देखा, पुरवासी जंगली; ॥ भला पु० ॥ इल्म किसीके पास न सचा, ठगवाजी सगली; सिमिया हिमिया रिमिया घोले, किमियाकूं रोवे ॥भला कि०॥च०॥३॥ जन्त्र मन्त्र और टांणे टूंणे, उचाटन सारे, भला उ० ॥ जो किसीका किसपर चल्ले,चाहे सो मारे;कर्म प्रमांणे सुख दुख भुगते समझो दिल प्यारे; ॥भला स०॥ नास्ति नहीं को विरला होगा, होते नहीं जहारे; सचा इल्मी उसकूं समझो, सुकृत फल बोवे ॥ भला सु० ॥ च० ॥ ४ ॥ साध संत अर अवधू नग्गे, मौनी अर मुल्लां; ॥ भला मौ० ॥ साच बात तौ कोइयन पाई, मारत है गल्लां; अदर छोडी वाहिर ढूंढे, किम पाते रस्ता; ॥ भला कि० ॥ ऋद्धि सिद्धि सब मांहि विराजे, क्यू इत उत वस्ता; मुनि राम कहै वो इल्मी सचा, निज मठने धोवे ॥भला नि०॥च०॥५॥इति॥

७ तेरों सूतो सिंघ निशंक जगादे सिंघणी ॥ ए देशी ॥

वार वार मै क्या तुज घोलं, मांन कह्या मेरा; चतुर नर मांन कह्या मेरा; सब स्वारथके मिले मुसाफिर, नहीं कोई तेरा ॥ टेर ॥ एक दिन ऐसे जादव होते, सुर पाये परता; ॥ भला सु० ॥ हेम पुरी सुर छिनमें कीधी, नहीं किसे डरता; तीन खडंके भोक्ता होके, पुन्य पिछा फिर-

ता; ॥ भला पु० ॥ एक दिवस ओ आंखां देखे, जादव सब जरता; जरा न लागो जोर कृष्णको, विन पानी मरता; ॥ भला वि० ॥ धन दोलत कोई संग न चल्ली, खमा खमा करता; छपन कोड़ जादवको मालिक, एक न गयो लेरां ॥ भला ए० ॥ वा० ॥ १ ॥ एक दिन रावण राज करत हो, बलवँत जगमांही; भला ब० ॥ लाख जिसीके बेटे कहिये, सव्वा लक्ख भाई; घरभी फूटे नोकर बदले, बदले सीपाई; भला ब० ॥ पर नारीसें प्रीति करीनें, फते किसे पाई; छिनमें लिछमण मार लियो है, नर्क बीच डेरा; भला न० ॥ वा० ॥ २ ॥ किसके मात पिता सुत बंधू, किसके परिवारा; भला कि० ॥ किसके नारी किसके बच्चे, झूठा संसारा; बिन मुतलब सब खारा लग्गे, मुतलबसे प्यारा; भला मु० ॥ पुन्य पाप दो संग चलेगा, और नही लारा; रामचंद्र कहे सद्गुरु सच्चे, करते उजवेरा; भला क० ॥ वा० ॥ ३ ॥इति॥

९ अगड़धं अगड़धं बाजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

माल खरीदो मिले जो नफ्फा, घरका करलो सभारा; मूल पूजीकों रख लो सैठी, तूं छै चलता विनजारा ॥टेर॥ जो जो वस्तू नफा न देगा, पोठ खालि कर दो सारा; भूलचूक मत करो खरीदी, विवेक मित्र रखियो लारा ॥ मा० ॥ १ ॥ जो जो वस्तु नफा तोय देगा, उनकूं संग्रह कर प्यारा; दूर दिशावर माल चढेगा, रस्तेमें बहु वट पारा ॥ मा० ॥ २ ॥ एकाएक तूं जासी दिशावर, संगन आसी परिवारा; विदा हुतेकूं विदा न देसी, खो-

स लेसी कपड़ा धारा ॥ मा० ॥ ३ ॥ थारो एक न दीसे अंगतू, तूं पिण सबसें है न्यारा; मुनि राम कहै तूं रट जिनवरकूं, ज्यूं वेग हुवे बेडा पारा ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥

१० तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

गंधी देहका तूं रहवासी, क्या इतना तू सोच करे; किनसें उत्पत्ति या तूं जांने, क्यूं आंके बांके पांव धरे ॥ ॥टेर॥ माता रुधिर पिता शुक्रसें, जिससें तेरी देह बनी; अधोमुख पांव नीचे तूं लटक्या, मल निकस्या तेरी नाक बनी ॥ गं० ॥ १ ॥ पुरीष कृमी पर तूं नित झूल्यो, भूल्यो तूं बाहिर आके; फूल्यो धन अरु तन जोवनसे, पर नारी पिण तूं ताके ॥ ग० ॥ २ ॥ श्रवण पदारथ जब है तेरे, श्रवण करे भगवत वांनी; नहींतर निकम्मे खम्मे कहिये, बात नही कछु एह छांनी ॥ गं० ॥ ३ ॥ त्रस थावरकी दया जो पाळे, भगवत मुनिवरकूं देखे; शास्त्र वाचे धर्मसू राचे, जद आंख्यां जांणूं लेखे ॥ ग० ॥ ४ ॥ नर भव सेती सिद्ध पद पावे, नाकी जिण प्रांणी राखी; नर भव खोयो जन्म विगोयो, गई सदा जिणकी नाकी ॥ ग० ॥ ५ ॥ रसनाकर रटिया जिनवरकू, जद ऐ जीभ पवित्त रहै; काया सफल शुद्ध धर्म कीयां सू, नहींतर अशुचितणो घर है ॥ ग० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे खजवांणा-मांहे, क्यूं न करो नर देह सफली; गुणचालीसे माव वद बारस, धरम करै जोई तिथि भली ॥ गं० ॥ ७ ॥ इति ॥

११ एक घड़ीकी करते मोहोबत उमर निभा देते सारी ॥ ए देशी ॥

सुण हे गोरी अग मरोरी, तूं काळामे ऐब धरे; काळा

हिरणा जंगल चरणा, वे भी छल बल वहोत करे; काला नाग थंबी पर खेले, उसके खायां तुरत मरे; काली घटा अंबर पर गाजे, वरस्यां दुनियां पेट भरे; काला हस्ती राजाके सोभे, वे फौजां सिणगार धरे; काली ढाल गैंडकी होती, उनसें जोधा खूब लरे; काली तो कस्तूरी कहिये, औगुन ऊपर गुन्न करे; कालो सुरमो नयनां सोभे, उसकी बिदली सुरंग धरे; काला तवा पर रोटी पके, उससे तेरा पेट भरे, काली कीकी आंखमें सोभे, उनसे सब जग सूझ परे; कालाही केश बहुतसा सोभे, उनसें तरुणी चित्त हरे; कालाही पारस काली स्याही, जिण लिखियां सब साख भरे; एक काली तलवारही होती, उससे दुश्मन वहोत डरे; एक काली कोकिल बी होती, टहुका सुन कर दिल्ल ठरे; एक काली मंमाई होती, उन खायां तो प्रांण धरे; सुण गोरी नालतकी मारी, क्यू कालामें ऐब धरे ॥ १ ॥ इति ॥

१२ सासू कहे रिसाई जी क ॥ ए देशी ॥

चौमासो अबी लागे जी क, सरावग सुण लीजो; कोई धर्म करै वड भागे जी क॥स०॥ बहुत जीव उत्पत्ती जी क ॥ स० ॥ नहीं विचरै जैनके जत्ती जीक ॥स०॥१॥ श्रीकृष्ण सभा नहीं करता जी क॥स०॥आवश्यक सूत्रमें धरता जी क॥स०॥त्रिखंडतणा छा भोक्ता जी क ॥स०॥ अरिहंत पद लग पोतां जी क ॥स०॥२॥ अन्यमति श्रावण हरी वरजे जी क ॥स०॥ तो श्रावण भादू तुम किम सरजे जी क ॥स०॥ दो मासे शील ज पाळोजी क ॥स०॥ करो रयणी भोजन टाळो जी क ॥स०॥ ३ ॥ नित प्रति सुणो वखांणे जी क ॥स०॥ हुवे श्रवणथी नाण विनाणे जी क

स० ॥ श्रावण भादू धन उपजै जी क ॥स०॥ इण रीत मैं पिण निपजै जी क ॥ स० ॥४ ॥ सुणो थोड़ामें उच्च-रियो जी क ॥ स० ॥ शुद्ध कृत्य ये करियो जी क ॥स०॥ अवश्य करो एक तेलो जी क ॥ स० ॥ चौपड़ पासा मत खेलो जी क ॥ स० ॥ ५ ॥ छांणे इंधन धांन शाक पाते जीक ॥ थायां सु० ॥ करो जीव जतन दिन राते जी क ॥ था० ॥ पग पग उपयोग रक्खो जी क ॥ था० ॥ थांरे सुकृत फल हुवे पक्को जी क ॥ स० ॥६॥ टाळो जीवांनी घाते जीक ॥ था० ॥ गरणा कह्या छै साते जी क॥था०॥ रामचंद्र इम भाखे जी क ॥ स० ॥ पुन्यवंत जयणा राखे जी क ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ चौमासे कर्त्तव्य कर्म ॥

१३ मैं जाती हूं गिरनार कहूं नहीं छांना ॥ ए देशी ॥

तुम खूब करो धर्म ध्यान, पर्यूपण आये; धरो मती पर-माद, प्रभू फुरमाये; दान शील तप भाव, क्षमा तुम करियो; कठिन वचन मुख बोल, काह्न मत लरियो; छुवो केसीसें वैर, देर बिन खामो, रखो न दुश्मन भाव, गु-री शिर नामो; रखो न मन अहंकार, धर्म जो पायो; जो रखो मन अहंकार, तो धर्म गमायो;मुनिवरकेरी सेव, करो मनभाये ॥ तुम खू० ॥ १ ॥ केई अंत समै कहे तात, मात पुत्रांनें; अमुकसे जावज्जीव, न बोलो कोई टांनें; र-खजो गाढा वैर, कहूं तूं मांनें;मरणे परणे न रक्खो रीत, सपूत गिणूं थांनें;जो रखोला कछु व्यवहार,तो हूंलो दां-नगिरी थांरो; लीजो इनसे वैर, वचन सुनो म्हारो; दी-जो छोरांने सीख, लीक ऐ रक्खे; कोई उत्तम पुन्यवंत जीव, धर्मकू लक्खे; करे हंस पचखांण, सारांने खमाये ॥ तु० ॥ २ ॥ करो कुशीलका त्याग, रात्रि मत खावो;

रखो हरीका नेम, और मत न्हावो; रात्री भोजन दोष, ज्ञानी कह्यो मोटो; द्रव्ये भावे दोय, इसीमें तोटो; ज जो होय मलीन, फेर उजवालो; पग पग रखो उपयोग, हिंसाकों टालो; एक देऊं तुमकूं सीख, हीयमें रखो; कोई भूल चूक पर निंद, करी मत बको; ना देवो हूका रो भूल, न सुनियो कांने; एह दीवी तुमकूं सीख थोड़ नही छांनें; तो व्हेगा कारज सिद्ध, सदा मन चाये ॥तु ॥ ३ ॥ तुम करो सामायिक शुद्ध, और पड़िकमणो; सम्यक् दर्शन ज्ञान, चारित्रमें रमणो; जिन धर्मकूं जांनों सार, आतमकूं दमणो; गुणोंनी श्री नमुक्कार, छूटे तेरो भमणो; सुनियो नित्य व्याख्यान, अज्ञानकूं वमणो; क ठिन वचन सुनि कांन, सुधे दिल खमणो; मुनि राम कहे जिनराज, तणो लो सरणो; और कारजकू छोड, दौड़ धर्म करणो; तातें तेरा जन्म, मरण मिट जाये; ॥ तुम खूब करो धर्म ध्यांन, पर्यूपण आये; २ ॥ धरो मती परमाद, प्रभू फुर माथे ॥ ४ ॥ इति ॥

१४ वारे मास्यारी चाल ॥

मैं बोलूं छूं हितकी वातां, सुलटी समझो शुद्धमती; ऊलटी सरधे ऊंधमती नर, जिनकी किम हुवे ऊंच गती ॥ टेर ॥ सम्यक् दृष्टी होवे प्रांनी, जानी आरंभनें टाले; अनसरतें वो करे मन मझें, भगवत वचनांसूं चाले; यदि- वा शुद्धलोक विरुद्ध, कदे नहीं रस्ते हाले; लोक विरुद्ध जो कारज करतां, जिणने पिण हितसूं पाले ॥ मे० ॥ १ ॥ मुनि पण लोक विरुद्धकू वरजे, गरजे जिन मारगमांहीं; सुवावड़ न्यात गोठ हलवाई, नही वहिरे रस्ते मांहीं; नारी-

जात अरु अज्ञा परमुख, भूंडो लगे परचो जाही; आल प्रमुख तो आवे उसकूं, जिसमें शंका छे नांही॥मे॥०॥२॥ घर घर मांहि जावे वो चाली, मोकाण करावे मुनि होके; टेरो मिले जां जावे पाधरो, चौडे विगाड़े दोय लोके; भेष लजावे लोक रिझावे, गीदा बिछावे वो चौडे; गृहस्थी जिसकू जांणे ढीला, कूंण करे समझू सिर फोडे ॥ मे० ॥ ३ ॥ श्रद्धा शुद्ध नहीं फेर होवे, समझू साहमू कुंण जोवे; मत पखिया जो मांनें जिसकू, मनमांहे पिण वो रोवे; ले डूबेगा जिसकूं पी दे, कदे नहीं ऊंचो होवे; लोकांनें पर मोद लगावे, पोते अंधो क्यू होवे ॥ मे० ॥ ४ ॥ कर्मतणी तो गत छे न्यारी, आप औगुण फेर नहीं जोवे; जिसको पढियो जरा न लेखे, नाहक जन्म वृथा खोवे; मुनि रामचद्र कहे दश पूर्व महा, अभव्य पिण पढवोज करे; क्या होवे पढियां विन श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान क्रियासें तरे ॥ ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

देशी ख्यालनी ॥

संसारी लोको सात व्यसन छोडो भावस॥सं०॥टेर॥ जूवा खेलण मांस मद्य और, वेश्या व्यसन सिकार; चोरी पर रमणीको रमवो, सातूं व्यसन निवार हो ॥ ॥ सं० ॥ १ ॥ जूवा खेलिया पांडवास रे, मंस भखियो बकराय; मदिरा पीवी जादवांस रे, जव्यां मूलसें जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्याने सेवी, ब्रह्मदत्त आ-

खेट; सत्यघोष पर धनके कारन, पहुंतो नरकां थेट हो ॥ ॥ सं० ॥ ३ ॥ रावण राजा वडो अभिमानी, तीन खं डको सांमी, रामचंद्रकी सीता हरतां, भयो न गामी हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोड़ दोस रे, है जीवन दुखकार; रामचंद्रकी आदी सीख है, सातूं व्य सन निवार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको जूवा व्यसन तुमे छोड दो ॥ सं०॥टेर॥ सर्व व्यसनका राजा जूवा, भूल चूक मत खेलो; सर्व व्यसनकों जूवा सिखावे, ओ सात व्यसनमें पेलो हो ॥ सं० ॥ १ ॥ सप्त व्यसनको राजा ओ तो, दुर्गतिमें पहुं चावे; आर्त ध्यानको मूल कहावे, चौरी आदि सिखावे हो ॥ स० ॥ २ ॥ एक वस्तिको राजा जूवे, रमवा चाले पड़ियो; कह्यो किसीको मांनें नांही, जोगी आयो दूरसे खड़ियो हो ॥सं० ॥३॥ राजा बाबूका जूवा खेलन, युक्ती साथ छोडाऊं; तो गुरुका पंजा शिर पर मेरे, नृपकू रस्ते लाऊ हो ॥ स० ॥ ४ ॥ अद्भुत जोगी जंगल नृप दीठो, पूछे इम महिपाल; क्या कथा कक्षे नांही राजा, सफरी बंधकूं जाल हो ॥ सं० ॥५॥ नृप कहे क्या तुम मछ्यां खाते, हां खाते मदिरा सैत; क्या मदभी पीते बाबो बोले, पीवां वेश्या समेत हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ क्या वेश्याभी सेते बोले जोगी, अरि शिर पग दे जाते; कुंन तुज वैरी वो मुज वैरी भींत भेदहां राते हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ क्या चौरीभी करते दीसो बाव, हां द्युत हेत करां चौरी; सुणनें दिलमें राजा

चमक्यौ, ए गत होसी मोरी हो ॥ सं० ॥८॥ राजा बोले सुण बाबाजी, हू जूवारी मैं मोटो; किसीतणो मैं कह्यौ न मांन्यो, जांण्यो व्यसन ए खोटो हो॥सं०॥९॥ सुणिये बाबू कहे इम जोगी, जो तूं जूवा रमसी; चोरी नारीपर मदिरा मांस, वेश्या शिकार तूं भमसी हो ॥ सं० ॥१०॥ राजा बोले सुणो बाबाजी, भूल चूक नही रमसूं; मुनि राम कहै संग उत्तम करिये, सीख देवो उत्तमसूं हो ॥ ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको गंधी देहीका किसा गारबा ॥ सं० टेर ॥ गधी देहीका किसा गारवा,बुध जन करो विचार; सत्पुरुषांकी करलो सगत, ज्यूं हुवे बेड़ा पार हो ॥ स० ॥ १ ॥ रंगी चंगी काया दीसे, छिनमे छेह दिखावे; धम धम करतो चढ्यो चौबारे, पाछो पगां नहीं आवे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ अश्व कुदावे मूछ मुरडावे, मनमे घमंड घणेरो; पटके पड़ियो दम नीसरियो, कीयो ममांणे डेरो हो० ॥ सं० ॥ ३ ॥ चोवा चदन चरचे काया, रजहीं बेग उडाडे; बांण हीं बूवो पर वश हूवो, खाटमे जावे झाड़े हो ॥ स० ॥ ४ ॥ माता रुधिर पिता वीर्य मिल, महा अशुचिकी ठौर; जिणमाहे तो चेतन उपजे, देखो कर्मका जोर हो ॥ स० ॥ ५ ॥ कल्कल एक रात्रि लग रहे, पंच रात्री बुद्बुद रूप; पक्ष करीने ईडो होवे, इम बोले जिन भूप हो ॥ स० ॥ ६ ॥ शिरोकुर एक मास करी होवे, मास दोय उर धाट; तीन माससे उदर बनत है, चतु मासे कर फाट हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पंच मास करीने अगुली प्रगटे, रोम दृष्टि षट मास; सर्वांवयव व्है मास

सातमें, जिनवर कीयो प्रकाश हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ चरण ऊर्ध्व अरु मस्तक नीचो, चर्म पक्षी परे टिरियो; नव दक्ष मासे वायू प्रकोपे, गर्भ थकी नीसरियो हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ नव द्वार करीनें अशुचि वहै नित, छै मल मूत्रकी खांन; मुनिराम कहै इण कायासेती, सदा करो धर्म ध्यांन हो ॥ सं० ॥ १० ॥ इति ॥

४ देशी ख्यालनी ॥

कर्मतणी गत वांकड़ी, सुंणजो भवि लोको ॥ क० ॥ टेर ॥ वडा पुरुष वे राम रु लिछमण, ज्यां सेव्यो वनवास; सती सीताकूं रावण ले गयो, राम भयो उदास हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ कर्म धको दीयो रावणकूं, सीतानें घाल्यो हाथ; जीव संपदा सबही खोई, तीन खंडको नाथ हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ वन भुगत्यो है पांचे पांडव, जिनकी सुणजो वात, जूवामांही हारी संपदा, दुर्योधनके साथ हो ॥ सुं० ॥ ३ ॥ धातकी खंडको राय पद्मोत्तर, वडी करी उत्पात; समुद्र उलंघ द्रौपदी ले गयो, हुई असंभव वात हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ सती शिरोमण वड़ी अंजना, उत्तम वांकी जात; विखो सु भुगत्यो वीस वरस दो, संग दासीके साथ हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ देखोजी कर्मनकी या थिति, वड़ा वड़ामें होय; मुनि राम कहै समझायनें स जी, कर्म बांधो मति कोय हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

५ हूं डरूं अकेली वादलमें, चमके वैरण वीजली ॥ ए देशी ॥

मूरख लग्नजा रे, कनक ने कामण जगमें पास है; निज मन समझा रे, इण भवमें विरचै, नहि थिर

वास है ॥ टेर ॥ नांणो नेह तोडो कह्यो स रे, जांणो अनरथ मूल; हेत ठिकांणो ना गिणे स रे, सगपण जावे भूल; धन्य मुनिवर संसारमें स रे, धनकूं जांणे धूल रे ॥ मू० ॥ १ ॥ श्रेणिकरायनो डीकरो स रे, कुणिक नामें राय; वाप भणी दीयो पींजरे स रे, जोवो आगम मांय; इण परिग्रह कारणे स रे, अनरथ होता जाय रे ॥ मू० ॥ २ ॥ हार हाथी था वहिल पै सरे, कुणिककरी अभिलाख; दोय दिवसमें नर-मुंवा स रे, एक कोड असिलाख, महाभारत आगे हुवा स रे, छै सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥ ३ ॥ जादव कुलमें आयने स रे, कमला कीधो वास; पुरी द्वारका सुर करी स रे,सव सोवन घर वास;इक दिन ऐसो आवियो स रे, हुवो जादव केरो नास रे; ॥ मू० ॥ ४ ॥ राय प्रदेशी रे हुंती स रे, सूरी कंता नार; इष्ट कांत वाल्ही घणूं स रे, सूत्रमें अधिकार; निज स्वारथ विन पापणी स रे, मा-र्यो निज भरतार रे ॥ मू० ॥ ५ ॥ जुड्डल श्रावकने हूं ती स रे, दयिता तीसनें दोय; अग्नीमांही प्रजालियो स रे, दया न आंणी कोय; माठी गतनी पाहुणी स रे, गई जमारो खोय रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणी स रे, हुंती चूलणी मात; विभचारण चूके गई स रे, दीर्घराय-के साथ; घात विचारी पुत्रनी स रे, छै ए वहुली वात रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस विद्या त्रिखड धणी स रे, रावण मोटो राय;सीताने हरतां थका स रे,वैठो लंक गमाय;घर फूट्यो वैरी हण्यो स रे,धका नरकमें खाय रे ॥ मू०॥ ८॥ पदमोत्तर हुरमत गई स रे, गये कीचकना प्रांण; पांडव त्रिया द्रौपदी स रे, मूल न राखी काण; माठी गत मरनें

गयो स रे, मारे छे जमरांण रे ॥ मू० ॥ ९ ॥ जिण ऋषिनें जिन पालजी स रे, बंधव हूंता दोय; रेणा देवी रे वश पड्या स रे, जक्ष सहाई होय; जिण रुप सांमो जो वियो स रे, लीयो सूळीमें पोय रे ॥ मू० ॥ १० ॥ रूपवंत त्रिया देखनें स रे, जोवे विषय विकार; लंपट परनारीतणां स रे, गया जमारो हार; जम घाले आंख्यामें ताकळा स रे, दे गुरझांरी मार रे ॥ मू० ॥ ११ ॥ मल मृतरनी कोथली स रे, अशुचितणो भंडार; ऊपरसें कळी लगी स रे, जिण ऊपर सिणगार; हिगा देवी सम त्रिया स रे, जोवो हीये विचार रे ॥ मू० ॥ १२ ॥ जर जोरूके कारणे स रे, तूटे जूनो प्यार; जे नर जांणे आपणी स रे, ते नर मूढ गिवॉर; त्यागन कर संग्रह करे स रे, तिणने छे धिक्कार रे ॥ मू० ॥ १३ ॥ कनक कांमणी छोडनें स रे, पाले शुद्ध आचार; सुपनामें वंछे नहीं स रे, ते कहिये अणगार; राम कहै मुनिवरभणी स रे, वदो वारं वार रे ॥ मू० ॥ १४ ॥ उगणीसे अष्टादसे स रे, जोधपुर शेषे काल; स्वांमी वृद्धिचंद प्रसादसूं स रे, जुगतसूं जोडी ढाळ; सतगुरुनी किरपा थकी स रे, वरते मंगल माल रे ॥ मू० ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥

६ तूं आजा सोजा रे ॥ ए देशी ॥

मै वरजू रे तोने पर नारीकी संगत क्यूं करे; तन छीजे रे तारो, धन जावेनें जग निंदा करे ॥ टेर ॥ पर नारी धन मांगसी स रे, होसी जगमे भांड; गरमी चिणग्यो लागसी स रे, मूंडे पडसी खांड रे ॥ मै० ॥ १ ॥ कुलनें काळो लागसी स रे, राजा करसी दंड; घर नारी रीसा-

वसी स रे, मिटसी सरच घमंड रे; ॥ मैं० ॥ २ ॥ * लाखीणों तो मानव बाजे, जोतां १ हसतां २ बात; ३ फर्श ४ कुचेष्टा ५ मूल ६ सेवतां, कमसूं खट लो पात रे ॥ मैं० ॥ ३ ॥ पैठ प्रतीत जावसी स रे, हृय चूकामें कैसी; सबसूं नीचो जोवसी स रे, ऊंचो बोलतो रैसी रे ॥ मैं० ॥ ४ ॥ सर्वापद की साई ए छै, सद्‌गततणा कपाट; नरकतणो जाबाने मारग, अह निश रहे उचाट रे ॥ मैं० ॥ ५ ॥ उभय लोक सुधारण मरजी, रखो परनारीका नेम; अहिपुर तीसे काती शुद्धमें, मुनि राम कहे छै एम रे ॥ मैं० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ देशी ख्यालनी ॥

साच बातकी थाप जिसीमें, झूठतणो नही रच; किसी जीवकूं दुख नही देणा, तजणा सब परपच रे ॥ सुणियो सब प्यारे, जैन धर्म नही छोडणा ॥ सु० टेर ॥ १ ॥ कष्ट आये पिण झूठ न कहना, झूठ पापका मूल; पर तृण जिणने लिया उठाई, कीया जमारा धूल हो ॥ सु० ॥ २ ॥ नारी सारी द्वार नरकको, स्वर्ग अर्गला जांन; धनकूं धूल गिणी तज निसरो, धन अनरथकी खांन हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए उपदेश जिसी धर्ममें, समजो चतुर सुजांण; पर निंदा स्व महिमा नांही, नहीं छै खांचाताण हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ भाई जमाई पुत्र कमाई, फेट शरीरे लागे;

---

* आदमी लाखीणो अर्थात् लाख रुपयांरो है सो पर नारीनें कुदृष्टि जोवता छ ६ भाग मायसूं एक भाग छेली विंदी घट जाय जद, दश हजाररो रै जावे हसता दूजी विंदी जांय जद, हजाररो रेजावे बात करता तीनी विंदी जावे जद, सौरो रैजांय स्पर्श करता चोथी विंदी जावे जद, स्यारो रैजावे कुचेष्टा अर्थात् स्तनादि स्पर्श करता पाचवी विंदी जावे जद, एकरो रै जांय ने मूल अर्थात् मेथुन करता समूल नष्ट हो जांय

पूर्व कमाई धर्म सहाई, मिष्ट धर्म फल आगे हो ॥ सु०
॥ ५ ॥ विरुद्धाभास नहीं पूर्वापर, नहि खंडन कोई ठौ
मुनि राम कहे जिन धर्म सरीखो, हुवो न होसी और रे
॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

८ देशी धूंसारी ॥

एक करलो रे संग गुणी जन की ॥ ए० ॥ टेर ॥ गुणि
जन सग सदा सुखदाई २; सब टारत है भ्रम नामनकी
॥ ए० ॥ १ ॥ भ्रमरा संग कीटक हुवे भ्रमरो २, वो उड
उड वास ले फूलनकी॥ ए० ॥ २ ॥ जल बिंदु तुच्छ शुक्ति
संगतसूं२, व्है मुक्ताफल जात अमोलनकी ॥ ए० ॥ ३ ॥
लोह अड़े जे पारस सेती २, छिनमें होवे जात सोवनकी
॥ ए० ॥ ४॥ पुष्पकी संगत सूतको तागो २; मस्तक चढे
सुर भूपनकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ निर्मल आंखतणे परसंगे२
काणाक्षी होवे अंजनकी ॥ ए० ॥ ६ ॥ रज गगन चढे
पवनथी २, देखो ढांके जी क्रांती भाननकी ए० ॥ ७ ॥
राय प्रदेशी केसी गुनी तार्‍यौ २ , दृढ प्रहारी संग संत
नकी ॥ ए० ॥ ८ ॥ धर्मीकी संगत पापी सुधरे २, मुनि
राम कहे शाख शास्त्रनकी ॥ ए० ॥ ९ ॥ इति ॥

९ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ टेर ॥
तूं क्रोध पूतळो शुद्ध न धारे, बोले आल पंपाल; कोड
पूरवकी तपस्या करनें,छिनमें देवे जाल ॥ व० ॥१॥ विना
पूंजीको निकमो कंगलो, विरथा जनम गमावे; साधु
गृहस्थ दोनूंमे नांहीं, अध विच गोता खावे ॥ व० ॥ २ ॥

नारीसुं दंडीजे, म्हांरा वालमिया; रोग अंगे लग जाई ॥ ॥ म्हां० ॥२॥ धन छीजे बल हटे, म्हांरा वालमिया; रीस चळेला थांरा भाई ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ऊंचो बोल सके नहीं, म्हांरा वालमिया; नीचो जोवेला सदाई ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ लाखीणो ठिकांणो छूटे ॥ म्हां० ॥ लोकमे दर घट जाई ॥ ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ पर नारीसूं दुख पावो ॥ म्हां० ॥ मुरझा-वोला दिलमांही ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे घर नारी समझावे ॥ म्हां० ॥ करकरने नरमाई ॥ म्हां० ॥७॥ इति॥

दोहा

कोई निंदा मत करो, निंदा सम नहीं दोष ।
एह लोक बिगड्या फिरे, सुधरे नहीं पर लोक ॥ १ ॥

१२ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ मूंढे मीठा बोले मूरख,पेटमे खोटा करमी; जैनी नहीं ते फैनी कहिये, जांणो खरा अधरमी ॥ व० ॥ १ ॥ गुरु देवसूं बे मुख हूवा, जिणरा न देखो मूंडा; सात पांच तो मोटा पापी, जासी नरकमे ऊंडा ॥ व० ॥२॥ सूत्रतणो तो मर्म न जांणे, गुरु कर्‍या ऊंध मती; तपस्या मांहे छाछ पिलावे, किम सुधरेला गती ॥ व० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमाकर द्वेषी पूरा,खोटी प्ररूपणा करता; भोळांनें डहकावे पापी, पूंज पूज पग धरता ॥ व० ॥ ४ ॥ पात्रामांहे करे मातरो, धर्म मर्म नहीं जांणे; तपसीकेरा नाम धरावे, रूढ आंप-णी तांणे ॥ व० ॥ ५ ॥ मन उपगसूं करे थापना, निकमा साधू बाजे; ज्ञानतणा उत्थापक पापी, निंदा करत नहीं

१६ देशी ख्यालनी ॥

गुन सात वारमें, खरची बांधो रे एक दिन जावणां ॥ टेर ॥ सात वारमें सबकों जांना, जिसमें क्या है फेर; रंक रावकूं सबकूं चलना, खरची लेलो लेर; लेलो खरची लेर; फेर पिछतावसो, बंधी मूठी आय, खाली हुय जावसो ॥ तु० ॥१ ॥ सूर्य वारमें सूर्य ऊगे निल, आयु खड ले जावे; घटी जावे सो पाछी नावे, रवि तो एम जतावे २; खरची बांधसो, मुनि लोकांसूं प्रीत, सैंठीथे सांधसो ॥ तु० ॥ २ ॥ चन्द्रवारमे करो चांनणो, तेरा घटरे मांय; जिनसेती तो मिटे अंधेरा, घट पट प्रगट दिखाय २; आखर तो जावणां, राख्या नहीं रहे लाख, मेह अरु रावणां ॥ तु० ॥३॥ मंगल वारमे मंगल वरते, धर्म कीयां सुख पासी; धर्म विना तो खाली जासी, आखर तूं पिछतासी २; शास्त्र गाय छै; आंकी भली न वांकी भली, आंख फेर मिचवाय छै ॥ तु० ॥ ४ ॥ बुद्ध वारमे बुद्ध विचारो, जनम मरण मिट जाय; राग द्वेषने पतळा पाडो जिणरो नाम कषाय २; पातळी पाडसो; ज्ञानथकी ग्रहो ध्यान, समाधी चाडसो ॥ तु० ॥ ५ ॥ गुरुवारमें गुरु चेतावे, इसा करो व्यौपार; जिसमे नफ्फा हुवे अनता, आवा करे संसार २; ज्ञान कर हेरसी; तूं सूतो छै कुण नींद, मोत आय घेरसी ॥ तु० ॥ ६ ॥ शुक्रवारमे सुकृत कर ले; धर ले गुरुका ध्यान; गुरु विना कुछ पता न लग्गे, नत कर गुरुसे मांन २; ज्ञान उर राखजो; सुधरे जिम परलोक, वचन सुध भाखजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ थावर वारमे थिर नहीं रहना, चलना विश्वा वीस; जैन धर्म शुद्ध पाळजो

श्री जिन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंट सेवे बलाय; क्या हिंसा मती, क्या आशा मती, क्या नास्त मती, क्या वाम मती, क्या विष्णु मती, क्या शिव मती, ए जोड़े न लागे कोय, जैन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंड सेवे बलाय ॥ टेर ॥ सोना पीतल सारखो रे, और केसर धूल समांन; मूरख पंडित सम गिणे रे, ते नर खरा अजांन॥ ॥ जै० ॥ १ ॥ जीवाजीव न जांणही रे, पुन्य पाप किम होय; धर्म अधर्म सम मांनही रे, ते गये जमारो खोय ॥ ॥ जै० ॥ २ ॥ वीतराग तो देव छै रे, गुरू शुद्ध अणगार; अर्हत प्रणीत धर्म कयो रे, ऐही उतारे पार ॥ जै० ॥ ३ ॥ शस्त्र धरे नारी रक्खे रे, ते छै देव कुदेव; महाव्रत विन गुरु छै नही रे, हिसा धर्म मत सेव ॥ जै०॥४॥ केवल ज्ञान दर्शन धरा रे, ते छै देवाधिदेव; रामचंद वंदे सदा रे, जांकी इंद्र करे सब सेव ॥ जै० ॥ ५ ॥ इति ॥

१५ देशी ख्यालनी ॥

सुणो चतुर सुजांना, खूटीकी बूंटी नहीं कोई ग्रथमें; क्यूं है जांन दिवांना, अमर नही सुणियो रे हुवो कोई पंथमे ॥ टेर ॥ श्रीतीर्थंकर अवतार अवालिया, नहीं देखा कोई संतमे; योगाभ्यासी लगा समाधी, मर खूटे सब अंतमें ॥ सु० ॥ १ ॥ धन्वंतरी या बूंटी हेरत, ते पिण गये उडंतमें; कोई नही अमर देखा देहधारी, इम सुणी खरी सिद्धंतमे ॥ सु० ॥२ ॥ अश्वत्थामा भीम गज भर्तरी, अमर कहे कथदंतमे; आईआई मर खूटे सबही, सब गये मुख कृतंतमें ॥ सु०॥ ३ ॥ हरि हर ब्रह्मा सबकू छोटी, ध्यांन रखो अरिहतमें; मुनि राम कहे अनंत पद भजिये, सो पद सिद्ध भगवतमें ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

आठूं तोडिये स रे, कोई जुक्तिके साथ; जोग अष्टांग धारिये स रे, है मन मारण वात; अष्ट आचार समकितणां स रे, पाळो शुद्ध विख्यात रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ नवमी निरणो कीजिये स रे, नवही तत्व विचार; जांण विना पशु सारखो स रे, बोले सूत्र मझार; ज्ञान विना करणी किसी स रे, ज्ञान विना अंधार रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ दशमी दश लक्षण धरो स रे, तातें मरण मिटाय; दश मूंडन पिण आदरो स रे, शिर मूंड्यां स्यूं थाय; केवल शिरही मूंड़ियां स रे, खाज माथेकी जाय रे ॥ वी० ॥ १० ॥ एकादशी कहे प्राणियां स रे, ग्यारा प्रतिमा धार; बारस चौड़े बोलही स रे, लो श्रावक व्रत बार; बारे भावो भावना स रे, जिणसूं उतरो पार रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ तेरस कहे तेरे क्रिया स रे, छोड़ो चतुर सुजांण; तेरे छोडो काठिया स रे, छोडो रूढ अजांण; तेरेपंथी संग छोड दो स रे, सूत्र लुंपक ते जांण रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ चवदश कहे चौकस करी स रे, धारो चवदे नेम; दान करो थे शुद्ध मने स रे, राखो अधिको प्रेम; भूत ग्राम रक्षा करो स रे, चावो कुशल क्षेम रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पूनम पूरो ऊगियो स रे, जिणमें बड़ो प्रकाश; अथवा चंद विन रातड़ी स रे, जिणमे नहीं उजास; मुनि राम कहे पखवाड़ो सफलो, कीजो ज्ञान अभ्यास रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ तीन चालीस उगणीसके स रे, पाली शेषे काल; जेठ महीनो आकरो स रे, थांजे झाल दुझाल; धर्म कीयां षट रुतु भली स रे, वरते मंगल माल रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ इति पखवाडो ॥

१८ देशी ख्यालनी ॥

तुम थारे मामर्में दिलने मंजो रे तीरथ कौन छे ॥ तु०॥

स रे, पाछी मारो रीस २; जस थे लीजियो; मुनि राम कहे सत वारमें, सुकृत कीजियो ॥तु०॥८॥ इति सप्तवार॥

१७ देशी ख्यालनी ॥

वीते पखवाडो धर्म करो रे ज्ञानी जीवड़ा ॥ वी०॥ ॥टेर॥ एकम कहे तूं एकलो स रे, दूजा न तेरी संग; पुन्य पाप दो संग चलेगा, रखो धर्मसूं रंग; एकत्व भावो भावना स रे, दुर्लभ मानव अंग रे ॥ वी० ॥ १ ॥ बीज कहे बीज रोपलो स रे, समकित बीज जमाव; मुनि श्रावकपणो आदरो स रे, बैसो धर्मकी नाव; ज्ञानरूपी जल सींचलो स रे, उज्वल रक्खो भाव रे ॥ वी० ॥२॥ तीज तीन थे आदरो स रे, सम्यक् दर्शन ज्ञान; चारित्र विन तरना नहीं स रे, ऐ तूं साचो मांन; देव गुरु धर्म आदरो स रे, ज्यूं पोंचो निर्वाण रे ॥ वी० ॥ ३॥ चौथ कहे च्यारूं तजो स रे, क्रोध मान माया लोभ; ऐ छोड्यां तरणो हुवे स रे, फैले जगमें शोभ; शिर मुंडायां स्यूं हुवे स रे, मिट्यो न मनको क्षोभ रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पांचूं कहे पांचूं जणयां स रे, लागी थारे लार; जिणने कब्जे रक्खिये स रे, जिम उतरो भव पार; पांचूं रोपो धर्ममें स रे, छोडो विषय विकार रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ छठ छकाया ओळखो स रे, पग पग जयणां राख; धर्म दया विन छै नहीं स रे, छै सूतरकी शाख; लाख वातकी एक है स रे, दया विना सब खाख रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सातम कहे सत राखजो स रे, सातूं व्यसन निवार; काळो लगासो देहनें स रे, डूबा काळी धार; मरणो किण विध सुधरे स रे, कीजो हीये विचार रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ आठम

१९ देशी ख्यालनी ॥

तुम सुणिये रे लोको कक्का बत्तीसी हिरदे धारिये ॥ ॥ तु० ॥ टेर ॥ कक्का किरिया कीजिये स रे, क्रिया विना स्यूं ज्ञान; ज्ञान विना क्रिया नहीं स रे, तातें दोय प्रधान रे ॥ तु० ॥ १ ॥ खक्खा खिलवत छोड़िये स रे, खिलवतमें नहीं सार; खिलवत खोवे जोगनें स रे, औरही विधवा नार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ गग्गा गर्व न कीजिये स रे, गर्व कीयां लछ जाय; गर्व करी रावण गल्यो स रे, और दुर्योधन राय रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ घग्घा घटमें चांनणो स रे, कर लो प्यारे लोक; घोर तपस्या कीजिये स रे, मिटे कर्मका रोग रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ चच्चा चरचा ज्ञानकी स रे, कर लो शास्त्र प्रमांण; चुगली चोरी छोड़िये स रे, जिण सूं होय कल्यांण ॥ तु० ॥ ५ ॥ छच्छा छल नही कीजिये स रे, मेटो मनकी छोल; छः कायांने ओळखो स रे, जांणो आतम तोल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ जज्जा जसही लीजिये स रे, जस सम नही छै धन्न; जी जी करतां बोलियो स रे, उज्जल रख्खो मन्न रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ झज्झा झूठ न बोलिये स रे, झूठ महा दुखदाय; झूठ विगाड़े पैठनें स रें, पत पंचांमे जाय रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ टट्टा टेक न छोडिये स रे, धर्मतणी नितमेव; टट्टी तूटे मांहिली स रे, ऐसा सद्गुरु सेव रे॥तु०॥९॥ठट्ठा ठोठ न होजिये स रे,तज दो ठट्ठा रोल; ठीमरपणो थे आदरो स रे, ओछो न बोलो बोल रे ॥ तु० ॥ १० ॥ डड्डा डरही राखिये स रे, भगवत भूप ससार; डरही विगाडे अर्थनें स रे, सो डर वेग निवार रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ ढड्ढा ढील न कीजिये स रे, जिण-

॥ टेर ॥ चेत कहे तुम चेतजो स रे, चित राखो एक ठाम; चित्त उज्जल विन ताहरो स रे, सरे न एको काम रे तु० ॥ १ ॥ वैशाख शाख दोय कल्पसी स रे, वांछित देवण हार; श्रुत चारित्र दो धर्म छे स रे,भवोदधि तारण हार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ ज्येष्ट कहे तूं ज्येष्ट है स रे, जो करे धर्म दृढ धार; ढके दोष जो सकलके स रे, और करे उपगार रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ आषाढ आशा राखिये स रे, परमेश्वरकी एक; बीज बावो शुद्ध भूमिमें स रे, जिनसें होय अनेक रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ श्रावण श्रवण कीजिये स रे, जिनागम परम पवित्त; लूंवां वरसे ज्ञानकी स रे, करे सकलनो हित्त रे ॥ तु० ॥५॥ भाद्रव गहरो गाजियो स रे, पृथिवी होय सुकाल; गाजो धर्ममें प्राणियां स रे, जिणसेती हुवो न्याल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ आसोज सोज भल भावसूं स रे, सीप समुद्रां जोय; मोती निपजे वखतका स रे, तिम दानादिक होय रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ काती काती वर सणो स रे, अथवा कटक समांन; अन्य मतकी करणी छै तैसें, जनम मरणको स्थान रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ मृगशिर मृग शिर सारिखो स रे, धर्म विना नर देह; मृगा रूप पशु सारखो स रे, जिणमें क्या संदेह रे ॥ तु० ॥ ९ ॥ पोष पोष पातरभणी स रे, जिणसूं सुधरे काज; शालिभद्र जिम सुख लहो स रे, पांमो अविचल राज रे ॥तु० ॥ १० ॥ माह मोहने मारलो स रे, क्षमा खडग चलवाय; शरण ग्रहो गुरु चरणका स रे, ज्ञान चिराक जिगाय रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ फाल्गुन फाल गुनकी संधो स रे, तो तूं वडो रमाड; मुनि राम कहे छे बारे मासमे, रखो धर्म सूं गाढ रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति बारे मास्यो ॥

लालच छोडिये स रे,सब सरखी नही ठौर;अति लालच नहीं अर्थरो स रे, लीन अलीन छै और रे ॥ तु० ॥ २५॥ वव्वा वाद न कीजिये स रे, वाद कीयां हुवे हांण; वंदो गुणि जन देखनें स रे, रखो वडेकी कांण रे ॥ तु० ॥२६॥ शश्शा शंक न कीजिये स रे, जिन वचनांके मांय; शील व्रत शुद्ध पाळजो स रे, जो तुम तिरवा चाय रे ॥ तु० ॥ २७ ॥ पप्पा खूब पिछांणिये स रे,स्यादवाद मत सार; खाली वाद न कीजिये स रे,बोलो शास्त्रके लार रे ॥ तु० ॥ २८ ॥ सस्सा सतही भाखणो स रे, सूत्र समो नहीं धर्म; सूत्र विरुद्ध जे भाखही स रे, जिणरे बोहला कर्म रे ॥ तु० ॥ २९ ॥ हहा हासो त्यागिये स रे, हास्यथकी विषवाद; कौरव पांडव वीगड्या स रे, नहीं हांसीमे स्वाद रे ॥ तु० ॥ ३० ॥ ळ्ळ लखावे लिखणो भेळो, ररे विना सब कोय; उलट पलट अक्षर वण बोले, वर्णसंकर ते होय रे ॥ तु० ॥ ३१ ॥ क्ष क्षमा तुम कीजियो स रे, क्षमा करे गुणवंत; मुनि राम कहे छै ककावतीमी, शीख चलो इण पंथ रे तु० ॥ ३२ ॥ तयां लीस उगणीसको स रे, पाली पींठ मझार, ज्येष्ट वदी तेरस रची स रे, ककाबतीसी सार रे ॥ तुम सुणियो रे लोको ककाबत्तीसी हिरदे धारिये ॥ ३३ ॥ इति ककावत्तीसी ॥

गाळ ।

१ जैपुरसें दोय चीज मंगाय दो ॥ ए देशी ॥

गुरु कृपासे दोय चीज ओळखसां, एक निश्चो ने व्यव

सूं होय सुधार; काज विगाड़े ढीलसूं स रे, ते नर मूढ गिवॉर रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ तत्ता तत्व पिछांणिये स रे, तरुणपणो दिन च्यार; थोडा दिनकी चांनणी स रे, सेवट घोर अंधार रे ॥ तु० ॥ १३ ॥ थत्था थिर रहणा नहीं स रे, यौवन धन परिवार; आखर एक दिन जावणो स रे, चल्यो जाय संसार रे ॥ तु० ॥१४॥ दद्दा दिलमें राखिये स रे, दया दान दिन रात; दगो न कीजे केहसूं स रे, धर्म हारकी वात रे ॥ तु० ॥ १५ ॥ धद्धा धर्मही कीजिये स रे, मनमें धीरज राख; ऋतु आयां फल नीपजे स रे, धर्म विना सव खाख रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ नन्ना नर भव दोहिलो स रे, तातें करो सुधार; खरची बांधो ऊजली स रे, जिणसूं बेड़ा पार रे ॥ तु० ॥ १७ ॥ पप्पा पंडित पारखा स रे, शके करतो पाप; पाप करे छै प्राणियो स रे, भुगते आपो आप रे ॥ तु० ॥ १८ ॥ फप्फा फकीरी आदरो स रे, चालिये खांडे धार; लालचमें फसियो फिरे स रे; धिक् ताको जमवार रे ॥तु०॥१९॥ बब्बा बुध जेहनी खरी स रे, इण भवमें जस लेह, पर भव सुधरे जेहथी स रे, ज्यूं शाख सुधारे मेह रे ॥तु०॥२०॥ भभ्भा भमतो क्यूं फिरे स रे, विन कारज पर गेह; भजन करो भगवंतरो स रे, जिणसूं सुधरे देह रे ॥ तु० ॥ २१ ॥ मम्मा मर्म न भाखिये स रे, हुवे अनरथ किणवार; मात पितानें मानिये स रे, और करो उपगार रे ॥ तु० ॥ २२ ॥ यय्या यारी राखिये स रे, परमेश्वरके साथ; पार उत्तरे छिनभर मांहे, दूजी खाली वात रे ॥ तु० ॥ २३ ॥ रर्रा रोस निवारिये स रे, उपजे भली रसांण; रोसथकी तप खोय है स रे, कोड़ पूरबको जांण रे ॥ तु० ॥ २४ ॥ लल्ला

लालच छोडिये स रे,सब सरखी नही ठौर;अति लालच नहीं अर्थरो स रे, लीन अलीन छै और रे ॥ तु० ॥ २५॥ बव्वा वाद न कीजिये स रे, वाद कीयां हुवे हांण; वंदो गुणि जन देखनें स रे, रखो बडेकी कांण रे ॥ तु० ॥२६॥ शश्शा शंक न कीजिये स रे, जिन वचनांके मांय; शील व्रत शुद्ध पाळजो स रे, जो तुम तिरवा चाय रे ॥ तु० ॥ २७ ॥ पप्पा खूब पिछांणिये स रे,स्यादवाद मत सार; खाली वाद न कीजिये स रे,बोलो शास्त्रके लार रे ॥ तु० ॥ २८ ॥ सस्सा सतही भाखणो स रे, सूत्र समो नहीं धर्म; सूत्र विरुद्ध जे भाखही स रे, जिणरे वोहला कर्म रे ॥ तु० ॥ २९ ॥ हहा हासो त्यागिये स रे, हास्यथकी विषवाद;कौरव पांडव वीगड्या स रे. नहीं हांसीमे स्वाद रे ॥ तु० ॥ ३० ॥ ळ लखावे लिखणो भेळो, ररे विना सब कोय; उलट पलट अक्षर वण बोले, वर्णसंकर ते होय रे ॥ तु० ॥ ३१ ॥ क्ष क्षमा तुम कीजियो स रे, क्षमा करे गुणवंत; मुनि राम कहे छै ककावतीसी, शीख चलो इण पथ रे तु० ॥ ३२ ॥ तयां लीस उगणीसको स रे, पाली पीठ मभार, ज्येष्ट वदी तेरस रची स रे, ककाबत्तीसी सार रे ॥ तुम सुणियो रे लोको ककाबत्तीसी हिरदे धारिये.॥ ३३ ॥ इति ककाबत्तीसी ॥

गाळ ।

१ जैपुरसें दोय चीज मंगाय दो ॥ ए देशी ॥

गुरु कृपासे दोय चीज ओळखसां, एक निश्चो ने व्यव

हार; गुणि जन संग करसां; निश्चो तो म्हांने पार उतारे, रहस्यां उद्यमकी लार ॥ गु०॥ १ ॥ गुरु कृपासें दोय चीज ओळखसां, अगार ने अणगार ॥ गु० ॥ अगार धर्म श्राव कनो जांणो, अणगार मुनि आचार ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु कृपासें तीन चीज ओळखसां, देव गुरु शुद्ध धर्म ॥ गु०॥ देव गुरु धर्म पार उतारे, मेटे पुरातन कर्म ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुरु कृपासूं तीन चीज ओळखसां, दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ गु० ॥ दर्शन देव ज्ञान गुरु जांणो, धर्म चारित्र पवित्र ॥गु०॥४॥ गुरु कृपासूं च्यार चीज ओळखसां, दान शील तप भाव; ॥ गु० ॥ दान सुपात्र शील शुद्ध पाळो, तप वो दान भाव नाव ॥गु०॥५॥ गुरु कृपासें पच षट् ओळखसां पंचाश्रव षट् काय॥गु०॥पंचाश्रवकूं छिनमांहे छोडां, जतन करां जी षट् काय ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे गुरु कृपासेती, सुधरे छै सगला काज ॥गु०॥ गुरु कृपा विन कहो कुंण तरियो, कुंण पायो त्रिभुवन राज ॥ गु०॥ ७ ॥ इति॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

वीर कृपासे मोह नृपनें भगासां, म्हे तो नही रखां हिरदे रे मांय; कायम गढ करसां ॥ प्रबोध नृपनें बेग बुलासां, म्हे तो लेस्यां मोतीडा बधाय ॥ का० ॥१॥ विवेकसें राग द्वेष हटासां,म्हे तो हणसां शीलसे काम॥का० लोभ मरेसी संतोषके आगे, करां क्षमासे कोप निर्नाम ॥ का० ॥ २ ॥ अहंकार घातस्यां विनय करीनें, ओ तो जीते प्रबोध महाराज ॥ का० ॥ राम कहे आतम जय सुखियो, जो रखे सुमतकी लाज ॥ का० ॥ ३ ॥ इति ॥

३दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

ए ससार असार अपार, मुनिवर भाखे वारंवार ॥टेर

दश दृष्टांते नर भव लाधो, मिले नहीं यो मूढ गिवाँर ॥ मु० ॥ मात तता त्रिया सुत भाई, एक न आवे थारी लार ॥मु०॥१॥ हाथ कमाई सब ठकुराई, चलेन साथे एक लिगार ॥ मु० ॥ आप कमाई साथे आसी, समझ समझ तूं ज्ञान विचार ॥ मु० ॥२॥ अशुभ कर्म उदय जब आवे, भावे चेतन आपही मार ॥ मु० ॥ कहांसें आयो कहां तूं जासी, नफेको कर ले तू व्यौपार ॥मु०॥३॥ रावण राजा पलमें पलट्यौ, मिट्यौ जिसीको सब अहंकार ॥ मु० ॥ दुर्योधनसा जंगमें कट गये, अक्षौहिण सम्मेत अठार ॥ मु० ॥ ४॥ किसी गिणतमें कुंण तूं भोडू, कांई करे तूं घरसें प्यार ॥ मु० ॥ मुनि राम कहे सुणजो सब भाई, सफल करीजो नर अवतार; ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ रंग मांणो रे म्हारा वेलियां ॥ ए देशी ॥

धर्म करो रे म्हारा वेलियां ॥टेर॥मात तात नहीं दुर्गति टारे, नही तारे चेलाने चेलियां ॥ ध० ॥ १ ॥ धन दौलत तेरे संग न आवे, नहीं जावे थारे सग थेलियां ॥ ध० ॥ २ ॥ रंग महल तेरे मनकूं सुहावे, तूं गावे छे हाट ह-वेलियां ॥ ध० ॥ ३ ॥ बालपणो हँस खेल गमायो, जोवन घाली सिर सेलियां ॥ ध० ॥ ४ ॥ रस इद्रीके वश तू प-डियो, क्या चावे तूं लड्डु जलेबियां ॥ ध० ॥ ५ ॥ कुदेव कुगुरु कुधर्म टारो, धारोनी गुरु सुख सेलियां ॥ ध० ॥६॥ अजलि जल ज्यू जावे तेरी ऊमर, जरा आवे नित्त ठेलि-या ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सुण धर्म न करसी, जांने जानी कह्या छे गैलियां ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

५ नेह लंग्यो रंग मांण ले ॥ ए देशी ॥

हां रे जीवा ! चौराशी में तूं भम्यो, हां रे जीवा पाम्यो

दुःख अपार रे; अब तो सुरत संभार रे, मत हारे नर अवतार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ हां रे जीवा नर भव दुर्लभ लाधियो, उत्तम कुल अवतार रे ॥ अ० ॥ २ ॥ हां० ॥ नर भव पायो तो स्यूं थयो, धर्म विन मूढ गिवाँर रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ हां० ॥ धर्म पायो तो स्यूं थयो, दया विना नहीं कछु सार रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ हां० ॥ समकित विन पढ स्यूं कियो, ऊंणो दश पूरब धार रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ हां० ॥ क्रिया करी तौ क्या भयो, समकित विन सब छार रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ हां० ॥ ज्ञान विना क्रिया नही, क्रिया विन ज्ञान न सार रे ॥अ० ॥ ७ ॥हां०॥ दर्शन ज्ञान चारित्र थी, मुक्ती व्है ततकार रें ॥ अ० ॥ ८ ॥ हां ॥ दव लगी पंगू बोलियो, अंधे सुणी है पुकार रे ॥अ० ॥ ९ ॥ हां० ॥ पंगु चढ्यो खंध अंधके, दोऊ मिल लघे वन पार रे ॥ अ० ॥ १० ॥ हां ॥ ज्ञान क्रियासें मोख है, मुनि राम कहे अवधार रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ इति ॥

६ वालमा नायण गईथी लूंटमें, हां रे वातो क्या ॥ क्या लाई लूंट, वालमा नायण गईथी लूंटमें ॥ए देशी॥

जियडा प्रभुजीने गावो रंगसु, हां रे तुमे छोडो, हां रे तुमे छोडोनी झूठी भखाल, जियडा प्रभुजीनें गावो रंगसु ॥ जि० ॥ धर्म करिये उमंगसु, हां रे छिन भरमें २, हूसो रे न्याल ॥ जी० प्र० ॥ हां रे तुमे छोडो २, झूठी भखाल ॥ जी० प्र० ॥ १ ॥ कपाल वसे बुद्धि रीसडी, हां रे रीस करदे २, बुद्धि खराब ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ नय नमे काम लज्जा वसै, हां रे लज्जा नें २, काम देवे दाब ॥ जी० प्र० ॥ २ ॥ जी० ॥ लोभ दया हिरदे वसै, हां रे लोभ देवे २, दयाने उठाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ भूख

मान उरमें वसै, हां रे भूख देवे२, मांन मिटाय ॥ जी० प्र० ॥ ३ ॥ जी० ॥ बुद्धिसूं रीसनें मारस्यां, हां रे लज्जासूं २, काम हटाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ दयाथकी लोभ जीतस्यां, हां रे मन वलसूं २, भूख दुराय ॥ जी० प्र० ॥ ॥ ४ ॥ जी० ॥ प्रभु कृपासूं माहरे, हां रे सदा वरते २, कोड़ कल्यांन ॥ जी० प्र०॥जी०॥ राम कहे प्रभु भजनसूं, हां रे म्हारे प्रगट्या २, नवही निधान ॥ जी०प्र०॥५॥इति॥

७ छोड गोरीरा छैलरो दुपट्टो ॥ ए देशी ॥

मुनिवर देवे देशना रे, जीवा म्हांरा हिरदे राखो ज्ञान रे, सुज्ञानी, सुज्ञानीनर सांभळो रे; भवि जन हिरदे राखो ज्ञान रे, सुज्ञानी॥टेर॥जीव हिंसा नही कीजिये रे ॥जी०॥ हिंसा दुःखांरी खांन रे ॥ सु० ॥ १ ॥ झूठ कबू नही बोलिये रे, झूठ सदा दुखदाय रे ॥ सु० ॥ वसु राजा गयो सातमी रे, जी० ॥ कह्यो आगमके मांय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ चोरी करतां दुख लहे रे ॥ जी० ॥ देखां निजरां आज रे ॥सु०॥ सत्यघोष गयो सातमी रे ॥ जी० ॥ चोरीसें जावे लाज रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ परनारीकी प्रीतडी रे ॥ जी० ॥ भूल न करिये संग रे ॥ सु० ॥ राजा रावणसा वीगड्या रे जी० ॥ विगडे रूपनें रंग रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन धन करतो क्यूं फिरे रे ॥ जी० ॥ धर्मसू पावे धन्न रे ॥ सु० ॥धनसूं कुण तरियो नहीं रे ॥ जी० ॥ राखो धर्मसू मन्न रे ॥सु०॥ ॥ ५ ॥ ऐ उपदेश सांभळी रे ॥ जी० ॥ चेते उत्तम जीव रे ॥ सु० ॥ मुनि राम कहे खूब दीजिये रे ॥ जी० ॥ सद्गतकेरी नींव रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

८ पांच म्होर रोकड ले लो ॥ ए देशी ॥

परभवकी खरची ले लो, सत गुरुजी तो दे हेलो, प०॥

॥ टेर ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ऐ तीनें, तोनें आखर गोतो देलो ॥ प० ॥ १ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म ऐ तीनें, खबर करी हिर दे भेलो ॥ प० ॥ २ ॥ परभव मांहे जासी अकेलो, झूठो सब गोकुल मेलो ॥ प० ॥३॥ दशकोस गावांतर जावे, खरची विन कांई खावे लो ॥ प० ॥ ४ ॥ लाखां कोस मुकांम वणे लो, हेतु विन कुंण खरची देलो ॥ प०॥५॥मात तात धन संग न चलसी, सग न चलसी गुरु चेलो ॥ ॥ प० ॥ ६ ॥ त्याग वैरागकी खरची ले लो, छोड दीजो उज्जड़ गैलो ॥ प० ॥७॥ मुनि राम कहे खरची लो गैरी, सो रो सुखियो तूं रैलो ॥ प० ॥८॥ इति ॥

९ देशी पूर्ववत् ॥

तपस्या तुम करलो प्यारे, जिनसें कर्म टरे सारे ॥त०॥ ॥ टेर ॥ यथा कांतारं वनहि विशालं, दावानल विन कुंण जारे ॥ त० ॥ १ ॥ दावानल बूझावन कारन, मेघ विना कहो कुंण टारे ॥ त० ॥ २ ॥ अभोधरनें दूरी करवा, पवन विना नही पडुला रे ॥ त० ॥ ३ ॥ कर्म समूह विदारन कारन, मुनि राम कहे तुम तप धारे ॥ त० ॥ ४ ॥ इति ॥

१० हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

हां सखीनें खारो लागे, खारो लागे झूठ बोलणो; कुल काळो लागे रे ॥ स० ॥ टेर ॥ यश भस्म व्है एक छिनमें, ज्यूं दावाग्नि वन दागे रे ॥ स० ॥१॥ झूठ दुःखको कारण कहिये, ज्यूं तरु जलसें जागे रे ॥ स० ॥ २ ॥ झूठ मध्य तप चारित्र नांही ज्यू आतपे छाया भागे रे ॥ स० ॥ ३ ॥ मुनि राम कहे छै झूठ न बोलो, सुख पावोला आगे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इति झूठ निंदा ॥

११ देशी पूर्ववत् ॥

सबीकूं लागे प्यारो, प्यारो लागे साच बोलनो; टारो हीनो कारो रे ॥ स० ॥ टेर ॥ सत्य विश्वासतणों घर ोल्यो, विपत्ति रहे सब लारो रे ॥ स० ॥ १ ॥ सुर असुर ो पाये लागे, हाकम रीझे न्यारो रे ॥ स० ॥ २ ॥ मुक्ती पथनों सबल कहिये,करै जल अनलही टारो रे ॥ स०॥३॥ व्याघ्र उरग स्तंभनको कारण, संपति मिले अपारो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे छै साचही बोलो, तोल वधेला थारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति सत्य महिमा ॥

१२ वालम छोटो रे ॥ ए देशी ॥

सुखिया घरमें जनमियो, दुखी थयो किण काज; कर्मको आंटो रे; कोई न खोलणहार, कर्मको आंटो रे; दुखी थकी सुखियो थयो, केई करता दीसे राज ॥ कर्म० ॥ कोईन० ॥ कर्म० ॥ एक आतम खोलणहार ॥ कर्म०॥ १ ॥ बडा तपस्वी अवलिया, केई पाळे छै ब्रह्मचार ॥ क० ॥ केई श्रेणी चड पाछा पड्या, पंडित पेले पार ॥ क० को० क० ए० क० ॥ २ ॥ सिद्ध साधक केई पूछिया, फिरयो फकीरां लार ॥ क० ॥ ग्रह गोचर केई पूजिया, और पूज्या पर्वत पाड़ ॥ क० ॥ ३ ॥ किण विध कर्मज बांधियां, किण विध दीवी अतराय ॥क०॥ लाख उद्यम कर देखिया, पिण कुंण नहीं सक्यो बताय॥ क० ॥ ४॥ कोई श्रावक धोरी बाजिया, निंदा करत अपार ॥ क० ॥ केई साधूकी करणी करै, पिण पड्या निंदाके लार ॥ क०

॥ ५ ॥ अरिहंतनो विरहो पड्यो, और अथयो केवल नां
ण ॥ क० ॥ पूर्वधारी विच्छेदिया, किण विध पड़े पिछांण
॥ क० ॥ ६ ॥ सम्यक्त्व ही आतां छतां, छूटे मिथ्या गांठ
॥ क० ॥ केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे क्षय आठ॥क०
॥ ७ ॥ अक्कल पिण चल्ले नही, और चल्ले नहीं कछू जोर
॥ क० ॥ मुनि राम कहे केवल विना, मचियो घोरमघोर
॥ क ॥ ८ ॥ इति कर्मांको आंटो केवली गम्य ॥

१२ हुकम कर दिया सदरसें, पार बुलावे चाल अधरसें ॥ ए देशी ॥

हां हुकम इम दिया सुगुरुनें, दुःख नही देना भूलही परनें; दोय वात तू भूल मती नर, दो जा विसरने रे॥ ॥ हु० ॥ टेर॥ दोय वात याद रक्खो प्यारे २, दोय वात देवो विसारे; लक्ष वेद ४ किस्से मथ काढे, कह्यूं पुत्तरनें रे ॥ हु० ॥ १ ॥ परमेश्वर जम यादही रक्खो २, नाहक वाद करी क्यूं वक्को; कर दिल मंजन, रट ईश्वरने रे ॥ हु०॥२॥ परवर दिगार भजलो प्यारे २, खरची ले लो गैरी लारे; खडे खडे गुरु देव पुकारे, पग धर डरनें रे॥हु०॥३॥नित्यकी मोतया सिर पर घूमै २, क्यू नही माया खरचे सूमै; किसके साथ भ्रात ऐ चल्ली, जाना परभव मरने रे॥ हु० ॥ ॥ ४ ॥ दोय वात तो भूलही जानां २, बोलू चौडे नहीं कहूं छांना; कर उपकार विसार हिये सूं, कें मत कछ्र करनें रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ जो कोई बुरा तुमारा कीना २, जाकूं तूं तो भूल प्रवीना; खडे खडे मुनि राम पुकारे, साधो शिव पुरने र ॥ हु० ॥ ६ ॥ इति ॥

१४ हांक समदण सदमतवाली ॥ ए देशी ॥

हांक प्रभुको धर्म पियारो, धर्म पियारो लागे प्यारो; अरिहंत वारो रे क ॥ प्र० ॥ टेर ॥ जिसी धर्मेमे हिंसा वरजी, निश्चे ने व्यवहारो रे क ॥ प्र० ॥ १ ॥ झूठ जिसीमें मूल न भाख्यौ, निरवद्य सत्य उचारो रे क ॥ प्र० ॥ २ ॥ विगर दिये कछु तृणा न लेना, रैना खांडेकी धारो रे क ॥ प्र० ॥३॥ चित्र पूतरी वरजी निरखन, जिनसे होय विकारो रे क ॥ प्र० ॥ ४ ॥ परिग्रह कारन जग पचत है, पिण तन ममता टारो रे क ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रात्री भोजन वरज्या जिसमे, जिसके भंगे च्यारो रे क ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ऐसा धर्म तो हुवा न होसी, मुनि राम कहे तंत सारो रे क ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

१५ सीटी सननननन् ॥ ए देशी ॥

सुणजो सुगुरु सवाल, ऊमर चल्ले जैसे तार; रहो सारे होसियार, चल्ले सननननन ॥ १ ॥ वखांन सुन्नेवाले सुनियो, नमोकार गुन्नेवाले गुनियो; सूत्र भन्नेवाले भणियो, सुकृत चुन्नेवाले चुनियो; सूत्र पंडितसे भंनियो, अर्थ पंडितसे सुनियो; पंडित अग्रेही गुनियो, घूमे घननननन् ॥ २ ॥ पडिल करते है तरक, नहीं जराही फरक; जिके ज्ञानमे गरक, झिलके झननननन् ॥ ३ ॥ ज्ञानके सरने ही आवो, गुरुके चरने सिर नांवो; किसीके औगुन मत गावो, जीवका सुखही जो चावो; प्रभूके गुन सुखही गावो, व्यसनके रस्ते मत जावो; मिटेगो नरकको दावो, तूटे तननननन ॥ ४ ॥ अहो गुरुके चरन्न, पावो शीघ्रही तरन्न; राम गुरुके सरन्न, अहो गननननन् ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ लाली रांड छदामी रे ॥ ए देशी ॥

एक बात तो साची कहूं, सब के जियका हितही च-हूं; गुरु हुक्मसें बोलूं एम, ऐ जग चलियो जावे रे; मूरख भेद न पावे रे, गाफल गोता खावे रे, सत गुरु यूं फुरमावे रे ॥टेर॥१॥ च्यार गतीमें रूळियो घणो, पारन आयो दुखड़ा तणो; जन्म मरणको नायो पार॥ऐ०॥२॥मात तात भ्राता ने नार, है सगला मुतलबका यार; दुखरी विरियां जावे दूर ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ किसकी निंदा भूल न करो, मिनखा देहकूं धूल न करो; परका मल क्यूं मुखमें धरो, जलती लायमें किम तुम परो; पत्थरसे क्यूं फोड़ो सीस ॥ ऐ०॥ ॥ ४ ॥ दान समान नहीं गुण छै और, निंदा सम नहीं पापकी ठौर; स्वमत पर मतमें कहे एम ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ साधु संतकी सेवा करो, दान शील तप हियमें धरो; मुनि राम कहे मुख रखो विवेक ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

श्रावक वाजे धोरी रे, जांकी करणी फोरी ॥ टेर ॥ जिण कर वधियो महा उपकारी, जांरी काटे डोरी रे, द्रोही पापी अघोरी ॥ श्रा० ॥ १ ॥ जमा दवाय चौडे नट जावे, करे पराई चोरी रे; लेवे अधिको जोरी ॥ श्रा० ॥ २ ॥ धर्मी वाजने पर धन ठगियो, लगियो कुकर्मके दोरी रे; करे वातां ठगोरी ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ पैसा साटे पगडी उतारे, निरखी पारकी गोरी रे; खेले परगट होरी ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ कांदा मूळा सब गटकावे, नहीं छोडे काची कोरी रे; नही त्याग एकोरी ॥श्रा०॥ ५ ॥ त्यागको नहीं कछु ठाह ठिकांणो, वातां वणावे कोरी रे; करे निंदा

साधारी॥आ०॥६॥स्याद्वाद धर्म मूल न जांणे,मिल गये मूरख टोरी रे; हठग्राह बकोरी ॥आ०७॥ शठ गुरु उत्सूत्रके वक्ता, मिल गई सरिखी जोरी रे; सूत्र अर्थ मरोरी ॥ ॥आ० ॥ ८ ॥ ओछो देव अधिको लेवे, वासे नारदा मोरी रे; नहीं यतना जीवांरी ॥ आ० ॥ ९ ॥ रामचद्र तो यू चेतावे,शुद्ध सामायिक दोरी रे; निंदा करणी सोरी ॥ ॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

१८ कमर टूंटीकी बूंटी नहीं है सलम ॥ ए देशी ॥

खूटीकी बूंटी नहीं होती मेरे जालम ॥ खू० ॥ टेर ॥ धन्वंतरी वैद्य भयो कृष्ण राज्ये, जिणनें पिण नहीं बूंटी की मालम ॥ खू० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें ढूंढी थी, रावणसे पिण रहगयो ठालम ॥ खू० ॥ २ ॥ अमर वल्ली चल्ली नहीं किसकी, काम पड़ेसे होगई पोलम पालम ॥ खू० ॥ ३ ॥ सुर नर असुर फणींद्र इंद्रादित्य, आई आई खूट मरे सब आलम ॥ खू ॥ ४ ॥ देहधारी कोई एक न बंचियो, मुनि राम कहे खावो रसान भावे सालम ॥ खू० ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

थोड़ा बोले १ मीठा बोले २, काम पड्यांसे बोले रे ३ क; श्रावक थोड़ा बोले; हां क श्रावक मीठा बोले; थोड़ा बोले मीठा बोले, कांम पड्यांसें बोले रे क॥आ०॥१॥विवेकसें बोले ४ निगर्व बोले ५, भरम न परका बोले ६ रे क ॥ आ० ॥ २ ॥ न्यायसे बोले ७ हितसे बोले ८, जवहरी होय अमोल रे क ॥ आ०॥३ ॥ अष्ट गुण वाचा श्रावक साचा, मुनि राम ते अमृत तोले रे क ॥ आ०॥ ४ ॥ इति ॥

२० देशी पूर्ववत् ॥

बहुला बोले १ खारा बोले२,नाहक सिरही पचावे ३रे क; श्रावक धर्म लजावे, धर्म लजावे, शोभ न पावे, ते किम ऊंचा जावे रे क॥श्रा०॥१॥विवेक न रक्खे ४ गर्वसें बके ५, अवै मर्म विरोध घलावे६ रे क॥श्रा०॥२॥ न्याय न बोले ७ अपकारी बोले८, मुनि राम तो वसु छुडावे रे॥श्रा० ॥३॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

थोड़ा बोले १ बोवे बहुला,गर्जसें मिष्ट कहावे २रे क, श्रावक धर्म लजावे ॥ १ ॥ काम पड्यांसें झूटं बोले ३, निर्लज वचन सुणावे ४ रे क ॥ श्रा०॥ २ ॥ मांन न मूके ५ मर्म न चूके ६, भूंके विना प्रस्तावे रे क ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ न्याय उथापे ७ हिंसा थापे ८, उत्सूत्र व्यक्त दृढावे रे क ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ भ्रांति पड़ावे आल चढावे, परकी निंदा गावे रे क ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ दांन न देवे आडी देवे, मुनि राम तो प्रगट सुणावे रे क ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ पांच म्होर रोकड़ ले लो ॥ ए देशी ॥

परम मंत्र नवकार शिरोमणि, जिनवाणी टाली सब कूड़; जहां देखा जहां कूड़ ही कूड़,छांण कीया तो धूड़ही धूड ॥टेर॥ मंत्र यंत्र रसायन इन नांमें, ठग खावे खाली मगरूड़ ॥ ज० ॥ १ ॥ इणसे लक्षाधिप कुंण वणियो, गत लक्ष्मी तो सुंणिया जरूड़ ॥ ज० ॥ २ ॥ धूलतणी किम खांड वणेगा, गोमयको किम होवे गूड ॥ ज० ॥ ३ ॥ पदमणी कांमनी बने कहो कैसे, जिण घर शंखनी कर्कशा फूड़ ॥ ज० ॥ ४ ॥ लाखको मूठियो हाथमें पैंने, केम बने सोनेको चूड़ ॥ ज० ॥ ५ ॥ किसकी सिधाई निजर

न आई, उलटी ठगाई दीसे जरूर ॥ ज० ॥ ५ ॥ वह चूटे पळद करे छूटे जोतसी, मंत्रवादी लूटे अरूड मरूड॥ज० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे मंत्र यंत्रके चाळे, मत पडियो जा-वोगा गूढ ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥

२३ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

जहां देखो जहां मुतलब वात, मुतलब विन कोई क-त न साथ ॥ टेर ॥ पुत्र सपुत्र कुलमणि दीपक, स्वार-सें करे मात रू तात ॥ ज० ॥ १ ॥ नारी भर्ता भर्ता ारी, सारी दुनियां मुतलब साथ ॥ ज० ॥ २ ॥ वांटो वावे फेर चुचकारे, दूजती गायरी खावे लात ॥ ज० ॥ ३ ॥ श्रावण मासमें छाछ न घाले, नृती ज्येष्टमें क्षीर जिमात ॥ ज० ॥ ४ ॥ वैद्य बुलावे औपध खावे, मन्यूं काम दुश्मन हो जात ॥ ज० ॥ ५ ॥ पूंजी रूप पिता हु-वो वैरी, कृतदारा वैरण हुई मात ॥ ज० ॥ ६ ॥ थाके बैलकी सार न पूछे, पक्षी तरू फल क्षीण तजात ॥ ज० ॥ ७ ॥ चड़स भरे पर हाथ पसारे, खाली हुवां फेर मारे लात ॥ ज० ॥ ८ ॥ केती कहूं कछू पार न आवे, नारी स्वारथके गीलही गात ॥ ज० ॥ ९ ॥ उत्तम पच महाव्रत धारी, पर उपगारी जगमें विख्यात ॥ ज० ॥ १० ॥ धर्मी नर विन सब स्वारथिया, मुनि रामचद साची दरसात ॥ ज० ॥ ११ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ थारी फूलसी देह पलकमांहे पलटे ॥ ए देशी ॥

वार वार सत गुरू समझावे, सीख हीयामांही धारो

रे ॥ टेर ॥ नर भव पाय आय उत्तम कुल, पामीनें मत हारो रे ॥ हां रे पा० ॥ २ ॥ वार० ॥१॥ अलप आऊखा माटे प्राणी, बांधो मती पापनो भारो रे; बांधे हँसकर भुगतवो दोरो, चेते क्यूं न गिवॉरो रे ॥ हां० वा० ॥२॥ सहू कुटुंब विटंब कह्यो जिन, जिनवर वच उर धारो रे; अंत समें चेतन एक तारे, नहीं चलसी थारे लारो रे॥ हां वा० ॥ ३ ॥ काम भोग विपाक सरीखा, क्षण सुख दुःख अपारो रे; इम जाणीनें कोई चेतन चेतो, आ छै वहती वारो रे ॥ हां० वा० ॥ ४ ॥ रामचंद्र कहे गुरु प्रसादे, आगमनें अधिकारो रे; पांचे शीळसातम हरसाळे, वडो धर्म न पगारो रे ॥ हां० वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

परम दुलभ श्रद्धा कही, विन श्रद्धा सब छार ।
जिण कारण भवियण सुणो, श्रद्धानो विस्तार ॥ १ ॥
मुनि आद्धपणो ग्रह्यो, नहीं समकित जो मांय ।
पाळे गोयम आणंद ज्यूं, तो न लेखे जिनराय ॥२॥
अनुतांन बंधी चौकडी४,समकित५मिश्र६मिथ्यात७।
ऐ सात क्षयोपशम कीयां, पीछे समकित आत ॥३॥
दश थयां श्रावकपणो, चवदे थयां अणगार ।
इण विन संजम अभव्यनो, लेखे नहीं नर नार ॥४॥
साधुपणो जो ना पळे, श्रावकना व्रत धार ।
पाळो शुद्ध मन भावसूं, हुवे ज खेवो पार ॥ ५ ॥

२ नवकार मंत्रनो ध्यांन धरो ॥ए देशी ॥

प्रमाद मांहे बैस जावे, पछे समायकने मांडी आवे;
फेर राग द्वेषनी लगि डोरी, शुद्ध समायक करणी दोरी

विषय विषे निजर जोवे, फेर मैल परायो ते धोवे; निज औगुनने ढकयो री ॥ सु० ॥ २ ॥ मूडो बांधने बैस जावे, पछै मैल उतारे खत्त जमावे; मुखसूं बोले जिम होरी ॥ सु०॥ ३ ॥ विकथा मांड रह्यौ चारे, विन कारन ओठो लियो लारे; श्रावक वाज रह्यौ धोरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ सामायिकमांय करे अटको, सामायिकमांय करे मटको; हँसे हँसावे नर गोरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ सतासेती करे काजियो, कदे कजिया विना नहीं रंजियो; पर निंदा करणी सोरी ॥ सु० ॥ ६ ॥ विनय भक्तसूं रहे दूरो, पर निंदा करणनें सदा सूरो; दशमे अंग कही चोरी ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीव अजीव नहीं ओळखिया, श्रावकमांहे वाजे मुखिया; ठाह नहीं अद्धाको री ॥ सु० ॥ ८ ॥ छळ छिद्र जोवे परका, औ गुण नहीं जोवे घरका; सावद्य भाषा बोले जोरी ॥ सु० ॥ ९ ॥ रामचद्र कहे सुंण लीजो, भाई शुद्ध सामायिक धे कीजो, ज्ञानी सकारे जिम तोरी ॥ सु० ॥ १० ॥ इति ॥

३ हमकों छोड चले वन माधो, राधा सोच करे ॥ ए देशी ॥

क्या परकूं परमोद लगावे, तूं पोते पिंड पाप भर्यौ रे ॥ अंदर कपटी बकवद्ध्यानी, तो तेरा काज कबू न सर्यौ रे ॥ क्या० ॥ १ ॥ परकूं करे दया उर धारो, प्यारो वचन मत उच रो रे; तूं अविचार्यौ बदे महा कडवो, तूं हिंसक पापी दुष्ट खरो रे ॥ क्या० ॥ २ ॥ औरनकूं कहे मिथ्या मत भाखो, मिथ्या बरोबर पाप नहीं रे; तोने झूठतणी नहीं सुग्या, पग पग झूट बोले

यूं हीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ मनकूं जीत महाव्रत पाळो, लोभ न करिये एक रती रे; तूं महा लोभी महा- व्यभि- चारी, तो तेरी सुधरे केम गती रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ क्रोधी १ लोभी २ तूं नहीं पढियो ३, श्रद्धा हीण ४ प्रवीण नहीं रे; सहू सदोप तूं निर्दोष; निज औगुन क्यूं न देखे तुं ही रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥ जो पोते परमोद लगावे, तो राम- चंद भव पार लहो रे; शिव जातां कोई पल्ला न पकडे, जो कहो जिण रीत वहो रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ प्यारो मोहणगारो राज मन म्हारो सुगत महलसूं लागो ॥ ए देशी ॥

कोइएक श्रावक नाम धरावै, जीवाजीव न जांणै; द्वे- प वधावै भांता घलावै, रूढ आपणी तांणै ॥ श्रावक सुणजो, थे सुणने हिरदे धरजो; थे आतम कारज कर- जो, थे शुद्ध कृत्य आचरजो ॥ टेर॥ १ ॥ कोइयक निर्धन धनवंत कहिये, हाते लावो लेवै; कोइयक धनवंत निजरां देखो देतां आडी देवै ॥ श्रा० ॥ २ ॥ केई वखांण सुणे- वा आवै, वायां सांमो जोवै; पूजी वंदणी रही कठेई, उलटी पूंजी खोवै ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ केईयक तो प्रतिलेखन करता, अठी उठीने झांखै, जयणां करणी रही जठेई, चुग चुग जूवां नांखै ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ केई उत्तम श्रावक शील ज पाळे, मन रोकीने राखै; केइएक तो पर तिरि- या काजै, ऊपरवाड़ा ताकै ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ केई लघु वयमें हरीकूं त्यागै, दुर्गति ताळा जडिया; केई बूढा मूळा कां- दा भोटै, खावणलारे पडिया ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ उत्तम श्रा- वक झूठ न बोलै, झूठो लागै खारो; केई झूठस खोवै

जमारो, अपजस होवे न्यारो ॥ आ० ॥ ७ ॥ केइयक सतियां शील ज पाळे, पती कन्हैया जोडे; केई व्यभिचारण पतिने छोडी, पर नर नीच न छोडे ॥ आ० ॥ ८ ॥ रामचंद्र मुनी इम भाखे, राखो निरमल किरिया; कपट करी उत्सूत्र प्ररूपी, कोई पूरवे नहीं तिरिया ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

५ देशी नवरासानी ॥

विना विचारी तूं क्यूं बोले, तोल घटे छै थारो रे, पंचां मांहे पतळी होवे, तूं काज विगाडे छै म्हारो रे; हूं तोने वरजूं छूं, तू विना विचारी मत बोल, रसना वरजू छू ॥१ ॥ टेर ॥ दोहा पहेली गीत ख्याल ते, विन सीख्यां तोने आवे रे; धर्मतणो अक्षर नही वैसे, जो बहुली बार बतावे रे ॥ हू० ॥ २ ॥ विन पूछ्यां ही पर निंदा तूं, छती अछती गावे रे; गुणवतना गुण पूछ्यां ढांके, ओ कांई थारो स्वभाव रे; रसना वरजूं छू, वेरण वरजूं छू ॥ वि० ॥ ३ ॥ च्यार इन्द्र्यां तौ चौडे रे वे, रखवाळो नहीं ज्यांरे रे; तू बिलवासी बहु रुखवाळा, तो पिण धस आवे बारे रे ॥ र० हूं० ॥ ४ ॥ शब्द रूप गंध फरस च्यारूमे; एक एक औगुन होय रे; तूं खाय विगाडे बोल विगाडे, तोमें अवगुण दोय रे ॥ र० हू० ॥ ५ ॥ तूं पोते रस्ते नही चाले, वे परने उपदेश रे; जो तोने प्रभु भजवा छेडूं, तो आलस करनें बैसे रे ॥ र० हू० ॥ ६ ॥ रसना बोली सुण चेतनजी, जो नही पोखो मोय रे; तो पंजर सूके च्यारू मुरझावे, देश ऊजड होय रे ॥ र० हू० ॥७॥ चेतन बोले सुण जीभडली, म्हे देश वसास्यां और रे; रामचंद्र कहे छै मन म्हारो, ज्यां नही थारो जोर रे ॥ र हू० ॥८॥

यूं हीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ मनकूं जीत महाव्रत पाळो, लोभ न करिये एक रती रे; तूं महा लोभी महा व्यभिचारी, तो तेरी सुधरे केम गती रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ क्रोधी १ लोभी २ तूं नहीं पढियो ३, श्रद्धा हीण ४ प्रवीण नहीं रे; सहू सदोष तूं निर्दोष; निज औगुन क्यूं न देखे तुंही रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥ जो पोते परमोद लगावे, तो रामचंद भव पार लहो रे; शिव जातां कोई पल्ला न पकडे, जो कहो जिण रीत वहो रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ प्यारो मोहणगारो राज मन म्हारो मुगत महलसूं लागो ॥ ए देशी ॥

कोइएक श्रावक नाम धरावै, जीवाजीव न जांणे; द्वेष वधावै भांता घलावे, रूढ आपणी तांणे ॥ श्रावक सुणजो, थे सुणनें हिरदे धरजो; थे आतम कारज करजो, थे शुद्ध कृत्य आचरजो ॥ टेर॥ १ ॥ कोइयक निर्धन धनवंत कहिंये, हाते लावो लेवै; कोइयक धनवंत निजरां देखो देतां आडी देवै ॥ आ० ॥ २ ॥ केई वखांण सुणेवा आवै, बायां सांमो जोवै; पूंजी वंदणी रही कठेई, उलटी पूंजी खोवै ॥ आ० ॥ ३ ॥ केईयक तो प्रतिलेखन करता, अठी उठीने झांखे, जयणां करणी रही जठेई, चुग चुग जूंवां नांखे ॥ आ० ॥ ४ ॥ केई उत्तम श्रावक शील ज पाळे, मन रोकीने राखै; केइएक तो पर तिरिया काजै, ऊपरवाड़ा ताकै ॥ आ० ॥ ५ ॥ केई लघु वयमें हरीकूं त्यागै, दुर्गति ताळा जडिया; केई बूढा मूळा कांदा भोटे, खावणलारे पडिया ॥ आ० ॥ ६ ॥ उत्तम श्रावक झूठ न बोलै, झूठो लागै खारो; केई झूठसूं खोवै

जमारो, अपजस होवे न्यारो ॥ आ० ॥ ७ ॥ केइयक सतियां शील ज पाळे, पती कन्हैया जोडे; केई व्यभिचारण पतिनें छोडी, पर नर नीच न छोडे ॥ आ० ॥ ८ ॥ रामचंद्र मुनी इम भाखे, राखो निरमल किरिया; कपट करी उत्सूत्र प्ररूपी, कोई पूरवे नही तिरिया ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

५ देशी नवरासानी ॥

विना विचारी तूं क्यू बोले,तोल घटे छै थारो रे,पंचां मांहे पतळी होवे, तूं काज विगाडे छै म्हांरो रे; हूं तोनें वरजूं छूं, तूं विना विचारी मत बोल, रसना वरजू छू ॥१ ॥ टेर ॥ दोहा पहेली गीत ख्याल ते, विन सीख्यां तोने आवे रे; धर्मतणो अक्षर नही बैसे, जो बहुली वार घतावे रे ॥ हूं० ॥ २ ॥ विन पूछ्यां ही पर निंदा तूं. छत्ती अछती गावे रे; गुणवतना गुण पूछ्यां ढांके, ओ कांई थारो स्वभाव रे; रसना वरजू छूं, वैरण वरजू छू ॥ वि० ॥ ३ ॥ च्यार इद्र्यां तौ चौडे रे वे, रुखवाळो नहीं ज्यांरे रे; तूं विलवासी बहु रुखवाळा, तो पिण धस आवे धारे रे ॥ र० हू० ॥ ४ ॥ शब्द रूप गध फरस च्यारूंमे; एक एक ओगुन होय रे; तूं खाय विगाडे बोल विगाडे, तोमें अवगुण दोय रे ॥ र० हू० ॥ ५ ॥ तू पोते रस्ते नहीं चाले, थे परने उपदेश रे; जो तोने प्रभु भजवा छेडू, तो आलस करने बैसे रे ॥ र० हू० ॥ ६ ॥ रसना बोली सुण चेतनजी, जो नहीं पोखो मोय रे; तो पंजर सूके ज्यारू मुरझावे, देश ऊजड होय रे ॥ र० हू० ॥७॥ चेतन बोले सुण जीभडली, म्है देश वसास्यां और रे; रामचंद्र कहे छै मन म्हारो, ज्यां नहीं थारो जोर रे ॥ र हू० ॥८॥

६ देशी सूवटानी ॥

बोल रे जगवासी जिवड़ा, जिन वरना गुण मुखसूं बोल ॥टेर॥ सर्व जंजाल ख्यालसा जांणी, निज गुण आतम परगट खोल॥ बो०॥१॥ पुद्गल संग प्रसंगे रुळियो, सद्गुरु वचनसूं पडि अब तोल ॥ बो० ॥ २ ॥ मत कर जीव ममत्व तूं भोळा, क्यूं हारे नर भव रतन अमोल ॥ बो० ॥ ३ ॥ मात पिता घर कुटुंब कबीलो, कुंण छै थारा मुखसूं खोल ॥ बो० ॥ ४ ॥ रंक राव सब कालको चारो, क्या बोलूं मै वजाई ढोल ॥ बो० ॥५॥ मुनि राम कहै सुणजो सब भाई, मत राखीजो अबके पोल ॥ बो० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ॥ ए देशी ॥

दश दूषण तो मनके जांणो, दश वच बारे काया; आणा प्रमाणे करो सुध भावे, श्री जिनराज सुणाया रे; श्रावक शुद्ध सामायिक करिये, दोष बतीस परिहरिये रे ॥ श्रा० ॥ १ ॥ विन अवसर १ जसकाजे दूजो २, तीजो लाभ ३ चिते मन मांही; अहंकार ४ चौथो भय ५ मन आंणे, छठे निदान ६ कराही रे ॥ श्रा० ॥ २ ॥ सशय ७ धारे गुसो ८ मन राखे, वैगारी ९ परे लागे; दशमो दोष विनय कर हीणो १०, वचनके दश सुणो आगे रे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ कुवचन १ दूजो विना विचार्यो २, डिगतो डिगतो बोले ३; विपै वचन ४ उंतावळो भाखे ५, वाद करे विन तोले ६ रे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ अक्षर ओछो ७ हास्य मुख करतो ८, विकथा ९ नवमे वखांणो; आवो पधारो करे खुलेसूं १०, ऐ दश वचनका जांणो रे ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ बारे कायारा ठांसली मारे१, चंचल आसन

धारे २; विधे दृष्ट जोतो ३ घर काम करतो ४, विन हेतु ओठो लियो लारे ५ रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंग उघाडे अति अग ढांके ६, सातमे आलस मोडे ७, मोडे कडका ८ खाज खिणे तन९, मैल उतारे चौडे रे१०आ०॥ ॥७॥चरण चंपावे११ नींद धुरावे१२, इम दोष धारे काया; मुनि राम कहे टाळणके तांई, दोष बतीस सुणाया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

८ हूं तो तोनें नहीं पिछांणूं रे वीरा ॥ ए देशी ॥

जीवा एक चित्त कर उर धरिये, साधू संगत नित करिये ॥ जी० ॥ १ ॥ पेले बोले परणाम जेहवा, कर्म हुवे पिण तेहवा ॥ जी० ॥ २ ॥ कर्म प्रमांणे गति पामीजे, बीजो बोल सुण लीजे ॥ जी० ॥ ३ ॥ तीजे बोले गत प्रमांणे, शरीरतणो उनमांन ॥ जी० ॥ ४ ॥ शरीर प्रमांणे इद्री कहिये, इद्रीसो विषय लहिये ॥ जी० ॥५॥ छठे बोले विषय कहिये, जेहवा भाव लहिये ॥ जी० ॥६॥ रामचद्र कहै सुण लीजो, समभीनें धर्म करीजो ॥जी०॥७॥इति॥

९ लालन लील करूंगी रे ॥ ए देशी ॥

नीठ नीठ नरनो भव लाधो, आर्य देशमे आयो; उत्तम कुल आउ लंबो इंद्रिय, शरीर निरोगो पायो; चेतन तूं किणरो कुंण थारो, चेतन कर रह्यौ म्हारो म्हारो ॥१॥ मुनि सामग्री सुणवो सिद्धांत, रुचिकर रह्यो जिन मतमे; श्रद्धा विना विना पराक्रम, भटक्यो च्यारूं गतमे ॥ चे० ॥ २ ॥ रे चेतन तूं पुद्गल राची, रुळियो काल अनादी; पर गुण राच्यो निज गुण भूल्यो, नहीं समकित तें लाधी ॥ चे० ॥ ३ ॥ भलो हुवो श्रीगुरु देवको, अब सम-

॥ आ० ॥टेर॥ चुन चुन मटिया महल चुनाया, ऊंडी नींव लगाई; ॥ आ० ॥ १ ॥ नारी रूपा अपछर सरिखा, जोडी मिली मन चाई ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती, म्होरांकी थेली चुनाई ॥ आ०॥३॥ मात पिता भ्राता सुत भगिनी, ज्ञाती न्याती ने मित्राई ॥ आ० ॥ ४ ॥ बसन भूखन वाहन बहुते रे, और सहू ठकुराई ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र ज्योतिष ने वैद्यक, इलम और पंडिताई ॥ आ० ॥६॥ राज काज हाथी ने घोडे, पलटण और सिपाई॥आ० ॥ ७ ॥ दान शील तप भावना भावो, ऐ छै साची कमाई ॥ आ० ॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव साधो, जद लेखे चतुराई ॥ आ० ॥९॥ मुनि राम कहे नहीं काया तेरी, क्या कहू ढोल बजाई ॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

राग ॥

१ गिरनारी सोरठ ॥

लेले क्यूनी खरची रे, दूर मुकाम॥ले ले०॥कहांसे आयो कहां उठ जासी २, जहां नहीं जांने तेरा नाम ॥ले०॥ १ ॥ नांनीको घर छै नहीं आगे २, वहां नही तेरा धाम ॥ ले० ॥ २ ॥ बाप दादेको थारे कमायो २, एक न चाले दाम ॥ ले० ॥ ३ ॥ आ काया तेरे संग न आसी २, बल जल होसी निकाम ॥ ले० ॥ ४ ॥ राम.कहे कछु सुकृत कर ले२, ज्यूं पांमेलो आराम ॥ ले० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ राग मारू ॥

जीवा तोनें मोह रुळावे हो ॥ जी० ॥ आठ कर्मको

राजियो, ज्ञानी पुरुष बतावे हो; शिव नगरीमें जावतां, ओही अटकावे हो ॥ जी० ॥ १ ॥ मोहरायनें जीतवा, कोई विरला पावे हो; नर सुर डूबा एहमे, नही ऊंचो आवे हो ॥ जी० ॥ २ ॥ अहि हरि करि अरि जीतवा, नर बहुला धावे हो; पिण राग द्वेषनूं जीतवा, कोई निजरां नावे हो॥जी०॥३॥जबर मोह जग जाळ छै, सब आगम गावे हो; पति वियोगा कामिनी, जीवत जल जावे हो॥जी०॥४॥ पशु पक्षी बचे पाळही, स्यो नरकी रीत दिखावे हो; सिघ सन्मुख कर सींगडा, निज प्रांण गमावे हो ॥ जी० ॥५॥ सुकर मोडे लोह सांकळां, दुकर एहनूं तुडावे हो; मुनि राम कहे निरमोहीडा, जियडा जियडा मोक्ष सिधावे हो ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥

३ राग मांच ॥

परकी हिंसा लागे तोय, मरन तेरा या विध भव भव होय ॥टेर॥ अजिया सुत कहे सुन मेरे अधमी, क्यू मारत है मोय; जैसी पीडा तेरे होवे, तैसी मेरे होय; मेरा मांस तू हँस कर खावे, ऐसे खावेगा जोय ॥ प० ॥ १ ॥ तृणां खाऊं शस्त्र न घाऊं, मै छू जात गरीब; मात हमारी दूधज देवे, मै भी खुदाका जीव; साहिब पासे पल्ला पकडूं, विना गुन्हे लीया जीव ॥ प० ॥ २ ॥ मुजकूं होमे धर्म बतावे, क्यूं होमे न अपना बाप; बच्चे बचेकू होमे नांही, ज्यू मोचन हुवे तेरा पाप; रे हत्यारा मुझकू होमे, ऐसे मरेगा तू आप ॥ प० ॥ ३ ॥ मांसका गृधी मांस खात है, खातां करत बखांन; दुष्ट जीवांकू सूग न आवे, थाली मांहे मसांन; कुंभीपाकमे मरकर जासी, मारेसी जम रांन ॥ प० ॥ ४ ॥ जीव उबारे पीड न देवे, झुठ

न बोले कोय; परचीज हरांम जांणे मनसें, शील वरत शुद्ध होय; ममता मारे समता धारे, रामपला न पकडे कोय ॥ प० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ परदेशीरो कांई पतियारो ॥ ए देशी ॥

झूठा बोलो वचनको पोलो, नही बचनको बंध लिगारो, हाथो ताली कही नट जावे, धिक् धिक् तास जमारो, बांधे बहू पापको भारो; झूठा बोलाको कांई पतियारो, सदा तुम झूठ निवारो ॥ झू० ॥ १ ॥ क्रोध १ मान २ माया ३ लोभसें ४ बोले, राग ५ रु द्वेष ६ विचारो; हास्य ७ भय ८ विकथा ९ सूं बोले, दशमो भेद हिसारो १०; बोले सो झूठ छै सारो ॥ झू० ॥ २ ॥ पैठ प्रतीत नेम सूंस धर्म, खोवे फुन लागे खारो; झूठ बरोबर पाप नही है, सुणयो हेतु वसु राजारो; गयो सीधो नरक मझारो ॥ झू० ॥ ३ ॥ संजम आवे मुक्ति सिधावे, भंग जो व्रत चौथारो, मृपावादीकूं संजम न आवे, पर तन होवे सुधारो; हुवे परभव मुख कारो ॥ ॥ झू० ॥ ४ ॥ चोरी जारी सात व्यसनकूं, सेठ किया अगीकारो; झूठको नाम सुणी चित चमक्यो, काढ्यो घरने बारो; नही विसवास झूठारो ॥ झू० ॥ ५ ॥ सावद्य निरवद्य निर्णय करीनें, पछै वचन उचारो; मुनि राम कहे ऐसो बोलीजे, सो लागे सहूनें प्यारो; करो सदा झूठको टारो ॥ झू० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ किण मार्‍यौ म्हांरो मोर बताय पापी ॥ कि० ॥ए देशी

किम भूलो रे चिदानंद चाल घरकी ॥ कि० ॥ टेर ॥ मृगतृष्णाये मृग घन ढूंढे, सिघ भूलो चाल संग भेडरकी ॥ कि० ॥ १ ॥ परी जेवरी रात अंधेरी, मांनो सर्प नाठो छाती धरकी ॥ कि० ॥ २ ॥ नलिनीको सूवो उडन नहीं पावे, जैसे श्वान भुस्यो निज रूप निरखी ॥ कि० ॥ ३॥ कपि मुष्टि बांधि घट भींतर,नही छोडे मार खाय परकी ॥ कि० ॥ ४ ॥ रामचंद निज रूप निहारो, संग करो तुमे सतगुरुकी ॥ कि० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

ज्ञान दीपक जोती जगी ह्यिमें रे ॥ ज० ज्ञा० ॥ टेर ॥ धूमको लेश न वात प्रवेश न, कर्म पतंग जरे जियमें॥ज्ञा० ॥ १ ॥ वाटको भोग न लोग सनेहको, मिथ्या अंधकार विध्वंस तियमें ॥ ज्ञा० ॥२॥ ज्ञान शिखा मुनि राम वंदत है, प्रगट दीसे मोख पंथ इयमे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ रेखतो

किधर गये पापमें मन्ना रे ॥ कि० ॥ इधरकूं फेर नहीं जांना ॥ टेर ॥ गये तो होत नुकसांना रे ॥ ग० ॥ हुवो कोई रंक और रांना ॥हु०॥ विषय बीच सुख नहीं पाना रे॥वि०॥जांनो तुम नरककी खांना॥जां० कि०॥१॥ विषय सुख ऋस कसके दाना रे॥वि०॥ ताके दुःख मेरु परवांना रे ॥ ता०॥ मांनो तुमवीर परवांना रे ॥ मां० ॥ दूजो तुम कीजो उनमांना ॥ दू०कि०॥२॥रावनसे खोत निज प्राण

विन जन्म गमावे, सत्य कहां छां सुणजो भावे; निंदा कारण घांधी गाती, संतांनी पिण बाळे छाती; दयाहीण ने घणा कठोर, क्षुद्र नीच वळे गुण चोर; निंदासें भुगते बहु पीड़ा, विगडे डील ने पडे ज कीडा; पूत मरे घर वीखर जावे, निर्धन होय बहु दुख पावे; घणां निंदकनी विगडी देखी, निंदकनी विगडे सब शेखी; अंत समो तो निश्चै विगडे, मरने नीची गतमें पडे; निंदासें विगडे इह लोक, किसां पुनां सुध रे पर लोक; स्वामी वृद्धिचंदजी गुरु हमारा, भेद बताया न्यारा न्यारा;रामचंद कहे सुण लो सारा, मत बांधो थे पापना भारा; निंदा फल भुगत्यां छूटेला, भोगवतां हीया फूटेला; इणरा फल खायां खूटेला, ज्यां जावो त्यां सिर तूटेला; इम जांणी निज निंदा करो, भव सागरथी वेगा तरो ॥ इति ॥

दुष्ट स्वभाव ॥

१ देशी ख्यालनी ॥

पापी जीव आवै, कोयला माटी खावै, ठीकरियां छोडे नहीं रे हां; फेर जंग मचावै, जमींकंद चावै, भावे जिम बोलै सही रे हां ॥ १ ॥ मोटो ओभर वधावै, पीड़ा उपजावै, काळो लगावै कोई वातसूं रे हां; दाम छिजावै, ऊंधी मत लावै, वैर वधावै सब साथसूं रे हां ॥ २ ॥ सासूजीसूं बोलै, लाज सारी खोलै, घोलै कड़वा बोलड़ा रे हां; छांने छांने खावै, वस्तु चुरावै, सूंस भंगावै वडा वड़ा रे

हां ॥ ३ ॥ भूंडो भावै, नींद घणी आवै, चिंत करावै बे-
कामरी रे हां; धर्म घटावै, पाप वधावै, रीस अणावै राम
नामरी रे हां ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-
हितोपदेशनामकं षष्ठं प्रकरणम् ॥ ६ ॥

आचार ॥

दोहा ॥

साधू नाम धरायनें, छै अनरथना मूल ।
धूल करै जमवारनें, मनमें रह्या ज फूल ॥ १ ॥
वरतणसूं मालम पड़ै, नहिं समकितनो लेस ।
निश्चय जांणै केवली, लच्छ अभव्य विशेस ॥ २ ॥
ऊदाई नृपको यथा, मारयौ ठगने वेस ।
तद्वत पांपी भेष धर, वरतै नीच विसेस ॥ ३ ॥

ढाळ ॥

१ निन्हव जांणो इण चलगतसूं ॥ ए देशी ॥

तटिनी तटे वृक्ष खड़ो है, निरंकुश होय नारजी; मं-
त्री हीन होय जो राजा, ज्यूं पूज्य विटल परवार जी;
साध न जांणो इण चलगतसूं ॥ १ ॥ पती निबळसूं नारी
विगड़ै, घोडो विन असवार जी; स्थान विगड़ै निबळ
धणीसूं, ज्यूं पूज्य विटल परवार जी ॥ सा० ॥ २ ॥ राज

बिगड़े फूटफाटसूं, गृहस्थीनो घर बार जी; थारो म्हारो राग द्वेषसूं, केई संत गया परवार जी ॥ सा०, ॥ ३ ॥ ए मुज समणी ए मुज बाई, ए मुज चेलो होय जी; जरा न संके वीतरागसू, जावे जमारो खोय जी ॥ सा० ॥ ४ ॥ पूज्य आचारे अधिको होवै, तो साधू माने संक जी; सबसूं ढीलो पूज होय तो, साधू होय निसंक जी ॥ सा० ॥ ५ ॥ साधू साध्वी भेळा विचरै, साथे करै विहारजी; सर्व वातसूं बिगड्या समझो, लोप्यो जिण व्यवहारजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ चेला चेली लेई नाठै, देवे भेप पैरायजी; करै चोरी सो चोर कहावै, किम वाजे मुनिराय जी ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु चेला ने चेली गुरुणी, लडतां देखे लोगजी; जिन मारगने पूरो लजावे, इम किम मिलसी मोख जी ॥ सा० ॥ ८ ॥ तरुणी अज्जा काजल सारे, नहीं हीर हटक मरजादजी; पट झीणो ओढ़ै तनु झांकै, करै सीख दीयां बकवाद जी ॥ सा० ॥ ९ ॥ पखी चौमासी संवत्सरी आयां, गृही न रक्खै वैरभाव जी; काट क्रोधसूं जावै जमारो, वळी धारै साधू नांव जी ॥ सा० ॥ १० ॥ चंडाल चौकड़ी पासे रैवे, विकल विटल भंडसूर जी; कुमति देवैकूं सदा परायण, सुमतिथकी रहै दूरजी ॥ ॥ सा० ॥ ११ ॥ जूं भरिया कपड़ा धर देवै, सह जूवां मर जायजी; खीरा लावै तगरा भरनें, लेई आदी रधाय जी, पहिलो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १२ ॥ मिथ्या भाखै साट उथापै, पग पग बोलै झूठ जी; आल धुराधुर झूठो दवै, दूजो व्रत गयो ऊठ जी; दूजो महाव्रत पूरो पडियो ॥ १३ ॥ चोरी मिनखतणी कर नाठै, वळी पुस्तक चोरै ओरजी; रात्री लेई करै विहार, ते सहुकार कै चोर जी;

तीजो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १४ ॥ चौथा व्रतनी वात घणी है, नवि करां एहनी तांण जी; जेहनी वात केवली जांणे, स्यूं विगडे व्याव वखांण जी; चौथो व्रत कहो किम कर रहियो ॥ १५ ॥ पंचमे व्रतमे परिग्रह त्यागै, ते कहिये अणगार जी; गृहस्थी मांहे जमा करावे, जद विगड्यौ सव व्यवहार जी; पंचमो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १६ ॥ तृष्णा लोभ आग पलीता, क्रोधी महा चंडाल जी; कपड़ा पुस्तक सचे बहुला, जांणो वडा कंगाल जी; पंच महाव्रत कहो किम रहिया ॥ १७ ॥ छट्टा व्रतमें रात्री भोजन, वर्ज्यां भंगे च्यार जी; वासी राखै गृही सारिखो, दशवें कालिक मझारजी; साध न जांणो इण चलगतसूं ॥१८॥दंडवाळेकों दंड विगरही,असणादिक करै अहारजी; श्वान गधेनो चाल्यौ मूंढो, कुंण होय न्यातने वार जी ॥ सा० ॥ १९ ॥ आचार्य सपदा एक वतावो, वण्यो राग द्वेषनो पुज जी; एकणसुं तो मुखै न बोलै, एकणसूं करै गुंज जी ॥ सा० ॥ २० ॥ पूज्य शिथिल तौ साधू शिथिला, सुद्धारे सुद्धार जी; वांद मूंढे जो लाळ पडै तौ, स्यू करै जांनी लार जी ॥ सा० ॥ २१ ॥ नीचतणो तो कथन ज मांने, शुद्ध साधांसुं वैर जी; इह लोके महिमा घट जावै, देवे समुदाय विखेर जी ॥ सा० ॥ २२ ॥ समभावे वरतै जव पूजे, तव मांनै समुदाय जी; नहीतर पूज्यभणी नहीं मानै, एह सूधो छै न्याय जी ॥ सा० ॥ २३ ॥ पूज्य तौ ब्रूझ करै नहीं तिल भर, खळ गुळ एकही भाव जी; हांजरिया श्रावक मिल जावै, झूठेनी पाव कराय जी ॥ सा० ॥ २४ ॥ पूज्य विवेकी विरली ठौडे, विरलो शुद्ध परिवार जी; सव समुदाये भाव ए समझो, नहीं एक समुदाय विचार जी ॥ सा० ॥ २५ ॥ ए ढाळ सुणीने चटको लागै,

जिणमें ओगुण जांण जी; राम मुनी ए समुचे भाखी, नहीं छै खांचातांण जी ॥ सा० ॥ २६ ॥ इति ॥

छंद ॥

काजल सारे तन सिणगारै, डारे दुर्गतिमें अप्पां, नितकी खावै फांद वधावै, आवै जिम मारै गप्पां। तन झीणो ओढे दिनकी पोढे, दौड़ी चाले थइ वकं, केईक अज्जा खरी निलज्जा, करै अकज्जा निःशंकं ॥ १ ॥ सवागण थोड़ी विधवा बोड़ी, दौड़ी दाड़ी लार फिरे, चेली अलबेली जिणरे थेली, ओळी दोली जास फिरे । नहीं रेहे घेठी हुइ गई सैंठी, वैठी रे वे निज अंकं ॥ के० ॥ २ ॥ थांनकमें लावै साधु बोलावै, वात वणावै प्रेमनकी, हसै हसावै दंत दिखलावै, लज्जा गमावै तन मनकी । मोह अळूझै कछु वन सूझै, अळुझै माखी जिम पंकं ॥के०॥३॥ साधू मांहे राखै बारै झांखै, रखै निगे सब बारनकूं, पाट विछावै साधु विठावै, अंग दिखावै जारनकूं । संघट्ट कर दे कुचादि मरदे,चाजे छिनमें व्रत भंगं ॥ के०॥४॥ साधू विगड्यो साध्वी विगडी, रंडी विगड़ी भेषधर, अब होय गई पक्की भई निसंकी, रंगी चंगी थइ निडर । पग ऐड़ी धोवै साधु विगोवै, खोल दिखावै निज अंगं ॥ के० ॥ ५ ॥ कोई छोरी मुंडावै जोवन आवै, गुरणी लावै भेषधरं, सुरभी जिम देखी संड विशेखी, केकी घन यूं नृत्यकरं । काती जिम श्वानं लगे ओपमानं, लगै न ज्ञानं द्रव्यलिगं ॥ के० ॥ ६ ॥ अक्का जिम रैती चेली संतीं, संदर बदर सब करती, भूंडवापणो करती लज्जाहीणी, सीख न मांने एक रती । भेप धर भूंडो जासी ऊंडो काळो मूंडो कर संगं ॥ के० ॥ ७ ॥इति ॥

गीत ॥

१ नागजी सूतो खूंटी तांण रे, वैरी म्हारा, वतळायो बोले नहीं रे जी ॥ ए देशी ॥

साधजी बोलोनी बोल विचार रे, कांई, विन विचार्‍यू बोलो मती रे ॥ सा० ॥ यती सरावै नार रै, कांई, साध सरावै सो सती रे ॥ १ ॥ सा० ॥ निरवद्य भाषा बोल रे, और, सावद्य कठिन नहीं भाखिये रे ॥ सा० ॥ रे तुं अमित अणतोल रे, छोड, पूरो विवेक राखिये रे ॥ २ ॥ सा० ॥ चन्द्रपुर एक सेठ रे, तहां तपस्वी मुनि एक आवीयो रे ॥ सा० ॥ ऊभो गोखे हेठे, मुनि, तपत करी दुख पावीयो रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ नहीं पडि मुनि की ठीक रे, तहां, गोखे बैठी नर्मदा रे ॥ सा० ॥ बाईजी थूक दीयो जहां पीक रे, तब, कोपभर्‍यो मुनिवर तदा रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ तूं तो पति वियोगा होय रे, इम, शाप दीयो छै मुनिवरू रे ॥ सा० ॥ शापन दीजै मोय रे, हू, लुळ लुळने लटका करूं रे ॥ ५ ॥सा०॥ बोले छै अमृत वैण रे, बाई, दीयो शाप टळे नहीं रे, बाईजी, मत भर डब डब नैण रे, मैं संयम खोयो छै सही रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ सो वाते एक बात रे, इम, सावद्य भूल न भाखणो रे ॥ सा० ॥ राम कहै दिन रात रे, मुनि पूरो विवेक राखणो रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

साधजी सीखोनी भाखा विचार रे, ओ, विन भाखा

संयम नहीं रे ॥ सा० ॥ तप संयम जावे हार रे, कांई, सावद्य भाखा जो कही रे ॥ १ ॥ सा० ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव रे, ऐतो, भाखा च्यार प्रकारनी रे ॥ सा० ॥ सीखो मन धर चाव रे, कांई, पछै भाखा उच्चारनी रे ॥ २ ॥ सा० ॥ द्व्यथकी भेद दोय रे, तुमे, सत्य व्यवहार दो बोलिये रे ॥ सा० ॥ टाळो जे सावज्ज होय रे, तुमे, बोलो पछै धुर तोलिये रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ चलता न करणी वात रे, आतो, क्षेत्रथकी भाखा कथी रे ॥सा०॥ कालथकी पौर रात रे, जिण, उप्रंत थे बोलो मती रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ भावथकी बोल आठ रे, कांई, क्रोध मान माया लोभ ही रे ॥ सा० ॥ भय हासो दो दाट रे, और, मुखारी कथा नहीं सोभही रे ॥ ५ ॥ भेख अनंतीवार रे, पिण भाखा भेद न जांणियो रे ॥ सा० ॥ रामचंद्र उच्चार रे, तुमे, मत कहो कांणांनें काणियो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कुछ जेजन करिये ॥ ए देशी ॥

अष्टादश लौ दोष ही टाळो, पाळो मुनिवर व्रत चोखा; जोखा नहीं है मुक्त जावतां, जरा नहीं इसमें धोखा ॥ अ० ॥ टेर ॥ व्रत पट् काय पट् ऐ बारे, अकल्प १३ गृह भाजन १४जानों;पल्यंक१५ गृहस्थ घर ही बैठन १६, स्नान १७ शोभा १८ ठारह मानों ॥ अ०॥ १ ॥ हिंसा १ झूठ २ अदत्त ३ मिथुन ४ ऐ, परिग्रह ५ निशा भोजन टारो; वासी रखै सो गृहस्थ सरीखो, जिसका भंगा है न्यारो ॥ अ० ॥ २ ॥ पृथिवी १ अप २ तेऊने ३ वायू ४,

वनस्पती ५ त्रसका कथना ६; वनस्पतीमें जीव अनंता, शेष असंख करो जतना ॥ अ० ॥ ३ ॥ द्वादश बोल तो हो गये ऐसें, अकल्प बोल कहीये च्यारं; वस्तर पातर आहार रु थानक, निर्दोष ग्रहे अनगारं ॥ अ० ॥ ४ ॥ गृहीका भाजन सब ही वरज्या, बोल भये चवदे ऐसें; पनरमे बोल पल्यंकासन ही, मुनिवरजी भोगे कैसे ॥ ॥ अ० ॥ ५ ॥ गृहस्थी घर नहीं बैसे मुनिवर, तपस्वी रोगी वृद्ध खरो; और भणी नहिं हुक्म दिया है, बोल सोलमे अमल करो ॥ अ० ॥ ६ ॥ स्नान देशसें सबही वरजी, जावज्जीव मुनि वरताई; सोभा वरजी बोल ठारमे, कज्जल पीठी करे नाई ॥ अ० ॥ ७ ॥ दशवें कालिक अध्येन छठेमे, सूत्र टीका विस्तार जहां; मुनि राम कहे एक बोल सेवे तो, जिस पदसें मुनि भ्रष्ट कहा ॥ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनिश्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे आचारनामकं सप्तमं प्रकरणम् ॥ ७ ॥

चरचा

चरचा विपरीत प्ररूपक तथा तेना आचरणनी लावणी ॥

१ सदाशिव पारवती प्यारा ॥ ए देशी ॥

सदा मुज सूत्र लगै प्यारा, कुगुरुका करियो मुख कारा ॥ टेर ॥ अजी सूत्र सरीसो धर्म नहीं जग, उत्सूत्र

सम नहीं पाप; अडंग वडंगकी गप्पा मारै, करै कल्पना थाप; लोक गडरिया जांणे सचा, दीये सूत्र उत्थाप; नरकमें करसी डेरा, श्रावकनें लेसी लेरा, नंदी वैतरनी पासी, ऊंचा फेर कबू न आसी; मीधा वे निगोद जासी वे ॥ सदा मु० ॥ १ ॥ बत्रीस सूत्र मांना म्हे तो, ते पिण मांनां पाठ;आगम तीन प्रकार बरावर, निंदे गहली टाट; इस कहनीसें भ्रष्टी कहिये, ग्रही नरककी वाट; केवलीकूं भूत लगावे, तेरसकी पखी ठावे; निगोदकूं मारे हाथां, अभक्ष तो चौडे खाता; मूरख जांनें सरातावे ॥ स०॥२॥ उष्ण जल तो तपमें पीणां, कुगुरां थापी छास; सूत्र ठाणांगे परगट देखो, दीखे जैनाभास; लघुनीतसें जावे झाडे, करै धर्मका नास; चौडे छै भृष्टी पूरा, निगोदमें पटके फूंरा; मूत्रसें पात्र भराया, धर्मनें पूरा लजाया, गृहस्थका धर्म गमाया वे ॥ स० ॥ ३ ॥ साधू बदन गृहस्थी जावे, तामें पाप बतावे; पुस्तक पड़ला धोवे मात्रे, मधु माखणने खावे; टीका उथापे खरा अज्ञानी, जांनें शीश नमावे; भूलतो मोटी कहिये, दुष्टसें दूरा रहिये; लेखे नहीं करनी जेह्नी, करो मत महिमा तेह्नी; भूल संग करो न एह्नी वे ॥ स० ॥ ४ ॥ गृहस्थकी औठ खावे अरु थापे, जैनी सुन सरमावे; जनम मरनका सूतक वरज्या, ते पिण लावे खावे; रजस्वलादि मूल न टाळे, अकाले सूत्र सुनावे; सूत्रसें विरुद्ध आचरना, सब स्सरी चौथकी करना; मिथ्याती आज्ञा बारे, सूत्रकूं नांहि विचारे; भोलेकूं फंदमे डारे; राम कहे ते किम तारे वे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति विपरीत प्ररूपक तथा तेना आचरणनी चरचा समाप्त ॥

२ चरचा छाछनी—सवैया ॥

मासादि करावै तप छाछादि पिवावै और, घोलिया महेकी जात पिव्यो ही वखांने है। ऊन्हो जल निंदे केई पीनेकर करावै त्याग, ऊन्हो जल वर्ज्यो कहां पूछ्यां ऊधी तांने है ॥ वासमें अगार केते घोले हैं सूत्रके बीच, कदसें सरू ए हुई कौन कौन मांने है। आधो टूक रक्खा पैली वास ही दोरो हुवां, खायेतै वनेगो वास न्याय इन जांने है ॥ १ ॥ एक बात पूछां म्हे तो पच्चखांण कहे दस; नोकारसी आदी ऐतो कौनमे धसाये है। तेले उप्रांत देखो ठाणांगजी तीजे ठांणे, ऊन्हा जल विना मात्र दूजा न दिखाये हैं ॥ सूत्रमे वरज कीये तेई काम करे थापे, जिसो दूजो कौन पापी वोघे भरमाये है। मनहीसूं करे थाप मनसूं उथाप करे, सूत्रसेती नांही डरे राम कछु आये है ॥ २ ॥ ऊन्हा जलसेती अच्छी कहे छास वास मांहे खरा है अजान जांने सूत्र ज्ञान नांही है। हीयेकू ठंठोके नाह धर्म आज्ञामांहे कह्यो, दूध दही छाछ देखो कौन शास्त्रे गाई है ॥ मनसूं करे छे छांन छः कायको कूटो होवै, कचो जल अच्छो जदि ऐसे ही सुनाई है। राम कहे न्यातरेरा त्याग कीया कोई भाई, धरमांहे जीमे कैसे आरंभ कराई है ॥ ३ ॥ इति छाछनी चरचा ॥

३ चरचा थांनकरी ॥

दोहा ॥

धांनकमे रहना नहीं, कहते केइयक मूढ ।

सूत्र रहस्य जांनें नहीं, तांनें अपनी रूढ ॥ १ ॥
आधाकर्मी दोष है, भोळांनें कहे एम ।
तेहनों उत्तर हूं कहूं, सांभळजो धर प्रेम ॥ २ ॥
धर्मसाल थांनक कहो, कहो वा पोषधसाल ।
जिणमें उतरे साधु सुध, लीजो सूत्र निहाल ॥ ३ ॥
गृहस्थ रहे जिण जायगां, जिणमें रहे जो साध ।
भेषधारी द्रव्य साधु है, उपजे वहोत उपाध ॥ ४ ॥
भूत भविष्यत् वर्तते, निश्चय मुनिवर तेह ।
केवलि वचनांसें कहूं, जरा नही संदेह ॥ ५ ॥
थांनक उथप्यो खोडले, परथम तेरा पंथ ।
रतन हुकम पंथी अवर, निंद ही वाजे संत ॥ ६ ॥
थांनक शाला ऊतरे, जिणरो शासतर लेख ।
अंधमती चरचा करे, साधू नहि ते भेख ॥ ७ ॥
छेले आरे लाधसी, उपाश्रम शुध साध ।
थांनक बाहिर साधु कुंण, कहे कोई करनें वाद ॥ ८ ॥
थांनक उतरे साधु है, देखो सूत्रकी राह ।
बाहिर उतरे साधु हे, सो जांने जगनाह ॥ ९ ॥
थांनक उथापे पैल ही, थे साधूकै नाह ।
मूढ मती समझे नहीं, नही समझणकी चाह ॥१०॥
दांन दया थांनक उथप, चलियो भीखम पंथ ।
एक उत्थपे तेहनें, किम जांणो शुध संत ॥ ११ ॥
आचारांगजु सूत्र मां, कह्यो साधु आचार ।
भिन भिन करनें ओळखो, जिम पांमो भव पार ॥१२॥
जो करणी दुःकर करे, तो न करे पर *निंद ।
कर्म बधे निंदाथकी, कह्यो सिद्धांत जिनंद ॥ १३ ॥

*कंचन तनथी सेज है, सेज भियासो नेह । पर निंदा पर ईरखा, तुलसी दुर्लभ एह ॥१॥

दुखमी आरो पांचमो, वधियो वेष अपार।
भेख देख भूलो मती, ओळखजो आचार ॥१४॥
जिनवर वचन उथापने, थापे आपनो मत्त।
ते पाखंडी सारिसा, रूळसी च्यारू गत्त ॥१५॥

ढाळ ॥

१ सूरी जन कर्म समो नहीं कोई ॥ ए देशी ॥

दशवैकालिक सूत्र मांहि, चाल्या बोल च्यार; पिंड सिज्जा वस्त्र पात्र, भोगवे शुद्ध अणगार रे, प्रांणी,समझे आचारमे विरला ॥ १ ॥ असांण पांण खादम सादम, नहीं लगावे दोख; मुहादाइ मुहाजीवी, पांमे दोनूं मोख रे,॥प्रां०॥२॥ अठारे प्रकारे थांनक चाल्या, तिणमें साधू रेवे; इत्थि पशू पिंडग हुवे ते, मन करी नहीं सेवे रे ॥ प्रां० ॥ ३ ॥ केई केहे थांनक मांहे, साधूनें नही रहणो; कैसो दोष लागे साधूनें, पाछो तिणने कहणो रे॥प्रां०॥४॥ आधाकर्मी दोष बतावे, थांनक साधां काजे; नीपे गूंपे आछो करावे, वळी साधांरे नांवे वाजे रे ॥ प्रां० ॥ ५ ॥ पाछो तिणनें प्रत्युत्तर देणो, साधू नांमे वाजे थांन; यथा दृष्टांत कोईयक नर, संजम लीधो बुद्धीवान रे ॥ प्रां० ॥ ॥६॥ लारे जिणरी स्त्री जायगां, तिणरे नांवे वाजे; कांई दोष लागे साधूनें, कह्यासुं भर्म भाजे रे ॥ प्रां० ॥ ७ ॥ अथवा साधू मुक्ति विराज्यो, आठ कर्मानें काप; ते शरीर मुनि वाजे प्रजाल्या, कांई सिद्धांने लागे पाप रे, कुमति, क्यूं डूबो निंदा करने ॥ ८ ॥ इण चरचामे चतुर समझे, नही समझे घोगा; निंदा करी करे आत

मा भारी,जांणो च्यारूं गति जोगा रे कु०॥ ९ ॥ आचारांग दूजा श्रुतस्कंधे, अध्यायन पेहेलो वाचो; वाचीने तो निंदा निवारो, अणूंता मति नाचो रे ॥कु०॥ १० ॥ नोरा दुकांनारा ताला खुलावो, उतरो मझमें देखी; नीपे गूंपे आरंभ थावे, उतरो किम करो सेखी रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ यत्र ममता तत्र दोष, कांई थांनक दुकांन; सूत्र वांचो ने अर्थनें धारो, क्यूं करो कूडा तोफांन रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ जिण जागामें अन्य साध हुवे तो, शहरमें नहीं आवो; जो आवो तो वारे कढावो, थे चउफेर तंबू खंचावो रे ॥ १३ ॥ तंबू खंचावे जिण जायगां, चौडे दोष लागे; पछै गृही कांई तंबू खंचावे,थे करो रेवणरा त्याग रे॥ कु० ॥ १४ ॥ नित्य घरनो म्हे पांणी न लावां, भाषा बोलो ऐसी; वारी बंधियो पांणी लावो, ओ संजम किम रेसी रे ॥ कु० ॥ १५ ॥ पांणीनें म्हे एकांतरे आसां, मति बीजाने वहिराजे; एक दिवस तो पांणी न देवे, एकांतरे थांरे काजे रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ नित्य पांणी बांयां भेळो कीयो ते, लावो हांडा भर भर पांणी; कपटाई करी संजम खोवो, इण सोभामें कांई खांणी रे ॥ कु० ॥१७॥ अधिकाई तो कांई न दीसे,दीसे अधिक कपटाई; निंदा पिण ईजापे दीसे, एह करी अधिकाई रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ वाई जातसं परचो ईजापे, वखत कुवखत गिणै नांई; आधाकर्मी आहार ईजापे, एह करी अधिकाई रे ॥ कु०॥ १९ ॥ अंग विभूषा पिण ईजापे, हीये विचारी जोवो; थापना थानक परगट सेवो, तो थांनक थांनक स्यूं रोवो रे ॥ कु० ॥ ॥२०॥इत्यादिक विचारी जोज्यो,जठै मूर्छा तठै दोख;रामचंद कहे निंदा निवारो,तो पामेस्यो मोख रे॥कु० ॥२१॥

स्वांमी वृद्धिचंदजी प्रसादे जोडी, लाभ अधिको जांणी; ढीला होसी सो रीसां बळसी, लेसी आपमें तांणी रे; कुमति क्यूं डूबो निंदा करने ॥ २२ ॥ इति थांनकरी चरचा समाप्त ॥

४ चरचा तेरापंथियोंकी—सवैया ॥

उनिको अभाग पूरो गुरु किये तेरापंथी, दया दांन हीया सेती पूंछने मिटाहो है । कपटमे कपट जांके दुष्ट प्रणांमी पूरे, कूरे कूरे सूत्रकेरी शाख दरसायो है ॥ दया दान जावै जब लिलाडीको तेज मिटै, ऐ तो चौडे वात नहीं छेपस्यूं सुनायो है । बुद्धिवांन होवे प्रांणी इनकी श्रद्धाकूं त्यागै, जांको भाग जागै शुद्ध श्रद्धामांय आयो है ॥ १ ॥ पाठहीको मौडे चौडे असजती पोषणिया, ऐसो खोटो पाठ लिख सूत्रही सिखायो है । महावीर स्वामी चूका बतावै निशंक मूढ, रूढहीको तांणै जांरे हीये तम छायो है ॥ साधूहीके फासी दई दयावंत खोलै कोई, दोनूंकूं बतावै तुल्य ऐसो तत पायो है । जीवकूं बचावै कोई मारै सो सरीखा गिणै धिक्क धिक्क ऐसो पंथ दाय नहीं आयो है ॥ २ ॥ सौळमां शतक बीच उदेशे तीजे कै मांह, अर्श मुनीकी देख वैद्य काट डारी है । ध्यानारूढ ऋषी खडै दोपारां लौं त्याग्यो तन, नाक श्वास रुंधे मुनि वेदना तौ भारी है ॥ मुनी के क्रियाही नांह धर्म अंतराय विना, वैद्यकै क्रिया छै शुभ बडो उपगारी है । सूत्रमे खुलास पाठ अर्थाकार किये अर्थ, मूरख उलटी करै जाकी मति कारी है ॥३॥ आचारांग दूजै स्कंध अध्ययन तीजेके बीच, मुनी तौ विहार करै मृग यूथ देखा है । पारधी पूछै छै मुनी मृगादिक देखा तुम, जांन झूठ बोलै जांन्यू

लाभ ही अलेखा है ॥ सूत्रहीके पाठ मौडे मौनहीकी करै थाप, मौन पाठ लारे और भगवती पेखा है। मूल सूत्र टीकाकार अर्थ नही मांने मूढ, पहाड उडाडे जहां पूछै पूंणी लेखा है ॥४॥ देव गुरु धर्म लोप मन मते पंथ काढ, अर्थ हीन जी जी कहै देखो ऊंधमती है। वीर चूका गुरु भूला लुपक दयाके पूरा, तेरापंथी भेखधारी देखो नीच गती है ॥ तत्त्वकी खबर नांह वातां तौ जबर करै, दोष सूं भरे है पूरे कहै नही रत्ती है।पूछे प्रश्न दयाहीन भूला खवायां कांई हुवे, श्रावकको पेट आछो करै क्योन जत्ती है ॥ ५ ॥ भगवती आदि सूत्रे श्रावक अभंग द्वार, अनु-कंपा दान देखो कहां वरज किये है। प्रदेशी तौ भाग च्यार ज्यांमें दानशाला चल्लू,कीधी और प्रभू सारे वरसी दान दिये हैं ॥ तेरापंथी साधू विना सबीकों दियेमें पाप, ऐसी थाप करै दुष्ट जरा नही बिये है। भोळेको भ्रमाय पापी खोटे पंथ मांहि राळे, अमृतकूं छोर दोर मूढ जैर पीये हैं ॥६॥ बृहत्कल्प पैलाध्ययन कॅवाड़ साधूने वरज्यो साध्वी उघाडे खोलै मूढ ऐसी गाई है। पैंतीसमाध्ययन उत्तराध्ययनजीको नाम लेवै, खरा है अजांण जांमे ज्ञान रत्ती नांही है ॥ जिन कल्पी न खोलै स्थविर कल्पी खोलै जडे, दिखावां म्हे सूत्र मांह देखो क्यूं न आई है। सूत्र रहस्य जांणै नांह शब्दको बोध नांह,परलोक डर नांह भुसै श्वान दाई है ॥ ७ ॥ मूंजी ने कठोर और कदाग्रही निरदयी ऐसे जीव हुवे ताकूं श्रद्धा एह रुचे है। सूत्रके न्यायसेती मा° अंध म्लेच्छ विना, विरुद्ध औ कुपंथ ऐसो मांने झूठे लुचे हैं। खोजी होई सूत्र रुची शास्त्रज्ञ विवेकी कोई,पन्यधारी श्रद्ध पाय पाछी फेर मुचे है। इचर्ज आवै है एक होवै जे वि

वेकवंत, देख अंध कूप परे मानो ग्रह कचे हैं ॥ ८ ॥ तेरा पंथी सेती मेरा द्वेष नही प्यारे भाई, उत्सूत्र कहन सेती द्वेष मेरा जांनजो । भीषमजीकी कीवी ढाळां सूत्र शाख दीवी देखो, खोजी होई सूत्र जोई ज्ञान दृष्टी छांन जो ॥ चर्चाहीको कांम कांई पक्षपात विना देखो, ढाळियांकी वात पर श्रद्धा मत आंनजो । राम मुनी कहे प्यारे श्रद्धा शुद्ध करो सारे, सवैया सुनीने नव रीस मत मांनजो ॥ ९ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ अगड़दं अगड़दं वजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

क्या हमसे तूं करेगा चरचा, दान दया उठ्ठावत है; आगम आगे पता न लागे, वोधांकूं भरमावत है ॥ टेर ॥ प्रतिमाधारी उत्तम श्रावक, ग्यारमी प्रतिमा वहते है । ग्यारे ग्यारे उपवास पारणे, साधूकी पर रहते हैं ॥ क्या० ॥ १ ॥ दोष बयालीस टाळी वहिरे, श्रावक शुद्ध वहिराते है; उसमें मूरख पाप बतावे, मूं देख्या नहीं जाते हैं ॥ क्या० ॥ २ ॥ भगवती सूतर शतक अष्टमें, छठे उद्देशे गाते है; श्रमण शब्दे साधू वोले, श्रावक माहण कहाते है ॥ क्या० ॥ ३ ॥ श्रमणोपासक दोनु जनेकूं, प्रासुक शुद्ध प्रतिलाभत है; गौतम गणधर पूछे प्रश्नकूं, दाता फल क्या पावत है ॥ क्या० ॥ ४ ॥ श्री वीर कहे छै सुण तूं गौतम, एकांत निर्जरा थाते है; पाप कर्म नहीं किंचित इसमे, परगट पाठ दिखाते है ॥ क्या० ॥ ५ ॥ श्रमण माहण या दोनु शब्दमें, एक

साधू दरसाते हैं; सूत्र अरथको मरम न जानें, खोटा अर्थ लगाते हैं ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इन दोनु शब्दके अर्थ पूर्व, शतकादि उद्देशे साते हैं; दूजे शतक फुन उद्देश पचमे, साधू श्रावक फुरमाते हैं ॥ क्या० ॥ ७ ॥ तथा रूप साधू श्रावकको, शुद्ध श्रावक प्रतिलाभत हैं; व्रत बारमो निपज्यो तेहनें, कुमती घोचा घालत है ॥ क्या० ॥ ८ ॥ शतक द्वादश प्रथमोद्देशे, शंख सावस्ति रहते हैं; प्रभु वंदीनें घरकों जावत, सवि श्रावककों कहते हैं ॥ क्या० ॥ ९ ॥ च्यार प्रकारे विपुल आहार कर, पाक्षिक पोसा करते हैं। शंख श्रावक को वचन प्रमाणे, तहत करी उच्चरते है ॥ क्या० ॥ १० ॥ माल खायके पाक्षिक पोसा, किम होते शंका धरते हैं; पोषध द्विविध वृत्ति खुलासे, सुन कर भरम निसरते हैं ॥ क्या० ॥ ११ ॥ इष्ट जन भोजन दान सोई पोसध, प्रथम भेद पुकारत हैं; आहार त्याग सो द्वितीय पोषध, शंख प्रथम विचारत हैं ॥ क्या० ॥ १२ ॥ प्रत्यय टीका वचन विचारो, क्यूं झूठे हमसे लरते है; मज्झम *पात्रे श्रावक भणिया, मूरख व्यर्थ झगरते है ॥ क्या० ॥ १३ ॥ भगवती सूत्र शतक तीसरे, प्रथम उद्देश वखानत हैं; शक्रेशानको वाद मिटावा, इंद्र तीजो समजावत है ॥ क्या० ॥ १४ ॥ द्वादश बोल भव्यादिक आदि, प्रभुकूं गौतम पूछत हैं; किन कारन जाव चरम भयो छै, सुन कर भर्म हीं गच्छत है ॥ क्या० ॥ १५ ॥ प्रभु भाखे सुण गौतम

* उत्तमपत्त साहू, मज्झमपत्त य सावया भणिया। जहन्नपत्त इयरदि, तिविह पत्त मुणेयव्व ॥ १ ॥

गणधर, चउविह संघ सुहावत है; हित सुख पथ्य कृपादिक कामुक, सनत्कुमार फल पावत है ॥क्या०॥१६॥ शतक आठमे छठे उद्देशे, तीजे पाठको तांनत है। असंयती दान एकांते पाप, जिसकी रैस न जांनत है ॥ क्या० ॥ १७ ॥ मोक्षके अर्थ श्रावक देते, ताकू पाप दिखावत है; *अनुकपा नहीं दान निषेध्यो, जिण जागां अर्थ दृढावत हैं ॥ क्या० ॥ १८ ॥ प्रतिमाधारी तो दूर ही रहियो, अनुकंपा दानन उठते है; पापमती तौ पाप बतावे, सो भर नरकां पड़ते है ॥ क्या० ॥ १९ ॥ इत्यादिक तौ पाठ घणा छै, मूरख भेद न पाते हैं; उत्सूत्र प्ररूपी नरकां जासी, श्रावक पिण जां साथे हैं ॥ क्या० ॥ २० ॥ प्रश्न दयाका दूजा चलत है, अभयदान अति मोटे है; जीव बचाये पाप बतावत, जिसके लक्षण खोटे है ॥ क्या० ॥ २१ ॥ आचारांगजी दूजे श्रुत स्कंधे, अध्ययन तीसरे पठते हैं; जीव बचावा परगट देखो, जानत मुनिवर नटते है ॥ क्या० ॥ २२ ॥ हरिणादिकको टोळो मुनिवर, रस्ते जावत पेखा है; पूछे पारधी क्या तुम देखा ? मुनि कहे हम नहीं देखा है ॥ क्या० ॥ २३ ॥ सूत्र भगवती शतक पंचमें, छठे उद्देशे लिखते हैं; मृगादिक द्रव्य झूठको टाली, आलादि कटु फल लगते है ॥ क्या० ॥ २४ ॥ सूत्र भगवती शतक पनरमे, प्रभु गोशालो बंचायो है; उत्तर देनेकूं ठौर न लाधी, प्रभुको चूक बतायो है ॥ क्या० ॥ २५ ॥ जीव बचाये नेम प्रभूजी, जिसमे गोते खाते है; गायां बळती दया करी काढे, जिसकूं पाप लगाते हैं ॥ क्या० ॥ २६ ॥

* मोक्खत्थं ज दाण, त पइ एसो विही समक्खाओ। अणुकंपा दाण पुण जिणेहिं न कयाइ पडिसिद्धम् ॥ १ ॥

जीव बंचाये धर्म छे मोटो, टोटो कठे न दाखत हैं; दया दान उत्थापे दुष्टी, सूत्र विरुद्ध ही भाखत हैं ॥ क्या० ॥ २७ ॥ सूत्र पाठ और टीका शास्त्र, सबका वचन उठाते हैं;इसा दुष्टकी संग न करिये, रामचंद समझाते हैं॥क्या० ॥ २८ ॥ समत उगणीसे वरस सैंतीसे, फाल्गुन शुद्ध पख लगते हैं । ग्राम बकांणी मांहे प्रकाशी, सुन श्रावक श्रद्धा रखते है ॥ क्या० ॥ २९ ॥ इति सिद्धांतसूचानिका दान दयाप्रकाशिका कुमतमतखंडनिका संपूर्णा ॥

२ तुम चलो सखी ॥ ए देशी ॥

चउव्विह संघनें साता दीजै,जिणसूं शिवपुर थे जासो; पंचम अंगे वीरजी भाख्यो, गोतम कर दीयो परकासो ॥ टेर ॥ तीजै शतक अरु प्रथमोद्देशे, गोतम पूछै सिर नांमी; सनत्कुमार ईशान शक्रको, वाद मिटावे किम स्वांमी ॥ च० ॥ १ ॥ जुबानतणे अनुसारे दोनुं, इंद्र तदा चुपचाप रहे; वडी पुन्याई तीजा इंद्रनी, हंता गोयम वीर कहे ॥ च०॥२॥ उत्तर सूत्रे गोयम इंद्र भव्य, सम्यक् दृष्टी परत खरो; सुलभबोधी आराधक चर्म, इक संशय प्रभु फेर हरो ॥ च० ॥ ३ ॥ किण अर्थे भव्यादिक कहिये, चरम शरीरी होय रह्यो;चउविह संघभणी हित कामुक, वीर प्रभूजी एम कह्यो ॥ च० ॥ ४ ॥ सुखकामुक पथ्य-कामुक वर्ते, कृपादि वांछक संघकेरो; तिण कारण पद बोलही सुलटा, सूत्र पाठ परगट हेरो ॥ च० ॥ ५ ॥साधु श्रावक दो रत्नकी माला, धर्मपक्षमे दोनुं खडा; जैरको बटको कहे श्रावकने, ते निगुरा महा मूर्ख वडा ॥ च० ॥ ॥६॥ प्रतिमाधारी श्रावक उत्तम, जिणनें निर्दोष आहार दीयो; देणेवालेकूं डूबो बतावे, जिणरो फूटगयो हीयो

॥ च० ॥ ७ ॥ चउव्विह संघनी वंदगी करतां, उत्तम फल सब जीव लहे; भगवतीसूत्रमें परगट देखो; रामचंद्र तो एम कहे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ सिद्ध चक्र पद वंदो रे भविकां ॥ ए देशी ॥

क्यूं दया दान उथापो रे कुमति, क्यू दया दान उथापो ॥टेर॥ प्रतिमाधारी श्राद्ध साधू सरिखो, दोष बयाळीस टाळे; तिण उत्तमनें वैरावत डूबे, क्यूं बोलो झूठ पंपाळ रे ॥ कु० ॥ क्यूं० ॥ १ ॥ कौनसे सूत्रे पाठ दिखाडो, जदी प्रतीत ज आवे; आगम पैंताळीसे पाठ न लाधे, जो माथो फोड मर जावे रे ॥ कु० क्यूं० ॥ २ ॥ प्रतिमाधारीकूं दीये एकांतपाँप, तो दूजारो स्यू केणो; इम सुणतां सब दान उथप्पो, एक ज साधूने देणो रे ॥ कु० ॥ क्यू० ॥ ३ ॥ दान दयाकी जडही काटी, जुक्त लगावे झूठी, वीर प्रभूने चूका बतावे, ज्यांरे हीयारी फूटी रे ॥ कु० क्यू० ॥ ४ ॥ साधू श्रावक दोनू रत्नांरी माला, सूत्रे कही जिनराज; श्रावकने कहे जैरको वटको, करता न नकटा लाजे रे ॥ कु० क्यू० ॥ ५ ॥ ढीला पासत्था हीणाचारी, कपटी कहिये पूरा; निगुरा अवगुण गावण सूरा, साध नहीं भंडसूरा रे ॥ कु० क्यू० ॥ ६ ॥ श्रावक साधू प्रतिमाधारीकू, दोनूने शुद्ध वहिरावे; बारमो व्रत तो चौडे दिखायो, पिण मूरख भूला जावे रे ॥ कु० क्यू० ॥ ७ ॥ च्यार संघनै साता दीधां, सनत्कुमार अधिकार; तीजा शतकके पहिले उद्देशे, पिण मूढ न समझे लगार रे ॥कु०

क्यूं० ॥ ८ ॥ जीव वंचायेमें नफ्फो चौडे, गोशालो वीर वंचायो; जब बोलणको रस्तो न लाधो, तब वीरको चूक दिखायो रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ९ ॥ हरिणादिक बहु जीव वंचावा, साधू पिण झूठ बोले; प्रथमांगे सुय खंध बीजे अध्ययन तीजे, चौडे पाठ अमोल रे ॥ कु० क्यूं० ॥१०॥ इत्यादिक दान दयाकी चरचा, पिण मूरख उलटी तांणे; मुनि राम कहे हठग्राही म होवो, कीजो सूत्र प्रमांण रे ॥ कु० क्यूं ॥ ११ ॥ इति दान दया थापन कुमति मुख चपेटिका स्वाध्याय संपूर्ण ॥

गीत ॥

१ घोड़ी तो आई थारा देशमें, मारूजी ॥ ए देशी ॥

साधू टाळी दांन सर्वमे, वारूजी, ऐ पाप वतावे मूढ हो, कुम तीड़ा; डूबे ससारमें, तारूजी, सूत्र रहस्य जांणे नहीं ॥ वा० ॥ तांणे आपणी रूढ हो, दुरमतिडा, डूबे संसारमे, तारूजी ॥१॥ अनुकंपा दान न वरजीयो ॥वा०॥ देखोनी आंख उघाड़ हो ॥ कु० ॥ सूत्र सिद्धांते देख लो ॥ वा० ॥ मत बोलो कुहाड़ाफाड़ हो ॥ दु० ॥ २ ॥ केई पुन्यपंथी पुन्य मांनही ॥ वा० ॥ ते पिण खरा है अजांण हो ॥ कु० ॥ अनुकंपा पुन्य कह्यां ना रहे ॥ वा० ॥ समझोनी चतुर सुजांण हो ॥ दु० ॥ ३ ॥ मिश्रपंथी मिश्र भाखही ॥ वा० ॥ नहीं जांणी तत्त्वनी वात हो ॥ कु० ॥ जिनवर वचन उथापिया ॥ वा० ॥ मौन खुलियां थयो मिथ्यात हो ॥ दु० ॥ ४ ॥ मौन कहे उत्तम मुनि ॥ वा० ॥

देखो सूत्र कृत शाख हो ॥कु०॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो ॥ वा० ॥ वीर गया इम भाखहो ॥ दु० ॥५॥ इति॥

गाळ ॥

१ रंग मांणो रे म्हांरा बेलियां ॥ ए देशी ॥

वात सुणो रे एक ज्ञानकी, छोडोनी रूढ अज्ञानकी ॥ वा० ॥टेर॥ शास्त्र प्रमांणे उचार करीजे, नही कीजे वात कछु मानकी ॥वा०॥१॥ स्याद्वाद मत श्रीजिनकेरो, न्याय सहित परमानकी ॥ वा० ॥२॥ रूढमती तो रूढको तांनें, मांनें न सीख गुणवानकी ॥ वा० ॥ ३ ॥ केईतरेका घोचा घाले, खबर नहीं जांनें जांनकी ॥ वा० ॥ ४ ॥ उत्सर्ग अपवाद अपेक्षा, खबर ना वचन विधानकी ॥ वा० ॥५॥ उत्सूत्र तो मनसूं थापे, आज्ञा उथापे वर्धमानकी॥वा०॥६॥ जीव बचायांमे पाप बतावै, वात उठावै दानकी ॥ वा० ॥ ७ ॥ कूड़ा चोज कुलिगी दिखावै, भूल बतावै भगवानकी ॥ वा० ॥ ८ ॥ जांकी सगत भूल न करिये, जो चाह करो रे निरवानकी ॥ वा० ॥ ९ ॥ मुनि राम कहे छे सूत्रही तारे, कै तारे संगत गुणवानकी ॥ वा० ॥ १० ॥ इति तेरे पंथियांकी चरचा समाप्त ॥

५ चरचा कालादिकनी ।

॥ गाहा सम्मत्तिसूत्रम् ॥

कालो १ सहाव २ नियइ ३, पुव्वकयं ४ पुरिस ५कारणे पंच । समवाए संमत्तं, एगंत होई मित्थत्तम् ॥ १ ॥

ढाळ ॥

१ कळकळ करती बोले छै नारी ॥ ए देशी ॥

कालवादी तो कालको मांनें, काल विना नही कोय जी; काल लब्धि पाके जीवा रे, सम्यक्त्वादिक सब होय जी ॥ १ ॥ पांच मांने सो ज्ञानी जगमें, एकांते अज्ञान जी; इसकी व्याख्या छै बहुतेरी, समझो तुमे बुद्धिमान् जी ॥ पां० ॥ २ ॥ काल पक्यां विन सम्यक्त्व नांही, कारण सबको काल जी; कार्य होवण हार बणे छै, काल विना नही थाल जी ॥ पां० ॥ ३ ॥ शिष्य पूछे छै काले नीपजै, क्यों अभव्य सम्यक्त्व नाह जी; बांझ नारी नही होय प्रसूता, इम समझो बोल अथाह जी ॥ पां ॥ ४ ॥ दूजो स्वभाव गुरु इम बोलें, अभव्य भव्य स्वभावजी; बांझ स्वभावे पुत्र न होवे, जलमें तिरे छै नाव जी ॥ पां० ॥ ५ ॥ शिष्य कहे जो होय स्वभावे, सम्यक्ति होवे सब भव्य जी; बांझ विना नहीं सब त्रिय जणती, जांको उत्तर कहो अब्वजी ॥ पां० ॥ ६ ॥ तीजो नियति कारण चेला, देव गुरु धर्म योग जी; भव्य सम्यक्त्व लहे भावी कारण, पुत्र न होय संयोग जी ॥ पां० ॥ ७ ॥ शिष्य पूछे भावी जो कारण, देव गुरु धर्म होय जी; बहू भव्य तो रस्ते न आवे, नहीं सके मिथ्यात्व खोयजी ॥ पां० ॥ ८ ॥ गुरु कहे पूर्व कृत छै चौथो, सात कर्मको जांणजी; दो से त्रीस कोटा कोटी सागर, स्थिति कही जग भाणजी ॥ पां० ॥ ९ ॥ यथा प्रवृत्ति करण आयो थो, अपूर्व करण नहीं आय जी; जिणसूं समकित भव्य न पांमे, किम धशो शिव नही जाय जी ॥ पां० ॥

॥ १० ॥ पुरूषाकार पंचमो चेला, पूर्ण थये निर्वाण जी; मुनि राम कहे पंच मांनें सो ज्ञानी, मूढ एकांत वखांण जी ॥ पां० ॥ ११ ॥ इति कालादिकनी चरचा समाप्त ॥

---

६ चरचा षट् मतनी–गीत ॥

१ देशी केरवानी ॥

चल जा कदर नहीं जांनी, कदर नहीं जांनी, धरलेनी ज्ञान निशांन ॥ च० ॥टेर॥ मत मिले नहीं एकसें रे॥मि० सब देखोनी वेद पुरांन ॥ च० ॥ १ ॥ शैवी तौ विष्णु मांनें नहीं रे ॥ वि० ॥ वैष्णव करैन शंभू वखांन ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ शाक्त विष्णु शिव ना गिने रे ॥ वि० ॥ देखोनी खांचातांन ॥ ३ ॥ नैयायिक कर्ता मांनही रे ॥क०॥ वेद्-पाठी न करत प्रमांन ॥ च० ॥४॥ मुनि राम कहे स्याद्वा-दकू रे ॥ क० ॥ अगी करो ज्यूं होय कल्यांन ॥ च० ॥५॥ इति षट् मतकी चरचा समाप्त ॥

७ चरचा मंदिरपंथीनी–सवैयो ॥

झट ही प्रवीन नर पटके वनाये कीर, ताही कीर देख कर बिल्ली हू न मारे है । कागजके कोर कोर ठौर ठौर नाना रंगे, ताही फूल देख दूर मधुकर छारे है ॥ चित्र-हूका चीता देख श्वान तासे डरे नांह, वनावट ईंटा ता-से पछीहू न पारे है । असल औ नकलको जांने राम पशू पछी, मूढ नर जांने नहीं नकल कैसे तारे है ॥ १ ॥

लावणी ॥

जीव हणीनें धर्म प्ररूपे, जिसका मुख होसी काला; वगवत्वाणी सुनिये प्रांनी, हिंसा धर्मका कर टाला ॥ जी० ॥ १ ॥ जीव हणे अरू हणवावे, हणतेकूं जांणे भल्ला, जिसकूं साधू मूरख मांने, समझू नहीं भेंटे पल्ला ॥ जी० ॥ २ ॥ श्रावक सात क्षेत्र धन खरचै, ऐसी झूठ कहे गल्लां, सूत्रकेरी शाख वतावे, खत प्रमांणे नहीं नकलां ॥ जी० ॥ ३ ॥ सात क्षेत्र धनकूं खरचो, भगवत इम नही फुरमावै; भृष्टाचारी परिग्रहाधारी, भोळा नरनें भरमावै ॥ जी० ॥ ४ ॥ कापडी हूयने राखे छड़िया, वळे ज राखे चपरासा; उण भृष्टीको संग न कीजै, सगतसें दुर्गति वासा ॥ जी० ॥ ५ ॥ रंडीकूं राखे पाखंडी, एकांते रेवे भेला; ऊंचा जांणेका हुकम नहीं है, उनकूं साधू कहे गेला ॥ जी० ॥ ६ ॥ साधू शुचि कुसाग्र जितनी, वायूकूं नही हणवावै; साधू नहीं वै भ्रष्टी कहिये, नोवत द्वारे बजवावै ॥ जी० ॥ ७ ॥ गृहस्थी साथे जल मंगवावै, उष्णोदक कही करवावै; दुर्गतिमांहे रूपसी झंडा, श्रावक पिण साथे जावै ॥ जी० ॥ ८ ॥ कनक कामिनीसे नही न्यारा, राम कहे सहु जांण लियो; फूटी नाव पर वैठै मूरख, जिणरो फूट गयो हीयो ॥ जी० ॥ ९ ॥ इति मंदिर पंथियांकी चरचा ॥

चरचा निश्चय व्यवहारनी—गाळ ॥

१ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

एही मत सारां सिरदार, मिटे न किणसूं होवनहार;

॥ टेर ॥ उत्थान कर्म बल वीर्य पुरषार्थ, नाहक उद्यम करे नर नार ॥ मि० ॥ १ ॥ पुरुपारथ करके केई प्रांनी, उलटी लेवे गलामें जाल ॥ मि० ॥ २ ॥ उद्यम कवि कीधो थो सर्प, मूपक भक्खके निकस्यो बार ॥ मि० ॥ ३ ॥ पुरुषाकार बलात्प्रयत्ने, भवितव्यनें कुंण धोवणवार ॥ मि० ॥ ४ ॥ नियति बलात् ते अवश्यही होवे, शुभ अशुभ अरु नानाकार ॥ मि० ॥ ५ ॥ महत्प्रयत्ने द्वारका दाहन, मेट न सक्यो कृष्ण मुरार ॥ मि० ॥ ६ ॥ कुंडरीक तपतो सहस्र वर्षको, खोय दीयो एक छिनक मझार ॥ मि० ॥ ७ ॥ मरुदेव्या कवि कीधो थो उद्यम, नर भव लही लशौ केवल सार ॥ मि० ॥ ८ ॥ नाहक उद्यम करे केई मूरख, अणहोणी कुंण करे रे जूंझार ॥ मि० ॥ ९ ॥ जोतसी अपनो इल्म दे आयो, लायो न सोवन सिद्धि प्रकार ॥ मि० ॥ १० ॥ रामचद्र कहे एकांत ए मत, निश्चै नहीं छे तारणकार ॥ मि० ॥ ११ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

सब शास्त्रनको एही सार, निश्चैसू मोटो व्यवहार ॥ टेर ॥ व्यवहार निश्चै गर्भित नय साते, प्रथम व्यवहार को कह्यो उचार ॥ नि० ॥ व्यवहार विना नहीं काज होत है, देखोनी तुमे आंख उघार ॥ नि० ॥ १ ॥ विद्या धन अरु गमन क्रियादि, उद्यम विना किम लहे फलसार ॥ नि० ॥ सर्प उद्यम भक्षनको कीधो, विन उद्यम किण कीधूं पार ॥ नि० ॥ २ ॥ कुंडरीक तप करत फल लगियो, नरक गयो व्यवहार विगाड ॥ नि० ॥ मरुदेव्या पिण भावना भावी, मुक्त हुवा छे कर्म निवार ॥ नि० ॥ ३ ॥ सिद्धि न लायो इल्म दे आयो, पूरव

उद्यम फल्यो सहकार ॥ नि० ॥ तुं बोले छै लिखियो होसी, तो किम मांड रह्यो व्योपार ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताला कूंठा क्यूं भूतल गाडे, धन आडा क्यूं जडे किवाड़ ॥ नि० ॥ निश्चै लिखियो कहो कित जासी, थैल्यां धरदे घरके बार ॥ नि० ॥ ५ ॥ बादर करके मेघही वर्षे, ज्यूं निश्चै पिण उद्यमके लार ॥ नि० ॥ नियत बलात् पिण व्यवहार अग्रे, जिसमें सारा लेवो विचार ॥ नि० निकांचित रस मंद होत है, जो साचो उद्यम करे दिल धार॥नि०॥ निकांचित कर्म टळे एक छिनमें, क्षपण श्रेणि जब चढे नरनार ॥ नि० ॥ ७ ॥ निश्चै लिखी जय मुक्ति होयगा, करे कुंण करणी विविध प्रकार॥नि०॥ एक निश्चै मांनें कोई मूरख, उलट पुलट सब होवे संसार ॥ नि० ॥ ॥ ८ ॥ सात प्रकारे आयु घटत है, जोवो ठाणांगसूत्र मझार ॥ नि०॥ गाय भैंसको नहि घर धींणे, दुग्ध दहि घृत खावै मंजार ॥ नि० ॥९॥ वीर प्रभूजी ओपद लीधो, व्यवहारनें रखियो मुखत्यार ॥ नि० ॥ व्यवहार निश्चै दोय जैनी मांनें, स्थान प्रधान कथंचित् धार ॥नि०॥१०॥ वचन सापेक्षिक सब ही ठौरे, गौण मुख्यको करो निरधार ॥ नि० ॥ *राम मुनि कहे गुरु गम धारो*, नय प्रमांणे करोनी उच्चार ॥ नि० ॥ ११ ॥ इति व्यवहारस्य प्रधानत्व ख्यापनम् ॥ इति निश्चय व्यवहारनी चरचा समाप्ता ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-
चरचानामकं अष्टमं प्रकरणम् ॥ ८ ॥

नेमनाथ-चरित्र ॥

१ सिलोको ॥

सद्गुरू कृपा करजो जी हमसे, नित निल पाये लागुं जी तमसें; केसू सिलोको नेमजीकेरो,सुणतांई होवे काज भलेरो; नगरी द्वारामती कृष्ण वसाई, जादवांकेरी चढती पुन्याई; सोनेकी नगरी अद्भुत दीपे, क्षिणमे तो वेरी जादव जीपे ॥१॥ एक दिवस श्रीनेम कुमारो, आये शस्त्र शालामे साथीड़ा लारो; शख वजवायो धनुष्य चढायो, सुणतांई शब्द कृष्ण थररायो; श्रो राज लेवे जो नारी परणाउं,परणे नहीं परणे निश्चै करवाउं; राजिमतीनी कीधी सगाई, छपने कोड़सूं जांन वणाई ॥ २ ॥ हाथी पर शोभे नेम जिणंदो, अधिका तो शोभे तारांमे चंदो; नर नारीका मिलिया वहु वृंदो, घर घरमे होवे अधिक आनदो;पशुवांसू वाडो दीठो जी भरियो,छोडी पशुवांने उपगार करियो; तोरणसूं पाछा प्रभुजी वळिया, राजिमतीरे आंसू जी ढळिया ॥ ३ ॥ सखियां थे जावो नेम मनावो, अध परणी छोटयां शोभा नहीं पावो; सखियां तो बोले नेमजी काळा, दूजा थे परणो रूप रसाळा; राजिमती बोली सखियां थे गेली, इण भवमे म्हारे प्रभुजी वेली; संजम लेस्यां भवोदधि तरस्यां, निर्मल भावांसूं किरिया जी करस्यां ॥ ४ ॥ सातसो सखियां थई छे लारी, मारगमे वर्षा थई छे भारी; गुफा मध्य आई थई उघाडी, रहनेमि मुनिको दिया सुधारी; प्रभुजी पासे सजम धारी, प्रभुजी पेली मुक्ति पधारी; समत उगणीसे इगतीसे साल, मेनसरमे जोड्यो शेषे

जीकाल ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे छै जेठ महीनो, वद पक्ष और एकादशी दीनो; सुणे सुणावे जे नर नारी; ज्यांरो तो होवे खेवो जी पारी ॥ ६ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ मत ताको नार विरानी ॥ ए देशी ॥

सूरज वारमें सूरज पूजूं, जो मिले नेम दुलारी; जो नहीं नेम मिले इण भवमें, तो नहीं पूजूं दूजीवारी; स्यूं करे कहोनी पुजारी; सुणिये सखि वात हमारी, पिउ मिले सो सुधवारी ॥ सु० ॥ १ ॥ चंद्र वारमें चंद्रमुखि कहे, मेळो मुज भरतारी; थारी सेवा निश दिन करसं जो आवे नेम कुमारी ॥ सु० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल गासां, जो पूगे मन आसा री; नहींतर जंगल मंगल गासां, सुणसी वहु नर नारी; कहे इम राजुल हारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ बुद्ध वार सखि बुध एक उपजै, जो आवे दिल तुम्हारी; अरजी लिख भेजां साहबकूं, विचमें र-क्खो मुरारी; मिटे सखि वात मोसारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु वार सुर गुरु खरो जो, आवे प्राण आधारी; हिल मिल वात करूं दिल खोली, तेल चढी किम छारी; सीखी ए रीत कठारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ शुक्र वारमे वात करत हीं, संकत दुनिया सारी; म्हारी सार करे पिउ म्हारो, तो मानूं तुज उपगारी; जपूला माला थारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ थावर वारमें मन थिर कीधू, धन धन राजुल नारी; रामचंद्र कहे नेम जिनेंदसू, पेली मोक्ष पधारी; वळी रह नेम सुधारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

गीत ॥

१ पनजी थांरो माथारो डुंमालो फूलांहंदो भारो जी ॥ ए देशी ॥

जिनजी थांरे दर्शनरी बलिहारी, वारी जाऊं थांरी जी, जिनवरजी वारी जाऊ थांरी जी प्रभू म्हांरा ॥ जि०॥ थे तो सेवादेजीरा नंदा, समुद्र विजय कुलचदा जी ॥जि० १ ॥ जि० ॥ पशुवनकी करुणा कीधी, दीक्षा शुद्ध लीधी जी ॥ जि० ॥ जिनजी थांने राजीमति वंदन आवे, रह नेमि समजावे जी ॥ जि० र० प्र० ॥ २ ॥ जिनजी दोनूं शुद्ध मन कीधी किरिया, भव सागरथी तिरियाजी ॥ जि० भ० प्र० ॥ जिनजी थे तो भव्य जीवांने तार्‍या, आतम कारज सार्‍या जी ॥ जि० आ० प्र० ॥ ३ ॥ जिनजी थे तो राजीमतिनें तारी, अब छे म्हांरी वारी जी ॥ जि० ॥ जिनजी दीजो भव भव सेवा तोरी, मुनि राम कहे कर जोरी ॥ जि० मु० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ देखो मोरी सहियां हे, राजा तखतसिंघजीरी गिणगोर ॥ ए देशी ॥

देखो मोरी सहियां हे, राजा समुद्रविजयजीरो नद; देखो मोरी सहियां हे, बाई राजमतीजीरो कंत ॥ टेर ॥ सखि सोभे जादव मुख जिम चद, देखो रूप सुरतरुनो जिम कद ॥ दे० ॥ १ ॥ देखे थांने नर नारीका वृंद, निरखे थांने सोहम ईसाणंद ॥ दे० ॥ २ ॥ प्रभुजी सोभे जिम तारांमे चद, बाजू सोभे मुकुद ने गोविंद ॥ दे० ॥ ३ ॥ तोरण देखे पशुवनकेरा बंध, मेल्या प्रभु सकल

जीवारा फंद ॥ दे० ॥ ४ ॥ मुनि राम वंदे धरनें आनंद, करुणानिधि तारो भव समंद ॥ दे० ॥ ५ ॥ इति ॥

३वांस मंगावो हो वगड़ीका च्यार गाघर घूंमेलो ॥ ए देशी ॥

आ नही जांणे हो जादवकी जांन, जादव रूसेलो; मैं नही जाण्या हो जांनी नादांन॥जा०॥नहीं जांणी हो क्यूं तोडी तांन ॥ जा० ॥ नहीं जाणी हो कीयो कूडो सामांन ॥ जा० ॥ १ ॥ जांनी वणिया हो गोपाल मुकुंद ॥ जा०॥ देखण आया हो नर सुरका वृंद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो कूडो रचियो फद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो फिरे नेम जिणंद ॥ जा० ॥ २ ॥ जांन आई हो तोरणकी पोल ॥ जा० ॥ नहीं पाई हो जादव मन तोल ॥ जा० ॥ घर जावे हो क्यूं करणी ए रोळ ॥ जा० ॥ नही आवे हो पाछी एह छोळ ॥ जा० ॥ ३ ॥ ऐ कुंण कैसी हो जादवनें जाय ॥ जा० ॥ ऐ कुंण दीधा हो जादव भरमाय ॥ जा० ॥ म्हे लेसां हो संजम सुखदाय ॥ जा० ॥ नहीं रही हो म्हांरे तिल भर चाय ॥ जा० ॥ ४ ॥ सती लीधो हो संयम शुद्ध धार ॥ जा० ॥ सब सखियां हो थई जिणके लार ॥ जा० ॥ मुनि राम हो वंदे वारंवार ॥ जा० ॥ धन्य प्रभुजी हो धन राजुल नार ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ बामणका नंद लाला, तुझे पिलाऊं रंग भर प्याला ॥ ए देशी ॥

जादवका नेमि लाला, मुझे पिलावो अनुभव प्याला; अनुभव पर झुकतो, मुक्ति पथ रमतो, लागी ताळी; ते

प्रीतम आंटी घाली; आंटीको नाम तो खोलो ख्याली; राजीमति वंदन चाली ॥ टेर ॥ जादवका नेमि लाला, रेखा हुवे तो धोय लूं॥ जा० ॥ कर्म न धोया जाय ॥ जा० मु० जा० ॥ और रूठो तो मनाय लूं॥ जा० ॥ पिण प्रभू न रूठो मनाय ॥जा०मु०अ०मु०ला०ते०आं०रा०॥१॥ जादवका नेमि लाला, गैणो तूटो तो घड़ाय लू॥ जा०॥ प्रीत न जोरे जुड़ाय ॥ जा० मु० जा० ॥ मन मोती तौ ना जुड़े ॥ जा० ॥ लाख जो करिये उपाय ॥ जा० मु० अ० मु० ला० ते० आं० रा० ॥ २ ॥ जादवका नेमि लाला, थे तो छोडी मुजभणी ॥ जा० ॥ मै छोड्यो संसार ॥ जा० मु० जा० ॥ पच मुष्टी लोचन कीधो ॥ जा० ॥ लीधो संयम भार ॥ जा० मु० अ० मु० ला० तें० आं० रा० ॥ ३ ॥ जादवका नेमि लाला वर्षा वरसी माणे ॥ जा० ॥ श्री नेम वंदननें जाय ॥ जा० मु० जा० ॥ रह-नेमिने तारियो ॥ जा० ॥ मुनि राम वदे तोरा पाय॥जा० मु० अ० मु० ला० ते० आं० रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ बांमणका आठ कूवा नव वावड़ी ॥ ए देशी ॥

जादवका आठ भवांरी पीतड़ी, जादवका नवमे दी छिटकाय, जिनरायाजी, एकरसा घर आवजो रे ॥जा०॥ तेल चढी किम छोडीये ॥ जा० ॥ किण दीया थांनु भर-माय ॥ जि० ॥ १ ॥ जा० ॥ इण भव थांसु पीतडी ॥ जा० ॥ बांधी मैं एकतार ॥ जि० ॥ जा० ॥ मन कर अवर वछू नहीं ॥ जा० ॥ इण भव तूं भरतार ॥ जि० ॥ २ ॥ जा० ॥ सखी सहेली भेळी थई ॥ जा० ॥ कैसी मुं मचकोड़ ॥ जि० ॥ जा० ॥ राजुल तजी किम नेमजी

॥ जा० ॥ होसी कांई एक खोड़ ॥ जि० ॥ ३ ॥ जा० ॥ कतयारीरा सूत ज्यूं ॥ जा० ॥ ज्यूं तूटे ज्यूं जोड़ ॥ जि० ॥ जा० ॥ विगर गुन्हे किम छोडिये ॥जा०॥ जूनी ममत मत तोड ॥जि०॥४॥जा०॥ एक पखी स्यो पीतड़ी ॥जा०॥ एक स्यो पूलमें पूत ॥ जि० ॥ जा० ॥ एक स्यो आंखमें आंखड़ी ॥ जा० ॥ इम मन कीधो थिरभूत ॥ जि० ॥५॥ जा०॥ लोच कीयो सवेगसूं रे ॥जा०॥ लीधो संयम भार ॥ जि० ॥ जा० ॥ रहनेमी प्रतिबोधनें ॥ जा० ॥ पहुंती गढ गिरनार ॥जि०॥६॥जा०॥ पिउ पेली गई मोखमें ॥ जा०॥ धन्य धन्य राजुल नार ॥ जि० ॥ जा० ॥ रामचंद्र आनंदसं ॥ जा० ॥ वंदे वारंवार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

६ हां रे लाला भाभी कहे सुण सुंदरा रे, हां रे म्हारे आंगणिये होद खिणाय रे, हूं तो घर बैठी घड़ला भरूं रे; हां रे म्हारे पिण घटजाय रे वलाय, काजळियो कड़वा तेलको रे ॥ ए देशी ॥

हां रे लाला सखी कहे सुण सांमनी रे, हां रे म्हारे नेमजी २, न आया कछु दाय रे; थांनें और परणावसां रे, हां रे इण कपटी २, नें छुरे रे वलाय रे; सांवारियो कपटी नीसर्यो रे, हां रे थांरा भाई २, सहू दगादार रे; और काळी सूरत नेमकी रे ॥ सां० १ ॥ हां रे लाला राजीमति सती इम कहे रे; हां रे म्हारे इण भव २, नेमि भरतार रे; हूं और वर चाहूं नहीं रे, हां रे थे तो सखियां२, मूढ गिवॉर रे; सांवारियो हां रे सांवारियो मोरे मन वस्यो रे, हां रे जांरी सूरत देखण चाय रे; वांरी सूरतरो नहीं आदमी रे ॥ सां० ॥ २ ॥ हांरे लाला सखी

कहे आपां तेहनो रे, हांरे कांई गुन हो २, नहीं रे कराय रे; क्यू गये तोरन आयने रे, हांरे म्हांरे मनको २, भर्म न जाय रे ॥ सां० ॥ ३ ॥ हां रे लाला राजीमति पाछो कहे रे, हांरे सखी मत रखो २, भर्म लगार रे; सती सुयम लीयो कर्म तोड़िया रे, हांरे मुनि राम२, वंदे वारंवार रे; सांवरियो मोरे मन वस्यो रे ॥ ४ ॥ इति ॥

७ गूजर आठ कूवा नव वावड़ी, हे गू० सोले से पणिहार, गूजर हे हवादार गूजर, म्हांरो मैहलांरो मेवासी, छेलो तैं मोह्यो; म्हांरो मैहलांरो कमधजियो, ढोलो तैं मोह्यो ॥ ए देशी

सखियां आठ भवांरी पीतड़ी हे ॥ स० ॥ नवमो भव थयो एह, नेमजी हे दगादार नेमजी, म्हांरो प्राणांरो पियारो, साहिब किम रूठो हे; म्हांरो नव भवको प्यारो, किम रूठो॥ टेर ॥स०॥ वसु भवमें नही आंतरो हे॥स०॥ नवमे किम दीयो छेह ॥ ने० ॥ १ ॥ स० ॥ जाती सुमरन मुझ थयो हे ॥ स० ॥ जांणू पूरव वात ॥ ने० स० ॥ मुझ मुख देखी जीमता हे ॥ स० ॥ रहता साथका साथ ॥ ने०॥२॥ स०॥ दोस देऊ किम औरने हे ॥स०॥ म्हां रे पुन्नांरी वात ॥ ने०स० ॥ रतनाकर रतने भर्यो हे ॥स०॥ मींडक लागे हाथ ॥ ने० ॥३॥ स० ॥ नेमजी छोडी विन कारणे हे ॥ स० ॥ हु तो रक्खू ओही रग ॥ ने० स० ॥ राम वदे कर जोड़नें ॥ स० ॥ कीयो मुगतको सग ॥नेमजी हे दगादार, नेमजी म्हांरे प्राणांरो पीयारो साहिब; किम रूठो हे, म्हांरे नव भव० ॥ ४ ॥ इति ॥

८ देशी गूजर तथा अलबेल्यानो ॥

सरसत सारद विनवूं हे, गणधर लागूं पाय हे सहीहर, म्हे श्रीनेमजीनें वांदसांरे लाल; तोरण आय फिर क्यूं गये हे, दीना लोक हसाय हे सहीहर ॥ म्हे० ॥ १ ॥ वैर निकाल्यो कोई भवतणो रे लाल, जिणरी खबर न काय हे ॥ स० म्हे० ॥ २ ॥ वडा कुलके आदमी हे, करे विचारी काम हे ॥ स० ॥ विगर गुने मुजनें तजीरे लाल, क्यूं कीवी मुज वदनाम हे ॥ स० ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ मेरा मनमें ए वसी हे, मैं क्यूं लीयो जग अवतार हे ॥ स० ॥ कलंक दीयो क्यूं मोभणी रे लाल, प्रभु गयो गढ गिरनार हे ॥ स० म्हे० ॥ ४ ॥ लेऊं फकीरी नेम नामकी हे, नां रहूं घरके मांय हे ॥ स० ॥ वन जाऊं व्रत लेयनें रे लाल, अब नहीं रखूं किसीकी चाय हे ॥ स० ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ सखी कहे बाई सुणो हे, म्हे पिण तजसां आथ हे ॥ स० ॥ मुनि राम कहे धन जेहनें रे लाल, करे धर्मको साथ हे ॥ स० म्हे० ॥ श्रीनेमजीनें वांदसां लाल, करसां सफल जमार हे ॥ स० म्हे० क० म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

९ नैंणां छाई म्हांरा राज भांगड़ली, घुळ रही म्हांरा राज भांगड़ली, एक रुपैकी ढौला भांग मंगाऊं ॥ ए देशी ॥

तुम सुनो महाराज वीनतड़ी, म्हांरी मांनो महाराज वीनतड़ी, अवधारो म्हांरा राज वीनतड़ी, गिरनारी न पधारो म्हांरा राज वीनतडी, पाछा पधारो म्हांरा राज वीनतडी ॥ टेर ॥ तोरनथी क्यूं पाछा पधारे २, माखी

नहीं मुळको मारे, ॥ म्हा० ॥ मुझनें कीवी प्रभु आश निरासी, दूजू सखी करै मोरी हासी ॥ म्हा० ॥ १ ॥इसो गुनो तो जांणां म्हे नहीं कीनो, क्यूं पशुवन शिर दोष दीनो ॥ म्हा० ॥ तोरन लग किम निकमा आये, क्यूं जग लोक हसाये ॥ म्हा० ॥ २ ॥ सखियां कहै बाई आंसू क्यूं डारो, अब तुम छोडोनी नेमको लारो ॥ म्हा० ॥ कपटी नरका क्या विसवासा, छिन छोड चले न गिने वनवासा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ नव भवकेरी देखो प्रीत क्यू तोडी, एक भली सो विन परणी छोडी ॥ म्हा० ॥ जनम निभाऊ रूपको साऊ २, वनडो आछेसे आछो वताऊं ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ राजीमती कहै सखी दूजो न वरसूं, प्रभुके लारे लारो करसूं ॥ म्हा० ॥ सयम लेसां भव जल तरसां, प्रभुके लार विचरसां ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजीमती सती मुक्ति पधारी, मुनि राम कहे जाऊ वलिहारी ॥ म्हा० ॥ इण रीते धन्य प्रीत निभावे, सो क्यूं नहीं मुक्त सिधावे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति ॥

१० आवोजी मुसाफर, वैठोजी मुसाफर, को थांरे मनकी वातां है; सांवरी सूरत पर कांई कांई वारूं, जो वारूं सोई थोरा है; हीरा वारूं जुहारा वारूं, और मोतियनकी माला है ॥ ए देशी ॥

तुमे जावोजी सहेली, लावो जी जादवकू, करो जांके मनकी वातां है; जादव जांन तो खूव लजाई, मनमां हे राता माता है; सांवरियाजीने देऊ उलभा, ज्यू देऊं ज्यूंई थोरा है; ओलभा दे दे हूं तो हारी, प्रभुजी थये

कठोरा है ॥ टेर ॥ एक अचंभो आवे मोरी सजनी, क्यूं ए जान वणाई है; लाजन आई फिर क्यूं भागे, नीचा जोवे जांके भाई है॥सां०॥२॥ थे तो मोरी वातां सुंणीजो प्रभु लीधा संजम भारा है; हूं प्रिण संजम धारूं मोरी सजनी, कहो स्यूं तोरा विचारा है ॥ सां० ॥ ३ ॥ सातसे सखियां थई तिण संगे, रहनेमी प्रतिबोध्या है; राम मुनी तौ सीस नमावे, सती गई शिव जोग निरोध्या है ॥ सां० ॥ ४ ॥ इति ॥

११ देशी कुंजेरी ॥

लावो लावो नेमजी मनाय रे, हे म्हांरी सखी सहेली ॥ ला० ॥ तोरणिये आयोडो सायबो किम गयो रे, बुलवाय दे बुलवाय देरे; तेरा पग पूजूं रे बुलवाय दे; वावारे नेम प्रभु म्हांरो, हां है यादूपति म्हांरो, सांवरो रूठ चल्यो रे, किण काज चल्यो रे, वावारे ॥ टेर ॥ वांके म्हारे अष्ट भवरी प्रीतरे ॥ हे म्हां० वांरे० ॥ नवमां भवमां छेह दीयो रे, नहीं जांणूं नहीं जांणूं, आंटो किम पड्यो रे; नही जांणूं वावारे ॥ ने० ॥ २ ॥ सोहे सोहे नेमजीरो रूप रे ॥ हे म्हां० सोहे० ॥ इण रे जोड़े तो जुगमे ना जुड़े रे; सारा जगमें,सारा जगमे, जोयो ना जुडे रे, सारा जगमें ॥ वावारे ॥ ने० ॥ ३ ॥ आई आई चौमासारी रैण रे ॥ हे म्हा० आई० ॥ कंत विना कैसी कामनी रे; नहीं रैसूं नहीं रैसूं रे, न संजम लेवसूं रे; नहीं रैसूं वावारे ॥ ने० ॥ ४ ॥ लीधो लीधो संजम भार रे ॥ हे म्हा० ली० ॥ केवल लही ने शिव गई रे, थांने वंदे थांने वंदे रामचंद्र मुनि रे, थांने वंदे वावारे ॥ ने० ॥ ५ ॥इति ॥

१२ उदिया पुरसूं वीजड़लो मंगाय, हो म्हांरी जोड़ी राहो ढोलाजी, आंणने रे वुहावो आ कमधजियांरी कोटड़ी रे म्हांरा राज ॥ ए देशी ॥

हे द्वारा पुरीसूं जांनड़ली वणाय, हे म्हांरी जोड़ीरी हो सहियां; जांनी रे माधवसा आ कुमी नहीं किण वातरी रे म्हारा राज;प्रभुजी रे पासे, जलदी कुंण जाय, हे म्हांरी मन गमती हे सहियां, लावे दिलरी रे वातड़ली, आ आवे पत्री हाथरी रे म्हांरा राज ॥ १ ॥ हे जोसीड़ाने वेग वुलाय ॥ हे० ॥ टीपणियो रे फड़ावो, ओ खोटो मोरत क्यूं दीयो रे म्हांरा राज; जोसीड़ाने कैदड़ली कराय ॥ हे० ॥ भूंडो रे जोसीड़ो ओ जन्म म्हारो विगाड़ियो रे ॥ म्हा० २ ॥ पशुवांसूं वाड़ो जी भराय ॥ हे० ॥ पथमे रे कुण राख्या, भाख्या कुंण, ए मारसी रे म्हांरा राज; मिनखरी दया नही कांय ॥ हे०॥ परणीने रे छिटकावे तो पावे शोभ अपारसी रे ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ नहीं तो म्हारो कछु प्रभु जोर ॥ हे० ॥ मुक्ति रे जावणसूं ओ दिल अव म्हारो ऊलस्यो रे ॥ म्हां०॥मुनि राम वदे कर जोर ॥ हे० ॥ प्रभुनारे गुणगातां, सीस नमावतां, दिल वस्यो रे म्हांरा राज ॥ ४ ॥ इति ॥

१३ चतुर गौरीनें माछर खायो जी राज ॥ ए देशी ॥

सहियां कहे राजुल सुणो, वाईजी, काळो नेम कुमार, वाईजी, काळो मोरा नेम कुमार, हठीला नेमजीनें पाछा लावो जी राज; वैरागी नेमजीने जाय मनावो जी राज ॥ दाय न आयो मांहरे जी वाईजी, दूजो वरो भरतार, वाईजी मोरा ॥ दूजो० व० ॥ १ ॥ काळो का-

ळो कांई करो हे सहियां, थे तो मूढ गिवॉर; सहेल्यां मोरी थे तो ॥ ह० ॥ अनंत रूप रळियामणो हे सहियां, तीन भवनमें सार; सहेल्यां मोरी ॥ ती० ॥ ह० ॥ २ ॥ जो परणूं तो नेमनें हे सहियां, नही तो अकन कॅवार ॥ स० नही० ह० ॥ लो क्यूं आया ने क्यूं गया हे सहियां, इणरो कवन विचार सहियां ॥ इ० ह० ॥ ३ ॥ वार वार थे स्यूं कवो हो, वाईजी, पूछ कियो निरधार; वाईजी मोरा ॥ पू० ह ॥ वरसीदान देई करी हो, वाईजी; लेसी संजम भार ॥ वा० ले० ह० ॥ ४ ॥ नेम प्रभु संजम लीयो है सहियां, सुणियो राजुल नार सहियां, ॥ सु० ह० ॥ सातसे सखी संग लेईनें हे सहियां, पौती गढ गिरनार सहियां ॥ पौं० ह० ॥ ५ ॥ रहनेमी प्रतिबोधने हे साहियां, सारया आतम काज सहियां ॥ सा० ॥ रामचंद्र मुनिवर कहे हे सहियां, पांम्यो त्रिभुवन राज सहियां ॥ पां०ह० ॥ ६ ॥

१४ देशी पन्नारी ॥

श्री नेम प्रभूजी, धोको एक मारे जी अपार, अरजी सुंण लीजे कांई रे दिल आई, हे जगत हसाई क्यूं करी रे, म्हांरा राज ॥ टेर ॥ गुणवंती राजुल, धोको मति राखो जी लिगार, म्हांने आंण गळारी मुगती रे जावासूं, मनसा दृढता म्हे धरी रे ॥ म्हां० ॥ १ ॥ छेवा मुक्ति धूतारी नार ॥ अ० ॥ राखेला विलमाई, सो आऊं देखण तेहने रे ॥ म्हां० गु० ॥ देखण आवो जी म्हांरी लार ॥ थांनें० ॥ दोनूं रे देखेस्यां, हे हिलमिल आपां जेहने रे, म्हांरा राज ॥ २ ॥ श्रीने० ॥ थेईज चाल्या जी म्हांने छोड ॥ अ० ॥ म्हे पिण जी आवां छां, हे कां छां मन साचले रे ॥ म्हां० गु० ॥ राग द्वेष बध तोड ॥ थां०॥

पीतडली रे निभास्यो, तो रेस्यो नहीं पाछले रे ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ श्रीने० ॥ तारी तारी राजुल नार ॥ हे अ० ॥ जादवकुल रे उधारयौ, सारयौ कारज आपरो रे ॥ म्हां० गु० ॥ राम वंदे जी वारंवार ॥ हे थां० ॥ गैलो रे छुडावो, जलदी पैंडो पापरो रे म्हां० ॥ ४ ॥ इति ॥

१५ पाळ चढंतां जी राज, रावजी म्हांरो भरियो माट उठाय जी हो मेड़तिया जी राज, हो लशकरिया जी राज, नींबू थे लाज्यो राज, रस भरियो ॥ ए देशी ॥

प्रभु थे सुणजो जी राज, वीनती म्हारा मनका भर्म मिटाय, जीहो मांवरिया जी हो राज, हो केसरिया जी राज, पत्र थे दीज्यो राज, रग भरयो ॥ टेर ॥ चूकथे वतावोजी राज वेगसूं, नहीं तो जीया बहु घवराय जीहों सां० ॥ १ ॥ जीहो बाईजी राज क्यूं घबरावो जी राज, वाट क्यू हेरो जी राज पत्रकी ॥ टेर ॥ सखियां तो बोले राज प्रेमसू, किसा वैर कीया जादूनाथ जी हो ॥ बाई०॥ ऐ तो जनमका कपटी जी नीकळया, गई जादवांकेरी वात, जी हो बा० ॥ २ ॥ जाणूं सासूजीरे पाये लागसू, देखण सासरियेको कोड ॥ जी हो सां० ॥ जांणू नणदी बाईसू बोलसूं, आप कर दीवी तोडातोड ॥ जीहो सां० ॥ ३ ॥ जिसांरी जिसी होवे राज मायडी, जिसांरी जिसी होवे छै जी वैन ॥ जी हो बा० ॥ पिण विन परणीने छोडता, वरत्या छै अधिका चैन ॥ जी हो बा० ॥ ४ ॥ सब प्रतिबोधी राज राजीमति, विन परणी संयम लेइ

॥ जी हो सां०॥ मुनि राम वंदे जी राज प्रेमसं, छूं उत्तम मुनि पग खेह ॥ जी हो सां० ॥ ५ ॥इति॥

१६ ढोला जी थांनें ढोलो जी कहूं क गाडा मारूजी; लशकरिये कै वतलाऊं राज वालम रसियो ॥ ए देशी ॥

प्रभुजी थांनें कपटी कहूं कै धूताराजी; कांई कह वतलाऊं, राज दिल वसियो; जादवजी थे तो दगाबाजीसें नहीं न्यारा जी, क्या दिलकी वात सुणाऊं राज ॥ प्र०॥ ॥ १ ॥ प्रभुजी थे तो कपट सीख्या किण साथे जी, क्यूं झूठो दोष दीनो राज ॥प्र०॥ थे तो पत्र दीजो लिख हाथे जी, कांई गुनो हम कीनो राज ॥ प्र० ॥ २॥ जादव देखो कपटसें कपट कीजे जी, विन कपटीसें कपट न आछो राज ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मोह तजीजे जी, तो पुनरपि नावे पाछो राज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ कह गये राजन कह गये जी, कर गये आश निराश ॥ ए देशी ॥

फिर गये जादव फिर गये जी, कर गये आस निरास; सिर वदनांमी दे गये जी, कांई सखियां कर रही हास जी; नींद न आवेजी, लख भेजू, ओळूं थांरी आवेजी, जायर कहो जो वेगा घर आवेजी ॥ टेर ॥ ऐसा कपटी न जांणिया जी, निकले कपटके पूर; ऊपर प्रेम दिखावनें, कांई पछै उडावे धूर जी ॥ जा० ॥ १ ॥ क्यूं हँसाये लोकनें जी, क्यूं लाडा वण्या निशंक; क्यूं तोरण लग प्रभु आविया, क्यूं कूडो दीयो कलंक जी ॥ जा० ॥ २ ॥

जो जन्मके कपटी जांणती जी, तो कदेय न करती प्रीत; रीत न रक्खी प्रीतकी जी, निकमी करी फजीत जी ॥ जा० ॥ ३ ॥ मै प्रीत करी छै आपसूं जी, जिणमें न पडजो भंग; मुनि राम कहे धन्य राजमती जी, राख्यो किरमची रंग जी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१८ कायथका म्हारी अरजी सुन लीजो, काढ कमरमें सूं द्वात कलम म्हारी सूरत लख लीजो ॥ ए देशी ॥

नेम म्हांरी अरजी सुन लेना नाथ मे० ॥ श्याम मे० प्रभुजी मे० ॥ मुज औगुन जो कछु भी देखा सो, पत्री लिख देना ॥ टेर ॥ मुज औगुन जो देखिया स कांई; पत्री दीजो मांड ॥ प्र० ॥ तोरणसूं रथ फेरने स कांई, क्यू जगमे कीनी भांड ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ १ ॥ जरा औगुन मुज देखिया स कांई, पत्री दीजो अब्ब ॥ ॥ प्र० ॥ सो छाडू एक श्वासमे स कांई, सुन लीजो कहूं सब्ब ॥ ने० ॥ २ ॥ निकलंक कलंक लगावसो स कांई, छो तुम दीन दयाल ॥ प्र० ॥ पूकारू किण आगले स कांई, किसकूं काढूं गाळ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ३ ॥ पत्री न देचो हाथकी स कांई, वात सुणो एक नाथ ॥ प्र० ॥ तुम निर्मोही हो रहे स कांई, हम नहीं छोडां साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ४ ॥ साथे सखियां लेयने स काई, चाली छै गिरनार ॥ प्र० ॥ प्रीति निभावा कारणे स कांई लीधो संयम भार ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ५ ॥ एक पक्षी प्रीत रक्खू स कांई, लखूं जु दिलकी वात ॥ प्र० ॥ राम मुनि वंदे चरणने स कांई, कीया मुक्तिका साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ६ ॥ इति

१९ जवांई धोवे धोतियाजी ॥ ए देशी ॥

हांजी नेमजी बावीसमां जिनराज,आय रथ वालियोजी जिनराज॥आ०॥हां जी नेमजी,राजुल सखियांमांय,सुणी नेम सालियो जी॥जि०सु०जि०॥१॥हांरे वाला,राजुल कहे सखि केम, नेम पाछा रह्या जी ॥ जि० ने० ॥ हांजी प्रभुजी, पशु पंखियन सिर दोष, देई पाछा गयाजी ॥ जि० दे० ॥ २ ॥ हां रे सजनी, वर्षे नैंणे जल धार, वार विना माछळी जी ॥ जि० वा० ॥ हां रे सजनी, इण अवसर मुज छोड, तोड़ प्रीत पाछली जी ॥ जि० तो० ॥ ३ ॥ हांजी नेमजी, हूं तो मनमें हूंस, सारी मनमें रही जी ॥ जि० सा॥ ॥ हांजी नेमजी, सुख दुख दिलरी वात, नाथ मैं तो ना कही जी ॥ जि० ना० ॥ ४ ॥ हां० ॥ सो देखी मुजमें खोड़, तेल चढी छोड दीजी ॥ जि० ते० ॥ हां० ॥ नव भवकेरी प्रीत, छिनकमांहे तोड दीजी ॥जि० छि० ॥ ५ ॥ हां० निपट कपटरी खांन, राज थांनें जाणिया जी ॥ जि० रा० ॥ हां० क्षत्री वंश शिर ताज, आछां थांसूं वांणियां जी ॥ जि० आ० ॥ ६ ॥ हां० ॥ नैणां नावे नींद, जादू जादव कीयो जी ॥ जि० जा० ॥ हां० ॥ जिम जिम आवो याद, फाटे तिम तिम हीया जी ॥ जि० फा० ॥ ७ ॥ हां० ॥ मुक्त धूतारी नार, भरमाया थांने कोडसूं जी ॥ जि० भ०॥ हां०॥ हूं पिण आसूं लार, पलो नहीं छोडसूं जी ॥ जि० प० ॥ ८ ॥ हांजी हीवें, बावीसमा जिनराय, जाय गिरवर चढ्या जी ॥ जि० जा० ॥ हां जी जिनजी, लीयो संजम सुख दाय, धाय कमसूं अड्या जी ॥ जि० धा० ॥ ९ ॥ हां० ॥ सुणियो राजुल एम, नेम संजम लीयो जी ॥ जि० ने० ॥ हा जी

प्रभुजी, उलट्यो अंतर प्रेम, तेम लोचन कीयो जी ॥जि० ते०॥ १० ॥ हां० ॥ बहु सखियां परिवार, लार ले नीसरी जी ॥ जि० ला० ॥ हां०॥ चाली गढ गिरनार, तार लागी झरी जी ॥ जि० ता०॥११॥ हां०॥ वरसण लागो नीर, चीर भीजे गयो जी ॥ जि०ची०॥ हां०॥ गुफा नेम जिनन्दनो वीर, धीर सती कीयो जी ॥ जि०धी० ॥ १२ ॥ हा०॥ राजुल वाद्या है नेम जिनद, आनंद मनमे सती जी ॥ ॥जि० आ० ॥ हां० ॥ काट कर्मना फंद, गई शिव राज मती जी ॥ जि० ग० ॥ १३ ॥ हां० ॥ उगणीसे निधि मधु मास, वास जालोरने जी ॥ जि०वा० ॥ हा० ॥ गाया जिन गुण ग्राम, राम कर जोरने जी ॥ जि० रा० ॥ १४ ॥ इति ॥

२० हूं तोनें पूछूं सुणे रे बेटा माळीका, सड़क पर नींबूडो कुंण लगवायो ॥ ए देशी ॥

हूं तोने पूछू सुणरी मेरी सजनी, श्रीनेमीसर बनडाने किण भरमायो; तोरण पर हो जी हो,तोरण पर वनड़ानें कुण भरमायो ॥ टेर ॥ राजा भरमायो, महाराजा भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ मरमको वचनके साळे सुणवायो ॥ तो० ॥ २ ॥ जानी रिसवायो के मांटी रिसवायो तो० ॥३॥ लेणे देणेको कोई रुकन रखायो ॥ तो०॥ ४ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

हूं तोनें पूछूं सुणरी मेरी सजनी, तोरण पर हो जी हो, तोरण पर वनडानें नहीं भरमायो; श्रीनेमीसर वनडानें नहीं भरमायो॥ टेर ॥ न राजा भरमायो, महाराजा

भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ न मरमको वचन साळे सुणवायो ॥ तो० ॥ २ ॥ न जांनी रिसवायो न मांडी रिसवायो ॥ तो० ॥ ३ ॥ लेणे देणेको नहीं रुकन रखायो ॥ तो० ॥ ४ ॥ पशुवांको वाड़ो प्रभुजी वंचायो ॥ तो० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे प्रभु धर्म दिपायो ॥ तो० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ जोसीड़ाकी हाटे विलंब रह्यो वनड़ो, लगन ऊपर रींझ रह्यो सिरदार बनो, आछी थांरी बोली, पीयारी लागे वनड़ा, आछी थांरी हाली, सवाई लागे वनड़ा ॥ ए देशी ॥

हाथी होदे छाजे, विराज रह्यो नेमी जिन, तोरण ऊपर देखे, रह्या पशु वृंद; आछी थांने दया, पीयारी लागे नेमी जिन; आछो थांने शील, सुहायो सागे नेमी जिन; इंद्र ही तो आये, सुहाये प्रभु नेमी जिन, विमानमें खड़े, देखे कृष्णचंद ॥ आ० ॥ १ ॥ क्यूं इंद्र तुम आये, बुलाये विन सुरपति, नेमी जिन परणे, नही जदुनाथ ॥ आ० ॥ म्हे पिण देखे स्या, परणास्यो जदि नरपति, नहीं म्हे तो बोलां, देखेस्यां हुई वात ॥ आ० ॥२॥ हरिण सूर सूसा, आदि देखे जिन वर, सव बंधही छुड़ाये, वुडाये दयाल सिंधु ॥ आ० ॥ तोरणथी तो घिरिया, चढिया प्रभु गिरि वर, मुनि रामहीकू तारो, उतारो पार जग बंधु ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

२३ हस हस पूछूं वात गौरी, आंखड ल्यांरो काजळ फीको क्यूं पड्यो हो राज ॥ ए देशी ॥

हूं तोनें पूछूं वात सजनी ॥ हूं० ॥ नाथ क्यूं फिरिया

वे तो तोरण आयनें हो राज ॥ स० ना० ॥ घडी करी उत्पात ॥ स० च० ॥ केहने तो हूं भाखूं दुखडो, जायनें हो राज ॥ स० के० ॥ थे जावो सासूजीके पास ॥ स० थे० स० ॥ आश निराशा मुजने, तुज पुत्तर करी हो राज ॥ स० आ० ॥ २ ॥ एकसां करो समजास ॥ प्र० ए० स० ॥ परणीने तो जाईजो वन भल संचरी हो राज ॥ स० प० ॥ २ ॥ क्यूं करी मुज वदनांम, प्रभुजी ॥ क्यू स० ॥ किण भरमाया, आया क्यू तोरण ऊपरे हो ॥ प्र० कि० ॥ ऐ तो ख्याली नरका काम ॥ प्र० ए० प्र० ॥ समरथने नही दोष, जगत इम ऊचरे हो राज ॥ प्र० स० ॥ ३ ॥ देखी निरमोही थांरी प्रीत ॥ प्र०दे०प्र०॥ पिण देखोनी करणी, अवे मांहरी हो राज ॥ प्र०पि० ॥ मुनि राम वंदे थांने नीत ॥ प्र० मु० प्र० ॥ राजीमतीने तारी, बलिहारी ताहरी हो राज ॥ प्र० रा० ॥४॥ इति ॥

२४ लुहरकी देशी ॥

सखियां हू तोने पूछ्र वारता, केम गये प्रभु आय; धाईजी म्हे पाई छे वारता, कांई हिसा न आई दाय ॥ धा० ॥ रूप अनतो घणो गुणवतो सांवरो हे ॥१॥ स० ॥ आपे स्यू करस्यां अधी, कांई जासी किम जमवार ॥ धा० ॥ अजू कछू नहीं बीगड्यो, कांई दूजो वरो भरतार धा० रू० घ० ॥ २ ॥ स० ॥ दूजाने चांहूं नहीं, कांई लेस्यूं सयम भार ॥ धा० ॥ म्हे पिण सजम लेयस्या, कांई रैस्यां थांरी लार ॥ धा० रू० घ० ॥ ३ ॥ स० ॥ लोच कियो जिण महलमें, कांई चाली अनुमति लेह ॥ धा० ॥ श्याम घटा उमटी भली, कांई वरसण लागो मेह ॥ धा० रू० घ० ॥ ४ ॥ स० ॥ रहनेमीने तारियो, कांई पौंती मुक्त

मझार ॥ वा० ॥ राम मुनि करे वंदना कांई दिनमें सो सो वार ॥ वा० रू० घ० ॥ ९ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ वर जोरी ना मिली सखी री मैं जवांन वालम छोटा ॥ ए देशी ॥

प्राणनाथ ना मिल्यो सखीरी, मुज दिलमें उपजे गोटा किसे दोष देऊ, पुरवलापाप कीया मैंने खोटा॥टेर॥वडी वरात वनी सखी री, जादव मिल सवही आये; हंसी कुसीसे, कुसीसे बाजा सबही वजवाये; उसी वखतमें इंद्रही आये, इम करतां तोरण आये; वाडामे देखकें, देखके पशु बंध सब तुडवाये ॥ प्रां० ॥ १ ॥ तोरणथी फिर गये सखीरी, वडी खराबी कर मेरी; नही मांनी किसीकी, किसीकी एक न मांनी हुवो वैरी; वरसीदांन दे संजम धार्यौ, जाय चढ्यो गढ गिरनारी; संग उसके जाऊ, जाऊं मुक्त मैल नहीं रहूं न्यारी ॥ प्रां० ॥ २ ॥ सबी सखी मिल करे मश्करी, नेमनाथ कैसे छोडी; कुछ औगुण होगा, होगा वरावरीकी नही जोडी; दिलकी वात कहा कहूं सखी री, सरमा मरती घबराऊ; अब कहा करीजै, करीजे जोगन वन वनमें जाऊ ॥ प्रां० ॥ ३ ॥ किसका माता पिता सखी री, कुंण भरता किसकी नारी; नहीं संग चलेगा, चलेगा शुभाशुभ करणी लारी; सातसे सखी संग संजम लीनो, भई रस्ते वरसा भारी, रहनेमी सुधार्यौ, सुधार्यौ मुनि राम कहे हूं बलिहारी ॥ प्रां० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ गौरी चली सासरे फेरतो कबी आंना ॥ ए देशी ॥

मै जातीहूं गिरनार कहूं नहीं छांना, जी रख लेना धर्मकूं याद भूल मत जाना ॥ टेर ॥ मै नहीं रहू घरके मांय सखी सुन लेना, जी कुछ कहणे लायक हुवे सो अबी कर देना ॥ मै० ॥ १ ॥ मै नेमनाथका साथ कबी नहीं छोडूं, जी हम जिसके सगसे कठिन कर्मकू तोडूं ॥ मैं० ॥ २ ॥ श्रीनेम दयाल कृपाल तारेगो हमकू, मुज देवो रजा मै साच कहू छू तुमकूं ॥ मै० ॥ ३ ॥ सब सखियनकी वात हिये नहीं भाती, मेरे नेम विना नहीं और जगतमें साथी ॥ मै० ॥ ४ ॥ नही किसीके साथ नहीं कोई चलता, विन स्वारथ विन वात कोई नहीं करता ॥ मै० ॥ ५ ॥ सती चली गिरनार मार निज मनकू, जी किसका छे परिवार धूल है धनकू॥ मै० ॥ ६ ॥ कर सिर लोचन केश संकोची तनकूं, जी चली रस्ताके बीच लग्यो वरसनकू॥ मै० ॥ ७ ॥ रहनेमी प्रतिबोध सुधारी काया, जी मुनि राम कहे मै शरण तुमारी आया ॥ मैं० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ अगड़दं अगड़दं बाजे डंका सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये, श्रीनेमीश्वरने यूं कहना ॥ तुम विन अपराध छोडि राजुलकूं, जाय ओलभा यू देना ॥ तु० ॥ १ ॥ सब शृंगारी सज हुय त्यारी, सबही मुज सगे रहना; गढ गिरनार जाय स्वामिपे, दिलका दर्द कही देना ॥ तु० ॥ २ ॥ मुद मचकोड़ी दे

कर ताली, मुं षिचमें अंगुली घाली; नेम गया सखि जावा देनी, उनकी छिब होती काळी ॥ तु० ॥ ३ ॥ अली वात किम करिये काली, क्या देऊं तुजकूं गाली; अनंत रूप श्रीनेम विराजे, उनकी छिब मुझकूं वाली ॥ तु० ॥ ४ ॥ पंच मुष्टि लोच करी आलोच, चलि सखियनका वृंदन मे; कारी घटा उमठी घुमठ अंधेरा, विजुरी पसरी गगननमें ॥ तु० ॥ ५ ॥ मृगपति गाज ओगाज, जिम मृगली, तिमही सब सखियन नाठी; जलधारा सारा भीना कपरा, दशो दिश सखियन नाठी ॥ तु० ॥ ६ ॥ राजुल गुफ्फा मांहे पैठी, कपरा सारा सुकवाया; रहनेमी ज्ञान ध्यान सब भूलो, नगन रूप देखी काया ॥ तु० ॥ ७ ॥ रहनेमी बोले सुंण रे सुंदर, आपां रहसां घरवासे, दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, वार वार ए नहीं आसे ॥ तु० ॥ ८ ॥ राजुल बोले सुंण रहनेमी, इम किम बोल रह्यो मुजकूं; कहणो भलो न भलो तुज मरणो, धिक् धिक् रहनेमी तुजकूं ॥ तु० ॥ ९ ॥ दे उपदेश विशेष हुय दृढता, रहनेमी इन पर बोले; तूं गुरणी मात समांणी मोरे, तोरे जुगमे नहीं तोले ॥ तु० ॥ १० ॥ राजमती सती संजम लेकर, भव तरणी कीधी करणी, रहनेमी पिण केवल पांमी, दोनूं गये है शिव रमणी ॥ ॥ तु० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसे वसुधा वरसे, मधुमासे विचरत आया; रामचंद मुनि मन आनंदे, उदियापुरमे गुण गाया ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति ॥

४ अधवीच मोहोवत तोड़ी, वेदरदी रे दिवाना ॥
॥ ए देशी ॥

अध परनी मुजकूं छोड़ी, पिया करी तै नादानी ॥

क० ॥ अच्छा पि० ॥ टेर ॥ प्रभु तेरी मेरी जोड़ी, मांनिक ज्यूं जड़ी थी ॥ अच्छा मां० ॥ चंदासे रजनी प्यारी, भादुकी झड़ी थी; सखि रग रूप चतुराई, गुण करके भरी थी ॥ अच्छा गु० ॥ पिया विना परखते त्यागी, खोटी के खरी थी, सखी वनमे कोईल बोले, लगे खोटी रे जब्बानी ॥ अच्छा ल० ॥ अध प० ॥ १ ॥ प्रभु तेरी सोवत करके, एक फंदमे जो पडी थी ॥ अच्छा ॥ १० ॥ ए सास वास रहे छाये, अरटोंकी घडी थी, वज घडी घड़ी घडियाले, क्या वक्त तो अड़ी थी,॥अच्छा क्या० ॥ चल दीये तोरनसे केम, असवारी खड़ी थी; सखि कौन तान तो तूटी, हमकों रे बतानी॥ अच्छा ह०॥अध०॥२॥ मैं असल फकीरी लूगी रे जंगल मे करूं वासा ॥ अच्छा जं०॥सब आशा तृष्णा मोडू, अर छोडूं घरवासा, सखि कामदेवकू मारूं, लगी प्यारेकी आशा ॥ अच्छा ल० ॥ गिरनारी पै जाऊं, अर तोडूं मोह पासा, सखि प्रभुके कारनमे तो, वन चलू रे अगवानी ॥ अच्छा व०अध ॥३॥ कहे राम सुनि सुनों सारे, सती गई तो निर्वाना ॥ अच्छा स०॥औ भरी सभाके मांहि तुम तन मनसें गांना; सखि गुनवतके गुन गाते, अरु सुनते निज कांना ॥ अच्छा भला सु० ॥ एक जैन धर्मके मांही, मुक्तिका ठिकांना,सखि जिसका जीया लेखे.औ धरमी मर्दांनी॥ अच्छा ओधर्मी० अध प० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ सखि पनिया भरन कैसे जांना, पनघट पै खड़ा है कांना ॥ ए देशी ॥

सखि रहा नहीं कछू छांना, तोरन पै करा अपमांना

॥ तो० सखी० तो० ॥ टेर ॥ नही इधर उधर कछु सोचा, नही किसके संग आलोचाजी, किम तेल चढी छिटकांना ॥ तो० ॥ १ ॥ को किन विध मुं दिखलाऊं, मेरे मनकूं किम ठहराऊं जी; कीये मात पिता सरमांना तो० ॥२॥ सखि वात गमाकर जीना, जैसे गृहस्थी धन कर हीना जी; ए दोनूं है मृत्यु समांना ॥ तो० ॥ ३ ॥ गाली गुप्त घर विच देना, कैना सो गुप चुप कैना जी, नहीं लोकनमें बुरा दिखाना ॥ तो० ॥ ४ ॥ कहा देखा मुजमे खोरी, क्यूं नव भव मोहबत तोरी जी; कीया दुश्मनका मन जांना ॥ तो० ॥ ५ ॥ सखि करी प्रभु नादांनी, हूं पाळूंगी प्रीत पुरांनी जी;जाय हेरूंगी मुक्ति ठिकांना॥ तो०॥ ॥ ६ ॥ पंच मुष्टि लोच कर डारा, हूंते लंबे केस सिर कारा जी; सती कहा न किसका मांना ॥ तो० ॥ ७ ॥ सातसे सखी संग लीना, रस्तेमे कपरा भीना जी; रहनेमीनुं लाये ठिकांना ॥ तो०॥ ८ ॥ सती नेम प्रभूने भेटी, सब मनकी भ्रमना मेटी जी; फेर पाया है केवल ज्ञाना ॥ तो० ॥ ९ ॥ मुनि रामचंद इम गावे, उत्तम इम प्रीत निभावे जी; इम गावत जैन पुरांना ॥ तो ॥१०॥इति ॥

६ तेरी किलंगीरे मारी लात सखी ॥ ए देशी ॥

प्रभु नेम नाथ, तज गये साथ, मैं कहूं कहां लग वात सखी २; कहे राजुल नार, मेरे प्रभुसे प्यार, मै जाऊं नेमके साथ सखी २ ॥ टेर ॥ थे आठ भवांके सजन मेरे, कर गये गमन उत्पात सखी २; ना आप आये, ना पाती लखी, ना रखी कछु लोकात सखी; भये बार मास, करे सबही हास, जां दिनसें चढीं बरात सखी; फेरांकी

वार, मैं गुनेगार, मन मार मार पिछतात सखी; चुप कासें रहूं, दुख कासें कहूं, हुये दुश्मनके दिल चात सखी २; कहे राजुल नार मेरे ॥ प्र० ॥ १ ॥ मोहकी जडी, मैं सूती पडी, थी मगन खूब मिथ्यात सखी २; अब आपा सूझ्या, मैं दिलकू बूझ्या, अब निसंक गिरिकूं जात सखी; रस्तेके बीच, मच रहे कीच, थी वैरन ऋतु वरसात सखी; भीजे है चीर, वरसे है नीर, सती चीर सुकानें जात सखी; रहनेमी भूला, ज्ञान ध्यांन डूला, जां देख उघारा गात सखी २ ॥ कहे रा० प्र० २ ॥ रहनेमी बोले, नहीं तेरे तोले, अदभूत रूप विख्यात सखी २; घर मांहि रहो, फिर कासू चहो, सुख विलसो मेरे साथ सखी; कहे सती पहचांन, सुनहू सुजांन, तेरे दिलकूं तू समझात सखी; संयमकू धार, फिर वछे नार, धिक्कार हुवो तुज सात सखी; सुन सती वैन, खुल गये नैन, रहनेम ठिकाने आत सखी २ ॥ कहे० प्र० ॥ ३ ॥ हुय गये धीर, रहनेमि वीर, तैं तार दिये मुज भात सखी २; केवलकूं पाय, शिव पुरकू जाय, कर गयेनाम अख्यात सखी; सती भव सुधार, रहनेमि तार, हुये ब्रह्मरूप सख्यात सखी; दाखिला दिया, धन्य उसका जीया, सुन समझे उत्तम जात सखी; बीकानेर, गुलजार सेर, मुनि रामचंद छद गात सखी २ क० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

वारमास्यो ॥

१ चैत मास वन केसर फूली ॥ ए देशी ॥

मास श्रावण लग्यो डरावन, विजुरी पसरी बहुतेरी;

घरर घरर घराट करत है, झरर झरर वर्षा गैरी; मेरे श्याम जो हाजर होते, तो हूं कदेन डर लाती; पिउ विन जिवरा बहु घबरावे, थरर थरर कंपे छाती; ऐसी वैरण रैंन डरपावे, सखी मेरा करती हासा; नेम गये गिरनार सखी री, मिलणेकी लग रही आसा॥१॥भादू मास जादू घर नांही, पांनी न मावे परनाले, पापी पपीया पिउ पिउ बोले, इनकी पिण बोली साले; कारी घटालो उमटके आई, वरसाये जल थल करती; हरियाली महमंत बनी है, जोरदार दीसे धरती; श्रीश्याम विना सब सूनी माया, बुरा लगत है चउमासा ॥ ने० ॥ २ ॥ आसु मास सखि चल कर आयो, देखो तनकी पांसुरियां; झुर झुरनें हूं होगी पूनी, गिन गिन घस गई आंगुरियां; फूख फली आ कली फूलनकी, आछी न लग्गे इन बिरियां; ककड़ी मुठकचरे और मती रे, बुरे लगे मेवो गिरियां; दसरावो नही पूजूं सखीरी, झूठ न बोलूं एक मासा॥ने० ॥ ३ ॥ काती मासका महीना चौथा, रोता किम कर काढूंगी; कुलदेवी तूं पिया मिला दे, तोय सीरणी चाढूंगी; मैं छु सरणे थारे माता, साता पियकी चाती हूं; रूठो मनावो पिउ घर लावो, अन्न पूरा नही खाती हूं; दीपमालिका लगे न अच्छी, नेम नही पाये पासा॥ने०॥४॥ मिगसर मास सखी ठंढ चमकी, धमकी तपकी चढ जावे; शरीर तपे विरह आग करीने, वैरण निद्रा नही आवे; श्याम विना ऐ सांग सवीही, शरीर तपे दिन रात घणो; और दु:ख सब हुवो सखी री, दु:ख मोटो एक नाथतणो; त्रिया जातका जनम अक्यारथ, मालक विन धिक घरवासा ॥ ने० ॥ ५ ॥ पोष मासकी वैरण रतियां

वतियां कर कर वरताऊं; पूरी न होवे लंबी हो रही, इधर उधर गोता खाऊ; जाऊं किसके शरणे सखीरी, जोगन हुय वन रळ जाऊ; पाऊं न पियड़ा जियड़ा तरसे, निलकी कगवा उडवाऊ; पिऊ मिले तो ठंढ न लग्गे, रंग महल रहनें खासा ॥ ने० ॥ ६ ॥ माघ महीनो वहुत बुरो है, जिण घर पीतम नहीं होवे; पिऊ घरे तो वहुत भलेरो, ऊंडे पडवेमें सोवे; खावे विध विध माल मसाला, साळां ऊंडी सोणेकी; सांवरियो नहीं आयो सखी री, रात न पूरी होणेकी; वसंत पंचमी घर घर मंगला, चग डफ्फ वाजे तासा ॥ ने० ॥ ७ ॥ फाग मासमें फग रमत हे, गम्मत इसकी वहु तेरी, पिऊं विना ए मास निकम्मो, इसो नहीं दूजो वैरी; टिप्पा दोहा ख्याल जहरसा, कांने मुझ जो भनक परे; गिर पर जाकर वस्यो सांवरियो, पशुवांके शिर दोप धरे; विरह आग कर जरू सखीरी, मांनो जंगलका घासा ॥ ने० ॥ ८ ॥ चैत महीने चैती फूली, झूली सखीय हींडोरनमें; मेरा जियरा एक न चाहे, हूं झूलू सोच समुद्रनमें; हूं तोने पूजूं हे म्हारी गवरल, क्यू पिउ तजी मोग जोबनमें; वनमें जाकर वस्यो अकेलो, क्या वात वसी पियके मनमें; जिनकी खवर कछु वन पाई,सहे ताप शीत क्षुत् पीयासा॥ने०॥९॥ वैशाखांकी वात सुनो सखी, ऋतु गरमीकी झुक आई; चदन घस घस और कपूरे, करूं टहल मनकी चाई; वीडी बांधकर पिउकू देती, खड़ी ग्वडी हाजर रहती; पखा ढोलके पवन घालती, दे घूमर दुपटो गहती; घोट ठंढाई पियो मेरा पिवड़ा, पिउ विन होगई नि रासा ॥ ने० ॥ १० ॥ ज्येष्ठ महीनो महा गरमीको, चौंदिश ज्वा-

ला चलती है; विरह आग अर तपत दूसरी, लूसें छा
जलती है; मोनें पवन मत घालो सखीरी, दूनी तप
लगती है; श्याम मिलावो जावो सजनी, नहींतर जा
निकलती है; मनकी वात जो नाथ सुनेरी, ढरे जु म
चाये पासा ॥नें० ॥११॥ आषाढ मास आशा कर लीनं
अब तो साहब घर आवो, एक वेर मुझ मनकी सुंनल
पछे भलां वनकूं जावो; अब मेरा मन पिण निश्चल
गया, मुक्ति महिल देखन आऊं; संजम लेकर भव ज
तरसूं, कर करणी शिव पद पाऊं; मुनि राम कहै धन
राजीमति सती, केवल कीधा परकाशा ॥ नेम गये गि
रनार सखीरी, मिलनेकी लग रही आशा॥१२॥ इति

२ कहोरी सखी श्याम कब घर आसी ॥ ए देशी ॥

सांवण मासमें लूंबां वरसे, जी थांनें जिम जिम रा
जुल तरसे; कहोरी सखी नेम कब घर आसी, कहीं रे
सखी श्याम कब घर आसी; आसी जबही मिटसी
उदासी ॥ क० ॥ १ ॥ जी भादू मासमें घटा चढी कारी,
जी राजुलनें लग्गे डर भारी ॥ क० ॥ २ ॥ जी आसु
मासमें मोटी छै आशा, जी तुमे आसो तो सखी तजे
हासा ॥ क० ॥३॥ जी काती मासमें वहे जिम काती, जी
इम तजतां चले किम छाती॥क०॥४॥जी मिगसर मासमें
चमकी ठारी, जी थांनें कह कहनें राजुल हारी ॥क०॥५॥
जी पौष मासको शीत अकारो, जी घर रैणेको भरोनी
हूंकारो ॥ क० ॥ ६ ॥ जी माघ मासमे डांफर वाजे, जी
वनराई वनमांहे दाजे ॥ क० ॥ ७ ॥ जी फाग मास तो
बहुत सुहावे, जी सांवरियो जो महलां आवे ॥ क०॥८॥

जी चैत मासमें फूली चैती, जी इम जांणूं तो जांण न देती ॥ क० ॥ ९ ॥ जी वैशाख महीनो आयो, जी सांवरियानें किण भरमायो ॥ क० ॥१०॥ जी जेठ मासमें लूवां चलती, जी मेरी प्रभु विन जांन निकलती ॥ क० ॥ ११॥ जी आषाढ आशा कर लीनो, जी अजु नायो नेम नगीनो ॥ क० ॥ १२ ॥ जी श्रावण मास तो पाछो आयो, जी नेमीसर पूरो रिसायो ॥ क० ॥१३॥ जी सती राजुल सयम लीनो, जी वां तो उत्तम कारज कीनो ॥क०॥१४॥ जी केवल लईनें मुक्त सिधाया, जी मुनि रामचंद गुण गाया ॥ क० ॥ १५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

वार मास आशा करी, निगमियां धर प्यार ।
होय निराश संवेग धर, लीधो संयम नार ॥ १ ॥

२ देशी झूंणी दोहांमें ॥

श्याम क्यूं मुजकूं छोडी जी, राखो प्रतिज्ञा राजुल नारकी; महाराज नेमजी, राखो प्रतिज्ञा अपला नारकी ॥ टेर ॥ श्रावण मन भावन गयो म जी, नैंना नीर वरसायो; जांन वनाजी आवियो म जी, तोरनसें फिर जायो; कुंन भरमायो झूठ न बोलूं जी, झूठो कलंक लगायो; सकल सखी तुम सांभलो, धरुं किम मन धीर; कुंणसुं ने किणनें काई म म्हारे, नैणां वरसे नीर, पीर कुण देखे पराई जी ॥ राखो० ॥ १ ॥ भादूमें जादू किम कर रूठो जी, झूठो दोष लगायो; हीयो भरायो बोल न आवां जी, नैनां नीर भर लागो; पशूवनके शिर दोष देईनें, कायो कुदमगपां पायो; लायो

पतियां नाथकी, केम गये छिटकाय; मीयांकी दाढी बले स देखो, लोक तापवा जाय; हाय किम जगत हंसायो जी ॥ राखो० ॥ २ ॥ आसोज आशा सबी गमाई जी, स्यूं आई दिल मायो; भाई सहू विलखा किया स जी, दुःख सहियो नही जायो; जनम डबोयो नाहक मेरो जी, सखियां हास्य करायो; कांई करूं म्हें वीनती, कांई सुणाऊं कूक; मूंक गयो मुझ नाथजी स कांई, जैसे बीडी थूक; चूक कोई नाथ बतावो जी ॥ राखो० ॥ ३ ॥ कातीमे कागळ नही स जी, समंचार पिण नायो; मास वरस आशा कढे स जी, आशा जन्म विहायो; आशा विन वासा किसा स जी, अमनें प्रभू बतायो; दीसे बाहिर निर्मला, मांही कठिन कठोर; ऊपर लाली झिल रही स देखो, जैसें झाडी बोर और कांई, फंद लगायो जी ॥ राखो० ॥ ४ ॥ मृगसरमें सी चमकियो स जी, कंत गयो किम छोड; पशु पक्षी भेळा रहे स जी, क्या मुझमें थी खोड; और न चाहूं कंतनें स जी, नेम मुझे शिर मौड; एक बेर कंत आवजो, करजो मन की वात; निजरां का मेळा करो स मैं, चलूं तुमारी साथ नाथ एक, बेर पधारो जी ॥ राखो० ॥ ५ ॥ पोष मासकी वैरन रजनी, काटी कटे न कोय; कुण मुझ राखे रोवती स जी, रही अंसु वन मुख धोय; सार न पूछी पाछली स जी, ऐसी रीस क्यूं होय; कुंण ही त्यारो माहरो, कंत दियो भरमाय; घाल्यो विछोहो पापिये सजी, जिणरो मुख हुवो श्याह दाह क्यूं, हीये लगायो जी ॥ रा० ॥ ६ ॥ माघ मास सखी आवियो स जी, लावो कंत मनाय; देऊं वधाई तेहनें सजी, पूंजू तेहना पाय; जाय मनावो

नेमनें स जी, दूजी न मेरे चाय; कंत कंत करती फिरूं, हेरूं जिसकी वाट; फेरूं माला तेहनी स मेरे, किण विध मिटे उचाट; घाट मुझ थई पुन्याई जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ फागुण वाजे वायरो स जी, वृछ पत्ते दिय खोय; दूजे मासमे आविया स जी, पाछा हरिया होय; हूं फूलू किण आशसू स जी, कह दो सखियां मोय; और पुरुष मुझ भ्रात है, अथवा बाप समांन; कांई भ्रांत छै नाथके स सखी, सो जांणे भगवान; प्राण कहो किस विध रक्खूं जी ॥ रा० ॥ ८ ॥ चैती फूली फूटरी स जी, तरू विलंबी वेल; बाग बगीचा फूलिया स जी, जाई जुई चपेल; हूं मुरझी प्रीतम विना सजी, ज्यूं दीपक विन तेल; हेल करी मुझ नाथजी, तोरनसू फिर जाय; मनमे आवे एहवी स हूं, मरूं कटारी खाय; हाय मुझ जळो जवांनी जी ॥ रा० ॥ ९ ॥ वैशाख मास छै आकरो स जी, वाजे झाळ दुझाळ; चंदन चरचे पद्मिनी स जी, पखो हाथमें झाल; घाले शीतल वायरो स जी, करै प्रीतमसू ख्याल; मनकी सब मनमे रही, कही कठालग जाय; तोरनसू फिरजावतां स सखी, दीधो दाग लगाय; दाय किम हू नहीं आई जी ॥ रा० ॥ १० ॥ जेठ मास सखी आवियो स जी, धूप पड़े असराल; दूजो तप विरहतणो स जी, सखी पवन मत घाल; क्यू आये थे परणवा स जी, कीधो बालक ख्याल; दुख पाऊ जाऊं कहां, कीधी खोटी कत; मांगी न आवे मोतडी स सखी, दुख जांणे भगवत; दत सब लोक दिखावे जी ॥ रा० ॥ ११ ॥ आषाढ आशा कर लीयो स जी, विध विध करी उपाय; क्यूं रूठो छे सांवरो स जी, रही छूं

मनाय मनाय; इण मास नहीं आवसी स तो, देसूं घर छिटकाय; राम मुनी वंदना करे, धरे चरनमें शीश; राजीमति संयम लीयो स जी, जाय मिली जगदीश; शीश तुम सदा नमावो जी ॥ रा० ॥ १२ ॥ चमालीस उगणीसको स जी, मिगसर शुक्र वार; तीज चौथ सुद भेळी तिथ छै, जसरासर सुखकार; वारमास्यो जोड़ियो स जी, लागी थोडी वार; वृद्धीचंदजी गुरुतणो, वरते सदा प्रताप; रामचंद्र शिष्य तेहनो सजी, जोडकरी घर छाप; जाप तुम प्रभुनो करो जी ॥ रा० ॥१३॥इति

४ कहोरी सखी श्याम कब घर आसी ॥ ए देशी ॥

कहो री सखी नेम कब घर आसी, कहो री सखी सांवरियो कब आसी ॥ टेर ॥ सूरज वारमें सूरज ऊगो, जी गिरनार सांवरियो पूगो ॥ क०॥१॥ सोमवारमें चंद्रवदनी, जी किम परणोनी कचन वरनी ॥ क० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल करना, जी जाय जादवनें देवो धरना ॥ क० ॥३॥ बुद्ध वारमें बुध एक करणी, जी मंत्र जपवा बैसावो वरणी ॥ क० ॥ ४ ॥ गुरुवारमें गुरु मनावो, जी सांवरियानें वेग मिलावो ॥ क०॥५॥ शुक्रवारमें घर नहीं तजणा, जी घर बैठां ही ईश्वर भजणा ॥क० ॥६॥शनीवारमें दीक्षा नहीं लीजे, जी घर बैठां ही सिमरण कीजै क०॥७॥नहीं नव भवनी प्रीत विचारी, जी थांनें झुर रही राजुल नारी ॥ क० ॥ ८ ॥ संयम लीधो राजुल नारी, जी थांनें राम वंदे वार वारी ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

चौमासो ॥

१ देशी गुजराती गरबाना गीतनी ॥

जात्रीड़ा जात्रा निनांणू करियेरे ॥ ए देशी ॥

जादवजी, चौमासो निज घर करियेजी, पर घर सांमुं पगला न भरिये ॥ जा० ॥ टेर ॥ श्रावण वीजुरी हुय खिडे खिनमें रे, भादू रंग करे बहू दिनमें रे, आसू डंबर फीका गगनमे रे, बहु विघ्न भरा कातन मे ॥ जा०॥ १ ॥ श्रावण विद्युत्वत् ससारा रे, भादू रंग ज्यूं विविध प्रकारा रे; आसू डबर होत अपारा रे काती वाती तौ करत उचारा ॥ जा० ॥ २ ॥ श्रावण मास तो हरिया छाया रे, भादू दीसे सब कुम्हलाया रे; आसूमे जल थल थाया रे, कार्तिक मास पता नहीं पाया ॥ जा० ॥ ३ ॥ श्रावण मासमे संजम लीजे रे, भादू भावना निर्मल कीजे रे; आसू आसन दृढ धर दीजे रे, कार्तिक काज सारा सिध कीजै ॥ जा० ॥ ४ ॥ रामचद्रनी एह छै वाणी रे, कोई समझे उत्तम प्रांणी रे; इम गूढ अरथ निरवांणी रे, कोई लेसी चतुर पिछांणी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ ओ पंखो किसरि नगरसूं आयो रे ॥ ए देशी ॥

को सखी किसारे मोरतिये आया रे, जोर फांई जांनीको; को सखी निकमा रे लोक हसाया रे, गयो मोती पानीको; को सखी किणरे सुकन वंदाया रे ॥ जो० ॥ को सखी कुणरे पशुवांने वताया रे ॥ गा० ॥

३ गवरल ईसरजी कवे तो हस बोलणा हे ॥ ए देशी ॥

सखियां क्यू आया, क्यू फिर चल्या हे॥स०॥जिणरी खबर न काय ॥ स०॥ तोरनथी फिर जाय ॥ स० ॥ स्यौ आई दिलमांय, आपां नेम जिनंदजीनें वांदसां हे, आपां गिरवर जिनवर वांदसां हे, आपां नेम प्रभुजीने वांदसां हे॥ १ ॥ बाईजी दगाबाजी करी सांवरे हे २, बाईजी झूठो चोज लगाय ॥ बा० ॥ तोरणसूं फिरजाय ॥ बा० ॥ दीनी जांन लजाय ॥ आ० ॥ २ ॥ स० ॥ नेम प्रभू संयम लीयो हे २ ॥ स० ॥ चढिया गढ गिरनार ॥ स० ॥ जासां प्रभुके लार ॥ स० ॥ लेसां सयम भार ॥ आ० ॥ ३ ॥ बा० ॥ म्हे पिण साथे चालसां हे २ ॥ बा० ॥ रैसा थांरी लार ॥ बा० ॥ लेसां संयम भार ॥ बा० ॥ जासां गढ गिरनार ॥ आ० ॥ ४ ॥ बा० ॥ राजीमती संयम लीयो हे २ ॥ स० ॥ कीधो मस्तक लोच ॥ स० ॥ चाली तन संकोच ॥ स० ॥ छोड्या सगळा सोच ॥ आ० ॥ ५ ॥ बा० ॥ मारगमे वर्षा भई हे २॥बा०॥वर्ष मूसल धार॥बा० रहनेमीने तार ॥ बा० ॥ राम चदे चरणार॥आ०॥६॥इति॥

४ हांक जिणरो तनें कांई ॥ ए देशी ॥

कालो तो वींद किसी कामरो, भूंडो ही जग लागे रे, हसे बहु लोग लुगाई; हांक जिणरो तने कांई ॥ १ ॥ कालो मांहे बारे कालो, कपटीने धूतारो रे; जादवकी जांन लजाई ॥ हां०॥ २॥ क्यू वींद बणीने तोरण आयो, क्यूं आडंबर लायो रे, गयो फिर शरम न आई ॥ हां० ॥ ३ ॥ परण छोडतो मुश्कल होतो, देतो अधविच गोतो

रे; हूंती तूं डुखणी बाई ॥ हां० ॥ ४ ॥ किन कारण वो करे रूसणों, किम कहिये कंतो श्याणों रे, गयो तुम वेंचो बधाई ॥ हां० ॥ ५ ॥ गोरो वींद घणो रूपाळो, जोवो वड भूपाळो रे; मालिक वो रक्खे लुगाई ॥ हां० ॥ ६ ॥ वो नही चाहे थे क्यूं चाहो, क्यूं थे लारे जावो रे; रहो थे घरके मांही ॥ हां० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सती एक न धारे, जावे प्रभुके लारे रे; मिलेगा मुक्तिके मांई ॥ हां० ॥ हांक वंदो शीश नमाई ॥ ८ ॥ इति ॥

५ थारी आकड़ारी झूंपड़ीमें कौन सोवे, हूं तो मैलांमें पोढणवाळी रे वालमा, ओ हो रे वालमा, आयो रे बावो लंगोटियो ॥ ए देशी ॥

थांरी सांवरीसी सूरत देख मोही, मै तो जोऊ छूं वाट तुमारी रे सांवरा, ओ हो रे सांवरा, आछो तो लागे सांवरियो, प्यारो तो लागे डूंगरियो ॥ १ ॥ थांरे विना मैलांमे कौन रेवे, ए तो कलंक देवे ससारी रे ॥ ॥ सां० ओहो० आछो० प्यारो० ॥ २ ॥ थारी रे सूरतके कुंण जोडे, थारी आख्यां छै कामणगारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे सूंनारे जंगलमें कुंण दौडे, हूं तो चलूगी लार तुमारी रे ॥ सां० ॥३॥ थारे रूप बराबर कुण आवे, मोनें सखी संतावे सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे उज्जड रस्ते कुंण जावे, मै तो मुक्तीमें जावण हारी रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ म्हारे नवसर हारने कुंण पेने, कुण पेनें गोटेकी सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे शिरका केश तो कुंण गूंथे, मैं तो लोच करू सुखकारी रे ॥ सां० ॥५॥ चार महाव्रत शिर पर धारू, मारूं मै ममता सारी रे ॥ सां० ॥ संयम ले सती मोक्ष पधारी, मुनि राम जावे बलिहारी रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

वर पायो हे सहीयर वड भागसूं,तोय वखांणी हे तूं भई पूज्य त्रय लोकरी॥टेर॥थारो भाग उदय हुय आयो हे, तें लोक त्रय पति वर पायो है; थारो सुजस जगमे छायो हे, थारे लागे इंद्रांणी पायो हे ॥ व० ॥ १ ॥ तें तो करी तपस्या सरसी हे,ऐसी करी न फेर कोई करसी हे; थारो नाम लीयो दुख टरसी हे,थारा दर्शनसूं जग ठरसी हे ॥ व० ॥ २ ॥ तोनें इंद्र निरखण आयो हे, तोने इंद्राणी सीस नमायो हे; थारो वींद तोरनपर आयो है, थारो दिन दिन भाग सवायो है ॥ व० ३ ॥ ते तो दान सुपातर करियो हे, थारो सुकृत तरुवर फरियो हे;तें तो धन्य जनम जग धरियो हे, तोरो वींद देखि राम ठरियो हे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

ख्याल॥

१ आवो रंजा मिल म्हेल करावां वे, वीचमें रखावां, दोय वारियां ॥ ए देशी ॥

वारियां वारियां वारियां, हां म्हांरो नेम मिले तो वारियां हो ॥ टेर ॥ आवो सखि मिल नेम मनावां वे, वे तो पुरुष आपे नारियां ॥वा०॥ १ ॥ आवो सखि मिल पत्र भेजावां वे,आपा वी चालां ज्यांरी लारियां॥वा०॥ ॥ २ ॥ आवो सखि मिल संयम धारां वे, चालो चढां गिरनारियां ॥ वा० ॥ ३ ॥ सातसे सखी मिल रस्ते चालो वे, फेर रहनेमीनें सुधारियां ॥ वा० ॥ ४ ॥ राम कहे

रे; हूंती तूं दुखणी बाई ॥ हां० ॥ ४ ॥ विन कारण वो करे रूसणों, किम कहिये कंतो श्याणों रे, गयो तुम वैचो वधाई ॥ हां० ॥ ५ ॥ गोरो वींद घणो रूपाळो, जोवो वड भूपाळो रे; मालिक वो रक्खे लुगाई ॥ हां० ॥ ६ ॥ वो नहीं चाहे थे क्यूं चाहो, क्यूं ये लारे जावो रे; रहो थे घरके मांही ॥ हां० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सती एक न धारे, जावे प्रभुके लारे रे; मिलेगा मुक्तिके मांई ॥ हां० ॥ हांक वंदो शीश नमाई ॥ ८ ॥ इति ॥

५ थारी आकड़ारी झूंपड़ीमें कौन सोवे, हूं तो मैलांमें पोढणवाळी रे वालमा, ओ हो रे वालमा, आयो रे वावो लंगोटियो ॥ ए देशी ॥

थांरी सांवरीसी सूरत देख मोही, मैं तो जोऊं छूं वाट तुमारी रे सांवरा, ओ हो रे सांवरा, आछो तो लागे सांवरियो, प्यारो तो लागे डूगरियो ॥ १ ॥ थांरे विना मैलांमें कौन रेवे, ए तो कलंक देवे संसारी रे ॥ ॥ सां० ओहो० आछो० प्यारो० ॥ २ ॥ थारी रे सूरतके कुंण जोडे, थारी आख्यां छै कामणगारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे सूंनारे जगलमें कुण दौडे, हू तो चलूंगी लार तुमारी रे ॥ सां० ॥३॥ थारे रूप बराबर कुंण आवे, मोने सखी संतावे सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे उज्जड रस्ते कुंण जावे, मै तो मुक्तीमे जावण हारी रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ म्हारे नव-सर हारने कुण पेने, कुंण पेने गोटेकी सारी रे ॥ सा० ॥ म्हारे शिरका केश तो कुंण गूंथे, मै तो लोच करू सुख-कारी रे ॥ सां० ॥५॥ चार महाव्रत शिर पर धारू, मारू मै ममता सारी रे ॥ सां० ॥ सयम ले सती मोक्ष पधारी, मुनि राम जावे वलिहारी रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

वर पायो हे सहीयर वड भागसूं,तोय वखांणी हे तूं भई पूज्य त्रय लोकरी॥टेर॥थारो भाग उदय हुय आयो हे, ते लोक त्रय पति वर पायो है; थारो सुजस जगमे छायो हे, थारे लागे इंद्रांणी पायो हे ॥ व० ॥ १ ॥ ते तो करी तपस्या सरसी हे,ऐसी करी न फेर कोई करसी हे; थारो नाम लीयो दुख टरसी हे,थारा दर्शनसूं जग ठरसी हे ॥ व० ॥ २ ॥ तोने इंद्र निरखण आयो हे, तोनें इंद्राणी सीस नमायो हे; थारो वींद तोरनपर आयो है, थारो दिन दिन भाग सवायो हे ॥ व० ३ ॥ ते तो दान सुपातर करियो हे, थारो सुकृत तरुवर फरियो है;ते तो धन्य जनम जग धरियो हे, तोरो वींद देखि राम ठरियो हे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ आवो रंजा मिल म्हेल करावां वे, वीचमें रखावां, दोय वारियां ॥ ए देशी ॥

वारियां वारियां वारियां, हां म्हांरो नेम मिले तो वारियां हो ॥ टेर ॥ आवो सखि मिल नेम मनावां वे, वे तो पुरुष आपे नारियां ॥वा०॥ १ ॥ आवो सखि मिल पत्र भेजावां वे,आपां वी चालां ज्यांरी लारियां॥वा०॥ ॥ २ ॥ आवो सखि मिल संयम धारां वे, चालो चढां गिरनारियां ॥ वा० ॥ ३ ॥ सातसे सखी मिल रस्ते चालो वे, फेर रहनेमीने सुधारियां ॥ वा० ॥ ४ ॥ राम कहे

सती केवल धाऱ्यौ वे, ज्ञान करी मन मारियां ॥ वा० ॥
॥ ५ ॥ इति ॥

२ देशी ख्यालनी ॥

चालो वाई जी आपां देखवा, जादूपति आवे है; जादूपति आवे, ओ तो जगत सुहावे वाई, ओपे इंद्र समांन; ऐसो वर कोउ निजर न आयो वाई, खुली थांरे सुकृत खांन ॥ चा० ॥ १ ॥ छत्र धरावे ओ तो चमर ढुळावे वाई, पड़े नगांरारी ठोड़; सूरत प्यारी आ तो मोहनगारी वाई, तपे सूरज ज्यूं मोड़ ॥ चा०॥ २ ॥ राजी मती कहे हे सहू साचूं वाई, पिण फुरके जीमणो नैंण; होसी उदासी कोई विघन ज थासी वाई, ओ मिले नहीं सुख दैंण ॥ चा० ॥ ३ ॥ तोरण आये ऐ तो मंगल गाये वाई, पशुवांने दीयो अभै दांन; जांन लजाई आंतो वात गमाई वाई, भली कीवी भगवांन ॥ चा० ॥ ४ ॥ नेमजी साथे सती संयम लीनो, ओ तो कीनो उत्तम काम; आतम ताऱ्यौ ओ तो काज सुधाऱ्यौ, थांने वंदे नित नित राम ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

राग ॥

१ राग मारू ॥

भोजाई व्याव मनावे रे, व्याव मनावे नेमको, वहु वात वनावे रे ॥ भो० ॥ टेर ॥ देवरियो डरतो रहे, जांणे लाडी संतावे रे; लाडी विना किसो लाडलो, वृथा जन्म गमावे रे ॥ भो० ॥ १ ॥ नेम्युवाच ॥ वृथा जनम छे जेहनो, ते धर्म न जांणे है; पाप मूल नारी तजे, जांको जन्म

प्रमांणे हे; सयांनी क्यूं झूंठ बखांणे हे, झूठ न प्यारो सांइयां, झूठ तो पनरे ठिकाणे हे ॥ स० टेर ॥ २ ॥ पूर्वज परण्यां ताहरा, जे शास्त्रांमें गावे रे; जो परणनमें पाप थो, तो क्यूं मुक्त सिधावे रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पूर्वज परण्या मांहरा, भुक्त भोग प्रमांणे हे; मुक्त गये त्यागन करी, सो शास्त्र बखांणे हे ॥ स० ॥ ४ ॥ देवर नारी परण जो, क्यूं लोक हंसावे रे; व्याव करी त्यागन करो, माईत सुख पावे रे ॥ भो० ॥ ५ ॥ भावज म्हे नहीं परणसां, मो मत ना पिछांणे हे; अभुक्तभोगी संयम ग्रही, राम जासी निरवाणे हे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ राग पूर्ववत् ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ भाई तूं लोक हसावे रे, तोरनसें फिर जावतां,तोने लाज न आवे रे ॥ भा०॥ टेर ॥ जो तूं परणे न चावतो, तो क्यूं जांन वणावे रे; म्हांने संग क्यूं लांवणां,सह्व बात गमावे रे॥भा०॥१॥भाईजी ऐसो चोज लगावो रे, माडां व्याव मंडावियो, फेर अवगुण गावो रे ॥भा०॥टेर॥कहो कुंण पल्ला पाथरया, मुझ घरहि मंडावो रे; विना मन आमे जाइयो, विना मन परणावो रे ॥भा०॥२॥ जादव जगमें दीपता, जांनी सरमावे रे; अपणी मांग कोई परणतां, नाकी नहीं रहावे रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जांनी शरमावे सजम ग्रहो, मांग चाहे जां जावो रे; म्हांने जीव बचायिवा,राम चाहे ज्यूं गावो रे ॥भा०ऐसो०॥४॥

३ राग मांच ॥

नेमजी केम गये छिटकाय,सखी हूं तो नहीं सकू मूढो देखाय ॥ प्रभुजी केम०॥ टेर ॥ तीर ज्ञान ले गर्भमें आये,

वाजे त्रिभुवननाथ;वात जिणांसूं नहीं रही छांनी, जांनी लाये बहु साथ; दगावाजीकी वात करी छे, रैसी जुगोजुग अखियात ॥ ने० ॥ १ ॥ बाईजी आंखे आंसूं मत मूक; नहीं छे तिल भर थांमें चूक ॥ वा० ॥ टेर ॥ ज्ञानी हुय कर वात गमाई, जांनी दिये लजाय; तिल भर वात नहीं गई थांरी, क्यूं सोचो मन मांय; सरमां मरतो-गढ गिरनारे, वैठो मूंढो छिपाय ॥ वा० ॥ २ ॥ कोई कैसी आ छे विपकन्या, कोई कैसी अंग हीन; कोई कैसी आ रूप कुरूपा,कोई कैसी नहीं प्रवीन;कोई कैसी आ खुरड़पगी छे, सो सकलंकी कौन ॥ ने०॥ ३ ॥ कूडो पिण नहीं कहे विपकन्या, नीच न कहे अंग हीन; अंधो नहीं कहे रूप कुरूपा, अज्ञ न कहे अप्रवीन; कोई खुरड़पगो कहे खुरडपगी छे, सो होसी तेरेतीन ॥ वा० ॥ ४ ॥ आठ भवांमें प्रीत वधाई, नवमे दी छिटकाय; पशुवनके शिर दोष देईनें, तोरणथी फिर जाय; माखी नहीं ओ मुळको मारे, आय वण्यो छे न्याय ॥ ने० ॥ ५ ॥ लगी प्रीत विन अवगुण तोड़े; ते किम महिमा जोग; राजीमती कहे प्रीत न तोडूं, सूधारूं पर लोक; मुनि राम कहे धन्य नेम राजुल छे, जाय विराज्या मोख ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे नेमनाथचरित्रनामकं नवमं प्रकरणम् ॥ ९ ॥

रामचरित-लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कछु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

सहस्र विद्या त्रिखंडको भोक्ता, रावन मनमें गरभा-

यो; सुर नर पाय परे सब मेरे, कुंन मुजसें साम्हो थायो ॥ टेर ॥ १ ॥ सूर देव ओ तपै रसाई, चंद्र आप दीपक थायो; वेमाता मुज दळे कोद्रवा, यम राजा पांणी लायो ॥ स० ॥ २ ॥ नव ग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती उतरायो; पवन देव नित महल बुहारे, पार नहीं कोई पायो ॥ स० ॥ ३ ॥ मो सरीखो विरलो होगो, नामधकी जग थरीयो; कुंण मुज आज अड़े हुय सांमो, किनकी मा अजमो खायो ॥ स० ॥ ४ ॥ अब मुज मनमें ऐसी आवे, धार सदा मुज ग्रै रैसी; केवल ज्ञानी वात न छांनी, पिण निमित्ती कैवे कैसी ॥ स० ॥ ५ ॥ रावनके मन ऐसी भासी, नैमित्तिक तद बुलवायो; रामचंद्र कहे गर्व न कीजो, गर्व न कोई ठहरायो ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ वेसर सोनाकी देशी ॥

नगरी रामकी या तो देवता कीधी त्यार ॥ न० ॥ पगे पगे प्रगटे नव निधांन, सुर नर किंनर समांन ॥ न०॥१॥ जहां जावे जहां होवे आनंद, काटे पराया फंद ॥ न०॥ ॥ २ ॥ सुवन कोट विराजै ऐन, पुन्यवत करता चैन ॥ ॥ न० ॥ ३ ॥ रामपुरी नगरीका नाम, यां राज करै श्री-राम ॥ न० ॥ ४ ॥ परम जैनी परम दयाल, गउ ब्राम्हण प्रतिपाल ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

लिछमन मन्न विलख्खियो, लखियो नही लिगार ।
पकियो फल पूरो परयो, रख्वियो नहिं रखवार ॥१॥

३ असी रुपीया लो कलदार ॥ ए देशी ॥

कोई नर मरियो शिर धर परियो, करियो लिछमन

हाहाकार; भावीनें कुंण टालणहार, टाळी नही टळे लाख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥ शरीर सुगंधो ते जदि नंदो, चंदो लज्जित हुवै वदन निहार ॥ भा०॥२॥राज कुमर वर, उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार ॥ भा०॥३॥ क्यूं इहां आऊं खड्ग उठाऊं, क्यूं वाऊं मैं विना विचार ॥ भा० ॥ ४ ॥ आयो हूं भटक्यो क्यूं इहां अटक्यो, झटक्यो खड्ग मुज लग्यो अनाचार ॥ भा० ॥ ५ ॥ विन अपराध धन विद्या साधन, आराधन करतो लीयो मार ॥ भा० ॥ ६ ॥ इम पिछतावे शीस धुनावै, आवै न पाछो फल तरु डार ॥ भा० ॥ ७ ॥ खड्ग ले वळियो रस्ते चलियो, मळियो रामने कह्यू विचार ॥ भा० ॥ ८ ॥ जिनको खांडो सो नर चांडो, वाडो होसी इनको परिवार ॥ भा० ॥ ९ ॥ सीय कहे देवर वहे बीज तरवर, फर लगेगे रहो हुसियार ॥ भा० ॥ १० ॥ राम कहे भाई टरै नही राई,पिछताई रहे उत्तम आचार ॥भा०॥११॥इति॥

४ देशी वीरानी ॥

वीरा, हूं आई तुज पास हो, वीरा, वर्ते भूचर जोरावरी जी; वीरा, शंबूक कुमर विणास हो, वीरा, वीर विराध थयूं अनुचरी जी ॥ १ ॥ वीरा, मुज बल बलिया दोय हो, वीरा, निशाचरसूं बंधु एक लड़े जी; वीरा, हूं रही दुखणी रोय हो, वीरा, रखे मुज खूणे बेसण पड़े जी ॥ २ ॥ वीरा, तीजी नारी जारे संग हो, वीरा, इंद्राणी रूप वांछा करे जी; वीरा, देखी जिणरो अग हो, वीरा, रति पिण गर्व नवि घरे जी ॥ ३ ॥ वीरा,नाक सूवेकी चांच हो, वीरा, मुख पूनम चंद सारिखो जी; वीरा, पीन पयोधर साच हो, वीरा, कटी तटी केसरी

पारखो जी ॥ ४ ॥ वीरा, नख चख वर्णवै कौन हो, वीरा, त्रिया त्रिलोकी जोई ना मळे जी; वीरा, फरसी सुगध होय पौन हो, वीरा, नारी अद्वितीया भूतले जी ॥५॥ वीरा, काग गळे मोळी जांण हो, वीरा, थांरे जोडे ए फावही जी; वीरा, थारी त्रिखंडमे आंण हो, वीरा, इण विन राज न फावही जी ॥ ६ ॥ वीरा, वैर भांणेजको लेण हो, वीरा कैवा आई छू भाजने जी; वीरा, कुण देवेला रैण हो, वीरा, कुंण देसी करवा राजन जी ॥ ७ ॥ वेनड, जावो पयाळे लक हो, वेनड, स्यो गावे रंक कगालने जी; वेनड, रैजो मन निःशक हो, वेनड,तु जांणे नही मुज चालने जी ॥८॥वीरा, लाख वातको सार हो, वीरा, राम मुनि साची करे जी; वीरा, जावे पुन्य परवार हो, वीरा, जो काची वातनें सरद है जी ॥ ९ ॥ इति ॥

५ सिलोको ॥

सुणजो महाराजा वचन हमारो, भलोचावांछां राज तुमारो;वेना तट पासे मोटो एक ग्राम, विनेदंत व्यौपारी वसे तिण ठाम; तिणरे तो घरमें सुदर नारी, रूप अनोपम नही कोई पारी॥ १ ॥ वौपार माड्यो पल्लिपत साथे, दूणा तिगुणा वधे हाथो जी हाथे; वरजे सजन तो ते नही मांने, आवे जावे ने खावे जी छांनें; इण पर करतां वीता बहुमास, पूजी तो रही चौरा जी पास ॥ २ ॥ पल्लिपत बोले सुणजो प्रकासां, देसां मिजमांनि दांम चुकासां; करने विभूषा आजो नारीने लीधां; तिमहीज हुवो पालतां विदा; आव्यो पल्लिमें चोरां विचारयो, लीधी नारी ने उणने जी मारयो; उणरी रीते तो वाद न कीजे, आले माटेमे केम मरीजे ॥ ३ ॥

दोहा ॥

पल्लि समांणी लंक है, पल्लिपत रांवण जांण।
नार समांणी सीत है, राज हो वणिक समांण॥१॥
रावण नाम डरावणो, लड़ता न रहै लाज।
तिण कारण सीतातणी, गई करो महाराज॥२॥
लिछमण सुणनें कोपियो, बोले मूंछ मरोड़।
लावां वेगी सीतनें, दश मस्तक शिर तोड़॥३॥

सुणनें तो लिछमण सिंघ ज्यूं गूंज्यो, विद्याधरांनो हीयो ज धूज्यो; सुणजो विद्याधर वात हमारी, सुणनें तो चुपका जोवे एकतारी; नगर कुसुमपुर धनो बोपारी, ताके तो जमुना सुंदर प्यारी; पांच पुत्रांमें नहीं एक कमाऊ, तनमे तो रोग अपमांनें जाऊं ॥ ४ ॥ अटवीमें मिलियो पुरुष जी सिद्ध, कृपा करीने लोहकड़ो दिद्ध; इणसूं तो रोग मोटका जावे, लेई कडो ने रोग गमावे; चलियो तो आयो निज पुर वार, मुई नृप कन्या हुवो हाहाकार; नागनो जहर गयो कड़ानी करणी, नृप हुकमसूं कन्या जी परणी; मात पिता सहु मिलिया हुलासे, सुख भोगवे लील विलासे ॥ ५ ॥ एक दिन मंजन नदी तट आयो, वड़ विकट ने पांनां जी छायो; तिणमें तो रैवे गोह जलांठी, कड़ो अवरमे लेईने नाठी; वडतां तो दीठी आतमसेण, सगळा सुभट नहीं कडो जी लेण; आतमसेण तो कीधो उपायो, नाखि लक्कड ने वडनें फूंफायो; गोह मारीने कडो जी लीधो, आतमसेणरो कारज सिद्धो; मनमें हरख्यो ज्यू अमृत पीधो, एह सिलोको रामचंद कीधो ॥ ६ ॥ इति ॥

दोहा ॥

गोह रावण सीता कडो, आतमसेण सु रांम ।
लंका गढ़ वड चूरकै, लिये रत्न बहु दांम ॥ १ ॥
नभचर अति विस्मय भये, सुन लिछमनकी वात ।
कही अनोपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥
एह भूंचर अति जोर है, नहीं किसीके हात ।
कोटिशिलाकी वात कहो, ज्यूं सशय मिट जात ॥३॥
श्री मुनिवर परमारथे, वोले वचन रसाल ।
कठिन व्यर्थ वदे न कदि, ऐसे दीनदयाल ॥ ४ ॥
अयन मुनी यक्षदत्तनें, माता याद कराय ।
तार्यौ भव भय सिंधुथी, नहींतर डूवो जाय ॥ ५ ॥

५ लशकरियानी देशी ॥

सब सुनिये लिछमन, कहे हो नरवरजी, एक क्रौंचपुरी अभिधान, सुणिये वारता हो नरवरजी, यक्ष नृप रांणी राजिला हो ॥ न० ॥ यक्षदत्त कुमर प्रधान ॥ सु० ॥ १ ॥ पुर बाहिर एक कुटीरिका हो ॥ न० ॥ ज्यां सुंदर देखी नार ॥ सु० ॥ काम बाण पीडित भयो हो ॥ न० ॥ यक्षदत्त नाम कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ निशिभर आयो एकलो हो ॥ न० ॥ तब अयन नाम मुनिंद ॥ सु० ॥ मा कही टोक्यो कुमरने हो ॥ न० ॥ तब कोप्यो जांणे फुणींद ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजुरी चमके ओळख्या हो ॥ न० ॥ मा किम कह्यो मुणद ॥ सु० ॥ इण भव जननी ताहरी हो ॥ न० ॥ जिण देख तूं थयुं कामद ॥ सु० ॥ ४ ॥ निशि भर यदि नवि वोलणो हो ॥ न० ॥ तदपि देख्यूं अकाज ॥ सु० ॥ इण भव जननी किम भई हो ॥ न० ॥ थे सहु भाखो मुनि राज ॥ सु० ॥ ५ ॥

दोहा ॥

आगम ज्ञानी मुनि वदे, सुण तूं राज कुमार।
इण भवनी या मात है, शील शिरोमन नार ॥ १ ॥

ढाळ ॥

७ तो पर मुगल मथा करे ॥ ए देशी ॥

अमृतकावती नगरी भली, कांई वणिक हो एक कनक उदार; बंधुदत्त पुत्र ज दीप तो, मित्रवती हो ए शीलवंती नार; सुणजो जी वांत सुहामणी ॥ १ ॥ गोप्य आधान पति नवि घरे, सासू सुसरो हो जांणी माठी नार घर बारे काढी परी, उत्पलिका हो एक दासी लार ॥ सु० ॥ इण क्रौंचपुरे लतादत्त पिता, पीर आवै हो इण सैर उद्यान; दासी मुई नंदन थयुं, सर तीरे हो गई करण सीनान ॥ सु० ॥ ३ ॥ रत्न कंबली सुत वींटियो, लेई नाठो हो एक श्वान तिवार, काहू छुडाय नृप सूंपियो, सो तूं भयो हो यक्षदत्त कुमार ॥ सु० ॥ वस्त्र परवाल जननी थारी नहीं, देखे हो तुज कीध विलाप; देव पूजा रे दया करी, इण कुटीये हो रखी भगनी थाप ॥ सु० ॥ ५ ॥ लज्जा करी नहीं पितु घरे, आई हो रहै कुटीये मझार; मैं वर्ज्यो इण कारणे, तू पूछी हो करजे निरधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ रत्न कंबली खंड देखियो, सुणीयो हो सहू घर विरतंत; माता निज मानी खरी, मुनि मांन्यो हो उपगार अनंत ॥ सु० ॥ ७ ॥

दोहा ॥

कहे लिछमण सुग्रीव तूं, माने मो उपगार।
वचन गयो जिण पुरुषनो, धिक्क धिक्क तास जमार ॥ १ ॥

विद्याधर कहे क्षुद्र जिम, मयूर पत्र हठ कीन ।
मूढ थई चूको भला, आप सदा परवीन ॥ २ ॥

ढाळ ॥

८ आंगण वाऊं एळची रे ॥ ए देशी ॥

वेणा तट एक ग्राम छे रे, सर्वरूची अही नाम; स्वामी सुणजो विनयदत्त नामे, भलो रे पुत्रको धाम ॥ स्वा० ॥ १ ॥ विशाल भूपति कुमित्र छे रे, थयूं लुब्ध विनयदत्त नार ॥ स्वा० ॥ स्त्रीकेणे वन ले गयो रे, बांध्यूं एक वृच्छनी डार ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मिथ्या उत्तर देते रहे रे, स्त्री कहे कीयो भल काम ॥ स्वा० ॥ क्षुद्र नाम एक मारगू रे, लीयो जिण तरु विश्राम ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ विनयदत्तकूं दया करी रे, खोली कीयो उपगार ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रभणी घर लावियो रे, घरमांहे द्रव्य अपार ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ विशालभूति नासीगयो रे, क्षुद्रकों रक्खे करि प्राण ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रनो मयूर छे पत्रनो रे, क्रीडा करे परम कल्याण ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ पवनथी उड नृप महिलमे रे, पड्यो लीयो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रभणे मयूरदत्तने रे, मयूर देकर प्रति उपकार ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ विनयदत्त कहे मित्रजी रे, रत्नांरो करायूं मोर ॥ स्वा० ॥ अथवा साचेलो लायद्यू रे, गयो नावे विपमी ठोर ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ रत्नांको ल्यू न साचलो रे, लेऊ तो सागे ही मोर ॥ स्वा० ॥ मैं उपगार मोटो कीयो रे, तू थयो गुणनो चोर ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जांबवान कहे सुणो स्वामजी रे, वो तो चूको मूढ गिवाँर ॥ स्वा० ॥ आप नरोत्तम हद किम करो रे, परणो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ ९ ॥

दोहा ॥

लिछमण सुण कोप्यो अधिक, सुणो विद्याधर साथ
सीतानें किम छोडसां, भली कही तुम वात ॥ १ ॥

९ देशी कुंजेनी ।

मंदोदरी वाक्य ॥

मत करो हठ शठ जेम रे, हो, सुन प्रानपति जी ॥ म०
॥ १ ॥ ए पिछतावो पछे मारसी रे, नवि सूझै, नही सूझै
कहूं छूं हित भणी रे ॥ न० ॥ २ ॥ छोडो सीतासूं प्रेम
॥ सु० ॥ नहीं पतिपणे तुज धारसी रे; क्यूं तांणो; तांणो
नहीं तो हुवे भली रे ॥ क्यूं० ॥ १ ॥ अपकीरत जगमाय
रे ॥ सु० ॥ पर भव नहीं सुधरे जरा रे, दिष्ट जोवो;
जोवो विचारी ज्ञानसूं रे २; ए छै बळती लाय रे
॥ सु० ॥ शीघ्र निकाळो सुख पावसो रे, सहू विगड्या रे,
राम सुर नर मानसूं रे ॥ ३ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१० सीता वाक्य ॥

हूं तोनें नहीं पिछांणूं रे वीरा, तूं छै अमोलक हीरा
॥ हूं० ॥ टेर ॥ लघु वय थारी सूरत प्यारी, बलधारी तूं
धीरा ॥ हूं० ॥ १ ॥ कुंण तुज मात ताल कुंण जात, किम
आयो लघी नीरा ॥ हूं० ॥ २ ॥ दुर्लघ लंक मांय किम
आव्यो, नहीं आई तुझ तन पीरा ॥ हूं० ॥ ३ ॥ अंजन
मात पवन जय तात, हनुमत नाम हमीरा ॥ हूं० ॥ ४ ॥
हूं चाकर छूं सुग्रीवजीनो, श्रीराम ठाकुर सधीरा ॥ हूं०
॥ ५ ॥ राम लिछमनके तेज प्रतापे, हूं आयो लंघी नीरा
॥ हूं ॥ ६ ॥ असालिका विद्या तोड़ दीवी है, जैसे जी-
रण लीरा ॥ हू० ॥ ७ ॥ इति ॥

दोहा ॥

सीतानें समजायवा, प्रगट थयो तिण ठाम ।
हूं लायो छूं मुद्रिका, हणुमत म्हारो नाम ॥ १ ॥
आवत देखी मदोदरी, छिपियो विद्या प्रभाव ।
देख्यांसूं बोले वचन, करस्यूं पछे जताव ॥ २ ॥
सुन सीता मुज वातडी, तो सम नही जग नार ।
राजा रावण भोगवो, सफल करो अवतार ॥ ३ ॥
प्रगटाणो निजरूपसूं, देखी हणुमत नैण ।
मंदोदरी पुलकित कहे, कठीन कडवा वैण ॥ ४ ॥

११ ढाळ ॥

मंदोदरी वाक्य–मंदोदरी कहे सुणो जमाई, या क्या भूंडी कीधी; सायरसूं तोडी बेकाजे, भली गलेमे लीधी; म्हांने भूंडो लागे जी, रंकतणी तो सेवा करतां, भूख न भागे जी ॥ १ ॥ सहु राजांमे कीयो शिरोमनि, कांई विगाड्यो मै तो; म्हांने छोडी भूचर सेवे; दूतपणेमे रेतो ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नीच काम तो दूतपणाको, करतां लाज न आवे; सात पीढीने कलंक लगावे, थां सम पूत ज थावे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ हणुमत बोले सुणो सासूजी, म्हे तो आछो कीधो;छोड अन्याई न्याई झेल्या,राघव शरणो लीधो; म्हे तो साचूं बोल्याजी, झूठतणो पखपात तजीने, श्रीरामने झेल्याजी ॥ ४ ॥ दूतपणो करतां स्यूं म्हैणी, भडुवापणे छै म्हैणी; तुज भडवी कहूं कै कहूं तुज दूती, देख लीवी तुज रैणी ॥ म्हे० ॥५॥ थासरीखी नीच जगतमे, दूजी नही कोई होसी; पति लंपट घरनारी दूती, तुज पति बहुलो रोसी ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ राम कहे इस हण

मंत बोले, राम भक्ति संग रातो; सासू कड़वा वैण सु-
णीनें, मनमें हुय गयो तातो ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ इति ॥

लावणी ॥

कहे मंदोदरी वात नाथ मुज मांनो ॥ ना० ॥ छोडो सीताकी गैल आधी मत तांनो, रघुवरको महातेज जगत नही छांनो ॥ ज० ॥ घर फूटो महाराज भाई लीयो कांनो; नौकर सब इन ठौर दौर गये भाजी ॥दो०॥ दिन वदले महाराज लड़त है पाजी; तुमकूं को सिखवत्त नहीं कोइ स्यांनो ॥ व० ॥ १ ॥ कुंन जांनी हस्त प्रहस्त सबी घट जासी ॥ स० ॥ कुन जांनी रन वीच राक्षस हट जासी; कुंन जांनी जंवूमाली नद कट जासी ॥ न० ॥ कुंन जांनी सुग्रीव आदि छुट जासी, कुंन जांनी कपि रीछ जंगे अड जासी ॥ जं० ॥ कुंन जांनी गढ़ लंक वक धुड जासी;अठा आगे क्या होसी जांने भगवांनो॥जां० क० ॥२॥ कुंन जानी थी शक्ति खालि चल जासी ॥ला० कुंन जांनी इंद्रजीत जोधा बंध जासी; कुंन जांनी लिछ-मन वीर सहस परणेसी ॥ स० ॥ कुंन जांनी वैरी फोज घेरो आय देसी,नंदन बंधन वीच देवर पिण जांनो ॥दे०॥ राम मुनी कह वातनाथ मत तांनो; कोई कहैसी ऐसी वात नही थो दांनो ॥ न० क० ॥ ३ ॥ इति ॥

१३ हो पिउ पंखीडा ॥ ए देशी॥

हो पिउ मतवाला, हजेयन समजो कांय जो, भाई अरु नंदन सगला बंधिया रे लो ॥हो०॥ सहू थाका सम-भाय जो,शक्ति रे पर मुख शस्त्र शर नहीं सधिया रे लो ॥१ ॥ हो० ॥ पवन देव गयो आज जो, धूवां फूका पिण

कीधा हमे हाथसूं रे लो॥हो०॥दुरगा पिण गई भाज जो, आरती पिण नहीं हुई छै आज प्रभातसूं रे लो०॥२॥हो० सूर देव गयो रूठ जो, वेमाता पिण कोद्रव आज नां दले रे लो ॥ हो० ॥ पुनां पिण दीवी पूठ जो, दिन दिन निज दल राम अरि दलसे मिले रे लो ॥ ३ ॥ इति ॥

१४ गेरो जी फूल गुलावरो ॥ ए देशी ॥

थे मांनो जी सीख सुहामणी,थे तो मांनो मांनो नणदीरा वीरा,म्हारा साहिवा,मैं निरखी परखी एक वातमें; शील रखने रखे शरीरा ॥ म्हा० थे०॥ टेर ॥ ए रामचंद्रकी भारजा, आ तो सतियांमें सिरताज ॥ म्हा० ॥ केवली आगू भावियो, कांई भूल गया महाराज ॥ म्हा० थे०॥१ थे जानकी लाया घर जान की,आ तो प्रांनकी लेवणहारा ॥ म्हा० ॥ क्यू सूपोनी पाछी एहनें, सहू वरते मंगलाचारा ॥ म्हा० ॥ २ ॥ आ पिण निश्चय होय रही, नही मांने वचन तुमारा ॥ म्हा० ॥ भाई बंधव सब वदलिया, कुल मैणी देवे ससारा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ कुमी नहीं किण वातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हा० ॥ वळी जोवोनी वखत विचारने, रही थोडीसी घणी गई लारा ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ एक हणुमत दूत आयने, करयूं लंका मध्य हाहाकारा ॥ म्हा० ॥ खर दूषण हण वस गया, हण्या राक्षस चवदे हजारा ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ स्वप्न हुवो एक रातरो, मैं तो शिर धड देख्या तुम न्यारा ॥ म्हा०॥ क्यू समजोनी इण वातमें, मैं तो कहि कहिने सब हारया ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ हठीला हठने छोडिये, थांने साच वचन लागे खारा ॥ म्हा० ॥ मुनि राम कहे स्यो भाखीये, कुण टाळे होवणहारा ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ इति ॥

१५ हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

थे किम भूला राजवी, आ घर जावणकी वात; मंदोदरी यूं समजावे, मनमे सोचो साहिबा, वो गृभ लडियो तुम साथ ॥ मं० ॥ हां पतिनें यूं समजावे ॥ टेर ॥ १ ॥ वा नहीं वांछे साहिबा, थे किम खोवो राज ॥ मं० ॥ वंदर राजा वदलियो, और रघुवर आयो गाज ॥ मं० हां० ॥ २ ॥ पद प्रणमीनें वीनऊं, आप स्यूं कीयो सीता लाय ॥ मं० ॥ करणी देखी दूतकी, सव लंका दीवी धुजाय ॥ मं० हां ॥ ३ ॥ अव राम आये चमू लेईनें, सो करसी कौन हवाल ॥ मं० ॥ सीता लीये विन ना फिरे, कुंण छोडे अपणी नार ॥ म० म्हां० ॥ ४ ॥ शीत निशा सम जानकी, और तव कुल कमल विनास ॥ मं० ॥ निज सचिव संग देईनें, आ मेलो रघुवर पास ॥ मं० म्हां० ॥ ५ ॥ राम वाण अहिगण सारिखा, निकर निशाचर भेक ॥ मं० ॥ जां लग ग्रसत न तां लगे, जतन करो तज टेक ॥ मं० म्हां० ॥ ६ ॥ हस कर रावण बोलियो, सत्य डरकण नारी जात ॥ मं० ॥ त्रिलोक डरे ताकी त्रिया, क्यूं निडर न रहे दिन रात ॥ मं० म्हां०॥ ७ ॥ दिन फिरियो रावणतणो, सो अमृत पीये नाय ॥ म० ॥ राम दिवस छै एहवो, मनु मट्टी सोवन थाय ॥ मं० म्हां०॥८॥ इति॥

१६ सुंदर क्या नैंनां झमकावे ॥ ए देशी॥

अव हूं नहीं रहूं रे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ अ० ॥ १ ॥ क्या जानी थी क्या हुय आई, बंधव धरा पटक्यो ॥ अ० ॥ २ ॥ सीया हूतो दुश्मन घर वैठी, धिक् धिक् जीवत घटक्यो ॥ अ० ॥ ३॥मुज सगे मुज

बंधव निकस्यो, मुज संगे वनमें भटक्यो ॥ अ० ॥४॥जावो जावो रे भीर सब छारो, बांह बल मोरो घटग्यो॥अ०॥५॥ राम बंधवनो होत है विरहो, फिट हीया तूं नहीं फटग्यो ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ लावणी ॥

नहीं मान्यो विभीषण बोल, हिवे पिछतायो ॥ हि०॥ सतीभणी दीयो दुःख हाथ नहीं आयो; भाई बेटा बधवाय घरे ह्रु आयो ॥ घ० ॥ मुजलगि कुमतकी संग यूही भरमायो; मै कीयो नहीं जिन धर्म कर्म, बधवायो ॥ क० न० ॥ लंकासो मुज राज काज नहीं सुधरयो ॥ का० ॥ गुरु ज्ञानीका वचन जानत हूं विसरयो;निमित्तीको बोल अमोल जावे किम खाली ॥ जा० ॥ सह्र संपतको खोय आपदा घाली; आंख मीच होय अध सती हर लायो ॥ स० न० ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी बात हातसें खोई ॥ हा० ॥ म्हां जैसो महानीच भयो नहीं कोई; मंदोदरीको सुपन साच दरसावे ॥ सा० ॥ इण पर रावण राय यहो पिछतावे; सूर्पणखा मुज बैन मुजे भरमायो ॥ मु० न० ॥ ३ ॥ कछु न विगरयो हाल सीता जो सौंपू॥सी०॥ सब सुधरे मनका काज झंड जस रोपू; घाल विमानके मांहि सैन्यके बारे ॥ सै० ॥ सती जावे रामके पास हुवे जस सारे; रावण एम विमास सती सग आयो ॥ स० न० ॥ ४ ॥ हे सीता चल लार रामने देऊ ॥ रा० ॥ अब अख्यो वचन मुखमांय तुझे नही केऊं; इम कही सीता लेइ गयो दिल गाढे ॥ ग० ॥ पिण सूर्पणखा तो वैर पूर्व तो काढे; सुनि राम कहे सग नीच तणी दुखदायो ॥ त० न० ॥ ५ ॥ इति ॥

१५ हां सगीजीनें पेड़ा भावे॥ ए देशी॥

थे किम भूला राजवी, आ घर जावणकी बात; मंदं
दरी यूं समजावे, मनमें सोचो साहिबा, वो गृध्र लाडिय
तुम साथ ॥ मं० ॥ हां पतिनें यूं समजावे ॥ टेर ॥ १
वा नहीं वांछे साहिबा, थे किम खोवो राज ॥ मं०
बंदर राजा बदलियो, और रघुवर आयो गाज ॥ मं
हां० ॥ २ ॥ पद प्रणमीनें वीनऊं, आप स्यूं कीयो सीत
लाय ॥ मं० ॥ करणी देखी दूतकी, सब लंका दीवी धु
जाय ॥ मं० हां ॥ ३ ॥ अब राम आये चमू लेईने, स
करसी कौन हवाल ॥ मं० ॥ सीता लीये विन ना फि
कुंण छोडे अपणी नार ॥ मं० म्हां० ॥ ४ ॥ शीत निश
सम जानकी, और तव कुल कमल विनास ॥ मं० ॥ निज
सचिव संग देईनें, आ मेलो रघुवर पास ॥ मं० म्हां
॥ ५ ॥ राम बाण अहिगण सारिखा, निकर निशाच
भेक ॥ मं० ॥ जां लग ग्रसत न तां लगे, जतन करो तउ
टेक ॥ मं० म्हां० ॥ ६ ॥ हस कर रावण बोलियो, सु
डरकण नारी जात ॥ मं० ॥ त्रिलोक डरे ताकी त्रि
क्यू निडर न रहे दिन रात ॥ मं० म्हां०॥ ७ ॥ दिन ॥
रियो रावणतणो, सो अमृत पीये नाय ॥ मं० ॥ राम
स छै एहवो, मनु मट्टी सोवन थाय ॥ मं० म्हां०॥८॥ इ

१६ सुंदर क्या नैनां झमकावे ॥ ए देशी॥

अब हूं नहीं रहूं रे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछ
मनसूं ॥ अ० ॥ १ ॥ क्या जानी थी क्या हुय आई, मैं
धव घरा पटक्यो ॥ अ० ॥ २ ॥ सीया हुतो दुश्मन घर
बैठी, धिक् धिक् जीवत घटक्यो ॥ अ० ॥ ३॥मुज संगे मुज

॥ दे० ॥ देखो जी जिसकी चाल देखो पुन्यवता; जरा न जिसके झूठ बडे है न्याई ॥ च० व० ॥ २ ॥ श्रीराम दयाल कृपाल शाल दुश्मनका ॥ शा० ॥ कुंन झेले महाराज जोर लिछमनका; म्हे चढसां महाराज मुझे फुरमायो ॥ मु० ॥ पिण हट कर अरज मनाय मिलण मिस आयो; हस्त प्रहस्लादि योध कटे छिनमांई ॥ क० व० ॥ ॥ ३ ॥ धररर धरा धसकाय पाय जब धरसी ॥ पा० ॥ सररर चलसी बांण वहोत नर मरसी; अररर करसी लोक एक नहीं अरसी ॥ ए० ॥ थररर हीयो थरीय कायर पाय परसी; ऐसे लिछमनका जंग होसे रन मांई ॥ हो० ब० ॥ ४ ॥ मै हितकी बोलू वात इसीमे सोचो ॥ इ० ॥ माथे पड़ियो पेच वखत है पोचो; भामंडल सुग्रीव बधे ये पासे ॥ बं० ॥ छिनमे छुटा तेह हुजे नवि मासे; उलटी पडे सब वात सीता जब आई ॥ सी० व० ॥ ५ ॥ गरुडाधिप सुर आय साय थयो भारी ॥ सा० ॥ दीधी अमोलक चीज उभो फुन त्यारी; दोय धधव शुद्ध रीति दीसे अवतारी ॥ दी० ॥ पर रमणीके धंधु बडे उपगारी; अजे न विगडी वात देवो फुरमाई ॥ दे० व० ॥ ॥ ६ ॥ कर विसटाळो वात ठिकांणे लाऊ ॥ ठि० ॥ आप सर्व वातका जांण कांई समजाऊं; अबके विगरी वात लगे नही कारी ॥ ल० ॥ सो वातांकी वात मांनो ए म्हारी; रत्नश्रवाजी तात केकसी माई ॥ के० व० ॥ ७ ॥ तरक भरक लाय रीस पीस दातांने ॥ पी० ॥ तैं लरूने धोयो मुक्ख, खबर है म्हानें; पिण देख जमिनके छेह काढ सारानें ॥ का० ॥ वनवासीकूं मार सेऊं सीतानें; सुनि राम कहे सत्य वात टरे किम आई ॥ ट० व० ॥ ८ ॥

अन उचित कर वात फते कुंन पाई ॥ फ० ॥ उचित क
त विमास जगत जस थाई; उगणीसे दोय तीस फल
धि चउमासे ॥ फ० ॥ शुद्ध तेरस बुधवार आसोज
मासे; करो मुनी चउमास फलोधि सुखदाई ॥ फ० व
॥ ९ ॥ इति ॥

२० लावनी

तुम चलो सखी कछु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

विभीषनकी अरज सुनीजे, वखत नही है आनेकी
सीता दीजे ढील न कीजे, वात नही है छांनेकी ॥ व०
शक्ती गई गई बहु विद्या, सुत बंधू बंधवांनेकी; पौं
नहीं भई सब जगकेसी, मैंणी देसी नृप रानेकी ॥ व
॥ २ ॥ राज्यधानी सब रानी हारी, नहीं मांनी कोई द
नेकी; चक्र गये तुज दुश्मन हाथे, वखत आई जि
जांनेकी ॥ व० ॥ ३ ॥ वार वार ए अर्जी साहिब, कि
रहे वस्तु विरांनेकी; सीता सूंपू वनी सव रक्खूं, रज
देवो पहुंचानेकी ॥ व० ॥ ४ ॥ हूं चाकर तूं ठाकर मेरो
मोज करो लंक थांनेकी; श्रीरघुवर भाखे नेक कहे छै
वखत नही छै तांनेकी ॥ व० ॥ ५ ॥ गुन्हो माफ कीये
सब तोनुं, मत चूको अवसानेकी; लिछमन भाखे ओघ
न राखे, राम, कहे परमानेकी ॥ व० ॥ ६ ॥ इति ॥

२१ देशी ख्यालनी ॥

गढ लंका मांयनें, आई रे असवारी राजा रामकी
राम लिछमन तो दीपे अधिका, हाथी होदे बैठा; सार
लोक लुगाई देखे, नगरी मांहे पैठा; दरवाजामे वहुत
ऊंचा, मोती लूंवक दीठारे ॥ ग० ॥ १ ॥ सवा मणको

मोती सोभे,घाजू सोभे और;रामचंद्रजी दिलमें सोचे,इ-
सो न दूजी ठोड; अजोध्यामें सोभे ओ तो,लेवां इसीकूं
तोड जी ॥ ग० ॥ २ ॥ मनोगत भाव जाण्या कविवरनें,
वोले समस्या वोल; वमी चीजकूं वंछे न उत्तम, या क्या
और अमोल; एक एकसें अधिकाधिक है, देखो आगली
पोलजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ सुनकर राम विचारे दिलमें, साच
कहे छै एह; ए सब चीज विरानी इनसे, भूल न करना
नेह; अजबतरेकी वस्तू देखत, कहतां न आवे छेह जी
॥ ग० ॥ ४ ॥ लोकतणे सुख शोभा सुनते, सीता पास
पधारे; सीता देखनकी अभिलाषा, सो जांणे किरतार; पग
पग लाखपसाव ज देते, इन पर राम पधारे जी ॥ ग० ॥ ५॥

२२ विभीषण प्रति भामंडल वाक्य ॥

दोहा ॥

पर शोच तज निज काज कर, ज्यूं सुधरे जमवार ।
अरिदम नृपनी सुन कथा, समझो सहु नर नार॥१॥

ढाळ ॥

लश्करियानी देशी.

अक्षपुर नामा एक पुरी हो, राजेंद्रजी, जां अरिदम
नामे राय; सुणिये वारता हो,राजेंद्रजी,एक दिन काहूक त-
र्फसें हो, राजेंद्रजी, आयो अचिंतित अश्व दवाय॥सु॥१॥
रानी शृंगार स्यारी महलकी हो, ॥ रा०॥ तव पूछे रानीने
नरेंद्र ॥ सु० ॥ मुज आगम किम जाणियो हो ॥ रा० ॥
जव रांनी कहे कह्यो मुनींद्र ॥ सु० ॥ कीर्तिधर नामे
मुनीं हो ॥ रा० ॥ आज आये आहारके काज ॥ सु० ॥
तिनकूं हम पूछ्या इसें हो ॥ रा० ॥ कब आसी कहो

थो जन्म सुधार हे, बाभी, आ थोड़ा दिनांरी थांरी साहिबी हूं, वारी ॥ ६ ॥ इति ॥

२ गहरा बाजा बाजे नोबत घुरियां ॥ ए देशी ॥

थारो नंदन लागे जगत नीको ॥ था० ॥ पभणे रांणी वांणी हरखांणी, तो नंदन त्रिभवन टीको ॥ थां० ॥ तुंवड खता जसोमती बाई, जायो थे नंदन सुंदर कीको ॥ थां० ॥ १ ॥ सुरनरको मन मोहनगारो, प्यारो लागे बाई हम जीको ॥ थां० ॥ अद्भुत रूप अनूप बिराजे, मदन कर दीयो इन फीको ॥ थां० ॥ २ ॥ मान महा मद छिनमां हे मारे, मूल उछेद डारे सहु वैरीको ॥ थां० ॥ आनन चंद पूनम सम छाजे, व्हालो लागे सब तीको ॥ थां० ॥ ॥ ३ ॥ सज्जन जननी मन लागे, वल्लभ ज्यूं हार छातीको ॥ थां० ॥ दुर्जन जन मन खारो लागे, जैसे घाव कातीको ॥ था० ॥ ४ ॥ दही दूध शुद्ध खवावे धेनड, श्याम अरमातीको ॥ था० ॥ हम तुम कुल मंडन छे एही, चित्त हरत नित्त इंद्रानीको ॥ था० ॥ ५ ॥ नख सिख तांई श्याम सलूनो, वरन न होवे रोम राजीको ॥ था० ॥ जोतां तृपत न उपजै दिलमे, धन्य जन्म मानुं माजीको ॥ था० ॥ ६ ॥ दरस परसकूं तरस तरस है, जोगी करै जस गिरधारीको ॥ था० ॥ पूत कहावे जसोदा थारो, है अचरज अवतारीको ॥ था० ॥ ७ ॥ ढाळ भली बत्तीसमी गाई, गुणसागर कहै जस धारीको ॥ थां० ॥ खान पान अरु अमृत होजो, पूरो मनोरथ उर धारीको ॥ था० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥

३ अनोखा भंवरजी हो मारूजी झालो देउं घर आव ॥ ए देशी ॥

काळी नागनें नाथने हो, कनांजी, लीधी गोकुलकी वाट, जावे मथुरा गूजरी हो, कांनजी, रोक्यो जमुनाको घाट; रंगीला कानजी हो, लालजी, छोड जमुनाको घाट ॥ टेर ॥ दाण लेण सारू खडा हे, गुजरी, क्यू करो तांणोतांण; विन दीना नहीं जावसो हे, गुजरी, नदरायकी आंण ॥ रं० ॥ २ ॥

२३ सवैयो ॥

मैं तो नई निकसी नहीं मोहन, या अब रीत नई तुम कीनी; आज अनोज अकोज ग्रहे हरि, या अंगियां जु नई तुम छीनी; मै तो सदा व्रजमे मही वेचती, दांन मिसे दमरी नहीं दीनी; नद ददाजीकों पूछही देखो, कबे तुम ग्वालकी गागरी लीनी ॥ १ ॥ [कृष्णवाक्यम्–काहेको पूछहि देखो ददाजीकों, छाडि गुमांन गुवाल हठीली, या व्रजमे सब जानत है इक, नंदको लाल दधीको जु दांनी; इद्रके लोक महेशके लोकमे, आंन हमारी कीने नहीं भांनी; वेरहीवेर कहो व्रज नागरी, जाती है जोबन जोर जोरानी ॥ २ ॥ [गूजरीवाक्यम्–एतो कहा अभिमांन धरो हरि, वात वडी वडी मोहिसो तांनो, मात तिहारी सदा महि वेचत, साची कहेते बुरो जिन मांनो; काहेको गाय चरावत हो हरि, तातें कहावत घोषको रांनो; जात अहीरकी एक सबे हरि, को दश गायनको अधिकानो ॥ ३ ॥ [कृष्णवाक्यम्–वात विचारके बोलरी भामनी, एकही जातमे भांत घनी

६ जवांई दाय न आवे रे ॥ ए देशी ॥

भूवाजी अब किम करसूं हो, किणविध जासूं वागमें; किण विध हरि वरसूं हो ॥ भू० ॥ टेर ॥ कहां द्वारापुरी साहिवो, मिलियां विन भरसूं हो; वागमांहे किम जावसूं, डरूं शिशुपाल नरसूं हो ॥ भू० ॥ १ ॥ सयानी हरि नहीं न्यारो हे, धरियो रैसी जावतो; झक मारे शिशुपारो हे ॥ स० ॥ टेर ॥ द्वारापुरीको साहिवो, आयो वाग मझारो हे; हूं काढूं अणियां वीचसूं, स्यूं शिशुपाल विचारो हे ॥ स० ॥ १ ॥ शिशुपालनें त्यागीयो, कीयो हेत हरसूं हो; जो इण भव नहीं पावसूं, तो पावकमें जरसूं हो ॥ भू० ॥ २ ॥ दूजा नर सब त्यागीया, हरि मोहन गारो हे; तोय मिलाऊं एक वातमें, धीं धीं वजत नगारो हे ॥ स० ॥ २ ॥ भाई बाप तौ व्यावसी, हूं तो कूवे परसूं हो; आफू पिऊं भर वाटको, नहीं शिशुपाल वरसूं हो ॥ भू ॥ ३ ॥ वाप भाई मुख जोवसी, स्यूं शिशुपाल पींजारो हे; क्यूं मरन विचारे ताहरो, तोरो हरि भरतारो हे ॥स०॥ ३ ॥ इति॥

७ सोकडलनी साल म्हांने भूंडो लागेजी ॥ ए देशी ॥

भूडा घरांकी जाई भूंडी, मोडेकी परणाई; भीषमको घर भांडी भूंडी, ओ घर भांडण आई; अमनें दौरो लागे जी, सोकडलीको साल;म्हांने दौरो लागेजी ॥टेर॥ लाखां मिनखांनें इण खाया, भाईनें वधाई; चौडी वणने करै वडाई, आ किसो दायजो लाई ॥ म्हा० ॥ २ ॥ गीदे बैठी हुकम हलावे, सतरे करती सांग; वावलीयेके घरमें फिरती, वारे हाथकी डांग ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ मांन पाय भाडै

वण बैठी, गैणे गांठे रहे लद्दि; थोडा दिनांमे देखों इण नें, माती होय गई गद्दि ॥ म्हा ॥ ४ ॥ गोलो वणने एह गवाल्यो, अमथी चाले आडो; इण धींगीने कर धणियांणी, लाल वण्यो छै लाडो ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजनीत नहीं जांणे गवाळयो, काळ्यो वण रह्यो पाठ्यो; गायां चराई माय जसोदा, कदको राज जमाड्यो ॥ म्हा० ॥ ॥ ६ ॥ उणरे मैलां नितको जावे, सारी रात जगावे, म्हारे मैलामे भूलने आवे, तो नैणां नींद घुरावे ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ मुजकू पलभर नहीं जो देखे, तो जक नहीं पडती लारे; अब नैणांमे प्रीत न सागे, माखी न मुळको मारे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ इति ढाळ सागर ॥

पांडव चरित्र–लावणी ॥

१ लाज मोरी रखले भव्वानी ॥ ए देशी ॥

च्यारके उत्तर सुन लैना, मैं तुज देताहूं मैना ॥ टेर ॥ मोद जुत देह कौन कहियै, जगतमे आश्चर्य को लहियै; को पथका वात सरदहीये, च्यार ए उत्तरही चहियै, उत्तर च्यार कह दीजिये, तो जीवे वधु एक तोय; मोय सुनेवा चाय है, सुनता आनद होय; घोय पीछे मुहमे जल देना २ ॥च्या०॥१॥पच वा छट्ठे वासर जाई, साक वा पचले घर मांई; किसीका देना सिर नाई, नौकरी विन भोज करै चाई; राई भर परवश नहीं, करज किसीका नाह; नींद आपकी ऊठही, वो मोद जुक्त जग मांह; जांह कछु लेना नादनों २ ॥ च्या० ॥ २ ॥ वात ना जगमें कछु छांनी, दिन दिन मरता है प्रांनी, पाव रूप्प रहते अज्ञा-

नी, पापमें हो रहे अगवानी; मानी नर जग एहवा, म्है कदे न मरसां कोय, आंख्यां मरता देखही, क्या इनसें इचरज होय; कोय तो अमर नही रैना २ ॥ क्या० ॥ ३ ॥ पंथ नहीं एकसा सारे, मुनीका मत पिण है न्यारे; ग्रंथ मत एक नही प्यारे, पंथ खरा एक कौन धारे; पंथ कौन है साचलो, कौन साचलो सत; महंत गये जिण मारगे, सो साचो है पंथ; तंत तो पंथ उसे वैना २ ॥ क्या०॥४॥ मोहको कटाह जग भारी, रात दिन रूप इंधन जारी; रवी जां अगनी छै न्यारी, पचावे कालही अधिकारी; पचै प्राणी मात्र जे, क्या वात इसीसें और; मुनि राम कहे धर्म ना करै, ते नर जंगली ढोर; और क्या इधक इससे कैना २ ॥ क्या० ॥ ५ ॥ कहे सो बंधू जियलाऊं, नृप कहे नकुल जीयो चाऊं; भीमार्जुन मांगो समझाऊं, माद्रीको वंश ही रखवाऊं; कुंती नाम मैं राख हूं, माद्री नकुल रखाय; सुर कहे धन्य तुम धीरता, महिमा करी सुर राय, आय मैं देखी निज नैना ॥ २ ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

राग मांच ॥

पत्तर आयो, मांनो मांनो जी, पत्तर लायो, काकाजीको जी, वांचो प्रेमसू ॥ टेर ॥ म्है पूछां तोय वारता, किम जाण्या इण ठाय; कारन किन तूं आवियो, सहू कहो विगलाय जी ॥ प० ॥ १ ॥ अरज करूं मैं वीनती हू आयो शुभ काज-विदुरसा मुज भेजियो, कारन सुनो महाराज जी ॥ प० ॥ २ ॥ छांने मुजनें भेजियो, कोईय न जांणे मोय; अवश्य काज हूं भेजियो, सुणतां आनंद होय जी ॥ प० ॥ ३ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

वाहुवल खड़ा जोग वन धरियो ॥ ए देशी ॥

प्रियंवद आई मिलियो वनमें, श्रै तो पांडव हर्ष्यो मनमें ॥ प्रि० ॥ टेर ॥ वारणावत मुज विदुरजी भेज्यो, सुणिया वळिया तुमने ॥ प्रि० ॥ आगे देखू तो लोग पुकारे, देवे धिक्कार सुयोधनने ॥ प्रि० पां० ॥ १ ॥ सांभळनें हूं मूर्छित हूयो, सुद्ध नहीं कछु तनमे ॥ प्रि० ॥ पट् पुरुषने नारी दोई, भस्म हुवा एक छिनमें ॥ प्रि० ॥ २ ॥ मैं विदुर पंडवकू जई भाखी, दुःख न आवे कछु कहवनमे ॥ प्रि० ॥ छांने वखाने विदुर पडवसे, नहीं दुःख तेरा नंदनमे ॥ प्रि०॥ ३ ॥ दुर्योधन मन भयो कुश्याली, अवि राज करूंगा आनंदमे ॥ प्रि० ॥ एक दिन एक चक्रापुर सेती, नर एक कह्यो जन जनमे ॥ प्रि० ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससग्रहे ढाळसागर तथा पाण्डवचरित्रान्तर्गतं फुटकरनामक एकादश प्रकरणम् ॥ ११ ॥

व्याख्यान ॥

१ अथ विजय कुमरनो चौढाळियो प्रारंभ ॥

दोहा ॥

आदिनाथ आदेश्वरू, सकल विदारण कर्म ।
उपगारी भवि तारवा, कह्यो च्यार प्रकारे धर्म ॥ १ ॥
दान शील तप भावना, इन विन मुक्ति न होय ।
तो पिण सव व्रत देखता, शील समो नहीं कोय २॥

शील भागां भागा सबै, इम कहै श्रीजगचंद ।
शीलवंत जे पुरुषनें, सेवे सुर नर वृंद ॥ ३ ॥
जस कीर्ति फैलै इला, जे ब्रह्म व्रतमें लील ।
जो सुख चावो जीवने, तो पाळो शुध मन शील॥४॥
विजय कुमर विजया वळी, शील पाळ्यो खग धार।
तेहतणां गुण वर्णवुं, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥
निसुणी करो सारी सभा, पर नारी पच खांण ।
पंचपर्वि दिन आंखड़ी, करो यथाशक्ति प्रमांण ॥६॥
यौवन वय छति योगमे, नारि रहै जिण पास ।
ब्रह्मचारी त्रिहुं योगस्तु, दुकर दुकर परकाश ॥ ७ ॥

ढाल ॥

१ मेड़तिया भँवरजीरो करहलो ॥ ए देशी ॥

जंबू द्वीपना भरतमें, दक्षिणे कछ देशो जी; नगर कौशंबी तेहमे, अमरापुरी कहे सोजी;शीलतणी महिम सुणो ॥ १ ॥ धनावो सेठ तिहां वसै, तिणरे विजय कुमारोजी; रूप कला गुण आगलो, यौवन वय हुंसिया रो जी ॥ सी० ॥ २ ॥ तिण अवसर मुनि पांगुर्या, सुमति गुप्ति प्रति पन्नो जी; आपतिरे पर तारता, लोक कहे धन धन्नो जी ॥ सी० ॥ ३ ॥ लोक आया मुनि वांदवा, तिम ही विजय कुमारो जी; धर्म कथा मुनिवर कहै, ए संसार असारो जी ॥ सी० ॥ ४ ॥ जनम जरा दुख मरणनो कहतां नावै पारो जी; नर भव पामतां दोहिलो, चेतं सहू नर नारो जी ॥ सी० ॥ ५ ॥ उत्कृष्टो बंध कर्मनो विषय विष विचारो जी; नव लाख सनि मनुष्यनो श्रीजिन कह्यो सहारो जी ॥ सी० ॥ ६ ॥दुःख अनेक इ

जोग सूं, पर नारी दुख खांनो जी; फल किंपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवांनो जी ॥ सी० ॥ ७ ॥ इम सुणि सहु धरह्या, विजय कुमर जोडी हाथो जी; हे मुनि सयम लेइवा, हूं समरथ नहीं किरपानाथो जी ॥ सी० ॥ ॥ ८ ॥ जावज्जीव पर नारनो, मोने मुनि पचखांणो जी; स्वदारा पिण जावज्जीव, कृष्ण पक्ष नां जांणो जी ॥ ॥ सी० ॥ ९ ॥ दुष्कर काम कुमर कीयो, मुनिवर कीध विहारोजी; रामचद्र कहै शीलने, धन्य पाळे नर नारौ जी ॥ सी० ॥ १० ॥ इति ॥

दोहा ॥

तिण नगरी मांहे वसै, अपर सेठ धनसार ।
विजया कुमरी जेहने, अद्भुत रूप उदार ॥ १ ॥
सयणी चतुरा बहु लजा, चौसठ कला भंडार ।
भर यौवन आई तदा, सादी विजय कुमार ॥ २ ॥
आरण कारण सहु करी, कियो व्याव तिणवार ।
जेहवी विजया सुंदरी, ते हवो विजय कुमार ॥ ३ ॥

ढाळ ॥

२ मेंदुलाना गीतनी देशी ॥ मोटी जुगमें मोहनी ॥

सौळे शृंगार सभी भला, कांई आईहो रंगमहल मझार; नयन वयन प्रिय मोहती, माय उभीहो जिहां विजय कुमार; सुण जो जी शील सुहामणो ॥ १ ॥ कंत कहै भल आविया, दिन तीनेहो नहीं आवण काज; स्यूं कारण कहे सुदरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥ सु० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्ष व्रत मैं लीयो, इण सुणने हो आ थई है उदास; शुक्ल पक्ष व्रत मैं कीयो, दूजी परणी हो

मांडो घरवास ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजय कुमर कहै हे प्रिया, सहिजे हुळियो हो अनरथको मूल; जावज्जीव व्रत पाळसां, नर मूरख हो रह्या छै भूल ॥ सु० ॥ ४ ॥ कहै प्यारी प्रीतम सुणो जी कांई कहै, किम रहसी हो आछांनी वात; प्रगट हुवां संयम लेसां, कांई लड़सांहो कर्मारी साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ काम भोग बहु भोगव्या, केईवार हो अनत विचार; तोई तृप्त न हुवो जीवड़ो, कांई बोलेहो इम विजय कुमार ॥ सु० ॥ ६ ॥ करै सामाई पोसा भेळा, कांई सोवेहो एक सेज मंझार; जोवै भगिनी भ्रात ज्यूं, शील पाळेहो खांडारी धार ॥ सु० ॥ ७ ॥ मन वचन काया करी, नहीं व्यापेहो कदी काम विकार; सार धर्म जांणै जिनतणो, कांई बीजो हो सहू जांणै असार ॥ सु० ॥ ८ ॥ नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे, कांई लेखेहो जेहनो अवतार; राम कहै ढाळ दूसरी, धन्य पाळे हो जे नर ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

दोहा ॥

धर्म ध्यांन करतां थकां, द्वादश वर्ष ज थाय ॥
किम कर वात परगट हुवै, ते सुणजो चित लाय॥१॥
लक्षिम भाग्यने रागता, दाता सूर सुवास ।
एता छांनां किम रहै, विट्ठल् कवी प्रकास ॥ २ ॥

ढाळ ॥

३ जल्हानी देशी ॥

तिण अवसर तिण काळे दक्षिण देशेहो सुखकारी मुनिराज ॥ ति०॥ मुनिंद ॥ विमल केवलि नांमे मुनि शुभ वेशे हो ॥ सु० वि० मु० ॥ १ ॥ चंपा पुरीना बागमांहे

ऊतरिया हो ॥ सु० चं० मु० ॥ बहु नर नारी मुनि वंदन परवरीया हो ॥ सु० ब० मु० ॥ २ ॥ ऐ संसार असार मुनि दिखलावे हो ॥ सु० ए० मु० ॥ तन धन यौवन जातां वार न लावे हो ॥ सु० त० मु० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत भामिनी संग न आवे हो ॥ सु० मा० मु० ॥ सहु सग छोडी चेतन पर भव जावे हो ॥ सु० स० मु० ॥४॥ विषय विकार प्रमादे नर भव हारे हो० ॥ सु० वि० मु०॥ मूरख चेतन रतन अमोलिक डारे हो ॥ सु० मू० मु० ॥५॥ इत्यादिक मुनि धर्म देशना दीधी हो ॥ सु० इ० मु० ॥ श्रोता श्रवणे अमृत रस कर पीधी हो ॥ सु० श्रो० मु० ॥ ६ ॥ जिनदास श्रावक विनये सीस नमायो हो ॥ सु० जि० मु० ॥ हे प्रभुजी मुज रयणि सुपनो आयो हो ॥ सु० हे० मु० ॥ ७ ॥ सहस्र चौरासी मास खमण मुनि-राज हो ॥ सु० ॥स० मु० ॥ मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभू आज हो ॥ सु० मैं० मु० ॥ ८ ॥ तेहनो स्यू फल दाखो कृपा करने हो ॥ सु० ते० मु० ॥ भाखै मुनिवर सेठ सुणो चित धरने हो ॥ सु० भा० मु० ॥ ९ ॥ नगर कौशांबी विजय कुमर गुणधारी हो ॥ सु० न० मु० ॥ त्रिकरण योगे दंपती बाल ब्रह्मचारी हो ॥ सु० त्रि० मु०॥१०॥ राम कहै शुध शील पाळै नर नारी हो ॥ सु०रा०मु०॥धन धन जे नर तेहनी हूं बलिहारी हो ॥ सु० ध०मु० ॥ ११ ॥ इति ॥

दोहा ॥

इक सेज्या सोवै विन्हे, शुध पाळै ब्रह्मचार ।
द्वादश वर्ष ज नीकळया, धन तेहनो अवतार ॥ १ ॥
चर्म शरीरी महा उत्तम, किया ज्ञानि गुणग्राम ।
सुणने सहु विस्मय थया, सहुको कियो प्रणाम ॥ २ ॥

जिनदास मनमें चिंतवै, जाय करूं दरसन्न ।
तुम मिलिया संयम लेवसी,मुनिवर कियो प्रसन्न॥३॥

ढाळ ॥

४ अनोखा भँवरजी हो साहिवा झालो देऊं घर आव॥ ए देशी ॥

जिनदास मुनिवर वांदने हो, भवियण, नगर कौशांवी जाय; बहु परिवारे परिवऱ्यौ हो ॥ भ० ॥ दरसन की मनमांय; धन धन जेहनें हो भवियण जे पाळै ब्रह्मचार ॥ ॥ १ ॥ नगर कौशांवीना बागमें हो ॥भ० ॥ सेठजी डेरो करेह;विजय कुमरना तातसूं हो॥भ०॥मिलियो हर्ष धरेह ॥ध०॥२॥ स्यौं कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो मुजने राज; धर्म सगपण आविया हो ॥से०॥ तुज सुत दर्शन काज ॥ध०॥३॥ विमल केवली गुण कीया हो ॥से०॥ बाल ब्रह्मचारी तेह, मुज दर्शन मनमें लगी हो॥से०॥ज्यूं चातकूं मेह ॥ध०॥४॥ सेठ सुणि अचरज थयो हो ॥ से० ॥ लीयो कुमर बुलाय; किसी भांत सोगन कीया हो, लालजी, स्यूं थांरे मन मांय ॥ ध ॥ ५ ॥ कुमर कहै कर जोड़ने हो ॥ से०॥ मैं लीयो अभिग्रह धार; आज्ञा दीजै मुजभणी हो ॥ से०॥ लेस्यूं संयम भार ॥ ध०॥ ६ ॥ तात कहै नंदन सुणो हो ॥ ला० ॥ कठिन मुनि आचार; कर अग्रे कहो किम रहे हो ॥ ला० ॥ मेरू जितरो भार ॥ ॥ ध० ॥ ७ ॥ लाख प्रकारे नही रहूं हो ॥ से० ॥ सयम सुख दातार; वैरागी कहो किम रहे हो कुमरजी, लीयो सयम भार ॥ ध० ॥ ८ ॥ विजया कुमरी पिण लीयो हो, मुनिवर, पाळै शुध आचार; जप तप खप क्रिया करी

हो, दोनं, पाम्यां केवल सार॥ ध०॥९॥ कर्म खपाय मुक्ति गया हो, ॥ मु० ॥ प्रथम तीर्थंकर वार; ब्रह्मचारी विरला इसा हो ॥ भ० ॥ सुणजो सहू नरनार ॥ ॥ ध० ॥ १० ॥ उगणीसे दशे समै हो ॥ भ०॥ नागौर शेषे काल; फागण शुध पूनम दिने हो ॥ भ० ॥ जुक्तसुं जोडी ढाळ ॥ ध० ॥ ११ ॥ स्वांमी वृद्धि चदजी प्रसादसुं हो ॥ भ० ॥ रामचंद कही जोय; ओछो अधिको जे हुवे हो ॥ भ० ॥ मिथ्या दुःकृत मोय ॥ ध० ॥ १२ ॥ इति ॥

कलश ॥

शीलवंत प्रभूनी गादी, स्वमुख जिनवर भाखियो; शीलव्रत सम अवर जगमे, नहीं पदारथ दाखियो; चौसठ सहस वरस सुर आयु पामे,लोक लज व्रत राखियो; दुर्धर व्रत जे सधर राखे, धन धन ए इस चाखियो ॥ १ ॥ विजय सेठ सेठांणी विजया, जैसा विरला जगतमें; धन धन मनुष्य जनम पायो, जाय विराज्या मुगतमे; जेहतणां गुण मुक्ख गातां, जन्म सफलो होय है; गुणवतना गुण सुणत कांने, भव भव पातक खोय है ॥ २ ॥ सुणवानो गुण एही कहिये, कछूक हिरदे धारिये; लीधा व्रतमे कायम रहिये, नर भव अफल न हारिये; ज्ञान वृद्धना चरण पकडो, अगाध भवो दधि तारिये; रामचद आनद धरने, ज्ञानादिक विचारिये ॥ ३ ॥ इति विजय कुमरनो चौडाळियो संपूर्ण॥

अखाड भूत ॥

दोहा ॥

साग कियो साधूतणो, पेट भरी गुण हीन ।
भेख लजावे लोकमे; धिक तुजने मत हीन ॥ १ ॥

महाव्रतधारी बाज है, लाजे नही लिगार ।
धर्म लजावा कारणे, तैं छोड्यो संसार ॥ २ ॥

१ चौकनी देशी ॥

सुण महासती, यां लखणांसूं जैन धर्म अति लाजै, गुण नहीं रती, लोकांमांहे निग्रंथणी तूं बाजे ॥ आंकडी ॥ तूं चाले छे चाळा करती सुधईर्या समति नहीं धरती । लोक लाजसूं नही डरती, तू लावे गोचरी झरझरती ॥ सु० ॥ १ ॥ एकली तूं फिरती दीसे, दोयनुं वरजी जग दीसे । शुद्ध सीख दीयां दांतज पीसे, तैं नहीं छोडी तिलभर रीसे ॥ सु० ॥ २ ॥ तूं मेळे खेळे देखण आवे, व्याव ओसरसूं वैरी लावे । रवि ऊगां विन पांणी जावे, तूं क्यूं जिन मारग लजवावे ॥ सु० ॥ ३ ॥ थारे घेरदार पैरण साड़ी, रंगी चंगी छे देह थारी । तप करणसूं तूं हारी, तूं तूट पडी खावण लारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तूं झीणो पट ओढण राखे, अग अंग सारो झांखे । लोक निंदा करी इम भाखे, इण भेख लीयो छे हकनाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥ परालब्धी बाल खिलावे छे, मांहो मांहे जंग मचावे छे । गृहस्थी आय छुडावे छे, जिन मारग पूरो लजावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जगमांहे बाजे तूं गुरणी, विगड़ गई थारी करणी । लपट नरना चित हरणी, तूं लाजे नहीं उद्र भरणी ॥ सु० ॥ ७ ॥ केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम धोवण लावे । शुद्ध दशा ते नहीं पावे, ते पिण शिवपुर नहीं जावे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कंचन चूडो खळके है, लिलवट विंदली चिलके है । मंजनसूं देही झिलके है, बीजल ज्यूं

तुज तन पळके है ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक भागां सब ही भागे, थारी वंदना दाय नही लागे । हू आपाढाचार्य मुनि सागे, मति ऊभी रहे तूं सुख आगे ॥ सु० ॥ १० ॥ रामचंद्र कह सुण लीजो, सुणने सतियां मत खीजो। जो खीजो तो तप कीजो, सुध संजमनी खप कीजो ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

२ चौकनी देशी ॥

सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोप विचारी बोलो, गुणो जिनवरजी, तन उज्ज्वल मन कपट हिया का खोलो ॥ सु० ॥ टेक ॥ परोपदेशी घणा जगमे, पर ओगण देखे पग पगमे । अरु आप तो झूल रह्या अध मे ॥ सु० ॥१॥ पूंज पूंज पग देवो छो, इण रीते विहारमे वेवो छो । किम लंबा लडाका देवो छो ॥ सु० ॥ २ ॥ मलिन धोवण चौडे घर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो । निंदा करि गृही कांन भर दो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पडिलेहण विधि नही जाणो छो, शुद्ध श्रद्धा न पिछांणो छो, उत्सूत्र प्ररूपी रूढ तांणो छो ॥ सु० ॥ ४ ॥ कपट क्रियासें नहीं तारिया, बाज आचारी पेट भरिया । इसा सांग तो बहु करिया ॥ सु० ॥ ५ ॥ उजड वस्तिमे सम रैणो, कैणो जिण रीते वैणो । घर औगुण देख पर गुण लैणो ॥ सु० ॥ ६ ॥ महिमा कारण करि माया, भोळा नरने भरमाया । स्यूं कपट धरम प्रभु फुरमाया ॥सु०॥७॥ आप सासेर नही जावे, परने सीख सुध फुरमावे । ज्यांरी प्रतीत करो किम आवे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हाथ थकी फेरे माळा, भरे पेटमे कुढाळा । ऐसे मुनिका मुख करना काळा ॥ सु० ॥ ९ ॥ आप पोते निग्रंथ बाजो, थोथे

चिणे ज्यू मत गाजो । घर जातां मनमें नही लाजो ॥ ॥ सु० ॥ १० ॥ मनुष्य मारनें धन लावो, अथे पेलाने समजावो । झोळी पातरां दिखलावो ॥ सु० ॥ ११ ॥ वात सुणी अचरज पाया, या किम जाणे म्हारी माया । राम तत्क्षण दोड़ आगे आया ॥ सु० ॥ १२ ॥ इति ॥

३ दिवाळी ॥

१ ढाळ ॥ पर भवकी खरची ले लो ॥ ए देशी ॥

दीवालीकी उत्तम रात, मोक्ष पधारे श्रीजगनाथ, यों तम केवल भयो परभात ॥ टेर ॥ दीवालीको शीलज पाळो, खरची ले लो गैरी साथ ॥ दी० ॥ रात्री भोजन करिये टाळो, ज्यूं रोग रहित रहे तेरो गात ॥ दी० ॥ १ ॥ पडिकमणो करणो इण वासर, गुणणो करणो शुद्ध विख्यात ॥ दी० ॥ गहिणा कपड़ा चोप दिखावो, ज्यूं श्रद्धा उजाळो छोड मिथ्यात ॥ दी० ॥ २ ॥ च्यार जाप करतां रहे आनंद, फंद टळे मिले सज्जन साथ ॥ दी० ॥ ऐसो अवसर मिले न मूरख, मान लीजो थे सतगुरु वात ॥ दी० ॥ ३ ॥ पर निंदा मत करियो भाई, वैर मिटावो टाळो घात ॥ दी० ॥ पाप ठिकांणे लक्ष्मी खरचे, जिणकी कहिये लक्ष्मी खात ॥ दी० ॥ ४ ॥ लक्ष्मी लेखे जिस्की जांणो, दान सुपातर करियो भ्रात ॥ दी० ॥ मुनि रामचंद्र कहे भाव दिवाळी, तारे झूठ नही तिल मात ॥ दी० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ डोसी ॥

दोहा ॥

पूरव कृत फल पापना, भुगते आपो आप ।
सुकृत फल जब उदय हुए, दूर पलाये पाप ॥ १ ॥

ज्यूं ज्यूं पडेज आपदा, त्यूं त्यूं धर्म करंत ।
पूर्व पाप आपद पड़े, इम भाखे भगवंत ॥ २ ॥
भांग पिये लहरां दिये, पिये न आगे लैर ।
अथवा डोसी वारता, सुणिये अंदर हेर ॥ ३ ॥

१ ढाळ ॥ संकर वसेरे कैलासमें ॥ ए देशी ॥

करिये धर्म शुद्ध चालसू, अदर कपट निवारजो ॥ कपतणा फळ पाड्डवा, नहि तरिये संसार,थारो जनम सुधार, साधु वचन तू धार, ज्ञान दृष्टि सभारजो ॥ क० १ ॥ धर्मी दुःखी सुखी पापियो, सहूकार सीदायजो ॥ धर्म फल्यो नहीं देखियो, ऐसी न लावो दिलमांय, धर्म अफलो नहीं जाय, बध्या करम भुगतायजो ॥ क० ॥२॥ एक डोसी वर्ष साठनी,मार्यो पाडोसी बाळजो ॥ गहिणा उतारी गाडियो, पछे गई धर्मशाल, उपवास कीयो तत्काल, दया लेसू पिण पालजो ॥ क०॥ ३ ॥ सामायिक कर तिष्ठहि, लारे भईरे पुकार जो । राज सुभट फिरे हेरता, जडिया डोसीना द्वार; कहां गई तालो मार, नहीं छोडे घरबार जो ॥ क० ॥ ४ ॥ घरमें बालक पग आविया, पाछा गया नहीं केम जो । आया उपाश्रय पाधरा, सुभट बोले छे एम, थारे धर्मसूं प्रेम, तेरा देख्या सूंस नेम जो ॥ क० ॥ ५ ॥ करे तगादो चल डोसली, वीरा हू छू पोसा मांय जो । भाखा चलितथी ओळखी, लाया घीसी घरमांय, थारो घरही जोवाय, म्हांने बाल दिखवाय जो ॥ क० ॥ ६ ॥ मूवो बालक निकस्यो धन लाधियो, देवे जराजर मार जो । अज्ञ कहे धर्म ना फल्यो, लीजो चतुर विचार, कीजो सुधी निरधार, डोसी लघे किम पार जो ॥ क० ॥ ७ ॥ पापना फल

७ सुभद्रा-गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां वांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन धर्म सवथी सिरे, तोय केती हूं, थे समजो ज्ञान विचार,वाईजी तोथ केती हूं;जिन धर्मदी निंदा करो मती, हणे नही कोई जीवनें ॥ तो०॥ वोले न झूठ लिगार ॥ १ ॥ बाईजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा करो मती, पक्ष दूर धरो, न्याय पक्ष करो, मुनि संगसें उतरो पार ॥ बा० जि०॥ टेर ॥ तृण न लेवे विनु दीयो ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ बा० जि० ॥ धन धूल गिण त्यागीयो ॥ तो० ॥ ऐ तनकी न रक्खै सार ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ २ ॥ रात्रि भोजन नवि करे ॥ तो० ॥ धरे पग सूत्रके न्याय ॥ बा० जि० ॥ डरे सदाई पापसूं ॥ तो० ॥ मुनि मुक्त नगर ले जाय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ३ ॥ परस्पर मींढो धर्मनें ॥ तो० ॥ मत पक्षकूं करिये दूर ॥ बा० जि० ॥ दुग्ध दुग्ध सब सारीखे ॥ तो० ॥ गिणो न केसर सम धूर ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ४ ॥ जिन मारग कोई निंदसी ॥ तो० ॥ स्यो जिन मारग जाय ॥ बा० जि० ॥ मुनि राम कहे धन्य मानवी ॥ तो० ॥ जे समजे न्याय अन्याय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

गीत ॥

१ चालो चालो हो रंग रसोड़े मांय, जीमाऊं, तोनें सीरो ने पूड़ी ॥ ए देशी ॥

छोडो छोडो हो भोजाई थांरो धर्म. कर्म कांई बांध रह्या; थांरे नहीं है सासूजीकी शर्म, घरमे कळो घालि

रह्या ॥ १ ॥ नहीं म्हांणे धोणेकी थांरे रीत, न प्रीत शिव शक्तिकी; थे हुय गया शर्म जीत, न रीत थांरे भक्तिकी ॥ २ ॥ जिन धर्म छे पूरो मलीन, थे कांई नही जांणता; थे दीसो पूरा पुन्य हीन, झूठी रूढ तांणता ॥ ३ ॥ लेस्यां गहणा गांठा खोस, दोप नहीं मांहरो, थे निकम्मा करोगा रोस, राम म्हे भलो चावां तांहरो ॥ ४ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

धर्म पायो हे नणदल भल भावसू, छूटे न छुडायो हे रतन चिंतामणि सारिखो ॥ टेर ॥ ऐ तो दया धर्म जग मोटो हे, म्हे तो लीयो जिसीको ओठो हे; जाणूं हिंसा धर्मने खोटो हे, ए वचन गिणो मत छोटो हे ॥ ध० ॥ १ ॥ जिन धर्मसूं कारज सरसी हे, जाकी होड करी नही करसी हे; जिन धर्मसूं दुःख सख टरसी हे, इण धर्मसू तरया केई फेर तरसी हे ॥ ध० ॥ २ ॥ म्हे तो भाग्य उदय धर्म पायो हे, म्हे तो भव भव ए धर्म चायो हे; मोने सद्गुरु ज्ञान सुणायो हे,, राम दूजो दाय न आयो हे ॥ ध० ॥ ३ ॥ इति ॥

---

८ शालिभद्र ॥

१ राजन मोरा किण विध रेसूं रे ॥ ए देशी ॥

वालम मोरा आज्ञा किण परे देऊ रे, देऊंने फिर किम रेऊं रे; हू पिण सयम लेऊ रे ॥ वा० ॥ टेर ॥ मोने थाई कांई केसी रे, ए वात जुगो जुग रेसी रे; मोनें मोसा सारा देसी रे ॥ वा० ॥ १ ॥ म्हांने छोड मती थे

७ सुभद्रा–गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन धर्म सबथी सिरे, तोय केती हूं, थे समजो ज्ञान विचार,बाईजी तोय केती हूं;जिन धर्मदी निंदा करो मती, हणे नहीं कोई जीवनें ॥तो०॥ बोले न झूठ लिगार ॥ १ ॥ बाईजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा करो मती, पक्ष दूर धरो, न्याय पक्ष करो, मुनि संगसें उतरो पार ॥बा० जि०॥ टेर ॥ तृण न लेवे बिनु दीयो ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ बा० जि० ॥ धन धूल गिण त्यागीयो ॥तो० ॥ ऐ तनकी न रक्खे सार ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ २ ॥ रात्रि भोजन नवि करे ॥ तो० ॥ धरे पग सूत्रके न्याय ॥ बा० जि० ॥ डरे सदाई पापसूं ॥ तो० ॥ मुनि मुक्त नगर ले जाय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ३ ॥ परस्पर मींढो धर्मनें ॥ तो० ॥ मत पक्षकूं करिये दूर ॥ बा० जि० ॥ दुग्ध दुग्ध सब सारीखे॥तो०॥ गिणो न केसर सम धूर ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ४ ॥ जिन मारग कोई निंदसी ॥ तो० ॥ स्यो जिन मारग जाय ॥ बा० जि० ॥ मुनि राम कहे धन्य मानवी ॥ तो० ॥ जे समजे न्याय अन्याय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

गीत ॥

१ चालो चालो हो रंग रसोड़े मांय, जीमाऊं तोनें सीरो ने पूड़ी ॥ ए देशी ॥

छोडो छोडो हो भोजाई थांरो धर्म, कर्म कांई बांध रह्या; थांरे नहीं है सासूजीकी शर्म, घरमें कळो घालि

वा वा, हे बारे वरसलों संयम पाळ्यो, कीयो माम संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे र प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

---

९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी वीजकू लोभी नटर्ही, लगे कलेजे दाह अपार; मोट-का झूठ तजो नर नार ॥ ल० ॥ टेर ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥ मो० ॥ १ ॥ करो पुकार चल राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरवार ॥ मो० ॥ २ ॥ भरे शाख सारे जग मोरी, तोरी कुण माने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ परभव विगडे स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुज हार आतर्क छानें, मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, लै चढ़ळो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण रख नटसी, ते मर रुळसी बहुल संसार ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति ॥

---

१० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।
सझर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यांरे खातर बोल्यो ॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते जी घड़िया, किण रीते हीरा जड़िया; महक सुगंधी जी आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र चढि यो, अबके नहीं पिण अबके पड़ियो; अभो कहे छे साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि देखा छात, इण घरकी तौ अद्भुत वात ॥ बो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा ॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको लोभ न रक्ख्यो, कीयो छे उत्तम काम, हे दान दीयो नहीं ज्हार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल अंवा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन सगरो; माता निजरसूं मरियो, हे गोभद्रके घर जन्म लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार बतीससूं व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ सुण्यो के वा वा, हे आजलों नाथ सुण्यो नहीं कांनें, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटका-ऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे बारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

---

९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी बीजकू लोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोटका झूठ तजो नर नार ॥ ल०॥ टेर ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥मो०॥१॥ करो पुकार चल राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरबार ॥मो०॥२॥ भरे शाख सारे जग मोरी, तोरी कुंण मांने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार॥मो०॥ ॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार भ्रातके छांने, मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले वदळो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण रख नटसी, ते मर रुळसी बहुल संसार॥मो०॥ ९ ॥इति॥

---

१० चन्दनबाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यांरे खातर बोल्यो ॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते जी घड़िया, किण रीते हीरा जड़िया; महक सुगंधी जी आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र चढि यो, अबके नहीं पिण अबके पड़ियो; अभो कहै छै साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि देखा छात, इण घरकी तो अद्भुत वात ॥ बो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा ॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो नहीं ज्हार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल अंबा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन सगरो; माता निजरसूं मरियो, हे गोभद्रके घर जन्म लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार बतीससूं व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ कांन सुण्यो के वा वा, हे आजलो नाथ सुण्यो नहीं कांने, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटकाऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे बारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी वीजकूं लोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोटका झूठ तजो नर नार ॥ ल०॥ टेर ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥मो०॥१॥ करो पुकार चल राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरबार ॥मो०॥२॥ भरे शाख सारे जग मोरी, तोरी कुण मांने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार॥मो०॥ ॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार आतके छांने, मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले वदळो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण रख नटसी, ते मर रुळसी वहुल ससार॥मो०॥ ९ ॥इति॥

१० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यांरे खातर बोल्यो ॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते जी घडिया, किण रीते हीरा जड़िया; महक सुगंधी जी आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र चढि यो, अचके नही पिण अचके पड़ियो; अभो कहे छे साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि देखा छात, इण घरकी तो अद्भुत वात ॥ बो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरांमजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा ॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो नहीं उहार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल अंबा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन सगरो; माता निजरसूं भरियो, हे गोभद्रके घर जन्म लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार बतीससूं व्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ कांन सुण्यो के वा वा, हे आजलो नाथ सुण्यो नहीं कांनें, पूरा पुन्य कीया नांह; हे संयम धारूं धन छिटकाऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे बारे वरसलो संयम पाळ्यो, कीयो मास संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी वीजकू लोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोटका झूठ तजो नर नार ॥ल०॥टेर॥ कद तेरे पूजी धरी कुंण देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥मो०॥१॥ करो पुकार चल राज कचेरी, मेरी पैठ जाने दरवार ॥मो०॥२॥ भरे शाख सारे जग मोरी, तोरी कुंण मांने ससार ॥ मो० ॥ ३ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार॥मो०॥ ॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार भ्रातके छांने, मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले वदळो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण रख नटसी, ते मर रुळसी वहुल ससार॥मो०॥ ९ ॥इति॥

१० चन्दनवाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ॥

सती शिरोमणि धारणी, वरणी कहांलग जाय।
करणी भवतरणी करी, श्रीमुख जिन गुण गाय ॥ २ ॥
पालक पापी ले गयो, मा वेटीनुं उजार।
लाज लोप लंपट मुखे, कहे छूं तुज भरतार ॥ ३ ॥

१ देशी वीरानी ॥

वीरा, अलगो २, रहीजै मोय हो, वीरा, प्राण त्याग करसूं अवी जी; वीरा, प्रभूजी २, सांमो जोय हो, वीरा, सुपनामें वंछूं नहीं कवी जी ॥ १ ॥ वीरा, अहिमुख २, देणो हात हो, वीरा, अगन झंपा करणी भली जी; वीरा, करणी २, आतमघात हो, वीरा, कौन विसात थारी चली जी ॥ २ ॥ वीरा, अलगो २, रहीजै दूर हो, वीरा, क्रूर दृष्टे जो जोवसूं जी; वीरा, चढ़सी २, कोप जो पूर हो, वीरा, थारा प्राण खोवसूं जी ॥ ३ ॥ वीरा, सतियां २, संताणि न भूल हो, वीरा, इंद्रभणी वंछूं नहीं रति जी; वीरा, रही छूं २, शील सरोवर झूल हो, वीरा, नीच वचन कहिजे मतीजी ॥ ४ ॥ वीरा, जोतूं २, छेड़सी मोय हो, वीरा, जीऊं नहीं हूं अदघडी जी; वीरा, रैसी २, पछे तूं रोय हो, वीरा, शील वरत मुज जीवन जड़ी जी ॥ ५ ॥ धारणी, जीभ २, खंडन करी तेथ हो, धारणी, ततक्षण प्राण त्यागियाजी; मुनि राम २, कहे छै एथ हो, वीरा, शील पाळे सो सोभागियाजी ॥ ६ ॥ इति ॥

११ सुलसा रेवती संवाद ॥

१ थारे मनाई नहीं मनूं रुणझुणियो ले ॥ ए देशी ॥

म्हे म्हांरी समकित आदरी, तुं समकित लै, कहू तोय मनरी वात, वारू समकित लै; हूं पिण हूंती अज्ञानमें ॥ ॥ तुं० ॥ अब मैं जांण्यो जगनाथ ॥ वा० ॥ १ ॥ मै सुध आचारी ओळख्या ॥ तुं० ॥ आया छै श्रीवर्धमांन ॥वा० ॥ सुलसा कहे सुण वायली ॥ तु० ॥सुण रेवंती बुधवांन ॥ वा० ॥ २ ॥ क्यू उदास आज एवडी ॥ तु०॥ सुंण सुळसा कहे वांण ॥ वा० ॥ मास पट हुवा वीरने ॥ तु० ॥ थंभे नहीं लोहीठांण ॥वा॥३ ॥ मै उपचार जाणूं भलो ॥ ॥ तु० ॥ तुरत होय समाध ॥ वा० ॥ तो तुम जैसी वायली ॥ तु० ॥ तुम गुण गाऊ अगाध ॥ वा० ॥ ४ ॥ मेल दीजे मुज घरभणी ॥ तुं० ॥ तुम गुरु शिष्य एक ॥ वा० प्रभु निमित्त ओपध कीयो ॥ तुं० ॥ रखे कोई लेवे देख॥ ॥वा० ॥ ५ ॥ सिहाभणी प्रभू भेजीयो ॥ तु० ॥ सुलसा लाई येनके पास ॥वा०॥ अश्व ओपधि दे श्राविका॥तु०॥ नही लां प्रभू निमित्त जास ॥ वा० ॥ ६ ॥ धन धन साधू ज्ञांनी जी ॥ तुं० ॥ धन धन थारो ज्ञान ॥ वा० ॥ मुनि राम कहे इण दानसूं ॥ तुं० ॥ होसी सुलसा भगवान ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

---

१२ जयंती ॥

१ गोरल ईसरजी कवै तो हसकर बोलणा हे ॥ ए देशी॥

ऐ तो जवदे सुपन देखाविया जी २, वळी चौसठ इन्द्रही आवे, ऐ तो मेरूपर झुलवावे, जां तो रंभा घूमर

लगावे,भल आया हो प्रभूजी जग तारवानें,ऐ तो शिव-पुर पंथ दरसायवानें ॥ भ० ॥ टेर ॥ कोटानकोटी सुर आविया जी २, जां तो गीत इंद्राणी गावे वां तो कल-सा इंद्र ढळावे, सहूको जलही आंख लगावे, जव तो सहूके हाथ न आवे ॥ भल० ॥ २ ॥ पाछा माता पास पोढावीया जी २, जांरी बाललीला सुखकारी, जांरि सूरतकी बलिहारी, जांरी मोहनी मूरति प्यारी ॥ भल० ॥ ३ ॥ चार अतिशय लेई जनमीया जी २, और केवल सैंथ इग्यारा, उगणी सुरवर कीवि सुखकारा, तारे चौ-तीस अतिशयवारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रभू आया छे नगरी आपणी जी२, जांरे गौतम स्वांमी लारे, और मुनिवर चौद हजारे, ऐ तो चरण कमल पग धारे ॥ भ० ॥ ५ ॥ जांरो नाम सुणी शिव सुख लहे जी २, जांरो एक वच-न हीये धारे, जांरे फळरो अंत न पारे, जांनें पुन्यवंत नयन निहारे ॥ भ० ॥ ६ ॥ आपे चालो भोजाई प्रभु वां-दसां जी २, जांरा दर्शनसूं सुख पासां, आपे मनका-भर्म मिटासां, आपे जन्म कृतारथ थासां ॥ भ० ॥ ७ ॥ ऐ तो एम सुणी आनंद लह्योजी २, जारे हीये हर्ष न मायो, मृगावती वांसें सीस नमायो, जांरो रोम रोम हुलसायो ॥ भ० ॥ ८ ॥ बाईजी खूब वधाई दीवी आय-नें जी२,आप वडो कीयो उपकार, म्हांसूं रख्यो अधिको प्यार, थांसूं नहीं वडो संसार ॥ भ० ॥ ९ ॥ न्हाया नें वळी कम्मा कीया जी २, ऐ तो सकल कीया सिंणगार; ऐ तो पैन्या नवसर हार बोले रामचंद्र अनगार ॥ भ० ॥ १० ॥ इति ॥

१२ भ्रम निवर्तन–लावणी ॥

१ गौरी चली सासरे फेर तो कबी आंना ॥ ए देशी ॥

गत वस्तूका सोच कबी नही करना; सुख दुख किसके हात मेटे कुन मरना ॥ टेर ॥ एक धनवत नरका पुत्र बडा गुणवंता, कृतांत पकड़े आंन प्रांन किय अंता; अब रोवे पीटे बाप अती अरडंता, रोक्या न रुके तेह मोह दुर्दंता; माता झुरे अरे पुत्र त्रिया कह कंता, था पूरब भवका वैर अहो भगवंता, इम बाप रोवे विललाट अरे पुनवंता, दुर्लभ तुज दरसन्न ऐसे विलपता; तू छिनमे गया छिटकाय विध्वंस कर घरना ॥ ग० ॥ १ ॥ इणरीत वीते षट मास वास भये सूना, वस्यो श्मशाने बाप रोवे तिहां दूना; दिवान गये समझाय एक नहीं मांना, लोक हास्य घर हानि कहे कफखाना; घरके कहे दुख पाय करे जो सयाना, जिसका उत्तम उपगार जनम भर मांना; एक चतुर विचक्षण पुरुष सुणी इम कांना, कहे एक रात्री बीच मिटाऊ तांना; यह उत्तम आचार टारे दुख परना ॥ ग० ॥ २ ॥ दक्ष आयो पूनमकी रात बाबु जहां होता, रुदन किये इण भांत सकल सुण रोता; सुनत हीया फटजाय भेद नहीं पाया, कुंण रोवे तू केम बाबु बतलाया; मेरे तो पुत्रका दुःख कलेजा जलता, तूं रोवे छै किण काज कायर हिय गलता; मै रोऊ चंद्रमा काज साच मै बोलू, बाबू कहे मै तोय मूरख सग तोलूं; करे लोक उपहास उसीसें डरना ॥ ग० ॥ ३ ॥ आवे न चंद्रमा हाथ प्राण जो खोवे, तुज सरीखा मूढ होवा नहीं होवे; मैं प्रत्यक्ष देखू आंख इसीकू रोता, तुज दीसे न

तेरा पुत्र प्राण क्यूं खोता; चंद्र मिले नहीं मोय पुत्र किम तेरा, दोनूं झूंठी वात ज्ञान कर हेरा; सुंण वावूकूं आया ज्ञान अज्ञान सब हटिया, आया अपने गेह प्रभूकूं रटिया; मुनि राम कहे सत्य वात हियामें धरना ॥ ग० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

२ म्हांने व्हालो हे लागे गाघरो ॥ ए देशी ॥

हां हे ओ तो भरम मिटे दिन पाधरो, नां तो मिटे न लाख प्रकार, हे मन फाटो मीटे छै सैजमें, तुम देखोनी बुद्धि विचार, हे ओ तो भर्म मिटे दिन पाधरो ॥ टेर ॥ हां ए एक बाला थी नव यौवना, जांसूं, मिल्यो प्रथम भरतार, हे वहू रत निपुनता देखने, आ तो दीसे माठी नार ॥ हे ओ भ० ॥ १ ॥ हां ए आ तो शंका पति चित्त ऊपनी, इण भोगव्या केई भरतार, हे ओ तो सूतो पूठ देईनें, आ तो आई नींद अपार, हे ओ भ०॥ २ ॥ हां ए चंद्रमुखि लखि वारता, एक भीत चित्र्यो गजाकार, हे एक सन्मुख लिखी सिंघनी, जिणरे गर्भ छूटो अर्ध वार ॥ हे ओ भ० ॥३॥ हां ए जिण गज देखी जोर मारीयो, इम पति देख्यो विरतंत, हे मुनि राम स्वभाव छै जातरो, इम समझ्यो जिणरो कंत ॥ हे ओ भ० ॥४॥इति ॥

---

१४ चेलणा-गाळ ॥

१ नाड़ेके छरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन निंदा तुम कांई करो, नृप कहती हूं, म करो कूड़ पक्षपात, राजाजी तोय केती हूं; जिन धर्मकी निंदा करो मती; पीत पीत सोवन नहीं ॥ तो० ॥ है अंतर दिवसने रात, राजाजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा

करो मती, न्याय पक्ष धरो, पक्षपात हरो, लरो मत पक्ष लगाय ॥रा० जि० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत मेरू सा, नृप कहती हूं, पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ टाळे दूषन जिन वचनसूं ॥ नृ० ॥ ऐ चाले खांडा धार ॥ रा० ॥ २ ॥ जीव घाती छै तोय गुरु ॥ नृ० ॥ नहीं बोले वचन विचार ॥ रा० ॥ अदत त्याग जिनके नहीं ॥ नृ० ॥ ते पाळे नहीं ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ ३ ॥ कळ्या परिग्रह कीचमें ॥ नृ० ॥ है संसारके वीच ॥ रा जोगी नहीं वै रोगी छै ॥ नृ० ॥ ते अंध थया दृग मीच ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिरे सो तारे और ने ॥ नृ० ॥ नृप कीजो ज्ञान विचार ॥ रा मुनि राम कहै निंदो मती ॥ नृ० ॥ छै साधू धन्य संसार ॥रा०॥५॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ ख्याली आयो मुलतांनसे ॥ ए देशी ॥

रांणी भाखे मुनिराजसे, म्हारे वाद भयो छै महाराजसें ॥ रा० ॥ अवधू मतमें छै महाराजा, मुज प्रेम लग्यो जिनराजसे ॥ रा०॥ १ ॥ जो करामात तो अवही दिखावो, नहीतर जावो आजसे ॥ रा० ॥ २ ॥ धर्म दीपावा आया अलगसे, डरां नहीं अमे राजसे ॥ रा० ॥ ३ ॥ धर्म दीपाजो लब्धि दिखाजो, मुज मोटी करो गिरराजसें ॥ रा० ॥ ४ ॥ चक्री सेना मुनिवर चूरे, राम श्रीसंघ रक्षा काजसें ॥ रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१५ अरणक ॥

१ घरभी छूटे धन भी छूटे, और कहो तो सवि छूटे, पिण संग न छूटे ॥ ए देशी ॥

धन भी छोड़ घर भी छोड़ू, प्रान कहो तो अधि

छोड़ूं, पिण धर्म न छोड़ूं; ओ हो मेरी जांन, धर्म न छोड़ूं ॥ टेर ॥ जाभ डूबे तो जोर किसीका, मैं क्या जाभभणी बोड़ूं, धर्म न छोड़ूं ॥ सु० ॥ १ ॥ लाखों लोक मुझे संतावे, किनसें लड़ मोवत तोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ २ ॥ धर्म हारेसें जन्म न सुधरे, हीरा पथरसें किम फोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ३ ॥ धर्म विना तो पशू बरावर, सूना जंगलमें किम दोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ४ ॥ वीतरागके धर्मका सरना, दूजा धर्मसें मन मोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे धन अरणक श्रावक, जिनकी महिमा किम जोड़ूं ॥ ध० सु० धन० घर० प्रा० ॥ पिण धर्म न छोड़ूं, सुनो मेरी जांन, धर्म न छोड़ू ॥ इति ॥

---

१६ विद्या विलास ॥

सवैयो ॥

खेतीसें रेती में सीर नीर मनमांन्यो होत, नीपजै धरामें धन जहांनको जिवावे है। रसाल जे जगत बीच पूंख फळी कचरे, ककड़ी मतीरे मीठे दुनियां सरावे है ॥ गाय भैस ऊंठ घोरे दांम विना धीना होत, चीरी कीरी लोंकी मृग सारे सुख पावे है। और सब ठीकाठीक पूरो धन कह्यो धांन, खेती विना और मेरे दाय नही आवे है ॥ १ ॥

१ असी रुपीया लो कलदार ॥ ए देशी ॥

मोने सखि मिलियो तुज भरतार, कुशल क्षेमका कहु समाचार ॥ टेर ॥ तेरो सखी कंत बहु पुन्यवत, वडो मतिवंत अनंत गुणधार ॥ मो० ॥ १ ॥ इण पुर ठाम गणिका धाम, कामलता के रहे घर द्वार ॥ मो० ॥ २ ॥ जिण कीयो रूड़ो रूपे रूड़ो, नहीं छै कूड़ो कहूं घर प्यार ॥

॥ मो० ॥ ३ ॥ थये मास वार नहीं समाचार, करी कमलावती बहु हुंसियार ॥ मो० ॥ ४ ॥ ते कीर उडतो चलतो रे आयो, मुज मन भायो करतो उचार ॥ मो० ॥ ॥ ५ ॥ दूहा गूढा गाथा पहेली, क्या क्या सहेली कह्या तिणवार ॥ मो० ॥ ६ ॥ मुज कर आयो मेवा खवायो, स्नान करायो खोल्यो पग तार ॥ मो० ॥ ७ ॥ विद्याविलास थयुं परकास, मैं पूछ्युं किम भयूं अवतार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुदंडी लेण गयो फिर आयो, नाग खायो थयो विप अनपार ॥ मो० ॥ ९ ॥ वेश्या द्वार पड्यो तिणवार, कर्‍यूं उपचार थयूं उपकार ॥ मो० ॥ १० ॥ बेटी भणावो कला सिखावो,मत्त जावो विन कहे किणवार॥मो०॥११॥ पींजरे रक्खे,कोई न लक्खे, मिनख करे रात्रे भण सार ॥ मो०॥१२ ॥डोरो बंधायो वचन निभायो, गयो वेश्याके पाछो द्वार ॥ मो० ॥१३॥कुशल क्षेमके कहो समाचार, दुखणी होसी मुज घरनार ॥ मो० ॥ १४ ॥ जिणसूं आई कहू तुज बाई, राजा बुलाई करसी ज्हार ॥ मो० ॥ १५ ॥कहे मुनि राम हुवे सहू काम, पुन्य अभिराम हुवे जो लार ॥ मो० ॥ १६ ॥ इति ॥

१७चंद चरित्र ॥

१ मारूजीनें राखो समझाय, दासी मोरा ॥ मा० ॥ ए देशी ॥

सखी मोरा पिउजीनें राखो विलमाय ॥ पि० ॥ सखी मोरा पिउजीने राखो भरमाय ॥टेर ॥ कांटे कुमती मुज ऊपनी जी, कुंण मुज दीधि भरमाय अधके विछड्यो बालहो जी, फेर मिले कब आय ॥ स० ॥ १ ॥ सासूजीने

जीवती जी, क्यूं राखी किरतार; क्यूं न गई खर सींग ज्यूं जी, क्यूं न मरो इण वार ॥ स० ॥ २ ॥ मुज प्यारो न्यारो कीयो जी, फिट तोनें किरतार; फिट् जीव्यो अब मांहरो जी, कुंण मुज सुणे पुकार ॥ स० ॥ ३ ॥ पाछो लावो वेगसूं जी, जिण विन निकसे प्रांण; जग सूनो सब माहरो जी, किम कर रखूं कुल कांण ॥ स० ॥ ४ ॥ कुंण जांणे दुख माहरो जी, कुंण दुख मेटे अवार; हूं दुखणी महापापणी जी, कीधा मैं पाप अपार ॥ स० ॥ ५ ॥ अनिमिषे हूं जोवती जी, प्रीतमनो मुख नित्त; अब देखण सांसो पड्यो जी, लाख खरचूं जो वित्त ॥ स० ॥ ६ ॥ क्षण क्षण पांख समारती जी, क्षण क्षण जोती मुक्ख; हूं जाणेती नर थसे जी, उलटो हुय गयो दुःख ॥ स० ॥७॥ मोत न आवे आपणी जी, हीयो न फाटे हजेस; मुनि राम कहे जो जांणसे जी, जिणरो कंत जावे पर देश ॥ ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

कुर्कट प्रांन पियारा, प्रांन पियारा लागे प्यारा, नहीं रक्खूं न्यारारे॥कु०हां०कु०प्रा०॥आभावारा रे॥कु०हां०॥ टेर॥तूं मुज प्रांन आंन शिर तेरी,चेरी हूं खिजमतदारा रे॥ कु०॥१॥क्यूं धरी मनसा धण त्यागनकी,क्यूं फिरो नटवी लारा रे कु०॥२॥हम निर्भागी जद तुम त्यागी,रागी किम थया थांरा रे॥ कु०॥३॥ शिवमाला तो रूप रसाला, कर लिया चित वश म्हांरा रे ॥ कु०॥४ ॥ धन नटवाला वचन रसाला, धन तोय राखनवारा रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ रे छोगा-

ला, मोहनगारा, रे यौवन सिणागारा रे ॥ कु० ॥ ६ ॥ सासू फासू ईर्खा रक्खे, लखेन समय विचारा रे ॥ कु० ॥ ७ ॥ कुंण विश्वास आस जीऊ कैसें, देऊं रखूं किसें लारा रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ कुन भरोसे किम मुझ छोडो, क्यूं छोडो मो निरधारा रे ॥ कु० ॥ ९ ॥ वचन रसाला नैन अनियारा, मेटो विरहनी झाला रे ॥ कु० ॥ १० ॥ ईश्वर पिण मुज लारे पडियो, कीयो पंखी फेर करे न्यारा रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ किणरो दोप नहीं सही जांणूं, है सह्व दोप करमांरा रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ वेदरदी कछु मूल न जांने, राम जांने जांननहारा रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ इति ॥

१८ पंचक सेठ ॥

॥ देशी गरबेकी ॥

सुपातर दांन ज रे दीजो, वर्धमान प्रणाम शुद्ध कीजो; पचक सेठ ज रे सुन लीजो, हीये मांन प्रणाम तजीजो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ कोल्लर ग्राम ज रे कहिये, पचक श्रावक तिहां रहिये; एक मुनि ज्ञान ज रे संयुता, आया सेठ घरे गुणवता ॥ सु० ॥ २ ॥ समुल्लस सेठ ज रे उदारा, प्रतिलाभे अखंडित घृतधारा; नहीं करयूं ऋपजी रे नाकारा, जाण्यू सेठ रे लाभ अपारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ मत हुवो भंग प्रणाम भव तरियो, तिनसें नाकारो नवि करियो; पिण सेठ चचल चित्त ज रे फिरियो, अहो मुनि लोभी पात्र ज भरियो ॥ सु० ॥ ४॥ एकाकी मुनिवर रे दरसे, एता घृतसूं कांई करसे; शनै शनै घृत धारा हे नांखे, तदा ज्ञानी मुनि इम भाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥

मारे, किम कर आज्ञा दी जावै ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ एकाएकी नंदन म्हारे, तो विन किम म्हें प्रांन धरां; नारी कहै कत तल कर जावो, धन मायानें कांई करां ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ऐ आज्ञा नहीं देवे मुझकूं,जद लोच कियो निज हाथ करी, वेष पैरनें मुनिवर बैठो, नैंन देखने धरनि ढरी ॥ऐ०॥७ कहणा थी सो सबही कहिया, पिण हार खाय आज्ञा दी धी;नलनि गुल्म हूं जाऊं जलदी, गुरुसेती विनती कीधी ॥ऐ०॥८॥श्मशान भूमि तुम जावो जल्दी, काम पर्ज्यां सैं ठा रैना; सहै सैल धमका लहै जागिरि, पांव नहीं पाछा देना ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ सूरीकूं वंदी जाये मसांणें, बंवलकी पग सूल भगी; एक काढतां दूजी तीजी,चौथी अति वेदन जगी॥ऐ०॥१०॥पग भर खिस्स सकें नही जासें,पादपोप गमन अनशन ठावे; बहु बच्चांसें आई जंबूकी, भूखी अति मुनिकूं खावे ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ घुट घुट करती पीवे रुधिरकूं, त्रट त्रट त्रट नाडी तूटे; चट चट चट चट चावे चांवड़ी, मुनी तहां लाहो लूटै ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ चौथे पौर तो घोड़े चढ़ियां, नलिनिगुल्म छिनमें लीधो; नार बतीसे सासू संगे, रुदन करी दुखड़ो कीधो ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ रुदन सुणी नर लाखां रोवे, पछी चुगो पिण ना लेवे; बंदर दोलन करते रहिया, प्रांण पड़े कायर जेवे ॥ ऐ ० ॥ १४ ॥ मुनि उपदेशे समता लीधी, नंदन हुवो एक लार थकी; ऐवंती पार्श्वनाथको मंदिर, कर जिणमे पितु शिबि रक्खी ॥ ऐ० ॥ १५ ॥ राजा विक्रमने प्रतिबोध्यो, सिद्धसेन नाम दिवाकरो; महांकालको लिगही फोड़यो, कल्याणमदिर तहां स्तव उचरयो ॥ ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ पंचम आर एवा मुनिवर, धन्य माता उ

जेन्म लीया; मुनि राम कहे धन्य धन्य छै जेह्ने, जिन मारग उद्योत कीया ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ संवत उगणीसे एक चालीसे, जो धांणे फागुण मासे; वृद्धिचंदजी गुरु प्रसादे, ज्ञानतणो कीयो अभ्यासे ॥ ऐ० ॥ १८ ॥ इति ॥

---

२२ पार्श्वनाथ कमठ संवाद

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भोजायां पाणी नीसरी ॥ ए देशी ॥

काशी देशमें नगर वणारसी सार रे, कोई राजा रे अश्वसेन नृप गुणभऱ्यो; वामा रांणी जिण घर छै पट नार रे, कोई कुमरज रे पार्श्व प्रभूजी अवतऱ्यो ॥ ॥ १ ॥ गंगा ऊपर आयो तपसी एक रे, कोई दुनियां रे दरसन करवा जाय छे; माजी पधारे सब दुनियांने देख रे, कोई दरसन रे करवा दिलमें चाय छै ॥ २ ॥ कुमरजी लीधी साथे आया आप रे, कोई आप ज पधाऱ्या गंगा ऊपरे; क्यू जाले अज्ञानी लक्कड़ मांह्ने साप रे, कोई ऐसो रे तपतो ज्ञानी नवि करै ॥ ३ ॥ दिन मरे भूखां रात पञ्चां केई खाय रे, कोई व्रत ज रे करने कंद मूल खाय छै; कोई रगडे मट्टी अंदर मैल भराय रे; कोई जाले रे लक्कड़ जीव जलाय छै ॥ ४ ॥ क्या तुम देखा मुजे तपस्यामें पाप रे, कोई क्या तुम जी छेडे मुज बेफायदे; दिखा तौ जलता लक्कडमे अधि साप रे, कोई नही तौ जी जावो तुमचे कायदे ॥ ५ ॥ लक्कड़ फाड़ी काढ दिखाये नाग जी, कोई मंत्र ज रे देईने सुर पद अहि दीयो; भयो कीसांनो छूटो तपसी भाग जी, कोई तप फल रे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	११	तुमची	तुमचो
३५	१८	तारिय	टारिये
४०	११	अगोजी	आगेजी
४०	२४	तहीं सागो	नहीं सागो
६१	२०	एमो अरिहंताण	णमो अरिह- ताण
४२	२	नमो नुत्र	नमो उत्र
४३	५	खट मसाताई	खट मासाताईं
४५	६	सदा तुन	सदा तुम
४७	१७	जोदे	जोटे
६८	६	घघगाघा छा	घघरावा छा
७१	४	ए कहनो	ए कहनें
७४	१	पायो रे	पारो रे
७८	१३	तारो रे	सुधारो रे
७८	१७	मुकटो	मुखडो
७५	५	तनु	तउ
७५	२५	दसवे कालिक	दश वैकालिक
७९	२५	इम घदे	इम नंदे
८८	९	गभार्वासमे ऊपनो	गर्भावाससू नीसरी
८४	१७	कम्या	कन्या
८५	२	दूणो करो रे	दोनू करी रे
८६	१०	घेठ	घेठो
८७	१५	ऋत अनृत	ऋत अकृत
९०	७	गडिये	घडिये
९३	१४	आछी	आछो
९७	१५	पलक	पलका
९९	६	रच नहीं	रचन नहीं
१०२	२	आठ	आट
१००	७	लखभाई	लाख भाई सोवालका गज जिसीका समुंदरसी खाई सीता हरतास यही खोई, सु णजो लखभाई,
१११	१६	मरा	मढा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११२	१८	कथा	कथा
११५	३	जिण रुप	जिण ऋप
११७	३	कमसु	क्रमसू
१२०	१९	प्रतिमाक	प्रतिमाका
१३१	१०	भोडु	भोदू
१३१	२५	लग्यो	लग्यों
१४१	१	बूटे	छूटे
१४२	११	धर्म न पगारो	धर्म उपगारे
१५१	११	जियडा	०
१५३	१३	लोग	जोग
१५८	२३	साद	साच
१५८	२८	दये	देय
१५९	११	दशवें कालिक	दश वैकालि
१५९	२३	भायजी	भायजी
१६३	११	दशवें कालिक	दश वैकालि
१६५	४	पीनेकर	पीनेका
१६५	२०	धर	घर
१७४	२२	मुलटा	सुलटा
१८०	२२	थई छ	भई छ
१८०	२	डुमालो	दूमालो
१८७	१३	माणे	मारगे
१९२	१३	रूढ	रुढ
१९३	२२	बाईजी कालो मोरा	बाइजी मोरा कालो
२१२	२३	सजी	सजो
२१८	१८	चदे	घदे
२२१	२५	तीर	तीन
२२४	१५	उत्तम	उत्तम
२२९	२	पुत्रकोधाम	पुत्र गुणको धाँम
२३३	११	भाखिया	भाखियो
२४१	१०	अवसर	अवसर
२४२	१२	वलम	पाभम,
२४८	१६	आदनर्य	आश्चर्य
२४८	२४	नादनो	ना देना
२५२	८	वर सामाई पोसाभेल्या	पामिह सामा थिग सगहो